इफ़ादात

हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबंदी

तर्तीब

खुत्बात

ज़ुलफ़क़ार फ़क़ीर

इफ़ादात

हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबंदी

तर्तीब

प्रोफ़ेसर मुहम्मद हनीफ़ नक़्शबंदी मुजद्दी

فرید بُک ڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

नाम किताब

खुत्बात ज़ुलफ़क़ार 'फ़क़ीर'

लेखकः मुहम्मद हनीफ़ नक़्शबंदी मुजद्दिदी

पहला एडीशनः 2013 साइज़ः 23x36/16

पेजः 324 क़ीमतः 130/-

पेशकर्दा : जनाब मुहम्मद नासिर ख़ान

प्रकाशक

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House Darya Ganj, N. Delhi-2
Phones: 23247075, 23289786, 23289159 Fax: 23279998 Res.: 23262486
E-mail: farid@ndf.vsnl.net.in Websites: faridexport.com, faridbook.com

Name of the book

KHUTBAT ZULFIQAR *FAQEER* Vol. 7

By: Prof. Muhammad Haneef Naqshbandi Mujaddidi

Pages: 324 Price: Rs. 130/- Size: 23x36/16

Composed at: QAYAM GRAPHICS, Dehra Dun-248001
Ph.: 9675042215, 9634328430

Printed at: Farid Enterprises, Delhi-6

फ़हरिस्त-मज़ामीन

विषय-सूची

फ़ज़्कुरूनि अज़्कुरकुम

❋ ❋ ❋

रहमतुल्लिल-आलमीन

❋ ❋ ❋

नूर-ए-निस्बत

असलाफ़ के हैरतनाक वाक़िआत

❋ ❋ ❋

अर्ज़-ए-नाशिर

الحمد لولیه والصلوة والسلام علی نبیه علی آله وصبحه

اتماعه اجمعین الی یوم الدین. امابعد!

उलमा और सुल्हा के महबूब, हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबंदी मुजद्दी दामत बरकातुहुम के उलूम व मारिफ़ से भरपूर बयानात को छापने का यह सिलसिला खुत्बात फ़क़ीर के उनवान से सन् 1996 ई० से शुरू किया था और अब यह सातवीं जिल्द आपके हाथों में है। जिस तरह बाज़ की उड़ान हर आन ऊँची से ऊँची, फ़जूं से फ़ुज़ू तर होती चली जाती है कुछ यही हाल हज़रत दामतबरकातुहुम के बयानात हिकमत और मारिफ़त का है। जिस बयान को भी पढ़ेंगे एक नई फ़िक्र की परवाज़ खुलेगी। ये कोई पेशेवर खुत्बात और याद की हुई तक़रीरें नहीं हैं बल्कि दिल का सोज़ और रूह की बेचैनी है जो अल्फ़ाज़ के सांचे में ढलकर आप तक पहुँच रही होती है।

अल्लाह का शुक्र है कि इदारा मक्तबतुल फ़क़ीर को यह साअदत हासिल है कि हज़रत दामत बरकातुहुम के मुख़्तलिफ़ बयानों को किताबी सूरत में आम फ़ायदे के लिए शाए करता है। हर बयान को लिखने के बाद हज़रत दामत बरकातुहुम से इस्लाह करवाई जाती है, फिर कंपोज़िंग और प्रुफ़ रीडिंग का काम बड़ी बारीकी से किया जाता है और आख़िर प्रिन्टिंग और बाइंडिंग का

पेचीदा और तक्नीकी मरहला आता है। बहरहाल यह तमाम मरहले बड़ी तवज्जेह और मेहनत चाहते हैं जो मक्तबतुल फ़क़ीर के ज़ेरे एहतिमाम अंजाम दिए जाते हैं। तब किताब आपके हाथों में पहुँचती है। पढ़ने वालों से गुज़ारिश है कि इशाअत के इस काम में कहीं कोई कमी या कोताही महसूस हो या इसकी बेहतरी के लिए कोई सुझाव रखते हों तो ख़बर देकर अल्लाह के यहाँ अज्र हासिल करें।

अल्लाह तआला की बारगाह में यह दुआ है कि अल्लाह जल्लेशानुहू हमें हज़रत दामत बरकातुहुम का मुकब्बिर बनकर उनके इन बयानों की झंकार पूरी दुनिया तक पहुँचाने की सारी ज़िंदगी तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाएं और आख़िरत के लिए सदक़ाए जारिया बनाएं, आमीन ब-हुरमत सैय्यदुल मुरसलीन सल्लल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम।

डाक्टर शाहिद महमूद नक्शबंदी अफ़ी अन्हु
ख़ादिम मक्तबतुल फ़क़ीर फ़ैसलाबाद

पेश लफ़्ज़

الحمد لله الذی نور قلوب العارفین بنور الایمان وشرح صدور الصادقین بالتوحید والایقان وصلی الله تعالٰی علٰی خیر خلقهٖ سیدنا محمد وعلٰی الهٖ واصحابهٖ اجمعین اما بعد.

इस्लाम ने उम्मते मुस्लिमा को ऐसी मशहूर हस्तियों से नवाज़ा है जिनकी मिसाल दूसरे मज़हबों में मिलना मुश्किल है। इस एतिबार से सहाबा किराम पहली सफ़ के सिपाही हैं। जिनमें हर सिपाही ﴿اصحابی کالنجوم﴾ "मेरे सहाबी सितारों की तरह हैं" की तरह चमकते हुए सितारे की तरह है जिसकी रोशनी में चलने वाले ﴿اهتديتم﴾ कि बड़ी बशारत पाते हैं और रुश्द व हिदायत उनके क़दम चूमती है। उसके बाद ऐसी-ऐसी रुहानी हस्तियाँ दुनिया में आयीं कि वक़्त की रेत पर अपने क़दमों के निशानात छोड़ गयीं।

मौजूदा दौर में एक ज़बरदस्त हस्ती, तरीक़त के शहसवार, हक़ीक़त के दरिया के ग़ोताख़ोर, अल्लाह के भेदों को जानने वाले, नूर की तस्वीर, जाहिद, आबिद, नक़्शबंदी सिलसिले के असल, (मौलाना पीर ज़ुलफ़ुक़्क़ार साहब) दामत बरकातुहुम हैं। आप परवाने की तरह एक ऐसी कामिल हस्ती हैं कि जिसको जिस पहलू से देखा जाए उसमें क़ौज़-क़ज़ह (इंद्रधनुष) की तरह रंग सिमटे हुए नज़र आते हैं। आपके बयानात में ऐसी तासीर होती है कि हाज़िरीन के दिल मोम हो जाते हैं। आजिज़ के दिल में यह

जज़्बा पैदा हुआ कि उनके खुत्बात को तहरीरी शक्ल में एक जगह कर दिया जाए तो आम लोगों के लिए बहुत मुफ़ीद साबित होंगे। इसलिए आजिज़ ने सारे खुत्बात काग़ज़ पर लिखकर हज़रत अक़्दस की ख़िदमत आलिया में इस्लाह के लिए पेश किए। अल्लाह का शुक्र है कि हज़रत अक़्दस दामत बरकातुहुम ने अपनी बहुत ज़्यादा मश्ग़ूलियों के बावजूद न सिर्फ़ उनको सही किया बल्कि उनकी तर्तीब वग़ैरह को पसंद भी फ़रमाया। यह उन्हीं की दुआ और तवज्जेह हैं कि इस आजिज़ के हाथों यह किताब तर्तीब दी जा सकी।

ममनून हूँ मैं आपकी नज़रे इंतिख़ाब का

हज़रत दामत बरकातुहुम का हर बयान बेशुमार फ़ायदे और नतीजे अपने में रखता है। उनको पन्नों पर लाते हुए आजिज़ की अपनी कैफ़ियत अजीब हो जाती है। बीच-बीच में दिल में यह बहुत ज़्यादा तमन्ना पैदा होती है कि काश! कि मैं भी इन बयान किए हुए हालात से सज जाऊँ। यह खुत्बात यक़ीनन पढ़ने वालों के लिए भी नफ़े का ज़रिया बनेंगे। ख़ालिस नीयत और दिल के ध्यान से इनका पढ़ना हज़रत की बरकत वाली ज़ात से फ़ैज़ उठाने का ज़रिया होगा, इंशाअल्लाह।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर दुआ है कि वह इस मामूली सी कोशिश को क़ुबूल फ़रमाकर बंदे को भी अपने चाहने वालों में शुमार फ़रमा लें। (आमीन सुम्मा आमीन)

फ़क़ीर मुहम्मद हनीफ़ अफ़ी अन्हु

एम०ए०बी०एड०

मौज़ा बाग़, झंग

फ़ज़्कुरूनि अज़्कुरकुम

जो इंसान अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की याद से आँखें चुरा लेता है, अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उस पर शैतान को मुसल्लत कर देते हैं। इससे बड़ी कोई सज़ा नहीं हो सकती। यूँ समझिए कि उसको दुश्मन के हवाले कर देते हैं। जैसे कोई आदमी अगर किसी दुश्मन से राह व रस्म रखे तो वह उसे दुश्मन ही के हवाले कर देता है कि तू जान और तेरा काम।

फ़ज़्कुरूनी अज़्कुरकुम

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِا للّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

فَاذْكُرُوْنِيْ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْالِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنَ○ سُبْحٰنَ

رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ○ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ○

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ○

ज़िक्र के माइने

"ज़िक्र" अरबी ज़बान का लफ़्ज़ है जो क़ुरआन मजीद में कई मायनों में इस्तेमाल हुआ है। सबसे पहले तो यह लफ़्ज क़ुरआन मजीद के लिए इस्तेमाल हुआ है। लिहाज़ा इर्शाद बारी तआला है:

﴿اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ.﴾

बेशक हमने ही इस नसीहतनामे को नाज़िल किया और इसकी हिफ़ाज़त के भी हम ज़िम्मेदार हैं।

यहाँ ज़िक्र का लफ़्ज क़ुरआन मजीद के बारे में इस्तेमाल हुआ है। इसके दूसरे माइने 'अल्लाह तआला की याद' है। आज की महफ़िल में जो ज़िक्र का लफ़्ज इस्तेमाल होगा वह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की याद के लिए माईने में इस्तेमाल होगा।

ख़ास लोगों के नज़दीक ज़िक्र की हैसियत

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की याद एक ऐसा अमल है जिसको आज के दौर में एक नफली काम समझा जाता है। इसकी अहमियत दिलों से निकलती जा रही है। आम लोगों का तो क्या कहना, आज ख़ास लोग भी ज़िक्र के बारे में ग़फ़लत बरतते हैं, इसलिए ज़िंदगियाँ ज़िक्र की बरकतों से ख़ाली होती जा रही हैं।

मोहसिने हक़ीक़ी

अल्लाह तआला हमारे मोहसिन हैं, ख़ालिक़ हैं, मालिक हैं और रज़्ज़ाक़ हैं। हमें चाहिए कि हम अपने मोहसिन के साथ सच्चे दिल से मुहब्बत करें। उसकी नेमतों को याद करके उसका शुक्र अदा करें। उसी के इश्क़ में अपनी ज़िंदगियाँ बसर करें। उसी के सामने अपनी फ़रियादें पेश करें और उसी की मुहब्बत के गीत गाया करें।

हमारा सबसे बड़ा दुश्मन

शैतान हमारा इतना बड़ा दुश्मन है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने क़ुरआन मजीद में वज़ाहत के साथ बता दिया ﴿ان الشيطن لكم عدوا فاتخذوه عدوا﴾ बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है बस तुम भी उसे दुश्मन बना के रखो और जो ग़फ़लत की वजह से शैतान के चक्कर में आ गए उनको तंबीह फ़रमाई :

﴿اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَيْكُمْ يٰبَنِىْ آدَمَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوْا الشَّيْطٰنَ اِنَّهٗ لَكُمْ عدوا مُبِيْنَ﴾

ऐ बनी आदम! क्या हमने तुम से अहद नहीं लिया था कि तुम शैतान की पैरवी नहीं करोगे। यह तुम्हारा ज़ाहिर बाहर दुश्मन

है। ﴿وَاَنِ اعۡبُدُوۡنِیۡ﴾ और तुम सिर्फ़ मेरी इबादत करोगे ﴿هٰذَا صِرَاطٌ مُّسۡتَقِيۡمٌ﴾ यह है सीधा रास्ता। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की बात मानने वाले हिज़्बुर्रहमान (रहमान का गिरोह) हैं और शैतान की पैरवी करने वाले हिज़्बुश्-शैतान (शैतान का गिरोह) हैं।

शैतान का क़ब्ज़ा

जो आदमी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की याद से आँखें चुरा लेता है, अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उन पर शैतान को मुसल्लत कर देते हैं। इससे बड़ी सज़ा कोई नहीं हो सकती। यूँ समझिए कि इसको दुश्मन के हवाले कर देते हैं। जैसे एक आदमी अगर किसी दुश्मन से ताल्लुक़ रखे तो वह उसको दुश्मन के हवाले कर देता है कि तू जान और तेरा काम जाने। चुनाँचे क़ुरआने अज़ीम में फ़रमाया गया है ﴿ومن يعش عن ذكر الرحمٰن﴾ और जो रहमान की याद से आँख चुराए ﴿نقيض له شيطان﴾ हम उस पर शैतान को मुसल्लत कर देते हैं ﴿فهو له قرين﴾ और वह उसका साथी बन जाता है। क़ुरआन मजीद से मालूम हुआ कि ऐसा बंदा शैतान के पंजे में फंस जाता है और उसका पैरुकार बन जाता है।

शैतान के दाँव से बचने का तरीक़ा

शैतान के दाँव से बचने के लिए हमारे पास सबसे बड़ी चीज़ "अल्लाह का ज़िक्र" है। ज़िक्र करेंगे तो शैतान के हथकंडों से बच जाएंगे। चुनाँचे क़ुरआन मजीद में इर्शादे बारी तआला है ﴿ان الذين اتقوا اذا مسهم طائف من الشيطن تذكروا﴾ बेशक जो परहेज़गार और मुत्तक़ी लोग हैं, जब शैतान की एक जमाअत उनके ऊपर हमलावर होती है तो वे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को याद करते हैं

और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उन्हें शैतान के हथकंडों से महफ़ूज़ फ़रमा लेते हैं।

एक मिसाल सुनिए कि अब्राह ने अपने लश्कर के साथ बैतुल्लाह पर हमला करना चाहा तो अल्लाह तआला ने अपने घर की हिफ़ाज़त के लिए अबाबीलों को भेज दिया। उन्होंने कंकरियाँ बरसायीं और अब्राह के पूरे लश्कर का भूसा बनाकर रख दिया। बिल्कुल इसी तरह यह दिल भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का घर है। ऐ बंदे! यह शैतान जब अब्राह बनकर तेरे दिल के घर पर क़ब्ज़ा करना चाहता है तो तू भी "ला इलाहा इल्लल्लाह" की ज़र्बें लगा। ये वे कंकरियाँ बन जाएंगी जो शैतान अब्राह के लश्कर को बर्बाद करके रख देंगी।

दिल की सफ़ाई का ज़िम्मेदार कौन?

यहाँ एक सवाल ज़हन में पैदा होता है कि जब दिल अल्लाह तआला का घर है और अल्लाह तआला चाहते भी हैं कि दिल साफ़ हो तो वह खुद ही दिल को साफ़ क्यों नहीं फ़रमा देते? उलमा ने इसका जवाब भी लिखा है कि यह दिल अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का घर है। हम मेज़बान हैं और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त मेहमान हैं। लिहाज़ा घर की सफ़ाई की ज़िम्मेदारी मेज़बान पर हुआ करती है, मेहमान पर नहीं। इसलिए यह बंदे की ज़िम्मेदारी है कि वह दिल को साफ़ करे ताकि मेहमान उसमें तशरीफ़ ला सके।

रहमान का बसेरा

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त भी हैरान होते होंगे कि मेरे बंदे! मैंने तेरी

वजह से शैतान को तेरे घर यानी जन्नत से निकाल दिया, क्या तू मेरी वजह से शैतान को मेरे घर यानी अपने दिल से नहीं निकाल सकता? जब शैतान दिल से कूच कर जाएगा तो फिर उसमें रहमान का बसेरा होगा।

शैतान के लिए ख़तरनाक-तरीन हथियार

एक आम दस्तूर है कि जब आदमी अपने दुश्मन पर क़ाबू पा लेता है तो वह उससे सबसे पहले वह चीज़ छीनता है जो सबसे ज़्यादा ख़तरनाक होती है। मसलन जब फ़ौजी किसी दुश्मन को क़ाबू करें तो उसे कहते हैं, "हैंड्सअप।" हैंड्सअप का यह मतलब है कि तुम्हारे हाथ में ख़तरनाक चीज़ होगी, तुम हाथ ऊपर कर लो ताकि मैं इस ख़तरे की चीज़ से बच जाऊँ। क़ुरआन मजीद से मालूम होता है कि शैतान भी जब किसी पर ग़ालिब आता है तो उसको सबसे पहले अल्लाह तआला की याद से ग़ाफ़िल कर देता है क्योंकि इंसान के पास शैतान से बचने के लिए सबसे बड़ा हथियार अल्लाह तआला की याद है। इर्शाद फ़रमाया, ﴿استحوذ عليهم الشيطن فانساهم ذكر الله﴾ शैतान उन पर चढ़ आया और उसने अल्लाह की याद से भुला दिया। उसने उनसे वह हथियार छीना जो सबसे ज़्यादा ख़तरनाक था।

शैतान का फ़राइज़ पर हमला

जब शैतान इंसान को अल्लाह तआला की याद भुलाकर अपने क़दम आगे बढ़ाता है तो फिर इंसान की नमाज़ें और दूसरे फ़राइज़ छूट जाते हैं। इसीलिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने क़ुरआन पाक में

ज़िक्र का तज़्किरा नमाज़ से भी पहले फ़रमाया। मसलन इर्शाद बारी तआला है :

انما يريد الشيطن ان يوقع بينكم العداوة والبغضاء فى الخمر والميسر ويصدكم عن ذكر الله وعن الصلوة.

देखें कि यहाँ नमाज़ का तज़्किरा बाद में और ज़िक्र का तज़्किरा पहले किया क्योंकि उसका पहला वार ही ज़िक्र पर होता है। जब शैतान इंसान को ज़िक्र से ग़ाफ़िल कर देता है तो गोया पहली बाउन्ड्री लाइन टूट जाती है। उसके बाद दूसरी चोट इंसान के फ़राइज़ और इबादतों पर पड़ती है। इसलिए जो इंसान अपनी नमाज़ों को बचाना चाहे उसे चाहिए कि वह अल्लाह की याद के ज़रिए इन फ़राइज़ के चारों तरफ़ घेरा क़ायम कर ले क्योंकि अक़्लमंद इंसान वही होता है जो अपने दुश्मन को बाउंड्री से दूर ही रखे।

नमाज़ में भी नमाज़ से ग़फ़लत

जब शैतान इंसान का पीछा करता है और देखता है कि उसके दिल में अल्लाह तआला की याद नहीं है तो वह फिर उसकी नमाज़ में भी वसवसा डालता है। फिर क़याम में खड़े होने की हालत में भी अत्तहियात पढ़ रहे होते हैं और अत्तहियात की हालत में सूरः फ़ातिहा पढ़ रहे होते हैं। वे नमाज़ के अंदर होते हुए भी नमाज़ से बाहर होते हैं। कितनी अजीब बात है कि सारा दिन हम दुकान के अंदर होते हैं और जब नमाज़ शुरू करते हैं तो दुकान हमारे अंदर होती है। यह सिर्फ़ हाज़िरी होती है, हुज़ूरी नहीं होती। जबकि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को दोनों चाहिएं। इसलिए हाज़िरी भी

दी जाए और हुज़ूरी के साथ दी जाए क्योंकि फ़रमाया ﴿لا صلوة الا بحضور القلب﴾ कि हुज़ूरे क़ल्ब के बग़ैर नमाज़ होती ही नहीं है। हदीस पाक का मफ़हूम है, कुर्बे क़ियामत की अलामतों में से है कि मस्जिद तो नमाज़ियों से भरी हुई होगी लेकिन उनके दिल अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की याद से ग़ाफ़िल होंगे।

नमाज़ में गुनाहे कबीरा का मंसूबा

इंतिहाई अफ़सोस के साथ यह बात कहनी पड़ती है। एक नौजवान मेरे पास आया और कहने लगा, हज़रत! मैं नमाज़ भी पढ़ रहा था और कबीरा गुनाह करने का प्रोग्राम भी बना रहा था। नमाज़ की यह हालत ज़िक्र से ग़फ़लत की वजह से बनी। शैतान को पीछे नहीं रोका जाता इसलिए वह घर पर हमलावर होता है।

कैसी नमाज़ से सुकून मिलता है?

नमाज़ का असली मक़सद अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की याद है। चुनाँचे अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि ﴿اقم الصلوة لذكرى﴾ मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम कर और जब इंसान तअदील अरकान के साथ नमाज़ पढ़े, नमाज़ में ख़ुशू व ख़ुज़ू और अल्लाह की तरफ़ तवज्जोह हो तो उसे ऐसी नमाज़ से सुकून मिलता है। उसके मन की दुनिया रोशन होती है। फिर इंसान गुनाहों को भी छोड़ देता है। इसीलिए तो फ़रमाया, ﴿إِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ﴾ बेशक नमाज़ फ़हश और बुरे कामों से रोकती है। और अगर हमारी नमाज़ हमें गुनाहों से नहीं रोक रही तो मालूम हुआ कि अभी नमाज़ बनी ही नहीं है। जब नमाज़ नमाज़ बन जाएगी तो फिर यह बुरे कामों से रोककर रख देगी।

औलिया किराम जैसी नमाज़ पढ़ने की तमन्ना

हमें अपनी नमाज़ पर मेहनत करने की ज़रूरत है। अगर इंसान नमाज़ पर मेहनत करे तो नमाज़ की कैफ़ियत यक़ीनन बेहतर हो जाती है। इसी मक़सद के लिए लोग अल्लाह वालों से बैअत होते हैं। उनके साथ ताल्लुक़ रखते हैं और उनकी सोहबत में रहते हैं। हमारे अकाबिरीन में से एक बुज़ुर्ग के पास एक आलिम आए और कहने लगे, हज़रत! मैं आपकी ख़िदमत में इसलिए हाज़िर हुआ हूँ कि आप मुझे औलिया किराम जैसी एक नमाज़ पढ़ा दीजिए। आज तो लोग शेख़ के पास तावीज़ लेने के लिए आते हैं, कारोबार के लिए दुआएं करवाने के लिए आते हैं। कहते हैं बीवी बात नहीं मानती, बच्चा नहीं मानता, फ़लाँ बीमार है वग़ैरह वग़ैरह। इस मक़सद के लिए कौन आता है कि मेरी नमाज़ बन जाए, मेरे रग-रग और रेशे-रेशे से गुनाहों का खोट निकल जाए। काश! कोई इसकी भी तलब लेकर आता।

शेख़ की क़द्र

एक आदमी ने किसी बुज़ुर्ग को बताया कि मेरे शेख़ बड़े कामिल बुज़ुर्ग हैं। उन्होंने पूछा वह कैसे? वह कहने लगा कि मैंने उनको आज़मा लिया है, वह वाक़ई अल्लाह वाले हैं। उन्होंने पूछा कि तुमने कैसे आज़मा लिया है? वह कहने लगा कि एक दफ़ा मेरी बीवी रूठकर मैके चली गई। मैंने अपने ससुराल वालों की बड़ी मिन्नत समाजत की लेकिन वे अपनी बेटी को मेरे साथ भेजने से इंकार करते रहे। आख़िर मैं अपने शेख़ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और सारा मामला अर्ज़ कर दिया। उन्होंने मुझे एक

ऐसा अमल बता दिया कि मैंने जैसे ही वह अमल किया और बीवी को लेने के लिए गया तो उन्होंने बग़ैर किसी हील व हुज्जत के उसे मेरे साथ कर दिया। यह बात सुनकर वह बुज़ुर्ग अफ़सोस करने लगे और कहने लगे कि तूने अपने शेख़ की क़द्र ही नहीं की। वह कहने लगा, हज़रत! मेरे दिल में अपने शेख़ की क़द्र है, इसीलिए तो कह रहा हूँ कि वह बड़े कामिल बुज़ुर्ग हैं। हज़रत ने फ़रमाया, तुम्हें तो अपने शेख़ से अल्लाह के क़ुर्ब का सवाल करना चाहिए था लेकिन अफ़सोस के तुमने बीवी का क़ुर्ब मांगा।

इत्मिनाने क़ल्ब का वाहिद नुस्ख़ा

जो इंसान पाबन्दी के साथ ज़िक्र करता है अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उसको परेशानियों से बचा लेते हैं। इसीलिए क़ुरआने अज़ीम में फ़रमाया गया है ﴿اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ﴾ जान लो कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की याद के साथ दिलों को इत्मिनान वाबस्ता है। किसी शायर ने कहा है—

कितनी तस्कीन है वाबस्ता तेरे नाम के साथ
नींद कांटों पे भी आ जाती है आराम के साथ

एक और शायर कहते हैं—

न दुनिया से न दौलत से न घर आबाद करने से
तसल्ली दिल को होती है ख़ुदा को याद करने से

अल्लाह के नाम की बरकतें

अल्लाह के नाम में बड़ी अजीब लज़्ज़त और बरकत है। किसी

शायर ने कहा—

हम रटेंगे गरचे मतलब कुछ न हो
हम तो आशिक़ हैं तुम्हारे नाम के

जब इंसान अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का ज़िक्र करता है तो फिर अल्लाह के नाम से भी इंसान को मुहब्बत हो जाती है। इस नाम को लेते हुए दिल में ठंडक महसूस होती है।

الله الله ایں چہ شریں ہست نام
شیر و شکر می شود جانم تمام

यह अल्लाह अल्लाह कैसा प्यारा नाम है कि इसको लेने से मेरा जिस्म ऐसे बन जाता है जैसे दूध के अंदर शक्कर को मिला दिया जाता है।

अल्लाह अल्लाह कैसा प्यारा नाम है
आशिक़ों का मीना और जाम है

याद का मुक़ाम

इंसान के जिस्म में याद का मुक़ाम उसका दिल है। क्या कभी किसी माँ ने अपने बेटे को ख़त लिखा कि बेटा! मेरी हथेली तुझे बहुत याद करती है? नहीं, बल्कि वह यह कहती है कि मेरा दिल तुझे बहुत याद करता है। साबित हुआ कि याद करने का मुक़ाम इंसान का दिल है। इसलिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की याद भी दिल में होती है। जब दिल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की याद रच बस जाती है तो फिर अगर इंसान कामकाज में भी मशग़ूल हो तो उसका दिल फिर भी अल्लाह तआला की याद में मशग़ूल रहता

है। उसकी ज़िंदगी "दस्त बकार दिल बयार" (हाथ में काम में दिल यार के साथ) वाली बन जाती है।

ज़िक्र में पाबन्दी

अल्लाह वालों की ज़िंदगी ऐसी होती है कि वह एक लम्हे के लिए भी अल्लाह तआला की याद से ग़ाफ़िल नहीं होते। किसी शायर ने कहा—

गो मैं रहा रहीने सितम हाए रोज़गार
लेकिन तेरे ख़्याल से ग़ाफ़िल नहीं रहा

फिर इंसान को वह मुक़ाम मिल जाता है कि वह अल्लाह तआला को भुलाना भी चाहे तो नहीं भुला सकता।

दो आदमियों की दिली कैफ़ियत

हज़रत ख़्वाजा शहाबुद्दीन सहरवर्दी रह० फ़रमाते हैं कि मैं एक बार बैतुल्लाह शरीफ़ हाज़िर हुआ। मैंने एक आदमी को देखा कि वह ग़िलाफ़े काबा पकड़कर दुआ मांग रहा है। मैं उसके दिल की तरफ़ मुतवज्जेह हुआ तो देखा उसका दिल अल्लाह तआला से ग़ाफ़िल था। क्यों? इसलिए कि उसके दिल में यह ख़्याल था कि जो मेरे साथी आए हुए थे वे मुझे देख लें कि मैं ग़िलाफ़ काबा को पकड़कर दुआ मांग रहा हूँ।

उसके बाद मुझे मिना जाना पड़ा। वहाँ मैंने एक दुकानदार को देखा कि उसके चारों तरफ़ ग्राहकों की भीड़ थी। जब मैं उस के दिल की तरफ़ मुतवज्जेह हुआ तो देखा कि उसका दिल एक लम्हे के लिए भी अल्लाह तआला की याद से ग़ाफ़िल नहीं था।

एक इश्काल का जवाब

अगर कोई साहब यह पूछें कि अल्लाह वाले अल्लाह तआला की याद से एक लम्हे के लिए भी ग़ाफ़िल नहीं होते, इसकी वज़ाहत करें तो इसके जवाब के लिए एक मिसाल अर्ज़ कर देता हूँ।

मान लो कि आपके भाई को गार्ड की ख़ाली सीट के लिए इंटरव्यू के लिए बुलाया जाए तो जैसे ही पता चलेगा सब घर वाले बैठकर मशवरा करते हैं और कहते हैं कि जब आपसे यह पूछें तो यह जवाब देना, जब यह पूछें तो यह कहना। जब इंटरव्यू देने के लिए जा रहा होगा तो आप उसे समझाएंगे कि ज़रा ख़्याल रखना, वक़्त पर पहुँचना। अब वह तो इंटरव्यू देने क लिए चला जाएगा लेकिन आप अपने दफ़्तर भी जा रहे होंगे और अपने भाई के लिए दुआ भी कर रहे होंगे कि मेरा भाई ठीक-ठीक जवाब दे। यूँ आपका दिल गार्ड के दफ़्तर में अटका हुआ होगा। आप दफ़्तर में पहुँच जाएंगे मगर दिल में यही ख़्याल छाया रहेगा। आख़िर आप तो सोचेंगे कि अब तो टाईम हो गया होगा, मेरा भाई घर पहुँच गया होगा। फिर आप फ़ोन करेंगे, आप अपनी अम्मी से सब से पहले यही पूछेंगे कि भाई का क्या बना है? अगर आप आठ घंटे अपने भाई के सोच में गुज़ार सकते हैं तो अल्लाह वालों के दिल भी हर वक़्त अल्लाह की याद में रह सकते हैं। वे दुनिया के काम-काज भी करते हैं, खाते पीते भी हैं, सोते जागते भी हैं, चलते फिरते भी हैं मगर उनका दिल अल्लाह की याद से एक लम्हे के लिए भी ग़ाफ़िल नहीं हो पाता।

ज़िक्रे ख़फ़ी की फ़ज़ीलत

ज़िक्रे जहरी और ज़िक्रे ख़फ़ी दोनों हदीस से साबित हैं। हदीस

पाक में आया है कि फ़रिश्ते जिस ज़िक्र को सुनते हैं यानी जो ज़बान से किया जाता है, उससे वह ज़िक्र जिसको वे नहीं सुनते यानी जो दिल से किया जाता है सत्तर गुना फ़ज़ीलत रखता है। उसे ज़िक्रे क़ल्बी, ज़िक्रे सिर्री, ज़िक्रे ख़ामिल और ज़िक्रे ख़फ़ी कहते हैं। इसको रुजू इलल्लाह, इनाबतइलल्लाह और तवज्जोह इलल्लाह भी कहते हैं।

तवज्जेह इलल्लाह पैदा करने का ज़रिया

तवज्जेह इलल्लाह पैदा करने के लिए इब्तिदा में सालिक (मुरीद) को कहा जाता है कि तुम "अल्लाह", "अल्लाह" करो। जैसे क़ुरआन मजीद पढ़ने के लिए बच्चे को शुरू में नूरानी क़ायदा पढ़ाते हैं। अब कोई आदमी कहे कि नूरानी क़ायदे का तज़्किरा तो हदीस शरीफ़ में कहीं नहीं। उसको कहेंगे अरे बेवक़ूफ़ इंसान! यह नूरानी क़ायदा बच्चे को समझाने के लिए तालीम का एक ज़रिया है। अगर यह नहीं पढ़ाएंगे तो बच्चे को ऐराब की पहचान कैसे होगी। उसे यह पढ़ाने के बाद क़ुरआन पढ़ाना आसान होगा। इसी तरह यह जो "अल्लाह", "अल्लाह" का ज़िक्र करते हैं यह ज़िक्र भी इंसान के दिल में तवज्जोह इलल्लाह पैदा करने का ज़रिया होता है। गोया शुरू में नए को "अल्लाह", "अल्लाह" का ज़िक्र दवा के तौर पर कराया जाता है।

अल्लाह! अल्लाह! करने का शरई सुबूत

कुछ लोग कहते हैं कि "अल्लाह", "अल्लाह" का ज़िक्र किसी हदीस से तो साबित नहीं है हालाँकि हदीस शरीफ़ में साफ़

लफ़्ज़ों में फ़रमाया गया है :

﴿لا تقوم الساعة حتی یقال فی الارض اللہ اللہ.﴾

अब यहाँ दो बार "अल्लाह", "अल्लाह" का लफ़्ज़ आया है। अगर हदीस शरीफ़ में सिर्फ़एक दफ़ा आता ﴿حتی یقال فی الارض اللہ.﴾ तो कोई बात नहीं थी मगर हदीस में "अल्लाह", "अल्लाह" आया है। क्योंकि नबी अलैहिस्सलाम ने दो दफ़ा फ़रमाया "अल्लाह", "अल्लाह", इसलिए अगर मैं भी बार-बार दो-दो दफ़ा यही कह दूँ, "अल्लाह", "अल्लाह", "अल्लाह", "अल्लाह", "अल्लाह", "अल्लाह" तो इसमें कौन सा इश्काल है। इसमें घबराने की कोई बात नहीं कि "अल्लाह", "अल्लाह" क्यों कहते हैं।

"अल्लाह", "अल्लाह" करने का मज़ा

देखिए कि बच्चा जब रोता है तो वह रोकर क्या कहता है? वह "अम्मी", "अम्मी", "अम्मी" ही कहता है नाँ या कोई और लफ़्ज़ कहता है? क्या आपने कभी किसी छोटे बच्चे को सुना है कि वह कहे, "ऐ मेरी प्यारी अम्मी", "ऐ मेरी प्यारी ख़ूबसूरत अम्मी", "ऐ मेरी बड़ी अच्छी अम्मी।" वह तो सिर्फ़ "अम्मी", "अम्मी" कहता है। "अल्लाह", "अल्लाह" कहने की नौइय्यत यही है जबकि "अल्हम्दुलिल्लाह", "सुब्हानअल्लाह", "अल्लाहु अकबर" सिफ़ाते इलाही का तज़्किरा है। बच्चा जब "अम्मी", "अम्मी" पुकारता है तो बच्चे की ज़बान से अम्मी वाला मुहब्बत से निकला हुआ यह लफ़्ज़ माँ के कानों तक पहुँचता है तो उसके दिल के तार छिड़ जाते हैं। वह जितने भी ज़रूरी काम में लगी हो,

जितनी दूर हो, वह नाम सुनते ही बच्चे की तरफ़ ध्यान करती है और उसको सीने से लगा लेती है। बिल्कुल इसी तरह जब बंदा "अल्लाह", "अल्लाह" कहता है तो वह अल्लाह की आग़ोशे मुहब्बत में पहुँच जाता है। दरअसल हमें अल्लाह कहने का मज़ा ही नहीं आया। जिनको मज़ा आता है उनके मुँह में मिठास आ जाती है। ग़ौर करें कि मिठाई और खटाई दो लफ़्ज़ हैं। अगर इन लफ़्ज़ों को ज़बान पर लाया जाए तो मुँह में पानी आ जाता है तो क्या अल्लाह के लफ़्ज़ से दिल में मज़ा नहीं आता। यह अजीब बात है कि अचार का नाम लें तो मुँह में पानी आ जाता है, अल्लाह का नाम क्या इतना भी असर नहीं रखता कि इससे दिल में ठंडक पड़ जाए।

बू अली सीना को दो टूक जवाब

ख़्वाजा अबुल हसन ख़रक़ानी रह० एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। उनकी सोहबत में बूअली सीना आए। वह बड़े मुफ़क्किर आदमी थे। हज़रत ने "अल्लाह", "अल्लाह" के ज़िक्र के फ़ज़ाइल गिनवाए कि इससे इंसान के दिल को सुकून मिलता है, परेशानियाँ दूर होती हैं, आफ़तों से इंसान महफ़ूज़ होता है, ईमान मज़बूत होता है, सेहत मिलती है, रिज़्क़ में बरकत होती है, उम्र में बरकत होती है, इल्म में बरकत होती है और अल्लाह तआला की तरफ़ से रहमतें नाज़िल होती है। उन्होंने इस उनवान से इतने फ़ज़ाइल गिनवाए कि बूअली सीना बड़े हैरान हुए। बूअली सीना ने बाद में पूछा, हज़रत सिर्फ़ एक लफ़्ज़ का ज़िक्र करने से इतनी सारी फ़ज़ीलतें मिलती हैं?

ये हज़रात माहिर होते हैं। चुनाँचे ख़्वाजा अबुल हसन ख़रक़ानी रह० ने उन्हें उसी भरी महफ़िल में फ़रमाया, "ऐ ख़र! तू चे दानी" यानी ऐ गधे! तुझे क्या पता। जब भरी महफ़िल में गधे का लफ़्ज़ सुना तो हकीम साहब को तो पसीना आ गया कि इतना मशहूर व मारूफ़ बंदा हूँ और मुझे लोगों के सामने गधा कहकर रुसवा कर दिया गया। जब उसे पसीना आया और उसकी हालत बदली तो हज़रत ने पूछा, हकीम साहब! आपकी तो हालत बदल गई, क्या वजह है? उन्होंने कहा, जी आपने लफ़्ज़ ही ऐसा बोला है। हज़रत ने फ़रमाया, मैंने गधे का लफ़्ज़ बोला है और इस गधे की लफ़्ज़ ने तेरी हालत को बदलकर रख दिया। क्या अल्लाह का नाम तेरी हालत को नहीं बदल सकता। हक़ीक़त यह है कि हम अल्लाह के ज़िक्र की लज़्ज़त से अंजान होते हैं जिसकी वजह से यह सवाल दिल में पैदा होते हैं–

ख़ुदा तुझे किसी तूफ़ान से आशना कर दे
के तेरे बहर की मौजों में इज़्तिराब नहीं

जब तबियत में कुछ ताल्लुक़ होता है तो नाम सुनकर कान खड़े होते हैं या नहीं होते। आज तो बच्चे की मंगनी हो तो छेड़ने के लिए एक दूसरे का नाम लेते हैं। क्या नाम लेने से असर होता है या नहीं होता। मर्द हो या औरत, नाम ले तो फिर तबियतों पर असर होता है। अरे! यह मामूली सा ताल्लुक़ और इसका इतना असर होता है, अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से तो इंसान का बहुत गहरा ताल्लुक़ होता है, उसका नाम लेने से भी बंदे के दिल पर असर होता है और जब वह बंदा अल्लाह तआला का नाम लेता है तो

फिर परवरदिगार की तरफ़ से बंदे के ऊपर शफ़क़त और रहमत आती है।

फ़िक्र के सबक़

जब इंसान को तवज्जेह इलल्लाह नसीब हो जाती है तो वह फ़िक्र बन जाती है जो ज़िक्र से अफ़ज़ल होती है। सिलसिला आलिया नक़्शबंदिया के वे लोग जिन्होंने असबाक़ किए हुए हैं वे समझते हैं कि सातवें सबक़ तक तो ज़िक्र करते हैं, उसके बाद तहलील के दो सबक़ हैं। यहाँ पर "अल्लाह", "अल्लाह" का ज़िक्र ख़त्म हो जाता है और फ़िक्र के असबाक़ शुरू हो जाते हैं। क्योंकि इंसान का दिल मख़्लूक़ में अटका हुआ होता है, इसलिए मख़्लूक़ से उसका दिल छुड़ाने के लिए मशाइख़ नए आदमी को "अल्लाह", "अल्लाह" के ज़िक्र पर लगाते हैं यहाँ तक कि इस बंदे की ज़बान पर और दिल में सिर्फ़ अल्लाह की याद होती है। वह हर तरफ़ से कटकर अल्लाह तआला के साथ जुड़ जाता है। फिर इसको भी धोने के लिए "ला इलाहा इल्लल्लाह" का ज़िक्र करवाते हैं और जब बिल्कुल धुल जाते हैं फिर मुराक़बा करवाते हैं जिसमें उसे किसी नाम का ज़िक्र करने की ज़रूरत नहीं होती। लिहाज़ा दसवें सबक़ से लेकर पैंतिसवें सबक़ तक जितने मुराक़बे हैं उनमें नाम का ज़िक्र नहीं किया जाता।

"ला इलाहा इल्लल्लाह" का ज़िक्र

हमारे सिलसिला आलिया में एक बुज़ुर्ग थे उनके पास एक आदमी आया। उसने कहा, "ला इलाहा इल्लल्लाह" का ज़िक्र

किसी हदीस में नहीं मिलता। हज़रत ने उसे फ़रमाया, क़रीब आओ। जब वह क़रीब आया तो हज़रत ने फ़रमाया, क्या यह बात हदीस पाक में है कि जब कोई आदमी मरने लगे तो तलक़ीन करने की ग़र्ज़ से उसके पास "ला इलाहा इल्लल्लाह" ऊँची आवाज़ से पढ़ा जाए ताकि वह भी सुनकर पढ़ ले? उसने कहा, जी हाँ यह तो हदीस पाक में आया है। इस पर उन्होंने फ़रमाया कि मैं अपने नफ़्स को मरने के क़रीब पाता हूँ। इसलिए हर लम्हे उसे तलक़ीन करने की नीयत से "ला इलाहा इल्लल्लाह" कहता हूँ।

तजल्ली ज़ाती बर्क़ी और तजल्ली ज़ाती दाएमी

यह बात भी ज़हन में रखना कि जो इंसान सिफ़ाती नामों का ज़िक्र ज़्यादा करता है मसलन सुब्हानअल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह, या हय्यू या क़य्यूम करता है तो जब उसको फ़ना के मुक़ाम पर अल्लाह तआला का वस्ल हासिल होता है तो क्योंकि उसके मन में सिफ़ाती नामों का तज़्किरा होता है। इसलिए उसे थोड़ी देर के लिए अल्लाह तआला की ज़ात का दीदार नसीब होता है और फिर उसके ऊपर सिफ़ात के पर्दे आ जाते हैं। ऐसा सालिक अल्लाह तआला को उसकी सिफ़ात के पर्दों में से देखता है। और जो सालिक सिर्फ़ "अल्लाह", "अल्लाह" का ज़िक्र करने वाला होता है उसे वस्ले उरयानी नसीब हो जाता है यानी जब उसको दीदार नसीब होता है तो सिफ़ात के पर्दे नहीं आते। इसलिए हमारे सिलसिले नक़्शबंदिया के एक बड़े बुज़ुर्ग हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० ने एक इस्तिलाह (Term) इस्तेमाल की है कि जो लोग सिफ़ात का ज़िक्र करते हैं जब उनको अल्लाह तआला की तजल्ली नसीब होती है तो उन्हें "तजल्ली ज़ाती बर्क़ी" नसीब

होती है यानी उन पर अल्लाह तआला की ज़ात की तजल्ली बर्क़ (बिजली) की तरह होती है और उसके बाद सिफ़ात के पर्दे आ जाते हैं। गोया दुल्हन ने कपड़ा हटाकर जलवा दिखाया और फिर नक़ाब डाल लिया लेकिन जो ज़ाती नाम (अल्लाह, अल्लाह) का ज़िक्र करने वाले होते हैं उनको "वस्ले उरयानी" नसीब होता है यानी एक दफ़ा चेहरे से जमाल के लिए नक़ाब हटा देते हैं तो हमेशा चेहरे का दीदार सालिक को नसीब रहता है। इसको "तजल्ली ज़ाती दाएमी" कहते हैं।

अब आम आदमी तो यही कहता है कि यह नक़्शबन्दिया हज़रात, सुब्हानअल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह और "या हय्यू या क़य्यूम" क्यों नहीं कहते? भई! आप को ये मारिफ़त कैसे समझाएं। यह तो वे लोग जानते हैं जो अपने दिल की आँख से अल्लाह तआला का दीदार करते हैं। और उनको पता चलता है कि अस्माए सिफ़ात के जो पर्दे ऊपर आ जाते हैं उस वक़्त वे इंसान के लिए कितनी उलझन का बाइस बनते हैं। इसीलिए हमारे मशाइख़ ने सिर्फ़ अल्लाह के ज़िक्र के बारे में कहा क्योंकि इर्शादे बारी तआला भी है :

﴿قل الله ثم ذرهم فی خوضهم یلعبون.﴾

नंबर दो मजनूँ

आज हमारे दिल परेशानियों से भरे पड़े हैं। इसकी बुनियादी वजह यह है कि हम ज़िक्र की तरफ़ तवज्जोह नहीं करते। जिंससे पूछें कि क्या मामूलात करते हैं? जवाब मिलता है कि हज़रत! वक़्त नहीं मिलता। यह अजीब बात है कभी किसी ने यह नहीं

कहा कि मैं खाना इसलिए नहीं खाता कि वक़्त नहीं मिलता। खाना बाक़ायदगी से खाएंगे। अगर कोई काम न कर सकेंगे तो वह अल्लाह की याद है। मजनूँ से अगर कोई पूछे कि क्या तुम लैला को याद करते हो और वह जवाब दे कि मुझे वक़्त नहीं मिलता तो आप क्या कहेंगे कि यह कैसा मजनूँ है। वह तो फिर दो नंबर मजनूँ हुआ। आज हम भी नंबर दो मजनूँ हैं।

ज़िक्रे क़ल्बी का सुबूत

ज़रूरत इस बात की है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की याद हर वक़्त दिल में बसी रहे बल्कि यह हुक्म दिया गया है कि हम हर वक़्त ज़िक्र में मशग़ूल रहें। अम्र (हुक्म) का सेग़ा है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त फ़रमाते हैं ﴿واذكر ربك فى نفسك﴾ ज़िक्र कर तू अपने रब का अपने नफ़्स में। ﴿اى فى قلبك﴾ यानी अपने दिल में, अपनी सोच में, अपने ध्यान में, अपने मन में अल्लाह को याद करे। ऐ अल्लाह! कैसे याद करें? फ़रमाया, ﴿تضرعا وخيفة﴾ गिड़गिड़ाते हुए और बहुत ही ख़ामोशी के साथ। मारिफ़ुल क़ुरआन में हज़रत मुफ़्ती शफ़ी साहब रह० फ़रमाते हैं कि ﴿تضرعا وخيفة﴾ के अल्फ़ाज़ से ज़िक्रे क़ल्बी का सुबूत मिलता है। गोया हमें ज़िक्रे क़ल्बी का हुक्म मिला है।

"अल्लाह", "अल्लाह" करने का हुक्म

एक अजीब बात यह भी है कि अल्लाह तआला के नाम का ज़िक्र करने का हुक्म दिया गया है। अगर हम से कोई पूछे कि हमारे रब का क्या नाम है तो हम जवाब देंगे, अल्लाह। अल्लाह तआला क़ुरआन अज़ीमुश्शान में इर्शाद फ़रमाते हैं ﴿واذكر اسم

﴿ربك﴾ और ज़िक्र कर तू अपने रब के नाम का। रब का नाम क्योंकि अल्लाह है इसलिए अल्लाह तआला फ़रमाना चाहते हैं कि तुम अल्लाह का ज़िक्र करो। मालूम हुआ कि "अल्लाह", "अल्लाह" का ज़िक्र करना क़ुरआन मजीद से साबित है।

अब्दे मुनीब और क़ल्बे मुनीब

हमें हर वक़्त अपने दिल में अल्लाह का ध्यान रखना चाहिए। इसको "इनाबत इलल्लाह" कहते हैं। ऐसे क़ल्ब को "क़ल्बे मुनीब" कहते हैं। और ऐसे बड़े को अब्दे मुनीब कहते हैं। चुनाँचे इर्शादे बारी तआला है ﴿منيبين اليه واتقوا﴾ एक और जगह फ़रमाया :

افلم ينظروا الى السماء فوقهم كيف بنينها وزينها ومالها من فروج.
والارض مددنها والقينا فيها رواسى وانبتنا فيها من كل زوج
بهيج. تبصرة وذكرى لكل عبد منيب.

देखा जब दिल में अल्लाह की याद होती है तो फिर बंदा मुनीब बन जाता है और अल्लाह तआला ऐसा ही दिल चाहते हैं। इसीलिए फ़रमाया :

يوم نقول لجهنم هل امتلآت وتقول هل من مزيد. وازلفت
الجنة للمتقين غير بعيد. هذا ما توعدون لكل اواب حفيظ.
من خشى الرحمٰن بالغيب وجاء بقلب منيب.

परवरदिगार को ऐसा क़ल्बे मुनीब चाहिए यानी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को ऐसा दिल चाहिए जिसमें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ही आया हुआ हो। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ही समाया हुआ हो बल्कि यूँ कहूँ कि जिसमें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ही छाया हुआ हो।

हर हाल में अल्लाह का ज़िक्र

ऐसे लोग जो लेटे बैठे और चलते फिरते हर वक़्त अल्लाह तआला को याद करें, उन्हें अक़्लमंद कहा गया है, जवाँमर्द कहा गया है। चुनाँचे अल्लाह रब्बुलइ़ज़्ज़त इर्शाद फ़रमाते हैं ﴿رجال لا تلهيهم تجارة ولا بيع عن ذكر الله﴾ कि मेरे जवाँ मर्द बंदे वे हैं जो जिन्हें तिजारत और ख़रीद व फ़रोख़्त अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल नहीं करती। ﴿واقام الصلوة وايتاء الزكوة يخافون يوما تتقلب فيه القلوب والابصار﴾ और एक जगह फ़रमाया ﴿الذين يذكرون الله قيام وقعودا وعلى جنوبهم﴾ वे लोग जो खड़े हुए, बैठे हुए और लेटे हुए अल्लाह रब्बुलइ़ज़्जत को याद करते हैं। अब देखिए कि बुनियादी तौर पर इंसान की तीन हालतें ही होती हैं। या खड़ा होगा या बैठा होगा या फिर लेटा होगा। यहाँ फ़रमाया कि जो तीनों हालतों में अल्लाह को याद करते हैं तो मालूम हुआ कि यूँ कहना चाहते हैं कि जो लोग हर हाल में अल्लाह को याद करते हैं। ऐसे लोगों को क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला ऊलुल अलबाब यानी अक़्लमंद और दानिशमंद कहते हैं। और वाक़ई जब दिल में लगी हुई हो फिर इंसान उठते बैठते आहें भरता है और ये आहें मुहब्बत की वजह से निकलती हैं। उठते हुए भी अल्लाह, बैठते हुए भी अल्लाह, लेटे हुए भी अल्लाह। बस अल्लाह उसके दिल में बस रहा होता है जिसकी वजह से उसकी ज़बान पर भी उसी का ज़िक्र होता है।

ज़िक्र से ग़फ़लत की सज़ा

आम लोगों का तो क्या कहना आजकल तो ख़ास को भी देखा गया है कि वह ज़िक्र को सिर्फ़ एक नफ़्ली काम समझते हैं। अगर

कोई आदमी मामूलात कर रहा हो तो उलमा और तलबा उस को देखकर कहेंगे कि यह तो बस तस्बीह फेर रहा है यानी उन के दिलों में उसकी कोई अहमियत नहीं होती हालाँकि क़ुरआन पाक में इसकी इतनी अहमियत बताई गई है कि शैतान से बचाव नसीब होता है। और जो मुख़्तलिफ़ आयतें आपके सामने पेश की हैं, इन में ज़िक्र की गयीं नेमतें इंसान को ज़िक्र करने के सदके में मिलती हैं। जो ज़िक्र नहीं करेगा उसे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से सज़ा भी मिलेगी। चुनाँचे इर्शाद फ़रमाया, ﴿ومن يعرض عن ذكر ربه يسلكه عذابا صعدا﴾ और जो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की याद से मुँह मोड़ेगा उसको चढ़ता हुआ अज़ाब मिलेगा। यह नहीं कि मन मर्ज़ी की बात है बल्कि अगर ग़फ़लत बरतेंगे तो सज़ा मिलेगी। परवरदिगार आलम नाराज़ होंगे कि मेरी याद से ग़फ़लत में ज़िंदगी क्यों गुज़ारी।

یک چشم زدن غافل ازاں شاہ نہ باشی
شاید کہ نگاہ کند آگاہ نہ باشی

ऐ दोस्त! तू एक लम्हे के लिए भी उस शाह से ग़ाफ़िल न हो। हो सकता है कि वह तेरी तरफ़ निगाह करे और तू उसकी तरफ़ मुतवज्जेह न हो।

मेहनत करने से इंसान को यह चीज़ नसीब हो जाती है। जिस तरह दुनिया का हर काम मेहनत से आसान हो जाता है, इसी तरह ज़िक्र भी मेहनत करने से आसान हो जाता है।

हज़रत मूसा और हज़रत हारून अलैहिमस्सलाम को ज़िक्र की हिदायत

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हज़रत मूसा और हज़रत हारून

अलैहिमस्सलाम को नबुव्वत से सरफ़राज़ फ़रमाया और फ़िरऔन की तरफ़ भेजा। लेकिन भेजते वक़्त हिदायत फ़रमाई कि ﴿اذهب انت اخوك بايتى ولا تنيا فى ذكرى﴾ आप और आपका भाई जाएं मेरी निशानियों (मौजिज़ों) को लेकर लेकिन तुम दोनों मेरी याद से ग़ाफ़िल न होना। अब बताइए जब अल्लाह तआला अंबिया किराम को फ़रमा रहा रहे हैं कि मेरे ज़िक्र से ग़ाफ़िल न होना। फिर अगर तलबा ज़िक्र से ग़ाफ़िल फिरेंगे तो वे अंबिया किराम के वारिसों में कैसे शामिल होंगे। दावत व तबलीग़ का काम करोगे और ज़िक्र से ग़ाफ़िल होकर फिरोगे तो फिर यह कैसे कारे नबुव्वत बनेगा। इसकी बड़ी अहमियत है।

हज़रत मुफ़्ती ज़ैनुल आबिदीन दामत बरकातुहुम का फ़रमान

इस आजिज़ ने हज़रत मौलाना मुफ़्ती ज़ैनुल आबिदीन दामत बरकातुहुम से यह बात राइविन्ड के सालाना इज्तिमा में ख़ुद सुनी है और यह आजिज़ कम व बेश उन्हीं अलफ़ाज़ में नक़ल कर रहा है और इस जगह पर बैठकर कोई आदमी झूठ बोलने का बोझ अपने सर पर नहीं ले सकता। फ़रमाया, "जब तुम सीखकर ज़िक्र नहीं करोगे, उस वक़्त तक तुम्हें तबलीग़ में जूतियाँ चटख़ाने के सिवा कुछ नहीं मिलेगा।" मालूम हुआ कि ज़िक्र के साथ इस काम की बरकत बढ़ जाती है और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को मदद शामिल हाल हो जाती है।

मैदाने जंग में ज़िक्रुल्लाह की तलक़ीन

किसी को वाअज़ व नसीहत करना दावत इलल्लाह का पहला

क़दम है और उसका इंतिहाई क़दम यह होता है कि जब सामने वाला दावत को क़ुबूल नहीं करता "असलिम तसलिम" पर अमल नहीं करता तो फिर इंसान कहता है कि तलवार हमारा और तुम्हारा फ़ैसला करेगी। यह आख़िरी नुक्ता होता है जिस पर इंसान अपनी जान की बाज़ी लगा देता है। देखिए कि वे मुजाहिदीन जान की बाज़ी लगा रहे हैं, उनको ऐन हालते जिहाद में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ज़िक्र का हुक्म फ़रमा रहे हैं। क़ुरआन अज़ीमुश्शान में फ़रमाया ﴿يايها الذين امنوا﴾ ऐ ईमान वालो! ﴿اذا لقيتم فئة فاثبتوا﴾ जब तुम्हारा काफ़िरों की किसी जमाअत के साथ आमना सामना हो तो डट जाओ, ﴿واذكروا الله كثيرا﴾ तुम अल्लाह का ज़िक्र कसरत से करना, ﴿لعلكم تفلحون﴾ ऐसा करने से कामयाबी तुम्हारे क़दम चूमेगी। अब बताइए कि जब गर्दनें कट रही हैं, ख़ून के फ़व्वारे छूट रहे हैं और जान की पड़ी हुई है उस वक़्त भी फ़रमाया कि कसरत से अल्लाह को याद करो। मान लो और मुक़द्दर से यूँ फ़रमाते ﴿يايها الذين امنوا اذا لقيتم فئة فاثبتوا لعلكم تفلحون﴾ तो माने के एतिबार से फ़िक़रा पूरा हो जाता मगर नहीं दर्मियान में ज़िक्र की बात रखी। मालूम हुआ कि हमें ज़िक्र के बग़ैर किसी मैदान में भी कामयाबी नहीं मिल सकेगी।

फ़ज़्कुरूनी अज़्कुरकुम का एक मफ़हूम

इशर्दि बारी तआला है, फ़ज़्कुरूनी अज़्कुरकुम कि तुम मुझे याद करो मैं तुम्हें याद करूंगा। तुम मुझे फ़र्श पर याद करो मैं तुम्हें अर्श पे याद करूंगा। इसलिए हदीस पाक में आता है ﴿فان ذكرني في نفسه ذكرته في نفسي﴾ अगर मेरा बंदा मुझे अपने दिल में याद करता है तो मैं भी इस बंदे को अपने दिल में याद करता हूँ। अब

ज़रा सोचें कि आदमी अपने महबूब का तसव्वुर करके कितना ख़ुश होता कि जब मैं उसे याद करूं तो मेरा महबूब भी मुझे याद कर रहा है। अगर दुनिया में किसी से ताल्लुक़ हो तो पूछते हैं कि हमें भी याद किया या नहीं। अरे! दुनिया के लोगों से तो पूछना पड़ता है कि हमें भी याद किया या नहीं। लेकिन मेरा मौला ऐसा करीम है कि उसने अपने बंदों को बतला दिया कि अगर तुम मुझे अपने दिल में याद करोगे तो मैं भी तुम्हें अपने दिल में याद करूंगा ﴿وان ذكرني في ملاء ذكرته ملاء خير منه﴾ अगर वे मज्लिस में बैठकर याद करता है तो मैं इससे बेहतर फ़रिश्तों की मज्लिस में बैठकर उसे याद करता हूँ ﴿وان اتاني يمشي اتيته هروله﴾ और अगर वह मेरी तरफ़ चलकर आता है तो मेरी रहमत उसकी तरफ़ दौड़कर जाती है ﴿فاذكروني اذكركم﴾ के लफ़्ज़ों को समझने की ज़रूरत है। जैसे कहते हैं नाँ कि दो लफ़्ज़ों में बात समझा दी, ऐसे ही समझिए कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इन दो लफ़्ज़ों में बात समझा दी।

एक इल्हामी बात

हमारी यह हालत है कि हमें अगर कोई थोड़ी सी भी तंगी और परेशानी आए तो उसी वक़्त हम परवरदिगार के शिकवे करना शुरू कर देते हैं। एक बुज़ुर्ग फ़रमाया करते थे कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इल्हाम फ़रमाया कि मेरे उन बंदों से कह दो कि अगर उनको रिज़्क़ की तंगी आती है तो फ़ौरन अपने दोस्तों की महफ़िल में बैठकर मेरे शिकवे शुरू कर देते हैं और तुम्हारे आमालनामे रोज़ाना गुनाहों से भरे हुए आते हैं लेकिन मैं फ़रिश्तों में बैठकर तुम्हारे शिकवे तो नहीं किया करता।

फ़ज़्कुरूनी अज़्कुरकुम का दूसरा मफ़हूम

फ़ज़्कुरूनी अज़्कुरकुम का एक और मफ़हूम भी बनता है कि अगर तुम मेरी इताअत करोगे तो मैं मख़्लूक़ को तुम्हारी इताअत का हुक्म दूंगा। वाक़ई ऐसा ही होता है। ताबेईन में से एक बुज़ुर्ग फ़रमाया करते थे कि मैंने जब भी अल्लाह तआला के हुक्मों की नाफ़रमानी की, मैंने उसका फ़ौरी असर अपनी बीवी में, अपने बच्चों में, अपने मातहतों में या अपनी सवारी के जानवर में देखा यानी मैंने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की नाफ़रमानी की और मेरे मातहत लोगों ने मेरी नाफ़रमानी की। गोया अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तुम मेरे मुतीअ बन जाओ, मैं अपनी मख़्लूक़ को तुम्हारा ताबेदार बना दूंगा। यही वजह है कि वही बातें बंदा किताब में पढ़ता है तो उस पर असर नहीं होता लेकिन वही बात अगर किसी अल्लाह वाले की ज़बान से सुन लेता है तो उसे अमल की तौफ़ीक़ हो जाती है क्योंकि उनमें अमल होता है। इसलिए यह उसकी बरकत होती है कि उनकी बात सुनते ही इंसान को अमल की तौफ़ीक़ नसीब हो जाती है।

जन्नत के साथी से मुलाक़ात

शेख़ अब्दुल वाहिद रह० फ़रमाते हैं कि एक बार मैंने अल्लाह तआला से दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह आपने जन्नत में जिसको मेरा साथी बनाना है दुनिया में ही मेरी उससे मुलाक़ात करा दीजिए। फ़रमाते हैं कि मुझे ख़्वाब में बताया गया कि हब्शा की रहने वाली एक औरत मैमूना है जो जन्नत में तुम्हारी साथी बनेगी। लिहाज़ा मैं उस बस्ती की तरफ़ चल पड़ा। जाकर बस्ती वालों से पूछा तो

उन्होंने कहा कि वह तो बकरियाँ चराती है और इस वक़्त बाहर कहीं बकरियाँ चरा रही होगी। फ़रमाते हैं कि मैं चल पड़ा। जब मैंने बस्ती से बाहर निकलकर देखा तो हैरान हुआ कि बकरियाँ एक ही जगह पर चर रही हैं और इधर उधर भागती नहीं हैं और एक औरत पेड़ के नीचे खड़ी नमाज़ पढ़ रही है। जब मैंने ग़ौर किया तो मैंने देखा कि जहाँ बकरियाँ चर रही थीं वहाँ उस चारागाह के किनारे कुछ भेड़िए बैठे नज़र आए। उन भेड़ियों की वजह से वे बकरियाँ कहीं बाहर नहीं भाग रही थीं और एक जगह पर ही चर रही थीं। जब उस औरत ने सलाम फेरा और मुझे देखा तो कहने लगी अब्दुल वाहिद! अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने मुलाक़ात की वायदा की जगह तो जन्नत बनाई है। इसलिए तुम दुनिया में कैसे आ गए? मैंने कहा कि मैंने दुआ मांगी थी जो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के यहाँ क़ुबूल हो गई। मगर अब मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हूँ कि मैंने ऐसा मंज़र तो कभी नहीं देखा कि आप नमाज़ पढ़ रही थीं, बकरियाँ चर रही थीं और भेड़िए बैठे हुए थे और वे बकरियों को कुछ नहीं कह रहे थे। मुझे इसका राज़ समझ में नहीं आ रहा है। वह कहने लगीं अब्दुल वाहिद! यह बात समझनी आसान है कि जिस दिन से मैंने अपने परवरदिगार से सुलह कर ली है उस दिन से भेड़ियों ने मेरी बकरियों से सुलह कर ली है। मालूम हुआ कि "फ़ज़कुरूनी उज़्कुरुकुम" का एक मलतब यह बना कि ऐ बंदो! तुम मुझ से सुलह कर लो, मैं मख़्लूक़ की तुम्हारे साथ सुलह करवा दूँगा।

फ़ज़्कुरूनी अज़्कुरकुम का तीसरा मफ़हूम

फ़ज़्कुरूनी अज़्कुरकुम का एक मतलब यह भी होता है कि तुम

मेरी इज़्ज़त करो मैं तुम्हें इज़्ज़तें अता करूंगा। हज़रत बशरे हाफ़ी रह० का मशहूर वाक़िआ है कि एक बार कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे, रास्ते में चलते हुए उन्होंने एक काग़ज़ का टुकड़ा पड़ा हुआ देखा जिस पर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का नाम लिखा हुआ था। जब देखा तो फ़ौरन मुतवज्जेह हुए। लिहाज़ा उसे उठाकर साफ़ किया और उसको ऊपर किसी जगह पर रख दिया। अल्लाह तआला ने उनक दिल में इल्हाम फ़रमाया, बशरे हाफ़ी! तुमने मेरे नामों को पाँव से अपने सर तक बुलन्द किया अब मैं तुम्हारे नाम को फ़र्श से अर्श तक बुलन्द कर दूंगा।

निस्बत का एहतिराम

मालूम हुआ कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से जिस चीज़ की निस्बत हो उस चीज़ का भी एहतिराम करना चाहिए। मसलन रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अदब व एहतिराम दिल में हो कि आप अल्लाह के महबूब हैं। इसी तरह कलामुल्लाह। क़ुरआन मजीद का अदब करना भी ज़रूरी है लेकिन अफ़सोस कि बाज़ जगहों पर देखा गया है कि वे मस्जिद के अंदर क़ुरआन मजीद पढ़ रहे होते हैं। और आयते सज्दा पढ़कर क़ुरआन मजीद को पाँव के क़रीब रख लेते हैं और सज्दा करते हैं। आजकल नई रोशनी के कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हमें उस्ताद की ज़रूरत ही नहीं। बेउस्तादे उनकी यह हालत है।

बेअदबी की इन्तिहा

बैतुल्लाह शरीफ़ की निस्बत भी क्योंकि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़ से

है। इसलिए उसका अदब करना भी ज़रूरी है। बात करते हुए इस आजिज़ को डर भी लग रहा है मगर क्योंकि बात समझाना मक़सूद है इसलिए कर रहा हूँ। ज़ियारते हरमैन शरीफ़ैन में से गुज़रते हुए एक आदमी को हमारे दोस्त ने देखा कि वह सर के नीचे क़ुरआन मजीद को रखकर सो रहा था। (अस्तग़फ़िरुल्लाह) हिन्दुस्तान और बंगलादेश के लोगों को उलमा ने अदब सिखाया हुआ है। लिहाज़ा यहाँ के लोग ऐसी सूरतेहाल देखकर तड़प जाते हैं। लिहाज़ा वह भी देखकर तड़पा और उस उस सोए हुए आदमी को जगाया और कहा तुमने अल्लाह के कलाम को सर के नीचे रखा हुआ है। वह उठकर बैठ गया और कहने लगा मैंने कुरआन मजीद को सर के नीचे रखा हुआ है पाँव के नीचे तो नहीं रखा। (अस्तग़फ़िरुल्लाह) ऐसे बेअदबों और ग़ैर-मुक़ल्लिदों से पनाह।

फ़िक्र की घड़ी

यह मस्जिद भी अल्लाह का घर है, इसका भी अदब होना चाहिए। आजकल नौजवान मस्जिदों में नंगे सर शौक़ से आते हैं। और जब कहते हैं कि आप सर पर टोपी, अमामा या कोई चीज़ लेकर आया करें तो कहते हैं कि यह कौन सा ज़रूरी है। यह ज़हर भरा लफ़्ज़ आम होता जा रहा है। कभी सोचा करें कि मेरा जन्नत में जाना कौनसा ज़रूरी है। आज तो हम यह तरीक़ा अपनाते हैं और अगर हमें यही जवाब दे दिया जाए कि ऐ बंदे! जब तूने शाइरुल्लाह (अल्लाह की पहचान) का अदब ज़रूरी न समझा तो फिर तेरा जन्नत में जाना कौनसा ज़रूरी है तो फिर क्या बनेगा? और कई तो ऐसे होते हैं कि सर्दी की वजह से टोपी पहनकर

मस्जिद में आते हैं और फिर टोपी उतारकर नमाज़ पढ़ने में मशग़ूल हो जाते हैं और समझते हैं कि यह सुन्नत है।

नातक़ा सर ब-गिरेबाँ है उसे क्या कहिए

मस्जिद में दाख़िल होने के लिए क़ुरआनी उसूल

आइए, क़ुरआन की तरफ़ रुजू कीजिए। क़ुरआन मजीद ने हमें एक उसूल बताया है, फ़रमाया नेक लोग जब मस्जिदों में दाख़िल होते हैं तो ﴿اولئك ما كان لهم ان يدخلوها الا خائفين﴾ कि उनको नहीं ज़ेब देता कि मस्जिदों में दाख़िल हों मगर ख़ौफ़ज़दा होकर। ऐसा महसूस करें कि जैसे किसी शंहशाह के दरबार में दाख़िल हो रहे हैं। तो क़ुरआन मजीद तो हमें बता रहा है कि हम मस्जिदों में इस अंदाज़ से दाख़िल हों कि हमारे दिल अल्लाह की अज़मते शान की वजह से मरऊब हो रहे हों। लेकिन हम नंगे सर आ रहे होते हैं। क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ومن يعظم شعائر الله فانها من تقوى القلوب.﴾

शाइरुल्लाह का अदब करना हक़ीक़त में दिल के तक़्वे की दलील है। अदब करना बहुत ज़रूरी है क्योंकि बाअदब बानसीब, बे अदब बे नसीब है। आज के ज़माने में इल्म पढ़ने से ज़्यादा अदब सीखने की ज़रूरत है क्योंकि ज़िंदगियों से अदब निकलता जा रहा है।

फ़ज़्कुरूनी अज़्कुरकुम का चौथा मफ़हूम

फ़ज़्कुरूनी अज़्कुरकुम का एक मतलब यह भी बना कि तुम गुनाहों से बचने के लिए मुझे याद करोगे तो मैं मुसीबत के मौक़ों

से निकालने के लिए तुम्हें याद करूंगा। देखें कि सैय्यदना यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर इम्तिहान आया वह जिस घर में रहते थे उस घर की औरत ने गुनाह की दावत दी। यहाँ पर क़ुरआन पाक का हुस्न देखिए कि यह नहीं कहा गया कि अज़ीज़े मिस्र की बीवी ने उनको गुनाह की तरफ़ बुलाया। अगर नाम लेकर कहते तो यह ग़ीबत होती और शरिअत ने ग़ीबत को हराम क़रार दिया है। इसलिए जब परवरदिगार ने कलाम फ़रमाया तो किसी का नाम नहीं लिया बल्कि फ़रमाया ﴿راودته التى هو فى بيتها﴾ ज़्यादा अल्फ़ाज़ तो इस्तेमाल कर लिए मगर नाम नहीं लिया। यहाँ से हमें भी एक बात मिली कि जब परवरदिगार आलम गुनाहों पर यूँ रहमत की चादर डाल देता है तो हमें भी चाहिए कि हम भी अपने दोस्तों की ग़ल्तियों पर चादर डाल दिया करें। इस औरत ने जब गुनाह की दावत दी तो सैय्यदना यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मअज़ल्लाह, मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूँ। जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अल्लाह को याद किया तो वह औरत अपने ख़ाविन्द को कहने लगी कि यह मुझे गुनाह की तरफ़ बुला रहा था। अब इसका हल यह है कि इसको जेलख़ाने के अंदर भेज दीजिए। अब यहाँ पर तफ़्सीर का एक नुक्ता समझ में आया कि जिनकी मुहब्बतें नफ़्सानी होती हैं जब उन पर कुछ बनती है तो वे अपने महबूब को उस वक़्त मुसीबत के नीचे दबा दिया करते हैं। यह झूठी मुहब्बत की सबसे बड़ी दलील है। इससे पहले मुहब्बत के बुलन्द बांग दावे होते हैं और जब अपने पर कुछ बनने लगती है तो फिर सब मुसीबत उसके सर पर डाल देते हैं। यही काम उस औरत ने किया कि जब ख़ाविन्द को पता चल गया तो कहने लगी, इसने

मुझे बुलाया था, इसलिए इसको जेल भेज दो। आख़िर उसने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को जेल भिजवा दिया।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम तख़्ते शाही पर

एक अरसे तक हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम जेल में रहे। आख़िर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको जेल से रिहाई अता फ़रमाई तो फिर उनको पहले की तरह ग़ुलाम नहीं रहने दिया बल्कि मिस्र का वाली बना दिया। जब आप अज़ीज़ मिस्र के सामने आए और ख़्वाबों की ताबीर बताई तो उसने कहा ﴿اِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِيْنٌ اَمِيْنٌ﴾ आपने फ़रमाया ﴿اَجْعَلْنِىْ عَلٰى خَزَائِنَ الْاَرْضِ﴾ मुझे ख़ज़ानों की ज़िम्मेदारी सौंप दीजिए। चुनाँचे सैय्यदना यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को ख़ज़ानों की कुंजियाँ दे दी गयीं। आपने गुनाह से बचने के लिए अपने रब को याद किया, अल्लाह तआला ने उसके बदले आपको मुसीबत से निकाला। तख़्ते से निकाला और दुनिया का तख़्त अता फ़रमा दिया। इससे पहले मिस्र के बाज़ारों में बिक रहे थे। जिस शहर के बाज़ारों में बिक रहे थे, जब मुसीबत से बचने के लिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से डर गए तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उन्हें उसी शहर का हाकिम बना दिया, अल्लाहु अकबर।

हुस्न इल्म के मुक़ाबले में

यहाँ एक और बात भी दिल में आई, अर्ज़ करता चलूँ। वह यह कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास मादरी हुस्न था यानी बचपन से हसीन पैदा हुए थे लेकिन भाईयों ने बेचा तो कितने में बिके? ﴿وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ﴾ चंद खोटे सिक्के। किती

इबरत की बात है। मालूम हुआ कि अगर किसी के पास सिर्फ़ हुस्न हो तो अल्लाह की नज़र में उस हुस्न की क़ीमत चंद खोटे सिक्कों के सिवा कुछ नहीं होती। फिर इस हुस्न के बाद उनको इल्म मिला ﴿فَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗۤ اٰتَیۡنٰهُ حُكۡمًا وَّ عِلۡمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجۡزِی الۡمُحۡسِنِیۡنَ﴾ जब इल्म मिला और अल्लाह तआला ने अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दी तो बाहर निकलने पर अल्लाह ने उनको तख़्त व ताज अता फ़रमा दिए।

फ़ज़्कुरूनी अज़्कुरकुम का पाँचवाँ मफ़हूम

फ़ज़्कुरूनी अज़्कुरकुम का एक मतलब यह भी बनता है कि बंदो! जब तुम अपनी राहत के लम्हात में मुझे याद करोगे तो मैं परवरदिगार तुम्हारी ज़हमत के लम्हात में तुम्हें याद करूंगा यानी अगर तुम मुझे अपनी ख़ुशी के लम्हात में याद करोगे तो मैं परवरदिगार तुम्हारे ग़म के लम्हात में तुम्हें याद करूंगा।

एक सबक़ आमोज़ वाक़िआ

बनी इस्राईल की एक औरत अपने बच्चे को लेकर जंगल से गुज़र रही थी। अचानक एक भेड़िया और उसने उस औरत पर हमला कर दिया। जब भेड़िए ने हमला किया तो वह कमज़ोर दिल औरत घबरा गई। जिसकी वजह से उसका बेटा उसके हाथ से नीचे गिर गया। उस भेड़िए ने उस बच्चे को उठाया और भाग गया। जब माँ ने देखा कि भेड़िया मेरे बेटे को मुँह में डालकर ले जा रहा है तो माँ की ममता ने भी जोश मारा और उसके दिल से एक आह निकली। जैसे ही उसकी आह निकली तो उसने देखा

कि एक जवां मर्द सा आदमी पेड़ के पीछे से उस भेड़िए के सामने आया और भेड़िए ने जब अचानक किसी को अपने सामने देखा तो वह भी घबरा गया। जिसकी वजह से बच्चा भेड़िए के मुँह से नीचे गिर गया और वह भाग गया। उस नौजवान ने बच्चे को उठाया और लाकर उसकी माँ के हवाले कर दिया।

वह माँ कहने लगी, तू कौन है जिसने मेरे बच्चे की जान बचा दी? उसने कहा, मैं अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का फ़रिश्ता हूँ। मुझे परवरदिगार ने आपकी मदद के लिए भेजा है। एक दफ़ा आप अपने घर में बैठी हुई खाना खा रही थीं। ठीक उसी वक़्त किसी सवाली ने आपके दरवाज़े पर रोटी का टुकड़ा मांगा। आप के घर में उस वक़्त वही रोटी थी जो आप खा रही थीं। आपने उस वक़्त सोचा कि मैं अल्लाह के नाम पर सवाल करने वाले को ख़ाली कैसे भेजूँ। तुमने अपने मुँह का लुक़्मा निकालकर साइल को दे दिया था। आज परवरदिगार ने भेड़िए के मुँह का लुक़्मा निकालकर आपके हवाले कर दिया है।

तीन अनमोल मोती

तीन बातें लोहे पर लकीर की तरह हैं, इनको लिख लीजिए:

- पहली बात यह कि जो इंसान जिस क़द्र अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से मुहब्बत करेगा अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मख़्लूक़ उसी क़द्र उस से मुहब्बत करेगी। यह तयशुदा बात है। आप देखते हैं नाँ कि हमारे दिलों में अल्लाह वालों की मुहब्बत होती है। हमें अल्लाह वाले मिल जाएं तो हम उनको देखना और उनसे मिलना अपने लिए ख़ुशनसीबी समझते हैं। इसकी वजह यही

होती है कि उनके दिलों में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत होती है जिसकी वजह से अल्लाह तआला अपनी मख़्लूक़ के दिल में उनकी मुहब्बत डाल देते हैं।

- दूसरी बात यह है कि जो इंसान जिस क़द्र अल्लाह रब्बुइलज़्ज़त की इबादत करेगा अल्लाह की मख़्लूक़ उसी क़द्र उसकी ख़िदमत करेगी। लोगों को माँओं ने आज़ाद जना है मगर अल्लाह वालों के जूते उठाना अपने लिए सआदत समझते हैं। हज़रत अक़्दस थानवी रह० को एक नवाब साहब ने अपनी रियासत में आने की दावत दी। जब आप तशरीफ़ ले गए तो बघ्घी पर जहाँ घोड़ा जोता जाता है वहाँ पर ख़ुद नवाब साहब जुते और उनको लेकर अपने घर तक पहुँचे।
- तीसरी बात यह है कि जो इंसान जिस क़द्र अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से डरेगा अल्लाह की मख़्लूक़ उसी क़द्र उस से मरऊब रहेगी। आपने देखा होगा कि अल्लाह वालों की महफ़िल में एक रौब होता है—

न ताज ओ तख़्त में न लश्कर ओ सिपाह में है
जो बात मर्दे क़लन्दर की बारगाह में है

नबी अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने रौब की नेमत अता फ़रमाई थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे ﴿نصرت بالرعب﴾ कि अल्लाह तआला ने रौब के ज़रिए मेरी मदद फ़रमाई। हदीस पाक में आया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जहाँ चलते थे आपका रौब ﴿مسيرة شهر﴾ यानी एक महीने की दूरी पर आपसे आगे चलता था।

शेर जंगल का बादशाह होता है। उसका एक रौब होता है। वह पिंजरे में हो तो बाहर से देखने वाला आदमी पर रौब पड़ता है। ऐसे ही जो लोग अल्लाह के शेर होते हैं उनका भी एक रौब होता है।

परेशानियाँ दूर करने का आसान नुस्ख़ा

इन तमाम बातों से मालूम हुआ कि अगर हम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को याद करेंगे और अपनी ज़िंदगी उसके हुक्मों के मुताबिक़ बना लेंगे तो परवरदिगार आलम हमारी तमाम मुसीबतों, परेशानियों और मुश्किलात में हमारे लिए काफ़ी हो जाएंगे। इसी लिए क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने फ़रमाया ﴿اليس الله بكاف عبده﴾ कि क्या अल्लाह तआला अपने बंदे के लिए काफ़ी नहीं है? तो हमारे पास एक आसान नुस्ख़ा यह है कि हम अपने दिल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की याद बसा लें और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की नाफ़रमानी करना छोड़ दें। याद रखें कि जो इंसान इल्म व इरादे से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की नाफ़रमानी करना छोड़ देता है, परवरदिगार उसके नाम को सिद्दीक़ीन में शुमार फ़रमा लेते हैं। आज की इस महफ़िल में दिलों में यह पक्का इरादा करें कि रब्बे करीम! आज के बाद हम अपने इल्म और इरादे से गुनाह नहीं करेंगे। ऐ अल्लाह! इसमें कामयाब होने में आप हमारी मदद फ़रमा दीजिए क्योंकि हमारे लिए गुनाहों से बचना मुश्किल है लेकिन ऐ अल्लाह! आपके लिए हमें गुनाहों से बचाना आसान है। जब इस तरह पक्का इरादा करेंगे तो अल्लाह तआला हमारी नेकोकारी और परहेज़गारी की ज़िंदगी आसान फ़रमा देंगे।

अज़्मे तवाफ़

आज हर तरफ़ परेशानी और परेशानी के शिकवे हैं लेकिन इस माहौल में भी जो लोग अल्लाह तआला की याद वाली ज़िंदगी गुज़ारने वाले हैं उनके दिलों में अल्लाह तआला सुकून अता फ़रमा देते हैं। देखें एक होता है परेशानी का माहौल और एक होता है दिल का परेशान होना। इन दोनों में फ़र्क़ है। अल्लाह वालों के इर्दगिर्द भी ऐसा माहौल हो सकता है कि परेशानी वाला हो मगर उनके दिल मुतमइन होते हैं। जैसे कोई आदमी शीशे के कमरे में बैठा हो और बाहर आंधी चल रही हो तो इर्दगिर्द तो झक्कड़ चल रहे होते हैं लेकिन उस आदमी को आंधी का एहसास तक नहीं होता। इसी तरह जो लोग अल्लाह तआला की इताअत और फ़रमांबरदारी वाली ज़िंदगी गुज़ारते हैं उनके इर्दगिर्द का माहौल अगरचे परेशानी वाला होता है मगर अल्लाह तआला उनके दिलों में सुकून अता फ़रमा देते हैं। किसी शायर ने अजीब शे'र कहा—

तूफ़ान कर रहा था मेरे अज़्म का तवाफ़
दुनिया समझ रही थी के किश्ती भंवर में है

दुनिया वाले समझते हैं कि उनकी किश्ती भंवर में है लेकिन हक़ीक़त यह होती है कि वह तूफ़ान उनका तवाफ़ कर रहा होता है। इसलिए मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी दामत बरकातुहुम ने एक अजीब बात लिखी है कि जिसका अल्लाह से ताल्लुक़ है फिर उसका बेचैनी से क्या ताल्लुक़ हो सकता है। इर्दगिर्द के लोग अगरचे परेशान फिर रहे होते हैं मगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उसको पुरसुकून ज़िंदगी अता फ़रमा देते हैं।

आसपास की मिसालें

हम ने कई बार ऐसा देखा है। यह बात अक़्ली तौर पर भी मुमकिन है। कई बार देखने में आया कि आधे सहन में बारिश हुई और आधे सहन में नहीं हुई। एक पेड़ को देखा, उसकी एक शाख़ ख़ुश्क है और दूसरी शाख़ पर फल लगे हुए हैं। एक ही भैंस या बकरी उसके एक थन से दूध आ रहा है और दूसरे थन से ख़ून आ रहा है। एक ही समुन्दर है लेकिन इधर का पानी मीठा है और उधर का पानी कढ़वा है। इसी तरह ऐसा होगा कि अगरचे आसपास परेशानी भी होगी लेकिन अगर हमारे दिल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की याद हुई तो अल्लाह तआला हमें परेशानी से छुटकारा अता फ़रमा देंगे।

रोज़े महशर की मिसाल

यही हाल क़ियामत के दिन भी होगा। ईमान वाले जब उठेंगे तो उस वक़्त मुनाफ़िक़ उनको कहेंगे ﴿انظرونا نقتبس من نوركم﴾ ज़रा हमारी तरफ़ तवज्जोह कीजिए ताकि हम तुम्हारे ईमान की रोशनी से फ़ायदा उठा लें। मगर कहा जाएगा कि ﴿قِيلَ ارْجِعُوا وَرَائَكُمْ فَالْتَمِسُوا نُورًا﴾ तुम जाओ वापस दुनिया में, यह नूर तो वहाँ मिलता था ﴿وَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهُ بَابٌ﴾ अल्लाह तआला मुनाफ़िक़ों और मोमिनों के दर्मियान एक दीवार बना देंगे। और फ़रमाया ﴿بَاطِنُهُ فِيهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهُ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ﴾ उस दीवार के अंदर रहमत होगी और उसके बाहर अज़ाब होगा। तो बस यूँ समझें कि अल्लाह वालों के गिर्द रहमत की एक चादर होती है, उसके बाहर लोग परेशानी का अज़ाब भुगत रहे होते हैं और उसके अंदर बातिन में रहमत होती है।

फ़ज़्कुरूनी अज़्कुरकुम का छठा मफ़हूम

फ़ज़्कुरूनी अज़्कुरकुम का एक मफ़हूम यह भी बनता है, ऐ मेरे बंदो! तुम मुझे माज़रत से याद किया करोगे तो मैं परवरदिगार तुम्हें मग़फ़िरत के साथ याद किया करूंगा। हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को जब मछली ने निगल लिया तो मछली उनको समुन्दर की तह में ले गई। किताबों में लिखा है कि उन्होंने वहाँ "ला इलाहा इल्लल्लाह" की आवाज़ें सुनीं। पूछा, परवरदिगार आलम! यह क्या है? अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने फ़रमाया, ऐ मेरे प्यारे यूनुस! इस समुन्दर की तह की कंकरियाँ कलिमा पढ़ रही हैं और मेरे नाम की तस्बीह कर रही हैं बल्कि दुनिया की हर चीज़ अल्लाह के नाम की तस्बीह करती है। क़ुरआन मजीद में फ़रमाया :

﴿وان من شئی الا یسبح بحمدہ ولکن لا تفقھون تسبیحھم﴾

जो कोई भी चीज़ है वह अल्लाह के नाम की तस्बीह बयान कर रही है लेकिन तुम उसकी तस्बीह को समझ नहीं सकते।

जब हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने कंकरियों को यह पढ़ते हुए सुना तो उनकी तवज्जोह और ज़्यादा अल्लाह तआला की तरफ़ हुई। इसलिए उन्होंने भी मछली के पेट में पढ़ना शुरू कर दिया, ﴿لا الہ الا انت سبحنک انی کنت من الظلمین﴾ ग़ौर कीजिए कि उन्होंने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को माज़रत के साथ याद किया और फिर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको मग़फ़िरत के साथ याद किया। चुनाँचे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको मछली के पेट से भी निजात अता फ़रमाई और उनको अपनी क़ौम का नबी और बादशाह भी बना दिया।

हमारे लिए मछली का पेट

मोहतरम जमाअत! एक और बात भी ज़हन में रखिए कि हमारे लिए भी मछली का पेट है। हर बंदे की मछली मुख़्तलिफ़ होती है। अगर आप ग़ौर करें तो मालूम होगा कि किसी की दुकान उसके लिए मछली का पेट बनी हुई है, उसकी दुकान ने उसे अपने अंदर घेरा हुआ है, बांधा हुआ है बल्कि गिरफ़्तार किया हुआ है। वह बेचारा उससे आज़ाद हो ही नहीं सकता। किसी की बीवी उसके लिए मछली का पेट बनी हुई है। किसी की औलाद उसके लिए मछली का पेट बनी हुई है और किसी नौजवान के लिए कोई लड़की मछली का पेट बनी हुई है। अगर हम महसूस करते हैं कि हम इस तरह मख़्लूक़ में गिरफ़्तार हैं और हम इस माहौल से नहीं निकल पा रहे हैं तो हमारे लिए एक ही रास्ता है कि जिस तरह हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने मछली के पेट में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को मअज़रत के साथ याद किया था और अल्लाह तआला ने उनको मग़फ़िरत के साथ याद करके उनको निजात अता फ़रमा दी थी। इसी तरह हम भी अल्लाह तआला से माफ़ियाँ मांगे, परवरदिगार हमें भी इस माहौल से निजात अता फ़रमा देगा। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने क़ुरआने अज़ीमुश्शान में फ़रमाया, ﴿لو لا انه كان من المسبحين﴾ अगर यूनुस अलैहिस्सलाम हमारी तस्बीह बयान न करते तो ﴿للبث فى بطنه يوم يبعثون﴾ तो वह क़यामत तक मछली के पेट में रहते। तो मालूम हुआ कि हम भी जिस माहौल की मछली के पेट में फंसे पड़े हैं। हम जब तक अल्लाह को याद नहीं करेंगे, गुनाहों की माफ़ी नहीं मांगेगे तो फिर हम अपनी मौत तक इसी माहौल में फंसे रहेंगे।

फ़ज़्कुरूनी अज़्कुरकुम का सातवाँ मफ़हूम

फ़ज़्कुरूनी अज़्कुरकुम का एक मतलब उलमाए किराम ने यह भी लिखा है ﴿فاذكروني في مهدكم اذكركم في لحدكم﴾ कि तुम अपने नरम बिस्तरों में मुझे याद करोगे तो मैं परवरदिगार तुम्हारी क़ब्रों में तुम्हें याद करूंगा, सुब्हानअल्लाह।

इन दो लफ़्ज़ों में में अल्लाह तआला ने ज़िंदगी की हक़ीक़त समझा दी। और कितने दिलनशीन अंदाज़ में फ़रमाया कि तुम मुझे याद करोगे मैं तुम्हें याद करूंगा। तुम मुझसे मुहब्बत करोगे मैं तुम से मुहब्बत करूंगा। तुम मुझे चाहोगे मैं तुम्हें चाहूंगा। तुम मुझे मनाओगे मैं तुम्हें मनाऊँगा। अगर तुम मेरी इबादत करोगे तो मैं मख़्लूक़ को तुम्हारी ख़िदमत पर लगा दूंगा। तुम मेरी इज़्ज़त करोगे तो मैं दुनिया में तुम्हें इज़्ज़तें दूंगा। तुम मुझे ख़ुशी में याद करोगे मैं तुम्हें ग़म में याद करूंगा। तुम मुझे मअज़रत के साथ याद करोगे मैं तुम्हें मग़फ़िरत के साथ याद करूंगा। ओ मेरे बंदो! तुम मेरे बन जाओगे, मैं परवरदिगार तुम्हारा बन जाऊँगा। तुम अपने दिल व दिमाग़ में मुझे बसा लोगे तो मैं परवरदिगार तुम्हारी आँखें बन जाऊँगा, जिनसे तुम देखोगे, वे कान बन जाऊँगा जिनसे तुम सुनोगे और वे टांगें बन जाऊँगा जिनसे तुम चलोगे तो मालूम हुआ कि ﴿مَنْ كَانَ لِلّٰهِ كَانَ اللّٰهُ لَهُ﴾ जो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का हो जाता है फिर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उसके हो जाते हैं।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें अपना बना ले, हमें इताअत और फ़रमांबरदारी की ज़िंदगी नसीब फ़रमा दे और हमें गुनाहों की ज़िल्लत से महफ़ूज़ फ़रमा दे। (आमीन)

ज़िक्रे इलाही का मक़सूद

हज़रत अक़्दस थानवी रह० ने फ़रमाया कि ज़िक्र का मुन्तहाए मक़सूद यह है कि इंसान की रग-रग और रेशे-रेशे से गुनाहों का खोट निकल जाए। हम ने सिर्फ़ तस्बीह ही नहीं पढ़नी। ऐसा न हो कि ऊपर तस्बीह और अंदर से मियाँ कस्बी, ऊपर से ला इलाहा और अंदर से काली बला। ऐसी तस्बीह को हमने क्या करना है। हमारे पास ज़िक्र का पैमाना यह है कि मासियत छोड़ दें। जब ऐसी ज़िंदगी बन जाएगी तो गोया हमें ज़िक्र की बरकात नसीब हो जाएंगी। इसलिए हमारे मशाइख़ फ़रमाते हैं कि दोस्तो! न हमने रोना है, न रुलाना है, न उड़ना है न उड़ाना है हमने तो सिर्फ़ रूठे यार (अल्लाह तआला) को मनाना है।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें अपनी याद की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा दे और हम आजिज़ और मिस्कीनों के लिए उसकी याद को आसान फ़रमा दे।

﴿وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴾

रहमतुल्लिलआलमीन

नबी अलैहिस्सलाम तमाम जहानों के लिए रहमत बनकर आए और अपनी इस गुनाहगार उम्मत के लिए ख़ुसूसी तौर पर रहमत बनकर आए। चुनाँचे आपका हर काम उम्मत के लिए रहमत बना। यहाँ तक कि आपका सोना भी रहमत और आपका भूलना भी रहमत बना।

रहमतुल्लिलआलमीन

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!
فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
وَمَا اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ○ سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا
يَصِفُوْنَ ○ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ○ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○

नबीए रहमत की शफ़ाअत

नबी अलैहिस्सलाम कुल जहानों के लिए रहमत बनकर तशरीफ़ लाए। आप उम्मत के लिए बहुत ही शफ़ीक़ और मेहरबान थे। क़ुरआन मजीद में है :

﴿عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَؤُفٌ رَّحِيْمٌ﴾

जब मुसलमान पर कोई मुश्किल आती है तो वह उनके नज़दीक बोझल होती है और वह इस बात के तलबगार होते हैं कि ईमान वालों को ज़्यादा से ज़्यादा रहमतें मिलें और वे उनके साथ बड़े रऊफ़ुर्रहीम हैं। दूसरी तरफ़ उम्मतियों के दिलों में उनकी मुहब्बत का यह मुक़ाम है कि ﴿النبى اولى بالمؤمنين من انفسهم﴾ नबी अलैहिस्सलाम मोमिनों से उनकी अपनी जान से भी ज़्यादा क़रीब हैं यानी उनको नबी अलैहिस्सलाम के साथ अपनी जान से भी ज़्यादा मुहब्बत है।

दो मिसाली नेमतें

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की दो नेमतें बेमिसाल हैं। पहली नेमत "इस्लाम" है। कोई आदमी कितना ही गुनाहगार क्यों न हो अगर वह इस्लाम क़ुबूल कर ले तो इस्लाम उसके पहले वाले तमाम गुनाहों की माफ़ी का ज़रिया बन जाता है ﴿الاسلام يهدم من كان قبله﴾ इस्लाम अपने से पहले वाले तमाम गुनाहों को मिटा देता है। इस नेमत खुदावंदी का क़ुरआन मजीद में यूँ तज़्किरा किया गया है ﴿اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ﴾ आज के दिन मैंने तुम पर दीन को मुकम्मल कर दिया और मैंने तुम पर अपनी नेमत कामिल कर दी। इस आयत मुबारका में दीन को अल्लाह ने नेमत क़रार दिया।

दूसरी नेमत "नबी अलैहिस्सलाम की ज़ाते बाबरकत" है। आप खुद अंदाज़ा लगाएं कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हमें अरबों खरबों नेमतें अता फ़रमायीं और यहाँ तक फ़रमा दिया ﴿وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا﴾ कि अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनना चाहो तो तुम गिन नहीं सकोगे। इतनी नेमतें देने के बावजूद अल्लाह तआला ने एहसान नहीं जतलाया। आँखें दीं मगर एहसान नहीं जतलाया, ज़बान दी मगर एहसान नहीं जतलाया, दिल व दिमाग़ दिए मगर एहसान नहीं जतलाया, रिज़्क़ दिया मगर एहसान नहीं जतलाया, ज़मीन के लिए सूरज, चाँद और सितारे बनाए मगर एहसान नहीं जतलाया। अलबत्ता एक ऐसी नेमत भी दी कि देने वाले को भी मज़ा आ गया औ उस देने वाले ने भी फ़रमाया :

﴿لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا﴾

तहक़ीक़ अल्लाह तआला ने ईमान वालों पर एहसान किया कि उनमें अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मबऊस फ़रमाया।

दूसरे लफ़्ज़ों में में यूँ समझें कि नबी अलैहिस्सलाम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से ऐसी नेमत हैं कि यह उसका बंदों पर एहसान है। इन दोनों नेमतों का कोई बदल नहीं है।

औरत के दिल में बच्चे की मुहब्बत

नबी अलैहिस्सलाम तमाम जहानों के लिए रहमत बनकर आए। इसकी मिसाल यूँ समझिए कि जैसे औरत के दिल में बच्चे के साथ मुहब्बत का होना फ़ितरी चीज़ है। उसको हर बच्चे के साथ अमूमी मुहब्बत होती है अपने बेटे के साथ ख़ुसूसी मुहब्बत होती है। अगर कुछ मर्द हज़रात किसी जगह मौजूद हों और उनके सामने कोई बच्चा रोए तो वे इतने ज़्यादा मुतवज्जेह नहीं होंगे लेकिन अगर कोई औरत क़रीब होगी तो उसका दिल फ़ौरन पसीज जाएगा और उठकर मालूम करेगी कि बच्चा क्यों रो रहा है?

एक अजीब मुक़द्दमा

एक बच्चे पर दो औरतों ने मुकद्दमा कर दिया। एक कहती थी कि यह मेरा बेटा है और दूसरी कहती थी कि यह मेरा बेटा है। वक़्त के क़ाज़ी ने कहा, अच्छा दलीलों से तो यह पता चल नहीं रहा है कि यह बच्चा किसका है, लिहाज़ा हम बच्चे के दो टुकड़े कर देते हैं। उनमें से एक तो बच्चे के दो टुकड़े करवाने के लिए तैयार हो गई मगर दूसरी ने कहा कि बच्चे के दो टुकड़े न

करें, बच्चा इस औरत को दे दें, चलो इसको कभी-कभी देख तो लिया करूंगी। इस बात से क़ाज़ी ने अंदाज़ा लगा लिया कि इन दोनों में से वह बच्चा किसका है। यूँ गोया माँ ख़ुद तो क़ुर्बान हो जाती है मगर उससे बच्चे की तकलीफ़ नहीं देखी जाती।

हर काम उम्मत के लिए रहमत

नबी अलैहिस्सलाम तमाम जहानों के लिए अमूमी तौर पर रहमत बनकर तशरीफ़ लाए और अपनी गुनाहगार उम्मत के लिए ख़ुसूसी तौर पर रहमत बनकर आए। चुनाँचे नबी अलैहिस्सलाम का हर काम रहमत बना।

नबी अलैहिस्सलाम की भूल... एक रहमत

एक बार नबी अलैहिस्सलाम ने ज़ोहर या अस्र की नमाज़ में चार रकअत की नीयत बांधी और दो रकअत पढ़ने के बाद सलाम फेर दिया। सहाबा किराम के अंदर इतना अदब था कि उन्होंने यह नहीं कहा कि ऐ अल्लाह के नबी! आपने चार रकअतों की बजाए दो रकअतें पढ़ीं बल्कि यूँ पूछा, ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्या आज के बाद इस नमाज़ की दो रकअतें हो गयीं? आपने इर्शाद फ़रमाया, नहीं चार रकअतें ही हैं। सहाबा किराम ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के महबूब! आपने तो दो रकअतों के बाद सलाम फेरा है। यह सुनकर आपने इर्शाद फ़रमाया, ﴿لا نسيت بل نسيت﴾ मैं भूला नहीं बल्कि भुलाया गया हूँ। मुझे अल्लाह तआला ने इसलिए भुलाया कि इस भूल की वजह से उम्मत के लिए सज्दा सहू का मसअला वाज़ेह हो जाए।

सुब्हानअल्लाह जिस महबूब का भूल जाना भी उम्मत के लिए रहमत हुआ उस महबूब का हालते होश और बेदारी में होना उम्मत के लिए कितनी बड़ी रहमत होगा।

नबी अलैहिस्सलाम की नींद... एक रहमत

एक बार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा किराम के हमराह जिहाद से वापस तशरीफ़ ला रहे थे कि देर हो गई। रात के वक़्त आपने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़रमाया, पहरा दें और फिर फ़ज्र की नमाज़ के लिए सबको जगा देना। सब हज़रात आराम फ़रमाने लगे और हज़रत बिलाल पहरा देने लगे। पहरा देते देते हज़रत बिलाल ने एक जगह टेक लगाई तो अल्लाह तआला ने उन पर भी नींद को मुसल्लत फ़रमा दिया। यहाँ तक कि सूरज तुलू हो गया। इसमें भी अल्लाह तआला की हिकमत थी। जब सूरज की किरनों ने नबी अलैहिस्सलाम के रुख़्सार मुबारक के बोसे लिए तो आप जागे और आपने फ़रमाया, बिलाल! तुम भी सो गए और हमें भी न जगाया। अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के महबूब! जिस ज़ात ने आप पर नींद तारी कर दी उसी परवरदिगार ने मुझे भी सुला दिया। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने हम पर इसलिए नींद तारी फ़रमा दी कि यह नमाज़ क़ज़ा हो और तुम लोगों के सामने क़ज़ा नमाज़ को अदा करने का मसअला वाज़ेह हो जाए। यहाँ सोचने की बात यह है कि जिस नबीए रहमत का सो जाना भी उम्मत के लिए रहमत हुआ उनका जागना उम्मत के लिए कितनी बड़ी रहमत होगा।

बद्दुआ के रहमत बनने की दुआ

हदीस पाक में आया है कि नबी अलैहिस्सलाम ने यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! अगर मैं किसी के लिए बद्दुआ करूं और किसी को मारूं तो ऐ अल्लाह! मेरी बददुआ को और मेरे बुरे कलिमे कहने को उस आदमी के हक़ में रहमत बना देना और उसे अपना क़ुर्ब अता फ़रमा देना। जिस महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बान से बिलफ़र्ज़ बद्दुआ निकले और वह भी रहमत बन जाए तो उस महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बान फ़ैज़े तर्जुमान से जो दुआएं निकलें वे कितनी बड़ी रहमत होंगी।

नबी-ए-रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रहमत की तक़्सीम

नबी रहमत की रहमतुल्लिल-आलमीनी से हर एक ने हिस्सा पाया।

माँ का हिस्सा

नबी अलैहिस्सलाम की रहमतुल्लिल आलमीनी से माँ ने हिस्सा पाया। दुनिया को माँ के मुक़ाम का अभी इतना पता नहीं था। नबी अलैहिस्सलाम ने आकर वज़ाहत फ़रमाई ﴿الجنة تحت اقدام

الامهات) । तुम्हारे लिए जन्नत माँ के क़दमों के नीचे है। नबी अलैहिस्सलाम ने आकर बताया कि जो बेटा या बेटी अपनी माँ के चेहरे पर मुहब्बत व अक़ीदत की नज़र डाले अल्लाह तआला हर नज़र के बदले उसे एक हज या उमरे के बराबर अज्र अता फ़रमाएंगे।

बेटी का हिस्सा

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रहमत से बेटी ने हिस्सा पाया। चुनाँचे वे अरब लोग जो अपनी बेटियों को ज़िंदा दफ़न कर देते थे और जो बेटी की पैदाईश के बारे में सुनते थे तो उनके चेहरों पर स्याही आ जाती थी। उन अरबों को नबी अलैहिस्सलाम ने यह तालीम दी कि जिस घर में दो बेटियाँ हों और बाप उनकी अच्छी तर्बियत करे यहाँ तक कि उनकी शादी कर दे तो वह जन्नत मे मेरे साथ ऐसे होगा जैसे हाथ की दो उंगलियाँ एक दूसरे के साथ होती हैं। सुब्हानअल्लाह! बेटी को कितना बुलन्द मुक़ाम मिला। इसीलिए, फ़ुक़्हा ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस आदमी के हाँ बेटा भी हो और बेटियाँ भी हों और वह कोई चीज़ घर में लेकर आए तो इस बाप को चाहिए कि वह पहले अपनी बेटी को चीज़ दे और बाद में बेटे को दे। सुब्हानअल्लाह! बेटी को एक बुलन्द मुक़ाम मिला और लोगों पर वाज़ेह हुआ कि बेटी ज़महत नहीं बल्कि बेटी रहमत है।

बीवी का हिस्सा

आप सल्लल्लाहु अलैहिस्सलाम की रहमतुल्लिल आलमीनी से

बीवी ने भी हिस्सा पाया। अरबों में बीवियों को ऐसी मुसीबत में डाल दिया जाता था कि उनका कोई पुरसाने हाल नहीं होता था। न उनको विरासत में कोई हक़ मिलता था, ख़ाविन्द अपनी बीवी को तलाक़ न देते थे और न उन्हें अच्छी तरह अपने पास रखते थे। वे उन्हें बीच में ही लटकाए रहते थे। उनका कोई हक़ तसलीम नहीं किया जाता था। लेकिन नबी अलैहिस्सलाम ने तश्रीफ़ लाकर बीवी के हुक़ूक़ दिलवाए। आप ने इर्शाद फ़रमाया ﴿خیرکم خیرکم لاهله﴾ तुम में सबसे बेहतर वह है जो तुम में से अपने घरवालों के लिए बेहतर है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक और मौक़े पर इर्शाद फ़रमाया कि दुनिया एक मताअ (पूंजी) है और बेहतरीन मताअ नेक बीवी है। एक मौक़े पर इर्शाद फ़रमाया, मुझे तुम्हारी दुनिया में से तीन चीज़ें महबूब हैं। उनमें से एक चीज़ नेक बीवी फ़रमाई। गोया आप ने इन तालीमात के ज़रिए समाज में बीवी के मुक़ाम को वाज़ेह फ़रमा दिया।

ख़ाविन्द का हिस्सा

आप सल्लल्लाहु अलैहिस्सलाम की रहमतुल्लिल-आलमीनी से ख़ाविन्द ने भी हिस्सा पाया। ख़ाविन्द का मुक़ाम किसी को पता नहीं था। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि अगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के सिवा किसी को सज्दा करने की इजाज़त हाती तो मैं औरत को हुक्म देता कि वह अपने ख़ाविन्द को सज्दा करे। ख़ाविन्द को यह मुक़ाम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रहमतुल्लिल-आलमीनी के सदक़े अता फ़रमाया।

छोटे बड़ों का हिस्सा

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ाते बाबरकत के सदक़े छोटे बड़ों ने हिस्सा पाया। चुनाँचे नबी अलैहिस्सलाम ने तालीम दीः

﴿من لم يرحم صغيرنا ولم يؤقر كبيرنا فليس منا﴾

जो छोटों पर रहम नहीं करता और बड़ों का एहतिराम नहीं करता वह हम में से नहीं।

उलमाए किराम का हिस्सा

आप सल्लल्लाहु अलैहिस्सलाम की रहमतुल्लिल-आलमीनी से उलमा ने भी हिस्सा पाया। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया ﴿العلماء ورثة الانبياء﴾ उलमा अंबिया के वारिस हैं। और बाज़ रिवायतों में फ़रमाया कि क़यामत के दिन मेरी उम्मत के उलमा बनी इस्राईल के अंबिया किराम की तरह उठाए जाएंगे। और फ़रमाया कि जिसने किसी आलिम बाअमल के पीछे नमाज़ पढ़ी ऐसा ही है जैसे उसने मेरे पीछे नमाज़ पढ़ी क्योंकि जब काम बड़ा होता है तो फिर मुक़ाम भी बड़ा मिलता है। यहाँ तक कि नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया ﴿فقيه واحد اشد على الشيطن من الف عابد﴾ कि हज़ार इबादत गुज़ार हों तो भी एक आलिम उनसे ज़्यादा भारी है।

तालिब इल्मों का हिस्सा

ताजदारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रहमतुल्लिल आलमीनी से तालिब इल्मों ने भी हिस्सा पाया। नबी अलैहिस्सलाम ने तालीम देते हुए इर्शाद फ़रमाया ﴿من كان في طلب العلم كانت الجنة

﴾فى طلبه﴿ जो इंसान इल्म की तलब में होता है जन्नत उस बंदे की तलब में होती है। एक और रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब कोई तालिब इल्म अपने घर से इल्म हासिल करने के लिए क़दम निकालता है तो अल्लाह तआला के फ़रिश्ते उसके पाँव के नीचे अपने पर बिछाते हैं। यूँ नबी अलैहिस्सलाम की रहमतुल्लिल-आलमीनी की वजह से तालिब इल्म को इज़्ज़त और शर्फ़ बख़्शा गया।

मुजाहिद का हिस्सा

नबी अलैहिस्सलाम की रहमतुल्लिल आलमीनी से मुजाहिद ने भी हिस्सा पाया। अल्लाह के महबूब ने इर्शाद फ़रमाया कि जब कोई इंसान अल्लाह के रास्ते में निकलता है और उसे कोई भी तकलीफ़ पहुँचती है तो उसे हर छोटी बड़ी तकलीफ़ पर अल्लाह तआला की तरफ़ से अज्र नसीब होता है।

ذلك بانهم لا يصيبهم ظما ولا نصب ولا مخمصة فى سبيل الله ولا يطئون
موطئا يغيض الكفار ولا ينالون من عدوا نيلا الا كتب لهم به عمل صالح.

अल्लाह की तरफ़ से उनके लिए हर-हर बात पर अज्र लिखा जाता है। एक और रिवायत में आया है कि नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि मुजाहिद जब अल्लाह के रास्ते में जिहाद करता है तो अभी उसका ख़ून का पहला क़तरा ज़मीन पर नहीं गिरता, उससे पहले अल्लाह तआला उसके दस गुनाहों की मग़फ़िरत का फ़ैसला फ़रमा देते हैं। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब इन लोगों की रूह क़ब्ज़ करने का वक़्त आता है तो अल्लाह तआला अपना ज़ाब्ता बदल देते हैं और मलकुल मौत को इर्शाद

फ़रमाते हैं, ऐ मलकुल मौत! मेरा यह बंदा मेरे नाम पर अपनी जान दे रहा है। अब इसकी रूह लेने का वक़्त है, अब तू पीछे हट जा, इसकी रूह मैं खुद निकालूंगा। चुनाँचे हदीस पाक में आया है कि अल्लाह तआला मुजाहिद की रूह को खुद जिस्म से जुदा करते हैं। उसूल तो यह था कि वली हो, अब्दाल हो, क़ुतब हो या कितना ही बड़ा क्यों न हो, अगर वह फ़ौत हो जाए तो क्योंकि उसने अल्लाह तआला के दरबार में हाज़िर होना है इसलिए उसको नहला दिया जाए, पहले कपड़े उतार दिए जाएं और कफ़न के कपड़े पहना दिए जाएं ताकि यह युनिफ़ार्म में अल्लाह तआला के सामने हाज़िर हो। लेकिन मुजाहिद का मामला आया तो परवरदिगार आलम ने उसकी मुहब्बत के सदक़े अपने ज़ाब्ते बदल दिए और फ़रमाया कि इसको नहलाना भी नहीं क्योंकि यह तो अब ख़ून में नहा चुका है। अब इसे पानी से नहलाने की क्या ज़रूरत है? इसे कफ़न पहनाने की भी ज़रूरत नहीं है। इसके कपड़ों पर जो ख़ून के दाग़ लगे हैं ये तो मुझे फूलों की तरह महबूब हैं। मैं चाहता हूँ कि क़ियामत के दिन यह उन्हीं ख़ून से सने कपड़ों में मेरे सामने खड़ा कर दिया जाए, सुब्हानअल्लाह।

ताजिर का हिस्सा

अल्लाह के महबूब अलैहिस्सलाम की रहमतुल्लिल आलमीनी से ताजिर को हिस्सा मिला। चुनाँचे नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया सच्चा ताजिर क़ियामत के दिन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के नज़दीक अंबिया किराम के साथ खड़ा किया जाएगा, सुब्हानअल्लाह।

मज़दूर का हिस्सा

मज़दूर को भी आप अलैहिस्सलाम की रहमतुल्लिल आलमीनी से हिस्सा मिला। आपके पास एक सहाबी आए। उन्होंने मुसाफ़ा किया तो नबी अलैहिस्सलाम ने देखा कि उनकी हथेली पर गट्टे पड़े हुए थे जिसकी वजह से हथेली सख़्त थी। आपने पूछा, यह क्या बात है? कहने लगे, ऐ अल्लाह के नबी! मैं पत्थर तोड़ता हूँ जिसकी वजह से मेरे हाथ सख़्त हो गए हैं। नबी अलैहिस्सलाम ने उनका हाथ अपने हाथ में लेकर फ़रमाया ﴿الكاسب حبيب الله﴾ कि हाथ से मेहनत मज़दूरी करने वाला अल्लाह का दोस्त होता है। गोया मुलाज़िमीन और मेहनत मज़दूरी करने वालों को भी नबी अलैहिस्सलाम की रहमतुल्लिल-आलमीनी के सदक़े अज़्मत अता हुई।

पड़ौसी का हिस्सा

पड़ौसी को भी सैय्यदुल अंबिया की रहमतुल्लिल आलमीनी से हिस्सा मिला। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि पड़ौसी के हुक़ूक़ के बारे में जिब्रील अमीन अलैहिस्सलाम इतनी दफ़ा मेरे पास आए कि मुझे यह महसूस होने लगा कि शायद बंदे के मरने के बाद उसके पड़ौसी को भी उसकी विरासत में शामिल कर लिया जाएगा। अंदाज़ा लगाइए कि पड़ौसी के हुक़ूक़ का कितना एहतिमाम फ़रमाया गया।

यतीम का हिस्सा

नबी अलैहिस्सलाम की रहमतुल्लिल आलमीनी के सदक़े यतीम

ने भी हिस्सा पाया। समाज में आमतौर पर यतीम को कोई भी कुछ हक़ देने को तैयार नहीं होता मगर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आकर यतीम के हुक़ूक़ भी तय फ़रमाए। आपने इर्शाद फ़रमाया ﴿انا وكافل اليتيم هكذا﴾ जो आदमी यतीम की किफ़ालत करने वाला होगा वह जन्नत में मेरे साथ ऐसे होगा जिस तरह दो उंगलियाँ एक दूसरे के साथ होती हैं।

यतीम नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नज़र में

मशहूर रिवायत है कि नबी अलैहिस्सलाम ईद के दिन घर से मस्जिद की तरफ़ तशरीफ़ लाने लगे। रास्ते में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ बच्चों को खेलते हुए देखा। उन्होंने अच्छे कपड़े पहने हुए थे। बच्चों ने सलाम अर्ज़ किया तो नबी अलैहिस्सलाम ने जवाब इर्शाद फ़रमाया। उसके बाद आप आगे तशरीफ़ ले गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आगे चले तो एक बच्चे को ख़ामोशी के साथ उदास बैठे हुए देखा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके क़रीब रुक गए और उस बच्चे से पूछा तुम्हें क्या हुआ है? क्या वजह है कि तुम उदास और परेशान नज़र आ रहे हो? उसने रोकर कहा, ऐ अल्लाह के महबूब! मैं यतीमे मदीना हूँ। मेरे सर पर बाप का साया नहीं है। जो मेरे कपड़े ला देता। मेरी अम्मी नहलाकर मुझे कपड़े पहना देती। इसलिए मैं यहाँ उदास बैठा हूँ। नबी अलैहिस्सलाम ने उसे फ़रमाया कि तुम मेरे साथ आओ।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसे लेकर वापस अपने घर

तशरीफ़ लाए और आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया, हुमैरा! उन्होंने अर्ज़ किया, लब्बैक या रसूलुल्लाह! अल्लाह के रसूल मैं हाज़िर हूँ। आपने फ़रमाया, तुम इस बच्चे को नहला दो। चुनाँचे उन्होंने नहला दिया। इतने में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी चादर के दो टुकड़े कर दिए। कपड़े का एक टुकड़ा उसे तहबंद की तरह बांध दिया गया और दूसरा उसके बदन पर लपेट दिया गया। फिर उसके सर पर तेल लगाकर कंघी की गई। यहाँ तक कि वह बच्चा तैयार हो गया और नबी अलैहिस्सलाम के साथ चलने लगा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नीचे बैठ गए। और उस बच्चे को फ़रमाया, तू पैदल चलकर मस्जिद नहीं जाएगा बल्कि मेरे कंधों पर सवार होकर जाएगा।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस बच्चे को अपने कंधों पर सवार किया और इसी हालत में उसी गली में तशरीफ़ लाए जिसमें बच्चे खेल रहे थे। जब उन्होंने यह मामला देखा तो वह रोकर कहने लगे, काश! हम भी यतीम होते और आज हमें भी नबी अलैहिस्सलाम के कंधों पर सवार होने का शर्फ़ नसीब हो जाता।

नबी अलैहिस्सलाम जब मस्जिद तशरीफ़ लाए तो आप मिम्बर पर बैठ गए तो वह बच्चा नीचे बैठने लगा। नबी अलैहिस्सलाम ने उसे इशारे से फ़रमाया कि तुम आज ज़मीन पर नहीं बैठोगे बल्कि मेरे साथ मिंबर पर बैठोगे। चुनाँचे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस बच्चे को अपने साथ मिंबर पर बिठाया और फिर उसके सर पर हाथ रखकर इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स यतीम की किफ़ालत (देखभाल) करेगा और मुहब्बत व प्यार की वजह से

उसके सर पर हाथ फेरेगा उसके हाथ के नीचे जितने बाल आएंगे अल्लाह तआला उसके आमालनामे में उतनी नेकियाँ लिख देगा।

साइल और महरूम का हिस्सा

नबी रहमत की रहमतुल्लिल आलमीनी से साइल व महरूम को भी हिस्सा मिला। चुनाँचे क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿وفی اموالھم حق معلوم للسائل والمحروم﴾

अमीर लोगों के मालों में साइलीन का भी हिस्सा होता है।

हुनरमंदों का हिस्सा

नबी रहमत की रहमतुल्लिल आलमीनी से हुनरमंदों ने भी हिस्सा पाया। चुनाँचे नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि हुनरमंद मोमिन बेहुनर मोमिन से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को ज़्यादा पसन्दीदा है। इस तरह गोया हुनर सीखने वालों को अल्लाह तआला के महबूब की रहमतुल्लिल आलमीनी से हिस्सा मिल रहा है।

ग़ुलामों और बांदियों का हिस्सा

सैय्यदुल अव्वलीन वल आख़िरीन की रहमतुल्लिल आलमीनी से ग़ुलामों और बांदियों को भी हिस्सा मिला। नबी अलैहिस्सलाम जब दुनिया से तशरीफ़ ले जाने लगे तो उस वक़्त आपने उम्मत को यही नसीहत फ़रमाई ﴿الصلوۃ الصلوۃ وما ملکت ایمانکم﴾ नमाज़ का ध्यान रखना, नमाज़ का ध्यान रखना और जो तुम्हारे मातहत, ग़ुलाम या बांदियाँ हैं तुम उनके हुक़ूक़ की रिआयत करना।

जानवरों का हिस्सा

इंसान तो इंसान ही हैं, जानवरों को भी आप की रहमतुल्लिल आलमीनी से हिस्सा मिला। चुनाँचे नबी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जैसे ज़मानए जाहिलियत में जानवरों को तकलीफ़ दी जाती थी तुम उनको उस तरह तकलीफ़ मत दो।

ज़माना जाहिलियत में जब बारिश न होती तो एक जानवर की दुम के ऊपर कोई चीज़ बांधकर उसको आग लगा दी जाती थी। जब आग लगती और जानवर की दुम जलती तो वह तड़पता, उछलता तो वहाँ के लोग हंसते, मुस्कराते और समझते थे कि जानवर के इस तड़पने की वजह से बारिश आएगी। नबी अलैहिस्सलाम ने ऐसी बुरी हकरतों से मना फ़रमा दिया बल्कि अगर आदमी अपनी सवारी का जानवर रखे तो उसके दाने पानी का ख़्याल रखने का भी हुक्म फ़रमाया है और यह भी तालीम दी है कि तुम उसको बिला वजह तकलीफ़ न दो।

जिन्नात का हिस्सा

जिन्नात को भी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रहमतुल्लिल आलमीनी से हिस्सा मिला। चुनाँचे नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि अगर तुम में से कोई आदमी क़ज़ाए हाजत से फ़ारिग़ होने के लिए वीराने में बैठे तो वह बिस्मिल्लाह पढ़ ले। बिस्मिल्लाह पढ़ लेने से उसके जिस्म के गिर्द अल्लाह तआला की तरफ़ से एक पर्दा आ जाएगा और अगर वहाँ जिन्न मौजूद होंगे तो उनको बेपर्दगी का मसअला पेश नहीं आएगा। फिर फ़रमाया कि जब तुम क़ज़ाए हाजत से फ़ारिग़ हो तो हड्डी वग़ैरह से

पाख़ाना साफ़ न करो क्योंकि हड्डियाँ जिन्नों की गिज़ा होती हैं। जिन्नात के हुक़ूक़ की रिआयत फ़रमाते हुए तलीम दी कि ऐसा काम न करना जिससे जिन्नात को तकलीफ़ पहुँचे।

पेड़ों का हिस्सा

पेड़ों को भी नबी अलैहिस्सलाम की रहमतुल्लिल आलमीनी से हिस्सा मिला। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि आदमी को बिला मक़सद पेड़ के पत्ते को भी नहीं तोड़ना चाहिए। इसलिए कि जो सरसब्ज़ पत्ता पेड़ के साथ लगा होता है वह अल्लाह तआला का ज़िक्र कर रहा होता है। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम फलदार पेड़ों के नीचे पेशाब, पाख़ाना न किया करो। सहाबा किराम ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी इसमें क्या हिकमत है? आपने इर्शाद फ़रमाया, तुम देखते हो कि जब सूरज बुलन्द होता है तो उसकी धूप के साथ पेड़ का साया भी घटता और बढ़ता है। सहाबा किराम ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! जी हाँ ऐसा होता है। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब पेड़ का साया घटता और बढ़ता है तो उस वक़्त पेड़ भी अल्लाह के हुज़ूर सज्दा रेज़ हो रहा होता है। इसलिए तुम उसकी इबादत में दख़ल न दिया करो।

मुर्दों का हिस्सा

नबी अलैहिस्सलाम की रहमतुल्लिल आलमीनी से जहाँ इंसानों, जिन्नों, नबातात (पेड़-पौधो) और जमादात (पहाड़ व पत्थर) को हिस्सा मिला वहाँ मुर्दों को भी हिस्सा मिला। नबी अलैहिस्सलाम ने

तालीम देते हुए इर्शाद फ़रमाया, ﴿اذكروا محاسن موتاكم﴾ कि तुम अपने मुर्दों की अच्छाइयाँ बयान किया करो। अगर उसमें कोई ग़ल्ती, कोताही और ख़ामी भी थी तो उसके तज़्किरे से भी मना फ़रमा दिया।

हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम का हिस्सा

महबूब ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रहमतुल्लिल आलमीनी से फ़रिश्तों ने भी हिस्सा पाया। नबी अलैहिस्सलाम ने एक बार हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम से पूछा, जिब्रील! क्या तुम्हें भी मेरी रहमतुल्लिल आलमीनी से कुछ मिला है? जिब्रील अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के महबूब! जी हाँ। पूछा वह कैसे? जिब्रील अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया वह इस तरह कि आपकी तशरीफ़ आवरी से पहले मैंने अपनी आँखों से शैतान का बुरा अंजाम देखा था। इसलिए मुझे अपने बारे में डर लगा रहता था कि पता नहीं कि मेरा क्या मामला बनेगा लेकिन जब आप तशरीफ़ लाए तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने क़ुरआन पाक में मेरे बारे में इर्शाद फ़रमाया :

﴿انه لقول رسول كريم، ذى قوةٍ عند ذى العرش مكين مطاع ثم امين.﴾

इन अल्फ़ाज़ के साथ जब अल्लाह तआला ने मेरा तज़्किरा किया तो मुझे मालूम हुआ कि मेरा अंजाम अच्छा होगा। लिहाज़ा आपकी रहमतुल्लिल आलमीनी से मैंने भी हिस्सा पा लिया।

तेरी छाँव भी घनी है

अब इस से अंदाज़ा लगाइए कि वह नबीए रहमत जो जहानों

के लिए रहमत बनाकर भेजे गए उनकी रहमतुल्लिल आलमीनी से हर एक ने कितना हिस्सा पाया। इसीलिए किसी शायर ने कहा है—

वह जो शीरीं सुख़नी है मेरे मक्की मदनी
तेरे होंठों से छिनी है मेरे मक्की मदनी

तेरा फैलाओ बहुत है तेरा क़ामत है बुलन्द
तेरी छाँव भी घनी है मेरे मक्की मदनी

दस्ते क़ुदरत ने तेरे बाद फिर ऐसी तस्वीर
न बनाई न बनी है मेरे मक्की मदनी

नस्ल दर नस्ल तेरी ज़ात के मक़रूज़ हैं हम
तू ग़नी इब्ने ग़नी है मेरे मक्की मदनी

उम्मते मुहम्मदिया पर अल्लाह तआला की खुसूसी नवाज़िशें

- नबी रहमत की मुबारक और मक़्बूल दुआओं से इस गुनाहगार उम्मत ने भी ख़ासा हिस्सा पाया। किताबों में लिखा है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआओं के सदक़े अल्लाह तआला ने इस उम्मत से बहुत सारी सख़्तियों को दूर फ़रमा दिया। यहाँ तक कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से एक भूल हुई थी और उस भूल पर अल्लाह तआला की तरफ़ से यह मामला हुआ था कि उनको जन्नत से ज़मीन पर भेज दिया गया। उन्होंने जन्नत की जो पोशाक पहनी हुई थी वह भी उतरवा ली गई। क़ुरआन पाक में भी उनकी भूल का तज़्किरा फ़रमा दिया

गया लेकिन उम्मत मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ अल्लाह तआला का अजीब मामला है कि अगर उम्मते मुहम्मदिया का आदमी भूलने के बजाए जान बूझकर भी गुनाह कर ले तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उसके जान बूझकर गुनाह करने की वजह से उसको अपने दरबार से नहीं निकालते बल्कि उसकी तौबा क़ुबूल फ़रमा लेते हैं। अगर कोई आदमी जिस्म से कपड़े उतारकर गुनाह करे तो अल्लाह तआला अपनी रहमत से दोबारा उसको कपड़े वापस लौटा देते हैं। अगर कोई घर से निकलकर गुनाह करे तो अल्लाह तआला उसको वापस घर पहुँचा देते हैं।

● बनी इस्राईल में से अगर कोई आदमी छिप कर गुनाह किया करता था तो उसके दरवाज़े पर लिख दिया जाता था कि फ़लाँ आदमी ने छिपकर गुनाह किया है। गोया लोगों के सामने उसकी रुसवाई हुआ करती थी लेकिन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इस गुनाहगार उम्मत के साथ पर्दापोशी का मामला फ़रमाया। कितने ही ऐसे लोग हैं जो छिप-छिप कर गुनाह करते हैं। मगर अल्लाह तआला इतने करीम हैं कि फिर भी लोगों की ज़बानों से उनकी तारीफ़ें करवा देते हैं। कबीरा गुनाहों को करने वाले और अपने परवरदिगार के हुक्मों को पीठ पीछे डालने वाले जो सज़ा के हक़दार थे उन पर भी परवरदिगार की तरफ़ से यह रहमत हुई कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको दुनिया के अंदर रुसवा करने के बजाए अपनी रहमत की चादर में छिपा दिया। इसलिए कि मुमकिन है यह किसी वक़्त तोबा कर ले तो यह मेरे और बंदे के बीच मामला है। मैं परवरदिगार इसकी तोबा को क़ुबूल फ़रमा लूंगा।

● हदीस पाक में आया है कि जब बनी इस्राईल के लोगों ने बछड़े की पूजा की तो अल्लाह तआला ने उनकी तोबा की क़ुबूलियत के लिए फ़रमाया कि तुम बाहर निकलो। मैं एक बादल के ज़रिए अंधेरा कर दूंगा। तुम में से जिन लोगों ने बछड़े की पूजा नहीं की वे अपने हाथों में छुरिया पकड़ लें और उन लोगों को मारे जिन्होंने बछड़े की इबादत की। ﴿فاقتلوا انفسکم﴾ तुम क़त्ल करो अपनी जानों को। तो उस वक़्त तोबा की क़ुबूलियत पर ऐसी कड़ी शर्त लगाई जाती थीं। लेकिन उम्मते मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए परवरदिगार ने इन सख़्तियों को दूर फ़रमा दिया। चुनाँचे सौ साल का काफ़िर और मुश्रिक भी कोई हो, अगर वह किसी दिन अल्लाह के हुज़ूर बैठकर सच्चे दिल से तोबा कर ले तो परवरदिगार उसकी तोबा को क़ुबूल फ़रमा लेते हैं।

● पहली उम्मतों के बारे में किताबों में यह बात मिलती है कि जब उनके कपड़ों पर नापाकी लग जाती थी। मनी, पेशाब व पाख़ाना वग़ैरह तो उन्हें उस कपड़े को काटना पड़ता था लेकिन उम्मते मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए अल्लाह तआला ने आसानी फ़रमा दी कि अगर किसी तरह की नापाकी भी जिस्म के साथ लगे तो उसको धोने और पाक करने के लिए सिर्फ़ तीन चुल्लू पानी काफ़ी हो जाता है। अगर किसी कपड़े पर नापाकी लगे और वह उसे तीन बार धो ले तो वह कपड़ा उसके लिए दोबारा इस्तेमाल के क़ाबिल हो जाएगा।

● बनी इस्राईल को हुक्म था कि तुमने जिस अज़ू से गुनाह किया, तुम अपने उस अज़ू को काटोगे तो हम तुम्हारी तोबा क़ुबूल करेंगे। लेकिन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उम्मते मुहम्मदिया के

लिए इस सख़्ती को उठा लिया और आसानी फ़रमा दी।

● बनी इस्राईल के लोग जब ज़कात देते थे तो उनको हुक्म था कि वे अपनी ज़कात के माल को पहाड़ की चोटी पर रखें। फिर एक आग आएगी और उस माल को जला देगी। अगर वह जल गया तो तुम्हारी ज़कात क़ुबूल हो जाएगी लेकिन अगर उसमें से किसी का माल हराम का होता तो आग उसको न जलाती और पूरी क़ौम को पता चल जाता कि किसी के पास हराम का माल है। आख़िर में पूछताछ शुरू होती और यूँ हराम माल वाले की रुसवाई होती। अल्लाह तआला ने इस उम्मत से इस सख़्ती को दूर फ़रमा दिया। कितनी अजीब बात है कि एक भाई जो अमीर है अगर वह ज़कात निकालना चाहता है तो वह उस भाई को दे सकता है जो ग़रीब है। किसी क़रीबी रिश्तेदारों और पड़ौसियों को भी दे सकता है। इंसानों का माल आग जलाए और वह किसी के काम न आए, इसके बजाए अल्लाह तआला ने इस माल को क़ाबिले इस्तेमाल बना दिया। इस माल में अगर ऊँच नीच वाला माल भी हुआ तो वह मामला अल्लाह तआला ने आख़िरत पर छोड़ दिया। दुनिया में रुसवा नहीं फ़रमाया।

● अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने नबी रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रहमतुल्लिल-आलमीनी के सदक़े इस उम्मत को चंद और ख़ास नेमतें भी अता फ़रमाईं। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत के लिए पूरी ज़मीन को मुसल्ला बना दिया है। यह भी इर्शाद फ़रमाया कि मैंने दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत की शक्लों को बिगाड़ न देना। अल्लाह तआला ने इस दुआ को क़ुबूल फ़रमा लिया। जबकि

पहली उम्मतें अगर गुनाह करतीं थीं तो उनकी शक्लों को बिगाड़ दिया जाता था। इर्शादे बारी तआला है ﴿قلنا لهم كونوا قردة خاسئين﴾ कि तुम फटकारे हुए बंदर बन जाओ। नबी अलैहिस्सलाम ने यह भी दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! इन पर कोई ऐसा ज़ालिम मुसल्लत न कर देना जो मेरी पूरी उम्मत को अपने ज़ुल्म का निशान बना दे। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इस दुआ को भी क़ुबूल फ़रमा लिया। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कछ ख़ास दुआएं मांगीं। आप ने फ़रमाया कि मेरी वे दुआएं भी क़ुबूल हुई हैं, मसलन

1. जो आदमी ताउन की हालत में मरेगा उसे क़यामत के दिन शहीदों की क़तार में खड़ा किया जाएगा।
2. जो आदमी पेट की बीमारी में मरेगा वह भी क़यामत के दिन शहीदों में शुमार किया जाएगा।
3. जो आदमी जलकर मरेगा क़ियामत के दिन वह भी शहीदों में शामिल किया जाएगा।
4. जो आदमी मकान गिरने से दबकर मरेगा यानी एक्सीडेन्ट की वजह से अचानक मरेगा क़ियामत के दिन शहीदों में शामिल कर दिया जाएगा यहाँ तक कि अगर कोई औरत बच्चे की विलादत के वक़्त फ़ौत हो जाएगी तो अल्लाह तआला उस औरत को भी क़ियामत के दिन शहीदों में शामिल फ़रमा देंगे।

उम्मत के ग़म में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रोना

अहादीसे मुबारका में आया है कि नबी अलैहिस्सलाम जब

तहज्जुद की नमाज़ में तिलावते क़ुरआन मजीद फ़रमाते और इन आयतों में पहली वाली क़ौमों का तज़्किरा पढ़ते यानी ऐसी आयतें पढ़ते जिन में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हमने उन क़ौमों के सांथ यह मामला किया :

وعادا وثمودا واصحب الرس وقرونا بين ذلك كثيرا وكلا
ضربنا له الامثال وكلا تبرنا تتبيرا

जब इन क़ौमों के हालात का तज़्किरा होता तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़ौरन अपनी गुनाहगार उम्मत का ख़्याल आता और आप इन आयतों को पढ़ते हुए रो पड़ते।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआओं का हिसार (घेरा)

आपकी दाढ़ी मुबारक में कुछ बाल सफ़ेद आ गए तो किसी ने पूछा, ऐ अल्लाह के महबूब! आपके बाल जल्दी सफ़ेद हो गए। आपने फ़रमाया, मुझे सूरः हूद और इस तरह की सूरतों ने बूढ़ा कर दिया। तो जब पहली उम्मतों का तज़्किरा पढ़ते तो आप अपनी उम्मत के बारे में फ़िक्रमंद हो जाते और दुआ करते कि ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत के साथ रहमत का मामला फ़रमाना। ये दुआएं मांगते हुए आपकी दाढ़ी मुबारक आँसुओं से तर हो जाती और सीने मुबारक पर आँसू गिरते और कभी-कभी पाँव मुबारक पर वरम आ जाता। बाज़ रिवायतों में आया है कि खाना खाने के दौरान जब आपको अपनी उम्मत का ख़्याल आता तो आप खाना छोड़ और उम्मत के लिए दुआएं करने में मशग़ूल हो जाते। मालूम

हुआ कि नबी अलैहिस्सलाम की दुआओं ने इस उम्मत का चारों तरफ़ से इहाता किया हुआ है। जो इस उम्मत की हिफ़ाज़त कर रही हैं और अल्लाह तआला की तरफ़ से आसानियाँ पैदा होने का सबब बन रही हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ख़ुसूसी इम्तियाज़

याद रखना उम्मत के ग़म में रोना हम ने किताबों में पहले वाले अंबिया अलैहिमुस्सलाम के बारे में नहीं पढ़ा। उम्मत के ग़म में रोना नबी अलैहिस्सलाम का एक इम्तियाज़ है। आपकी यह ख़ुसूसी शान है कि आप अपनी उम्मत के ग़म में रोते हुए "या रब्बी उम्मती", "या रब्बी उम्मती" फ़रमाया करते थे। पहले अंबिया किराम के साथ तो यह मामला हुआ कि अगर उनकी क़ौमों ने उनकी दावत को क़ुबूल न किया तो उन्होंने बद्दुआएं कर दीं। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने तो यहाँ तक कह दिया, ﴿رب لا تذر على الارض من الكفرين ديارا﴾ एक परवरदिगार इस धरती पर काफ़िरों का कोई एक घर भी बाक़ी न छोड़ना मगर नबी अलैहिस्सलाम के लिए कुछ और ही मामला था। आप रात के वक़्त उठते और अपनी गुनाहगार उम्मत के लिए दुआएं मांगते।

हर नबी के लिए दुआ का अख़्तियार

नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने हर नबी को एक ऐसा अख़्तियार दिया है कि वह जो भी दुआ मांगें उस दुआ को उसी तरह क़ुबूल कर लिया जाएगा। सहाबा

किराम ने पूछा, ऐ अल्लाह के नबी! क्या हर नबी ने दुआ मांगी? आपने इर्शाद फ़रमाया, हाँ। सहाबा किराम ने फिर पूछा, ऐ अल्लाह के नबी! क्या आपने भी दुआ मांगी? नबी रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, नहीं बल्कि मैंने इस दुआ को अपने लिए ज़ख़ीरा बना दिया है। अब क़यामत के दिन मैं वह दुआ मांगूगा और अपनी उम्मत के गुनाहगारों की बख़्शिश का सबब बन जाऊँगा, सुब्हानअल्लाह।

रोज़े महशर उम्मते मुहम्मदिया की पहचान

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरी उम्मत के लोग क़ब्रों से उठेंगे तो मैं उनके लिए शफ़ाअत करूंगा। उसे शफ़ाअते कुबरा कहते हैं। अल्लाह तआला इस शफ़ाअत की वजह से उनको माफ़ फ़रमा देंगे। सैय्यदा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने पूछा, ऐ अल्लाह के नबी! वहाँ तो इतने इंसान इकठ्ठे होंगे आप उनमें से अपनी उम्मत को कैसे पहचानेंगे? आपने फ़रमाया कि मेरे उम्मतियों के जो वुज़ू के आज़ा होंगे अल्लाह तआला क़यामत के दिन उनको नूरानी बना देंगे जिसकी वजह वे तमाम इंसानों में अलग नज़र आएंगे। इस तरह मैं अपनी उम्मत को पहचान लूंगा।

बिला हिसाब जन्नत में दाख़िला

एक रिवायत में आया है कि नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त क़ियामत के दिन मेरी उम्मत के सत्तर हज़ार लोगों को बिला हिसाब किताब जन्नत में अता फ़रमाएंगे और ऐसा ही हर जन्नती अपने साथ सत्तर हज़ार

गुनाहगारों को लेकर जन्नत में जाएगा। मिसाल के तौर पर इमामे आज़म रह० के मुक़ाम के सत्तर हज़ार लोगों को बिला हिसाब जन्नत मिलेगी। फिर ऐसे हर फ़क़ीह को अपनी पैरवी करने वाले सत्तर हज़ार लोगों को अपने साथ लेकर जन्नत में जाने का मौक़ा मिलेगा। अगर सत्तर हज़ार को सत्तर हज़ार से ज़र्ब दें तो इस उम्मत के एक अरब चालीस करोड़ इंसान बिला हिसाब व किताब जन्नत में दाख़िल कर दिए जाएंगे। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के तरफ़ से जब यह वादा हो गया तो अल्लाह के महबूब फिर दुआ मांगते रहे कि ऐ अल्लाह यह तो सिर्फ़ इतने ही लोग बिला हिसाब किताब जन्नत में जाएंगे। इनके अलावा और भी तो होंगे तो परवरदिगार आलम ने वादा फ़रमाया, ऐ मेरे नबी रहमत! आपकी दुआओं को और आपके रोने को मैंने क़ुबूल कर लिया और मैं वादा करता हूँ कि क़ियामत के दिन मैं आपकी उम्मत के लोगों में से तीन लपें भरकर जहन्नम से निकाल दूंगा और उनको अपनी रहमत से जन्नत अता कर दूंगा।

मीरास आदम अलैहिस्सलाम से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पिसरी हिस्सा

महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन तमाम इंसानों की एक सौ बीस सफ़ें होंगी। अल्लाह तआला उनमें से अस्सी सफ़ें मेरी उम्मत की बनाएंगे और चालीस सफ़ें बाक़ी अंबिया किराम की उम्मतों की बनेंगी। सुब्हानअल्लाह, देखें कि जब बाप की मीरास तक़्सीम होती हैं तो दो हिस्से बेटे को और एक हिस्सा बेटी को मिलता है। इसी तरह

जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की मीरास तक़्सीम हुई तो सब अंबिया किराम को मिलने वाला हिस्सा दुख़्तरी हिस्सा बना और महबूबे सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पिसरी हिस्सा मिला।

रोज़े महशर उम्मते मुहम्मदिया को सज्दे का हुक्म

नबी अलैहिस्सलाम के इर्शाद का मफ़्हूम है कि अल्लाह तआला क़ियामत के दिन मेरी उम्मत को सज्दा करने का हुक्म देगा। लिहाज़ा मेरा जो भी उम्मती अल्लाह तआला को सज्दा करेगा अल्लाह तआला उस सज्दे की वजह से उसको जन्नत अता फ़रमाएंगे।

उम्मत के ग़म की इंतिहा

एक रिवायत में आया है कि एक बार हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो अल्लाह के महबूब ने महसूस किया कि जिब्रील अलैहिस्सलातु वस्सलाम कुछ ग़मज़दा हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा कि जिब्रील क्या मामला है कि आज मैं आपको ग़मज़दा देखता हूँ। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया कि ऐ महबूबे कुल जहाँ मैं अल्लाह के हुक्म से आज जहन्नम का नज़ारा करके आया हूँ। उसके देखने की वजह से मेरे ऊपर ग़म के असरात हैं। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने पूछा कि जिब्रील बताओ कि जहन्नम के क्या हालात हैं? अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी जहन्नम के सात दर्जे होंगे। इनमें से जो सबसे नीचे होगा, उसके अन्दर अल्लाह तआला मुनाफ़िक़ों को रखेंगे जैसा कि क़ुरआने पाक में फ़रमाया गया है,

﴿ان المنافقين فى الدرك الاسفل من النار.﴾

उसके ऊपर वाले (छठे) दर्जे में अल्लाह तआला मुशरिक लोगों को डालेंगे, उससे ऊपर पाँचवे दर्जे में अल्लाह तआला सूरज और चाँद की पूजा करने वालों को डालेंगे, चौथे दर्जे में अल्लाह तआला आग को पूजने वालों को डालेंगे, उसके ऊपर तीसरे दर्जे में यहूदियों को डालेंगे, दूसरे दर्जे में ईसाइयों को डालेंगे। यह कहकर हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ख़ामोश हो गए। महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा ज़िब्रील! ख़ामोश क्यों हो गए हैं, बताओ के पहले दर्जे में कौन होंगे? अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! सबसे ऊपर वाले यानी पहले दर्जे में अल्लाह तआला आपकी उम्मत के गुनाहगारों को डालेंगे।

जब आपने ये सुना कि मेरी उम्मत के गुनाहगारों को भी जहन्नम में डाला जाएगा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बहुत ग़मगीन हो गए और आपने अल्लाह के हुज़ूर दुआएं मांगनी शुरू कर दीं। किताबों में लिखा है कि तीन दिन ऐसे गुज़रे कि अल्लाह के महबूब मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिए तशरीफ़ लाते, नमाज़ पढ़कर हुज़रे मे तशरीफ़ ले जाते और हुजूरा बंद कर लेते, हुज़रे के अंदर परवरदिगार के सामने आह व ज़ारी में मशग़ूल हो जाते। सहाबा किराम हैरान होते कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम पर क्या ख़ास कैफ़ियत है कि किसी से बातचीत भी नहीं करते और नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़रे की तन्हाई इख़्तियार फ़रमा लेते हैं। घर में भी तशरीफ़ नहीं ले जा रहे हैं, यह क्या मामला बना?

जब तीसरा दिन हुआ तो सैय्यदना अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से बरदाश्त न हो सका। वह आपके हुज़रे मुबारक पर तशरीफ़

लाए और दस्तक दी और 'अस्सलामु अलैकुम लब्बैक या रसूलुल्लाह' यानी अल्लाह के महबूब मैं हाज़िर हूँ लेकिन अन्दर से कोई जवाब न मिला तो हज़रत सिद्दीके अकबर वापस चले गए और उन्होंने रोते हुए जा कर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, उमर! नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इस वक़्त मेरे सलाम का जवाब अता नहीं फ़रमाया। लिहाज़ा आप जावें शायद जवाब मिल जाए। लिहाज़ा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हुजूरे मुबारक के दरवाज़े पर आए। उन्होंने भी ऊँची आवाज़ से तीन बार सलाम किया मगर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की तरफ़ से कोई जवाब की आवाज़ नहीं आई तो वह भी यही समझे कि अभी दरवाज़ा खोलने की इजाज़त नहीं है। लिहाज़ा वह भी वापस तशरीफ़ ले गए। वापसी पर उनकी मुलाक़ात हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु से हुई। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे कहा, सलमान! आपके बारे में नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया, ﴿سلمان منا اهل البيت﴾ "सलमान तो मेरे अहले बैत में हैं" इसलिए आप जाएं हो सकता है कि आपकी वजह से अल्लाह तआला दरवाज़ा खुलने का सबब बना दे तो उन्होंने भी आकर सलाम किया लेकिन नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की तरफ़ से कोई जवाब न मिला। उसके बाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा गया। जब उनसे कहा गया तो उन्होंने सोचा कि मैं इस बारे में कोई और हल क्यों न करूँ। इसलिए वह खुद दरवाज़े पर जाने के बजाए अपने घर तशरीफ़ ले गए और अपनी मोहतरम बीवी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम पर तीन दिन से ऐसी कैफ़ियत है कि आप हुजूरे की

तन्हाई में हैं। जब मस्जिद में तशरीफ़ लाते हैं तो चेहरा-ए-अनवर पर ग़म के आसार होते हैं, आँखे आबदीदा महसूस होती हैं और नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम किसी से कुछ बात भी नहीं फ़रमाते। लिहाज़ा आप जाएं और दरवाज़ा खटखटाएं। हो सकता है कि आपकी वजह से दरवाज़ा खोल दिया जाए तो सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा तशरीफ़ लायीं और उन्होंने भी आकर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को सलाम किया। आख़िरकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी आवाज़ पर दरवाज़ा खोला और अपनी बेटी को अंदर बुला लिया। फ़ातिमा ने पूछा ऐ अल्लाह के महबूब! आप पर क्या कैफ़ियत है कि तीन दिन से आप मजलिस में भी तशरीफ़ फ़रमा नहीं होते, हुजूरे की तन्हाई को इख़्तियार किया हुआ है और चेहरा-ए-अनवर पर भी ग़म के आसार हैं। उस वक़्त नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने यह पूरी बात बताई कि मुझे जिब्रील अलैहिस्सलाम ने आकर बताया कि मेरी उम्मत के कुछ गुनाहगार लोग जहन्नम में जाएंगे, फ़ातिमा! मुझे अपनी उम्मत के उन गुनाहगारों का ग़म है और मैं अपने मालिक से फ़रियाद कर रहा हूँ कि वह उनको जहन्नम की आग से बरी फ़रमा दे। यह कहकर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फिर लम्बा सज्दा किया, यहाँ तक कि उस सज्दे में भी रोते रहे। आख़िरकार अल्लाह तआला की तरफ़ से वादा आ गया कि ऐ महबूब, ﴿ولسوف يعطيك ربك فترضى﴾ कि अल्लाह तआला आपको इतना अता कर देगा कि आप राज़ी हो जाएंगे। इसलिए नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझसे वादा कर लिया है। लिहाज़ा वह क़यामत के दिन मुझे राज़ी

करेगा और मैं उस वक़्त तक राज़ी नहीं हूँगा जब तक मेरा आख़िरी उम्मती भी जन्नत में नहीं चला जाएगा, सुब्हानअल्लाह। इसके बाद नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम बाहर तशरीफ़ लाए।

रोज़े महशर औलादे आदम की कसमपुर्सी

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि क़यामत के दिन सूरज दस गुना ज़्यादा तेज़ होगा और हर आदमी को यूँ महसूस होगा कि सूरज ज़मीन से कुछ गज़ के फ़ासले पर है। धूप की सख़्ती की वजह से लोग पसीने में डूबे हुए होंगे। सात क़िस्म के आदमियों को अर्श का साया नसीब होगा। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि मख़्लूक़ धूप और प्यास की वजह से तड़प रही होगी। कोई हाल पूछने वाला न होगा। इस हालत में कई हज़ार साल गुज़र जाएंगे।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में दरख़्वास्त

आख़िर लोग परेशान होकर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में पेश होंगे और कहेंगे, ﴿يا ابانا قدم معنا﴾ ऐ हमारे अब्बा जान आप हमारे साथ क़दम आगे बढ़ाइए और अल्लाह के हुज़ूर अर्ज़ कीजिए कि ऐ अल्लाह इस सख़्ती को बरदाश्त करना मुश्किल है। आप हमसे हिसाब ले लीजिए ताकि हमने जाना कहाँ है वहाँ जल्दी पहुँच जाएं। यह तंगी हमारी बरदाश्त से बाहर है।

मगर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम उस वक़्त यह कहते हुए इंकार फ़रमा देंगे कि नहीं मैंने भूल की वजह से एक दाना खा लिया था और उस दाने की वजह से तीन सौ साल तक रो रो कर माफ़ी मांगता रहा। हदीस पाक में आया है कि पूरे इंसानों के जितने आँसू हैं वे सारे के सारे दसवां हिस्सा हैं और नौ हिस्से आँसू हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के उन तीन सौ सालों में निकले। और उसके बाद अल्लाह तआला ने उनकी तौबा को क़ुबूल फ़रमा लिया। इतना रोए और माफ़ी मांगने के बाद और तौबा क़ुबूल हो जाने के बाद आख़िर उन्होंने बैतुल्लाह शरीफ़ बनाया और तीस हज पैदल चलकर किए। मगर क़यामत के दिन वह फिर भी फ़रमाएंगे नहीं, मुझे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के सामने जाने में शर्मिन्दगी महसूस हो रही है। ग़ौर कीजिए कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा की क़ुबूलियत का भी फ़ैसला आ चुका है लेकिन बंदा अपने किए पर पछताता है। जब क़यामत के दिन हमारे जद्दे अमजद का यह हाल होगा तो हम लोग जब अपने गुनाहों को लेकर जाएंगे और बग़ैर तौबा के मर जाएंगे तो हमारे लिए क़यामत के दिन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के सामने खड़ा होना कितना मुश्किल होगा। इसीलिए क़ुरआन मजीद में आता है :

﴿ولو ترا اذاالمجرمون ناكسوا رؤسهم عند ربهم﴾

अगर आप उस मंज़र को देखें जिस दिन मुजरिम अल्लाह के सामने खड़े होंगे तो शर्म की वजह से उनके सर झुके होंगे।

जब क़यामत के दिन शर्म महसूस होगी तो बेहतर है कि हम अपने गुनाहों से आज ही तौबा कर लें।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में दरख़्वास्त

उसके बाद हज़रत आदम अलैहिस्सलाम तमाम इंसानों को कहेंगे कि आप लोग हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के पास चले जाएं। लिहाज़ा सारी मख़्लूक़ हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की तलाश में लग जाएगी। जब नूह अलैहिस्सलाम मिलेंगे तो मख़्लूक़ अर्ज़ करेगी, ऐ आदम सानी! आप हमारे लिए अल्लाह की हुज़ूर में सिफ़ारिश कर दीजिए और हमें अल्लाह के सामने पेश कर दीजिए। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम उनको फरमाएंगे कि नहीं, मैंने अपने बेटे के लिए दुआ कर दी थी और अल्लाह तआला ने फ़रमाया था :

﴿انی اعیذبک ان تکون من الجاھلین﴾

ऐ नूह! ऐसी दुआ न कीजिए कि कहीं आपको नबुव्वत के मर्तबे से उतार न दिया जाए।

इसलिए मुझे तो उस फ़रमान से डर लगता है कि मैं वह दुआ ही क्यों कर बैठा था। मैंने अल्लाह तआला के हुज़ूर फ़ौरन माफ़ी मांगी थी। लिहाज़ा मैं अल्लाह तआला के हुज़ूर पेश नहीं हो सकता। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का असल नाम अब्दुल ग़फ़्फ़ार था मगर वह इस के मांगने के बाद इतना रोए कि उनका नाम नूह पड़ गया। नूह का मतलब है नूहा करने वाला यानी रोने वाला। इतना रोने के बावजूद क़यामत के दिन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के सामने जाने से जब उनको इतना डर लगेगा तो सोचना चाहिए कि हम तो अपने गुनाहों पर रोते भी नहीं बल्कि जब गुनाह करते हैं तो ख़ुशी-ख़ुशी दूसरों को बताते हैं कि मैंने फ़लाँ गुनाह किया है। सोचें तो सही कि क़यामत के दिन हम अल्लाह के हुज़ूर कैसे पेश होंगे?

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में दरख़्वास्त

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम सब इंसानों को फ़रमाएंगे कि आप हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास चले जाएं। सारी इंसानियत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को ढूंढकर उनसे अर्ज़ करेगी कि ऐ अल्लाह के ख़लील! आप हमें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर पेश कर दीजिए। लेकिन वह फ़रमाएंगे कि नहीं आज मुझे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के पास जाते हुए घबराहट हो रही है क्योंकि मेरी ज़िंदगी में तीन बातें ऐसी थीं जो मसलेहत की बिना पर तो हुईं लेकिन ख़िलाफ़े वाक़िआ थीं। आज मुझे उन तीनों बातों पर शर्मिन्दगी है। उनमें से पहली बात तो यह थी कि एक बार इनको इनकी क़ौम कहीं ले जाना चाहती थी मगर इन्होंने कह दिया था कि मैं बीमार हूँ। वाक़ई उन मुश्रिकों के साथ जाने में तो रूहानी बीमारी ही थी। इसलिए उन्होंने उनको उज़्र पेश कर दिया था। अल्लाह तआला ने क़ुरआन पाक में फ़रमाया था कि उन्होंने फ़रमाया, ﴿فقال انی سقیم﴾ कि मैं बीमार हूँ। उन्होंने यहाँ बीमारी का उज़्र तो किया लेकिन हक़ीक़त के ख़िलाफ़ था, इसलिए फ़रमाएंगे कि मुझे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के सामने हाज़िर होने से शर्म महसूस हो रही है। दूसरी बात यह कि एक बार वह अपनी बीवी हज़रत सारा रज़ियल्लाहु अन्हा को लेकर मिस्र के क़रीब से गुज़रे। वक़्त का बादशाह एक ज़ालिम इंसान था। उसने पुलिस वालों को कहा हुआ था कि तुम जहाँ कहीं भी किसी ख़ूबसूरत औरत को देखो तो उसे पकड़कर मेरे पास ले आओ। इस तरह वह उसकी बेइज़्ज़ती करके गुनाह कर बैठता। अल्लाह तआला ने

बीबी सारा रज़ियल्लाहु अन्हा को हुस्न व जमाल का सांचा बनाया था। लिहाज़ा पुलिस वालों ने जब उनको देखा तो उन्हें भी पकड़कर ले गए। उसका दस्तूर यह था कि अगर उस औरत के साथ उसका शौहर होता तो वह उसे क़त्ल करवा देता और अगर भाई या बाप होता तो फिर वह उनको क़त्ल नहीं करवाता था। अलबत्ता बुराई का काम करता था। जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पहुँचे तो उनसे भी उसने पूछा कि तुम कौन हो और इस औरत के क्या लगते हो? आपने अपनी जान की हिफ़ाज़त को निगाह में रखते हुए कह दिया यह मेरी बहन है। अल्लाह तआला भी फ़रमाते हैं ﴿انما المؤمنون اخوة﴾ कि बेशक ईमान वाले भाई-भाई हैं। इसलिए ईमान की निस्बत से मोमिन मर्द और मोमिन औरत को दीनी भाई और बहन कह दिया जाता है। आपने भी इसी निस्बत से हज़रत सारा रज़ियल्लाहु अन्हा को बहन कह दिया क्योंकि वह उसी दीन पर थीं जिस पर आप थे। यह बात सौ फ़ीसद शरिअत के मुताबिक़ जाएज़ थी। जान बचाने के लिए तो हराम चीज़ भी हलाल हो जाती है। मगर उसके बावजूद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को झिझक महसूस हो गई।

तीसरी बात यह है कि एक बार हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बुतों को तोड़ा था। जब काफ़िरों ने आकर उनसे पूछा कि हमारे माबूदों को किसने तोड़ा तो उन्होंने फ़रमाया था कि तुम उससे पूछो जो तुम्हें इन बुतों से बड़ा नज़र आता है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बुतों को तोड़कर कुल्हाड़ा सबसे बड़े बुत के कंधे पर रख दिया था। इसलिए बड़े बुत से पूछने को फ़रमाया। अब ज़ाहिर में यह कोई इतनी बड़ी बात तो नहीं थी। काफ़िरों को समझाने के लिए ऐसा किया था कि वे पूछेंगे तो बुत उन्हें जवाब

नहीं देंगे लेकिन बात तो हक़ीक़त के ख़िलाफ़ थी। लिहाज़ा इस बात पर भी इतना अफ़सोस होगा कि अल्लाह का ख़लील होने के बावजूद उन्हें अल्लाह के सामने जाते हुए शर्मिन्दगी महसूस हो रही होगी।

इस पर हम लोग सोचें जो दिन रात झूठी क़समें खाते हैं। झूठी गवाहियाँ देते हैं। लोगों के सामने ग़ल्तियों पर पर्दे डालने के लिए और अपने आपको दुनिया की शर्मिन्दगी से बचाने के लिए झूठी बातें करते फिर रहे हैं। क़यामत के दिन हमें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर जाते हुए कितनी शर्मिन्दगी होगी।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में दरख़्वास्त

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम फ़रमाएंगे कि आप सब लोग मूसा कलीमुल्लाह के पास चले जाएं। वह आपकी शफ़ाअत करेंगे। चुनाँचे सारी इंसानियत हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के पास आएगी और कहेगी, ऐ कलीमुल्लाह! आप हमारी शफ़अत फ़रमा दीजिए। मगर हज़रत मूसा कलीमुल्लाह फ़रमाएंगे कि नहीं। मैं आपकी शफ़ाअत नहीं कर सकता क्योंकि एक बार ऐसा हुआ था कि मेरे मुख़ालिफ़ों में से एक आदमी मेरी इत्तिबा करने वालों से झगड़ रहा था और मैंने नसीहत की ख़ातिर उसको एक मुक्का मारा था ताकि उसे समझ आ जाए लेकिन उसको वह मुक्का उसको ऐसा लगा कि वह मर गया और मैंने अल्लाह तआला से माफ़ी का ऐलान भी फ़रमा दिया मगर फिर भी वह मेरा मुक्का लगने की वजह से मरा तो था। इसलिए मुझे इस बात की वजह से अल्लाह तआला के सामने जाते हुए शर्म महसूस हो रही है।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में दरख़्वास्त

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम सारी इंसानियत को फ़रमाएंगे कि आप ईसा अलैहिस्सलाम के पास चले जाएं। सारी इंसानियत हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के पास आएगी मगर वह भी कहेंगे कि नहीं मुझे अल्लाह रब्बुइलज़्ज़त के सामने जाते हुए इसलिए डर लग रहा है कि मेरी उम्मत ने मुझे और मेरी माँ को अल्लाह तआला के साथ शरीक बना दिया था। आज अल्लाह तआला मुझसे कहीं यह न पूछ लें कि क्या आपने तो नहीं कहा था कि मुझे और मेरी माँ को अल्लाह के साथ शरीक बना लो। इसलिए आज मुझे अल्लाह तआला के सामने जाते हुए डर लग रहा है।

शाफ़ेअ महशर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में दरख़्वास्त

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम फ़रमाएंगे कि आप अल्लाह तआला के महबूब नबी अलैहिस्सलाम के पास जाएं, चुनाँचे सब लोग नबी अलैहिस्सलाम के पाए आएंगे। "तर्ग़ीबवत्तरहीब" में हाफ़िज़ मुन्ज़री रह० ने यह बात लिखी है कि इस वक़्त अल्लाह तआला अंबिया किराम के लिए मिम्बर लगवाएंगे और तमाम अंबिया किराम अपने-अपने मिम्बरों पर जलवा अफ़रोज़ होंगे। नबी अलैहिस्सलाम के लिए भी मिम्बर पेश किया जाएगा मगर अल्लाह तआला के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिम्बर पर नहीं बैठेंगे क्योंकि उस वक़्त आपके दिल में यह ख़्याल होगा कि कहीं ऐसा न हो कि मैं इस मिम्बर पर बैठ जाऊँ और यह उड़कर जन्नत में चला जाए और मेरी गुनाहगार उम्मत पीछे रह जाए।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा जाएगा ऐ मेरे महबूब! आप मिम्बर पर क्यों नहीं बैठे? आप अ़र्ज़ करेंगे, ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत के गुनाहगारों का तो अभी फ़ैसला नहीं हुआ। मैं इस मिम्बर पर कैसे बैठूं। फिर अल्लाह तआला आप पर एक ख़ास तजल्ली फ़रमाएंगे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि उस तजल्ली फ़रमाने पर अल्लाह तआला मुझे "मक़ामे महमूद" अता फ़रमा देंगे। मैं वहाँ जाकर एक सज्दा करूंगा और सज्दे में अल्लाह तआला की तारीफ़ें करूंगा जो न पहले किसी ने की और न बाद में कोई करेगा, रोने की हालत में सज्दा करूंगा। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त मेरे सज्दे को क़ुबूल फ़रमाएंगे और मुझसे पूछेंगे, ऐ मेरे प्यारे महबूब! आप क्या चाहते हैं? मैं अर्ज़ करूंगा। ऐ अल्लाह! आप अपने बंदों का हिसाब ले लीजिए। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, अच्छा तुम लोगों को हिसाब के लिए पेश करो।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का हिसाब व किताब

रिवायत में आया है कि जब इजाज़त मिल जाएगी तो इस वक़्त नबी अलैहिस्सलाम अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को हाथ से पकड़कर अल्लाह तआला के हुज़ूर में पेश करना चाहेंगे कि आप जाइए ताकि हिसाब किताब शुरू हो जाए। यह सुनकर हज़रत अबूबक्र की आँखों में आँसू आ जाएंगे और वह कहेंगे कि ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं अपनी उम्र के आख़िरी हिस्से में मुसलमान हुआ था। मेरी उम्र का ज़्यादा हिस्सा

इस्लाम से पहले का है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि मैं आगे पेश न किया जाऊँ। मगर अल्लाह के महबूब फ़रमाएंगे, अबूबक्र! तुझे आगे जाना होगा। चुनाँचे जब हज़रत अबूबक्र आगे बढ़ेंगे तो वह वही काम करेंगे जो नबी अलैहिस्सलाम ने किया। वह भी क़दम आगे बढ़ाकर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर सज्दे में गिर जाएंगे और रोने लग जाएंगे। किताबों में लिखा है कि सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु इतना रोएंगे कि अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि ऐ मेरे महबूब के ग़ारे यार! क्यों रोते हो? सज्दे से सर उठाओ क्या चाहते हो? चुनाँचे अल्लाह तआला उनके सज्दे को क़ुबूल फ़रमाएंगे। और उन पर एक ख़ास तजल्ली फ़रमाएंगे। हदीस पाक में आया है :

﴿ان الله يتجلى للخلق عامة ولكن لابى بكر خاصة.﴾

क़यामत के दिन अल्लाह तआला अपने बंदों पर आम तजल्ली फ़रमाएंगा लेकिन अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के ऊपर ख़ास तजल्ली फ़रमाएंगे।

अल्लाह तआला अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस यार से इतने ख़ुश हो जाएंगे कि ख़ास तजल्ली फ़रमाएंगे।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की पेशी

उनके बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को पेश किया जाएगा। हदीस पाक में आया है कि जब हज़रत उमर आगे बढ़ेंगे तो अल्लाह तआला फ़रमाएंगे ﴿السلام عليك يا عمر﴾ ऐ उमर! तुझ पर सलामती हो। एक और हदीस मुबारक में है कि ﴿اول من يسلم عليه رب عمر﴾ क़यामत के दिन जिसे सबसे पहले अल्लाह तआला

सलाम फ़रमाएंगे वह उमर रज़ियल्लाहु अन्हु होंगे। उन्होंने ऐसी साफ़ सुथरी ज़िंदगी गुज़ारी होगी कि उनके आमाल को देखकर अल्लाह तआला खुश हो जाएंगे।

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की पेशी

फिर उनके बाद अल्लाह तआला के महबूब हज़रत उस्मान को पेश करेंगे। किताबों में लिखा है कि जब हज़रत उस्मान अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर पेश होंगे तो अल्लाह तआला उनका हिसाब बहुत ही जल्दी ले लेंगे। वह इसलिए कि एक बार ईद का दिन था। नबी अलैहिस्सलाम ईद की नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले जाने लगे तो हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के महबूब! कुछ दे दीजिए ताकि हम कुछ पका लें। मदीने की बेवाएं और यतीम बच्चे उम्मीद लेकर आएंगे। मैं उनको कुछ दे सकूं। अल्लाह के महबूब ने फ़रमाया कि मेरे पास तो इस वक़्त कुछ नहीं है। चुनाँचे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ पढ़ने के लिए तशरीफ़ ले गए।

जब वापस आए तो देखा कि घर में सब कुछ पका हुआ है और मदीने की बेवाएं और यतीम ले ले कर जा रहे हैं। महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा यह कहाँ से आया? हज़रत आएशा ने अर्ज़ किया जब आप नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले गए तो हज़रत उस्मान ने सामान से लदा हुआ एक-एक ऊँट आपकी सब बीवियों को हदिये के तौर पर भेजा है। यह सुनकर नबी अलैहिस्सलाम का दिल इतना खुश हुआ कि कि आप ने दुआ मांगी

﴿يا رحمٰن سهل الحساب على عثمان رضى الله عنه﴾

ऐ रहमान! तू उस्मान का हिसाब आसान फ़रमा देना।

नबी अलैहिस्सलाम की यह दुआ क़ुबूल होगी और हज़रत उस्मान का हिसाब किताब बहुत जल्दी ले लिया जाएगा।

हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का हिसाब व किताब

उनके बाद हज़रत अली को अल्लाह रब्बुइज़्ज़त के हुज़ूर पेश किया जाएगा। हदीस पाक में आया है :

﴿اسرع المحاسبة يوم القيامة حساب على﴾

क़यामत के दिन सबसे आसान और जल्दी हिसाब अली रज़ियल्लाहु अन्हु का होगा।

पुलसिरात का सफ़र

जब नबी अलैहिस्सलाम के चारों यार पेश हो जाएंगे तो अल्लाह तआला का जलाल उसके जमाल में तब्दील हो जाएगा। चुनाँचे अल्लाह तआला फ़रमाएंगे ﴿وامتازوا اليوم ايها المجرمون﴾ ऐ मुजरिमो! मेरे नेक बंदों से आज जुदा हो जाओ। लिहाज़ा काफ़िरों और मुश्रिकों को एक तरफ़ कर दिया जाएगा और दूसरी तरफ़ नेक बंदों को कर दिया जाएगा। उसके बाद अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि जहन्नम के ऊपर बनी हुई पुलसिरात से गुज़कर यह नेक लोग जन्नत में चले जाएं। चुनाँचे जब मोमिन बंदे पुलसिरात के ऊपर गुज़रने लगेंगे तो कुछ ईमान वाले ऐसे बंदे होंगे जो बिजली की तेज़ी से गुज़र जाएंगे। कुछ हवा की तेज़ी से, कुछ

घोड़े की तेज़ रफ़्तारी के साथ, कुछ भागते हुए आदमी की रफ़्तार के साथ, कुछ चलते हुए आदमी की रफ़्तार के साथ और कुछ रेंगते हुए आदमी की रफ़्तार के साथ गुज़र जाएंगे। जो लोग भी पुलसिरात से आगे गुज़र जाएंगे अल्लाह तआला उनको जन्नत अता फ़रमा देंगे। पुलसिरात के ऊपर से हर एक को गुज़रना पड़ेगा। इर्शाद बारी तआला है :

وان منكم الا واردها كان على ربك حتما مقضيا ثم

ننجى الذين اتقوا ونذر الظلمين فيها جثيا.

जो गुनाहगार होंगे वे कट-कट कर जहन्नम के अंदर गिरते जाएंगे।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जन्नत में दाख़िला

जब पुलसिरात से आगे चले जाएंगे तो अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह समझेंगे कि मेरी उम्मत के सारे लोग मेरे साथ आ गए हैं और जहन्नम से पार हो चुके हैं। लिहाज़ा आप उन सब लोगों को लेकर जन्नत में तशरीफ़ ले जाएंगे यहाँ तक कि जन्नत में रहते हुए बहुत अरसा गुज़र जाएगा।

मुसलमानों को जहन्नम में काफ़िरों का ताना

रिवायत में आया है कि जो लोग पुलसिरात से गुज़रते हुए जहन्नम में गिरेंगे उन्हें अज़ाब होगा। जहन्नम के सबसे ऊपर के दर्जे में ईमान वाले गुनाहगार होंगे। जब बहुत अरसा गुज़र जाएगा

तो अल्लाह तआला अपनी हिकमत से उनके और काफ़िरों व मुश्रिकों के बीच आग को शीशे की तरह बना देंगे। काफ़िर और मुश्रिक जब मुसलमान गुनाहगारों को देखेंगे कि वह भी जहन्नम की आग में जल रहे हैं तो वे मुसलमानों को ताना देंगे कि हम तो अल्लाह का इंकार किया करते थे, जिसकी वजह से हम जल रहे हैं लेकिन आप तो ख़ुदा को मानते थे रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मानते थे और इसके बावजूद आप भी हमारी तरह जल रहे हो। आपका ख़ुदा आपके किस काम आया?

जहन्नमी मुसलमानों से जिब्रील अमीन अलैहिस्सलाम की मुलाक़ात

हदीस पाक में आया है कि जब जहन्नमी काफ़िर मुसलमान गुनाहगारों को ताना देंगे तो अल्लाह तआला जिब्रील अलैहिस्सलाम को बुलाएंगे और फ़रमाएंगे कि ऐ जिब्रील! आज हमारे मानने वालों को ताना दिया जा रहा है कि उनके साथ भी वही सुलूक हो रहा है जो न मानने वालों के साथ हो रहा है। जाओ ज़रा जहन्नम के हालात मालूम करके आओ। चुनाँचे जिब्रील अलैहिस्सलाम जहन्नम में जाएंगे। जहन्नम के दरवाज़े पर उसके दारोग़ा मालिक खड़े होंगे। वह दरवाज़ा खोलकर हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम को अंदर दाख़िल करेंगे। जब गुनाहगार मुसलमान उनको देखेंगे तो वह फ़रिश्तों से पूछेंगे कि ये कौन हैं? उस वक़्त उनको बताया जाएगा कि यह वह फ़रिश्तों है जो तुम्हारी नबी अलैहिस्सलाम के पास "वही" लेकर जाते थे।

शफ़ी-ए-आज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम गुनाहगारों का पैग़ाम

जब उनके पास नबी रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तज़्किरा किया जाएगा तो उस वक़्त गुनाहगार लोगों को नबी अलैहिस्सलाम की याद आएगी और वे कहेंगे वा मुहम्मदा! वा मुहम्मदा! जहन्नमी लोग इन अलफ़ाज़ में जिब्रील अलैहिस्सलाम को रोकर कहेंगे कि ऐ जिब्रील! नबी अलैहिस्सलाम के पास अल्लाह का पैग़ाम लेकर जाते थे, आज हम गुनाहगारों का पैग़ाम भी हमारे सरदार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहुँचा देना कि आक़ा आप तो हमें भूल ही गए हैं। हम जहन्नम की आग में जल रहे हैं और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जन्नत के अंदर हैं। जिब्रील अलैहिस्सलाम उनके साथ वादा करेंगे कि मैं आपका पैग़ाम अल्लाह तआला के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ज़रूर पहुँचाउंगा।

शफ़ाअते कुबरा

चुनाँचे जब जिब्रील अलैहिस्सलाम जहन्नम से बाहर आएंगे तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त फ़रमाएंगे, जिब्रील! आपने मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गुनाहगार उम्मतियों से जो वादा किया है उस वादे को निभाना ज़रूरी है। लिहाज़ा जिब्रील अलैहिस्सलाम जन्नत में जाएंगे। उस वक़्त नबी अलैहिस्सलाम जन्नतुलफ़िरदौस में अंबिया किराम की मज्लिस में मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा होंगे। जिब्रील अलैहिस्सलाम को जब आप देखेंगे तो फ़रमाएंगे, जिब्रील! आज कैसे आना हुआ। जिब्रील अलैहिस्सलाम अर्ज़ करेंगे कि मैं आज

आपकी उम्मत के गुनाहगारों का पैग़ाम आपके पास लाया हूँ। जब नबी अलैहिस्सलाम यह सुनेंगे कि मेरी उम्मत के कुछ गुनाहगार अभी भी जहन्नम में हैं तो आप हैरान होंगे कि अच्छा! मुझे तो ख़्याल ही नहीं था। चुनाँचे नबी अलैहिस्सलाम उस वक़्त अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर सज्दा फ़रमाएंगे और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के सामने कहेंगे, ऐ परवरदिगार मेरी उम्मत के गुनाहगारों को माफ़ फ़रमा दीजिए। अल्लाह तआला उनको "शफ़ाअते कुबरा" की इजाज़त फ़रमाएंगे कि ऐ मेरे महबूब! आप जिसके बारे में चाहें शफ़ाअत फ़रमाइए, हम उसको जहन्नम से निकाल देंगे।

शफ़ाअते कुबरा की यह ख़ुशख़बरी सुनकर नबी अलैहिस्सलाम जहन्नम की तरफ़ चलेंगे। उस वक़्त जिब्रील अलैहिस्सलाम एक ऐलान कर देंगे कि ऐ जन्नतियों! नबी अलैहिस्सलाम जहन्नमियों की शफ़ाअत के लिए जा रहे हैं। तुम भी साथ चलो। चुनाँचे उस दुल्हे के साथ शफ़ाअत करने के लिए एक बारात चलेगी। नबी अलैहिस्सलाम शफ़ाअत फ़रमाएंगे। दूसरे अंबिया किराम भी शफ़ाअत फ़रमाएंगे। सारे जन्नती शफ़ाअत फ़रमाएंगे। जिसका जो भी वाकिफ़ होगा हर उस बंदे को जहन्नम से निकाल लिया जाएगा। यहाँ तक कि अगर दुनिया में किसी मोमिन को एक प्याला पानी पिलाया होगा तो अल्लाह तआला उसक अमल की बरकत से उसको भी जहन्नम से निकाल लेंगे।

उतक़ाउर्रहमान कौन?

जब सब लोग शफ़ाअत कर चुकेंगे तो अल्लाह तआला

फ़रमाएंगे, ऐ मेरे प्यारे महबूब! मैंने आपसे वादा किया था कि मैं आपकी उम्मत के तीन लप भरकर जहन्नम से निकालूंगा। लिहाज़ा अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त अपनी क़ुदरत के दोनों हाथों से जहन्नम से तीन लपभर कर निकालेंगे यानी जैसे आदमी दोनों हाथों से आटा निकाल लेता है। उस लप में इस उम्मत के खरबों लोगे होंगे जिनको अल्लाह तआला अपनी रहमत से जहन्नम से निकाल देंगे।

उनके जिस्म जल-जल कर कोयला हो चुके होंगे। अल्लाह तआला की तरफ़ से हुक्म होगा कि इनको नहरे हयात से ग़ुस्ल दिया जाए। चुनाँचे जब उनको ग़ुस्ल दिया जाएगा तो उनके जिस्म ठीक हो जाएंगे। लेकिन उनके माथे पर उतक़ाउर्रहमान का नाम लिख दिया जाएगा, जिसका मतलब यह होगा कि रहमान के अपनी रहमत से उनकी बख़्शिश कर दी है। उसके बाद उनको जन्नत में भेज दिया जाएगा। अब नबी अलैहिस्सलाम की उम्मत का कोई गुनाहगार भी पीछे नहीं रहेगा। सबको बख़्श दिया जाएगा।

उतक़ाउर्रहमान की फ़रियाद

हदीस पाक का मफ़हूम है कि जब ये लोग जन्नत में ज़िंदगी गुज़ारने लगेंगे तो वह जन्नती जो पहले से जन्नत में होंगे जब उनको देखेंगे तो मज़ाक किया करेंगे और कहेंगे कि देखो हम पर तो अल्लाह तआला की रहमत हो गई और उसने हमारे अमलों को क़ुबूल फ़रमा लिया लेकिन आप लोग तो रिआयती पास हैं। आपके माथे पर 'उतक़ाउर्रहमान' का नाम लिखा हुआ है। उन

जन्नतियों के साथ पहले वाले जन्नती इस तरह मज़ाक़ करेंगे जिन जन्नतियों के माथों पर 'उतक़ाउर्रहमान' लिखा होगा। उनको यह बात महसूस होगी। लिहाज़ा एक बार वे सब जन्नती अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर दुआ करेंगे, ऐ अल्लाह! आपने हमें जहन्नम से निजात तो दे दी लेकिन माथे पर एक मुहर भी लगा दी। जिसकी वजह से सब पहचान रहे हैं कि हम खुद इस क़ाबिल नहीं थे बल्कि रिआयती पास होकर आ गए हैं। ऐ अल्लाह! हमें इससे बचा लीजिए। अल्लाह तआला उनकी इस फ़रियाद को क़ुबूल करेंगे और फ़रमाएंगे कि हमने खुद यह मुहर लगाई थी ताकि तुम्हारे अपने दिल में यह कैफ़ियत पैदा हो और तुम हम से मांगो और हम तुम्हें अता कर दें। चुनाँचे उनकी फ़रियाद पर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उनके माथों पर से 'उतक़ाउर्रहमान' की इस मुहर को भी हटा देंगे।

शफ़ाअत की दुआ

मोहतरम जमाअत! काश कि हम भी इन रिआयती पास लोगों मे क़यामत के दिन शुमार हो जाएं। अपने अमल तो इस क़ाबिल नहीं हैं मगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत नसीब हो जाए। दूसरे अंबिया किराम की शफ़ाअत, अल्लाह के नेक बंदों की शफ़ाअत नसीब हो जाए। काश! अल्लाह का कोई ऐसा बंदा हो जो दुनिया में हमें भी पहचाने वाला हो। हम भी किसी की पहचान में आने वाले बन जाएं जो क़यामत के दिन हमें जहन्नम में जलता देखे तो इतना कह दे कि एक अल्लाह यह मुझसे ताल्लुक़ रखने वाला था। यह

मेरी इज़्ज़त करता था और मेरे साथ राब्ता रखने वाला था। काश कि कोई ऐसा कहकर हमें भी जहन्नम से निकालने वाला बन जाए।

रब्बे करीम! से दुआ है कि परवरदिगार आलम हमें अपनी रहमत से क़यामत के दिन इन रिआयती पास लोगों में शामिल फ़रमा ले। हमारे आमाल तो इस क़ाबिल नहीं। अलबत्ता अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमत ही का सहारा है और महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिनको अल्लाह तआला ने रहमतुल्लिल-आलमीन बना दिया दिल में तमन्ना है कि अल्लाह उसी नबीए रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सदक़े हमें शर्मिन्दा होने वालों में शामिल न फ़रमाए बल्कि हमें अपनी रहमत में से हिस्सा पाने वालों में शामिल फ़रमा दे, अमीन सुम्मा आमीन।

नूर-ए-निस्बत

अल्लाह तआला जब किसी के सीने को दीन के लिए खोल देते हैं तो उसे नूर से भर देते हैं। उस बंदे के लिए शरिअते मुताहिरा पर अमल करना आसान हो जाता है। मकरूहात शरिअत उसके लिए मकरूहाते तबिअया (तबियत) बन जाती हैं। उसकी सोच अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुक्मों के मुताबिक़ ढल जाती है। अगर इंसान इस पर मेहनत करता रहे तो वह एक ऐसे मुक़ाम पर पहुँच जाता है जहाँ वह अपनी सोच में भी अल्लाह तआला की नाफ़रमानी का इरादा नहीं करता।

नूर-ए-निस्बत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِا للّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِo بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِo

اَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَه لِلْاِسْلَامِ فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍمِّنْ رَّبِهٖ oوَقَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى فِيْ مَقَامٍ آخِرٍ اَفَمَنْ كَانَ مَيْتًا فَاَحْيَيْنٰهُ وَجَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا يَمْشِيْ بِهٖ فِي النَّاسِo وَقَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى فِيْ مَقَامٍ آخِرٍ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْر. سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَo وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ o وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلِمِيْنَo

नूर और ज़ुलमत का मफ़हूम

"नूर" अरबी ज़बान का लफ़्ज़ है जिसका मतलब "रोशनी" है। इसके मुक़ाबले में "ज़ुलमत" का लफ़्ज़ आता है जिसका मतलब है "अंधेरा" है। जब कोई बंदा कलिमा पढ़ता है तो इस अमल की वजह से उसके सीने के अंदर रोशनी आती है। इसी तरह जब कोई मोमिन नेक आमाल करता है तो हर-हर नेक अमल के बदले उसके सीने में रोशनी आती है। इसके मुक़बले जब कोई आदमी गुनाह करता है तो उसके दिल पर इस अमल की वजह से काला दाग़ लग जाता है। अगर इंसान तोबा कर ले तो दाग़ मिट जाता है और अगर गुनाहों पर गुनाह करते रहे तो दाग़ों पे दाग़ लगते रहते हैं यहाँ तक कि इंसान का दिल बिल्कुल

स्याह हो जाता है। क़ुरआन मजीद में रोशनी के लिए नूर का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है जबकि अंधेरे के लिए ज़ुलमत का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है।

नूरानी और तारीक सीने

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿وما يستوى الاعمى والبصير ولا الظلمت والنور﴾ इस आयत की रू से जिस तरह बीना और नाबीना बराबर नहीं हो सकते इसी तरह अंधेरा और रोशनी बराबर नहीं हो सकते। लिहाज़ा जिस इंसान के सीने के अंदर नूर और जिसके सीने के अंदर ज़ुलमत हो, वे दोनों भी एक जैसे नहीं हो सकते।

मकरूहाते शरिआ का मकरूहाते तबिया बनना

अल्लाह तआला जब किसी के सीने को दीन के लिए खोल देते हैं तो उसे नूर से भर देते हैं। ﴿النور اذا دخل الصدر انفتح﴾ कि जब नूर सीने में दाख़िल होता है तो सीने को खोल देता है। उस बंदे के लिए शरिअते मुताहिरा पर अमल करना आसान हो जाता है। मकरूहात शरिअया (शरीअत) उसके लिए मकरूहाते तबिया (तबियत) बन जाती हैं। उसकी सोच अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुक्मों के मुताबिक़ ढल जाती है। अगर इंसान इस पर मेहनत करता रहे तो वह एक ऐसे मुक़ाम पर पहुँच जाता है जहाँ वह अपनी सोच में भी अल्लाह तआला की नाफ़रमानी का इरादा नहीं करता।

कबीरा गुनाह से पाक हस्ती

जब दारुल उलूम देवबंद का संगे बुनियाद रखा जाने लगा तो

हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी रह० ने ऐलान फ़रमाया कि आज मैं इस दारुलउलूम का संगे बुनियाद एक ऐसी हस्ती से रखवाऊँगा जिसने कबीरा गुनाह तो क्या करना कभी कबीरा गुनाह करने का दिल में इरादा ही नहीं किया।

रिज़्क़े हलाल

हज़रत मौलाना असग़र हुसैन कांधलवी रह० के मामू शाह हुसैन अहमद मुन्ने शाह के नाम से मशहूर थे। देखने में उनका क़द छोटा था। लेकिन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ उनका क़द बहुत बड़ा था। उनकी ज़िंदगी माली लिहाज़ से बहुत मामूली सी थी। वह घास काटकर बेचा करते थे। और रोज़ाना थोड़े-थोड़े से पैसे बचाते रहते। यहाँ तक कि पूरे साल में इतने पैसे बच जाते कि वह एक बार दारुलउलूम के उस्तादों की दावत करते थे। उस्ताद लोग फ़रमाते थे कि हम सारा साल उनकी दावत के मुन्तज़िर रहते क्योंकि हम जिस दिन उनके घर से खाना खा लेते थे उसके बाद चालीस दिन तक हमारी नमाज़ की हुज़ूरी में इज़ाफ़ा हो जाता था। सुब्हानअल्लाह इतना हलाल व पाकीज़ा माल था।

नूर भरे सीन की बरकात

इमाम रब्बानी हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० ने अपने मकातीब (ख़त) में लिखा है कि इस उम्मत में ऐसे-ऐस परहेज़गार औलिया किराम गुज़रे हैं कि बीस-बीस साल तक गुनाह लिखने वाले फ़रिश्तों को उनका गुनाह लिखने का मौक़ा नसीब नहीं हुआ। सुब्हानअल्लाह यह नूर भरे सीने की बरकात हैं।

नूर से महरूम लोगों की कसमापुर्सी

कियामत के दिन यही नूर इंसान के सामने होगा। इर्शादे बारी तआला है ﴿يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ﴾ उस दिन उनका नूर उनके सामने और दाएं तरफ़ होगा और वे उस नूर की रोशनी में कदम बढ़ा रहे होंगे। मुनाफ़िक़ीन भी उस वक़्त क़रीब होंगे और ईमान वालों से कहेंगे ﴿انظرونا نقتبس من نوركم﴾ ज़रा हमारी तरफ़ भी तवज्जेह कीजिए ताकि हम भी आपके नूर से फ़ायदा उठा लें। रास्ते पर चलते हुए अगर एक आदमी के पास टार्च हो तो दूसरे उससे कहते हैं कि ज़रा रोशनी इस तरफ़ करना ताकि हमें भी रास्ता नज़र आ जाए। वहाँ भी ठीक यही हाल होगा। लेकिन ﴿قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَائَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا﴾ उन्हें कहा जाएगा तुम वापस दुनिया में जाओ। यह नूर तो उस मंडी में मिला करता था। तुम्हें यह नूर वहाँ से लेकर आना चाहिए था।

नूर हासिल करने की मंडी

मेरे दोस्तो! यह दुनिया नूर हासिल करने की मंडी है। इसलिए यहाँ ज़्यादा से ज़्यादा नेक आमाल कीजिए। सच बोलिए, सच की ज़िंदगी गुज़ारिए, नमाज़ पढ़िए, तिलावत कीजिए, अख़्लाक़े हमीदा को अपना लीजिए और हर काम शरिअत व सुन्नत के मुताबिक़ कीजिए। इस तरह हर दिन सीने के नूर में इज़ाफ़ा होता चला जाएगा। मिसाल के तौर पर एक ज़ीरो वॉट का बल्ब भी होता है, पाँच और दस वॉट का भी होता है, सौ, दो सौ, पाँच सौ और हज़ार वॉट का बल्ब भी होता है। पावर बढ़ती चली जाती है तो रोशनी में भी इज़ाफ़ा होता चला जाता है। यह बात समझिए कि

जिसने कलिमा पढ़ लिया, अल्लाह तआला ने उसको कुछ रोशनी अता फ़रमा दी। अब यह आदमी नेक आमाल में जितना बढ़ता चला जाएगा उसी क़द्र उसके ईमान की पावर में इज़ाफ़ा होता चला जाएगा।

खिले चेहरों का राज़

अल्लाह वाले अपने ईमान को मज़बूत कर लेते हैं कि उनके सीने रोशन हो जाते हैं यहाँ तक कि अल्लाह तआला उनके चेहरों को रोशन कर देता है। उनके चेहरे ﴿الذين اذا راء واذكر الله﴾ के मिस्दाक़ बन जाते हैं। देखने वाले जब उनके खिले चेहरे देखते हैं तो उनको अल्लाह याद आ जाता है। उनके चेहरों पर बहार की सी रौनकें नज़र आती हैं। उनके सीने का नूर उनके चेहरे पर अक्स डालता है। अजनबी लोगों को भी बताने और तार्रुफ़ कराने की ज़रूरत पेश नहीं आती।

हज़रत ख़्वाजा अब्दुल मालिक सिद्दीक़ी रह० की मक़्बूलियत

हज़रत मुर्शिदे आलम रह० फ़रमाया करते थे कि जब हज़रत ख़्वाजा अब्दुल मालिक रह० ट्रेन पर सफ़र करते और किसी स्टेशन पर ट्रेन रुकती और वे मालूम करना चाहते कि कौन सा स्टेशन है तो गाड़ी की खिड़की में से ज़रा सा झांककर बाहर देखते तो प्लेटफार्म पर जो अंजान लोग जा रहे होते थे वे उनका चेहरा देखकर उनसे मिलते और बातें शुरू कर देते थे। नावाक़िफ़ लोग होते थे मगर चेहरे को देखकर उनकी मसीहाई का अंदाज़ा हो

जाता था। यहाँ तक कि कभी-कभी ऐसा भी होता कि कोई कलाम किए बग़ैर लोग आते और सलाम करने के बाद कहते कि हज़रत! मैं आपसे बैअत होना चाहता हूँ, सुब्हानअल्लाह।

मर्दे हक़्क़ानी की पेशानी का नूर
कब छिपा रहता है पेश ज़ी शऊर

इस्लाम क़ुबूल करने का अजीब वाक़िआ

कुछ हिन्दुओं ने हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रह० के हाथ पर इस्लाम क़ुबूल किया। दूसरे हिन्दुओं ने उन्हें कहा कि तुम कैसे निकले कि अपने बाप-दादा कि रास्ते से हटकर मुसलमान बन गए? उन्होंने हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रह० के चेहरे की तरफ़ इशारा किया और कहने लगे कि ज़रा इस आदमी के चेहरे को देखो, यह चेहरा किसी झूठे इंसान का चेहरा नज़र नहीं आता।

जंगल में मंगल

हज़रत मुर्शिदि आलम रहमतुल्लाहि अलैहि ने एक बार इस आजिज़ से फ़रमाया कि अब अल्लाह तआला ने मेरा यह हाल कर दिया है कि मैं जंगल में जाकर भी बैठ जाऊँ तो अल्लाह तआला वहाँ भी मंगल बना दे। और फिर पंजाबी में एक बात कही जिसका मतलब है कि अब तो अगर उल्टा क़दम भी उठा लूँ तो अल्लाह तआला उल्टे को भी सीधा कर दिया करते हैं। वाक़ई एक ऐसा वक़्त आ जाता है कि अल्लह तआला अपने बंदे की ज़बान से निकली हुई बात को पूरा कर देते हैं।

हज़रत मुर्शिद आलम रह० का मक़ामे अबूदियत

एक दफ़ा मुर्शिदि आलम रह० मस्जिद मे तश्रीफ़ फ़रमा थे, पता नहीं कि इस आजिज़ के दिल में क्या बात आई कि अर्ज़ किया कि हज़रत आपको घर तश्रीफ़ लाए हुए काफ़ी वक़्त हो गया है। आप वुज़ू ताज़ा करने के लिए तश्रीफ़ ले जाएं। हज़रत रह० ने मुस्कुराकर देखा और घर तश्रीफ़ ले गए। अगले दिन बैठे हुए थे, पता नहीं क्या बात हुई कि इस आजिज़ ने अर्ज़ किया हज़रत! काफ़ी वक़्त हो गया आपने खाना भी नहीं खाया, आप खाना खा लीजिए। हज़रत रह० फिर मुस्कुरा पड़े और घर तश्रीफ़ ले गए। तीसरे दिन फिर कोई ऐसी बात हो गई तो हज़रत रह० मुझसे फ़रमाने लगे कि देखो! एक ऐसा वक़्त आता है कि बंदे के दिल में किसी चीज़ की ज़रूरत महसूस होती है तो अल्लाह तआला उसको मख़्लूक़ के सामने ज़बान से सवाल भी नहीं करने देते बल्कि मख़्लूक़ के दिल में डाल देते हैं और वे खुद उनको कहते हैं कि आप हमारी इस चीज़ को क़ुबूल फ़रमा लीजिए। फिर फ़रमाने लगे कि अल्लाह तआला ने मुझे एक ऐसा वक़्त दे दिया है कि अब मुझे मख़्लूक़ के सामने किसी चीज़ को कहने की ज़रूरत ही पेश नहीं आती। सुब्हानअल्लाह! अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से मांगते मांगते बंदे पर एक ऐसा वक़्त आ जाता है कि अल्लाह तआला उस बंदे को मख़्लूक़ से मांगने का मौक़ा ही नहीं देते। फ़रमाते हैं कि जिसका सर कभी किसी ग़ैर के सामने नहीं झुका मैं अपने उस बंदे का हाथ किसी ग़ैर के सामने कैसे फैलने दूंगा, सुब्हानअल्लाह।

पाँच क़िस्म का नूर

क़यामत के दिन नेकियों का नूर इंसान के साथ-साथ होगा। हदीस पाक में आया है कि यह नूर पाँच क़िस्म का होगा। यूँ समझिए कि एक कमरा नूर से भरा हुआ है और मुख़्तलिफ़ जगह पर बल्ब लगे हुए हैं। इसी तरह रोज़े महशर इंसान के पाँच तरफ़ नूर होगा। उलमा ने लिखा है कि "ला इलाहा इल्लल्लाह" का नूर अपने ख़ास रंग और शान के साथ इंसान के आगे होगा। इसकी मिसाल यूँ समझिए कि जैसे ट्यूब लाइट की भी रोशनी होती है और बल्ब की भी रोशनी होती है। फिर बल्बों में कुछ पीली रोशनी के भी बल्ब होते हैं। रोशनी तो सब में है मगर हर एक की अपनी शान है और अपना रंग है। इसी तरह क़यामत के दिन मुख़्तलिफ़ आमाल का नूर मुख़्तलिफ़ रंग का होगा। अल्लाहु अकबर का जितना विर्द किया होगा उसका नूर दाईं तरफ़ होगा। यही वजह है कि अल्लाहु अकबर में अल्लाह तआला की अज़मत को बयान किया गया है। अब अज़मत का तक़ाज़ा है यह नूर इंसान के दाईं तरफ़ आए। इसलिए कि दाईं तरफ़ कमाल की निशानी होती है। सुब्हानअल्लाह का नूर इंसान के बाईं तरफ़ होगा। इसलिए कि सुब्हानअल्लाह में तंज़ीह है और बाईं तरफ़ ऐब से पाक होने का तक़ाज़ा करती है। इसलिए अल्लाह तआला सुब्हानअल्लाह के नूर को बाईं तरफ़ कर देंगे। अल्हम्दुलिल्लाह के विर्द का नूर इंसान के पीछे होगा और यह बंदे की क़यामत के दिन पुश्तपनाही कर रहा होगा। और ईमान का नूर इंसान के सर के ऊपर होगा और यह बंदा इन अनवारात की रोशनी में अपने परवरदिगार की तरफ़ जा रहा होगा और उसे कहा जाएगा :

﴿يَا أَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ارْجِعِي إِلَى رَبِّكِ﴾

ऐ इत्मिनान पाने वाली जान! लौट अपने रब की तरफ़।

फ़रिश्ते उसको उस रोशनी के साथ जन्नत के अंदर ले जाएंगे।

नूरे निस्बत का इदराक (एहसास)

ज़िक्र करने वाले बंदे की ज़ात में अल्लाह तआला ज़िक्र की तासीर रख देते हैं। आप देखिए कि अगर कोई लतीफ़ तबियत वाला आदमी किसी सिगरेट पीने वाले के क़रीब से गुज़र जाए तो उसे फ़ौरन एहसास हो जाता है कि यह आदमी सिगरेट पीने वाला है। अगर सिगरेट पीने वाले बंदे के क़रीब से गुज़रते हुए उसका एहसास हो जाता है तो इसी तरह नूरे निस्बत की ऐसी तासीर होती है कि क़रीब से गुज़रने वाले बंदे को भी इसका एहसास हो जाता है।

एक औरत का इस्लाम क़ुबूल करना

एक बार हम अमरीका में नमाज़ पढ़कर मस्जिद से बाहर निकले। सामने मेन रोड था। हम दो आदमी आपस में बातचीत कर रहे थे। सामने सड़क पर एक औरत तेज़ी के साथ कार चलाती हुई गुज़री लेकिन चंद मीटर जाकर उसने ब्रेक लगा दी। उसने गाड़ी मोड़ी और एक दो मिनट में उसने हमारे क़रीब आकर गाड़ी खड़ी कर दी। वहाँ पर आमतौर पर ऐसा होता है कि आदमी जिस मंज़िल पर जा रहा हो और उसके पास पूरा पता न हो तो उसे पूछने की ज़रूरत पेश आती है। चुनाँचे हमने सोचा कि

मुमकिन है कि अमरीकन औरत रास्ता भूल गई हो और हम से कोई पता मालूम करना चाहती है।

इस आजिज़ ने अपने साथ वाले दोस्त से कहा कि आप जाएं और पूछें कि क्या आपको डायरेक्शन की ज़रूरत है?

जब उसने जाकर पूछा तो वह कहने लगी नहीं मैं तो अपने घर जा रही हूँ और घर की डायरेक्शन तो हर एक को आती है। हमें क्या पता कि अल्लाह तआला उसको दुनिया के घर के बजाए असली घर का रास्ता दिखाना चाहते हैं। उसने कहा मैं अपने घर जा रही हूँ तो हमारे दोस्त ने पूछा कि फिर आपने यहाँ क्यों गाड़ी ब्रेक लगाई?

उसके जवाब में कहने लगी यह बंदा कौन है?

उसने कहा यह बंदा मुसलमान है।

वह कहने लगी कि इससे पूछो कि क्या यह मुझे मुसलमान बना सकते हैं? न नाम का पता न पते का पता सिर्फ़ नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की सुन्नतों को देखा और अल्लाह तआला ने उसके दिल में ऐसा असर डाल दिया कि वहीं गाड़ी में बैठे बैठे उसने कलिमा पढ़ लिया।

इस आजिज़ ने अपना रुमाल दे दिया जिसको उसने अपना दुपट्टा बना लिया और फिर अपने घर को रवाना हो गई, सुब्हानअल्लाह।

दीने इस्लाम की जाज़िबयत

अल्लाह तआला ऐसे भी हिदायत का नूर अता फ़रमा देते हैं

कि बंदे सिर्फ़ शक्ल देख लेते हैं और कलिमा पढ़कर इस्लाम के दामन में दाख़िल हो जाते हैं। इसमें किसी का कमाल नहीं बल्कि इसमें सुन्नत का कमाल है। यह जाज़्बियत इस दीन के अंदर है कि इस दीन को जब कोई मुजस्सम हालत में देखता है तो वह अपने आप उसकी तरफ़ खिंचा चला आता है।

निस्बत की बरकतें

निस्बत की बरकतें बड़ी अजीब हैं। इस सिलसिले में कुछ मिसाले पेश ख़िदमत हैं :

मस्जिद की अज़मत

देखिए, ज़मीन तो सब अल्लाह तआला ने बनाई है लेकिन पूरी ज़मीन को अल्लाह तआला ने जन्नत में दाख़िल करने का वादा नहीं फ़रमाया। अलबत्ता ज़मीन का वह टुकड़ा जिसे हम मस्जिद बना दें वह अल्लाह का घर बन जाए। ज़मीन के उस टुकड़े को अल्लाह तआला के नाम के साथ निस्बत हो जाए तो उलमा ने लिखा है कि क़ियामत के दिन दुनिया की तमाम मस्जिदों को बैतुल्लाह में शामिल करके बैतुल्लाह को जन्नत का हिस्सा बना दिया जाएगा। हालाँकि यह वही ज़मीन थी जिस पर मस्जिद बनने से पहले लोग जूतों समेत गुज़रते थे और जानवर गुज़रते हुए पेशाब, पाख़ाना कर देते थे मगर अल्लाह के नाम के साथ निस्बत मिल जाने की वजह से उसकी अज़मत बढ़ गई। आख़िरत में यह जन्नत का हिस्सा बन जाएगी।

एक पेड़ से जन्नत का वादा

उस्तवाना हनाना एक पेड़ है। उसको नबी अलैहिस्सलाम से मुहब्बत थी। इस वजह से क्योंकि इस पेड़ को नबी अलैहिस्सलाम से निस्बत हो गई थी इसलिए इसके साथ जन्नत का वादा कर दिया गया।

कुत्ते का जन्नत में दाख़िला

अस्हाबे कहफ़ के साथ एक कुत्ता चल पड़ा था। मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसे इंसानी शक्ल अता करेंगे और जन्नत अता फ़रमा देंगे। नेकों के साथ निस्बत हासिल होने से अगर कुत्ते को जन्नत मिल सकती है तो अगर मोमिन अल्लाह वालों के साथ निस्बत पक्की कर लेगा तो निजात क्यों नहीं होगी।

ऊँटनी जन्नत में

हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊँटनी के बारे में मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसको भी जन्नत अता फ़रमाएंगे हालाँकि दुनिया के दूसरे ऊँट जन्नत में नहीं जाएंगे मगर इसको क्यों हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम से निस्बत है इसलिए उसको भी जन्नत में दाख़िल करने का वादा फ़रमा दिया।

ताबूते सकीना का ज़िक्र

अल्लाह वालों के ज़ेरे इस्तेमाल जो चीज़ें रहती हैं उनके अंदर भी निस्बत की बरकतें आ जाती हैं। इसकी दलील क़ुरआने

अज़ीम से मिलती है। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि दो फ़रिश्ते एक बड़ा संदूक़ लेकर हज़रत तालूत अलैहिस्सलाम के पास आए। सूरः बक़रः में इसका तज़्किरा है। फ़रमाया, ﴿فيه سكينة﴾ उसमें सकीना थी। सकीना उस रहमत, बरकत और नूर को कहते हैं जो अल्लाह तआला की तरफ़ से नाज़िल किया जाता है। क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला एक जगह पर इर्शाद फ़रमाते हैं ﴿انزل الله على رسوله﴾ कि अल्लाह तआला ने अपने रसूल के ऊपर सकीना को नाज़िल कर दिया। अल्लाह तआला ने उस संदूक़ के लिए सकीना का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया और इर्शाद फ़रमाया :

﴿فِيهِ سَكِينَةٌ وَبَقِيَّةٌ مِمَّا تَرَكَ اٰلُ مُوْسٰى وَ اٰلُ هَارُوْنَ تَحْمِلُهُ الْمَلٰئِكَةُ﴾

कि इसमें रहमत, बरकत और नूर था और आले मूसा और आले हारून की जो बची हुई चीज़ें थीं, वे उसमें मौजूद थीं। मालूम हुआ कि इन बुज़ुर्गों के बचे हुए तबर्रुकात में अल्लाह तआला ने सकीना को रख दिया था। सोचने की बात है कि जो चीज़ें बुज़ुर्गों के इस्तेमाल में रहती हैं अगर उनमें भी बरकतें आ जाती हैं तो फिर उन बुज़ुर्गों के अपने दिलों में बरकतों का क्या आलम होगा?

इमाम अहमद बिन हंबल रह० के जुब्बे में बरकत

किताबों में लिखा है कि इमाम शाफ़ई रह० ने ख़्वाब देखा कि इमाम अहमद बिन हंबल रह० पर ख़ल्के क़ुरआन के मसूअले के बारे में कुछ आज़माइशें आएंगी लेकिन अल्लाह तआला उनको कामयाब फ़रमा देंगे। इमाम अहमद बिन हंबल रह०, इमाम शाफ़ई रह० के शागिर्द भी थे। इमाम शाफ़ई रह० ने अपने एक शागिर्द

को भेजा कि जाओ और इमाम अहमद बिन हंबल को यह ख़्वाब सुना दो। चुनाँचे उस शागिर्द ने जाकर ख़्वाब सुना दिया कि ख़ल्क़ क़ुरआन के बारे में अल्लाह तआला की तरफ़ से आज़ामइशें आएंगी और अल्लाह तआला उस आज़ामईश में आपको कामयाब फ़रमा देंगे। अब ज़ाहिर में तो तकलीफ़ पहुँचने वाली बात थी मगर अल्लाह वाले तो देखते हैं कि इस आज़माइश में हम कामयाब होते हैं या नहीं। इस ख़्वाब में तो बशारत भी थी कि कामयाब होंगे।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह सुन्नत भी है कि अगर कोई ख़ुशख़बरी लाए तो ख़ुशख़बरी लाने वाले को कुछ हदिया पेश कर दिया जाए। चुनाँचे इमाम अहमद बिन हंबल रह० के पास एक जुब्बा पड़ा हुआ था। उन्होंने वह जुब्बा इस आने वाले को हदिए के तौर पर पेश कर दिया। जब शागिर्द ने वापस जाकर इमाम शाफ़ई रह० को कारगुज़ारी सुनाई तो इमाम शाफ़ई रह० ने वह जुब्बा हासिल करने की ख़्वाहिश ज़ाहिर फ़रमाई तो शगिर्द ने इमाम शाफ़ई रह० के हवाले कर दिया। इमाम शाफ़ई रह० उस जुब्बे को पानी में डुबोकर रखते थे और वह पानी बीमार को पिला देते तो अल्लाह तआला बीमार को शिफ़ा अता फ़रमा देते थे। अल्लाह तआला ने इमाम अहमद बिन हंबल रह० के जुब्बे में ऐसी बरकत रखी थी कि इमाम शाफ़ई रह० जैसी अज़ीम शख़्सियत उस जुब्बे से बरकत हासिल करती थी।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के छूने की बरकतें

एक बार हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा तन्दूर में रोटियाँ लगा रही थीं। इसी बीच नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके

घर तशरीफ़ लाए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी बेटी से बहुत मुहब्बत थी। बेटियाँ तो वैसे ही लख़्ते जिगर होती हैं। नबी अलैहिस्सलाम ने देखा तो फ़रमाया, फ़ातिमा! एक रोटी मैं भी बना दूँ। चुनाँचे आपने भी आटे की रोटी बना दी और फ़रमाया तन्दूर में लगा दो। हज़रत फ़ातिमा ने वे रोटी तन्दूर में लगा दी।

हज़रत फ़ातिमा जब रोटियाँ लगाकर फ़ारिग़ हो गयीं तो कहने लगीं, अब्बू जान! सब रोटियाँ पक गयीं मगर एक रोटी है कि जैसे लगाई थी वैसे ही लगी हुई है। उस पर आग ने कोई असर नहीं किया। नबी अलैहिस्सलाम मुस्कराए और फ़रमाया कि जिस आटे पर मेरे हाथ लग गए हैं उस पर आग असर नहीं करेगी, सुब्हानअल्लाह।

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु के घर गया। मैं खाना खा रहा था। उन्होंने अपनी बाँदी से कहा कि तौलिया लाओ। जब वह तौलिया लायीं तो देखा कि मैला कुचैला था। हज़रत अनस ने उसको ग़ुस्से की नज़र से देखा और कहा कि जाओ उसे साफ़ करके लाओ। फ़रमाते हैं कि वह भाग कर गई और जलते हुए तन्दूर के अंदर तौलिये को फेंक दिया। थोड़ी देर के बाद उसने वह तौलिया बाहर निकाला तो बिल्कुल साफ़ सुथरा था, वह गर्म-गर्म तौलिया मेरे पास लाई। मैंने हाथ तो साफ़ कर लिए मगर हज़रत अनस की तरफ़ सवालिया नज़रों से देखा। वह मुस्कराए और कहने लगे कि एक बार नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे घर दावत पर तशरीफ़ लाए थे, मैंने यह तौलिया महबूब सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम को हाथ मुबारक साफ़ करने के लिए दिया था। जब से महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हाथ साफ़ किए आग ने इस तौलिये को जलाना छोड़ दिया है। जब यह तौलिया मैला हो जाता है तो हम इसे तन्दूर में डाल देते हैं। आग मैल कुचैल को खा लेती है और हम साफ़ तौलिया बाहर निकाल लेते हैं, सुब्हानअल्लाह।

कपड़े में बरकत

सैय्यदना हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त में मदीना तैय्यबा में एक बार आग निकली। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत तमीम दारी रज़ियल्लाहु अन्हु को भेज दिया। उन्होंने अपने रुमाल को चाबुक की तरह बना लिया और उस रूमाल को आग पर मारना शुरू कर दिया। आग इस तरह पीछे हटने लगी जैसे चाबुक के लगने से जानवर भाग रहा होता है क्योंकि महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआएं थीं। इसलिए अल्लाह तआला ने उस कपड़े में ऐसी तासीर रख दी कि उसकी बरकत से आग हटती हटती जहाँ से आई थी आख़िरकार वहीं पहुँच गई।

ईमान की निस्बत की बरकत

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त में मुसैलमा कज़्ज़ाब ने नबुव्वत का दावा कर दिया। उस कज़्ज़ाब ने मशहूर ताबई हज़रत अबू मुस्लिम ख़ौलानी रह० को किसी तरह गिरफ़्तार कर लिया और कहा कि तुम मेरी नबुव्वत का इक़रार

कर लो। वह कहने लगे हर्गिज़ नहीं। वह कहने लगा मैं तुझे आग में डालूँगा। फ़रमाने लगे, ﴿فاقض ما انت قاض﴾ तू जो कर सकता है कर ले। क्योंकि पहले से ऐसा ही होता आया है। चुनाँचे उसने आग जलवाई और अबू मुस्लिम ख़ौलानी रह० को आग में डाल दिया। उन्होंने अल्लाहु अकबर और बिस्मिल्लाह के अलफ़ाज़ पढ़े और आग में छलांग लगा दी मगर आग ने उन पर कोई असर न किया।

जब मुसैलमा कज़्ज़ाब ने देखा कि आग ने अबूमुस्लिम ख़ौलानी रह० पर कोई असर नहीं किया तो वह परेशान हो गया और डर गया कि कहीं इस बंदे की वजह से मेरी पकड़ न आ जाए। कहने लगा अच्छा मैं तुझे आज़ाद करता हूँ। लिहाज़ा उन्हें आज़ाद कर दिया गया। यह वाक़िआ यमामा में पेश आया। और यह ख़बर फैलते फैलते हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा तक पहुँच गई।

अबूमुस्लिम ख़ौलानी रह० के दिल में अल्लाह तआला ने यह बात डाली कि मुझे नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम का दीदार करने के लिए जाना चाहिए। झूठे नबी ने मुझे जलाना चाहा मगर मेरे मालिक ने मुझे महफ़ूज़ फ़रमाया। अब क्यों न मैं सच्चे नबी के क़दमों में हाज़िरी दे आऊँ। चुनाँचे यमामा से मदीना हाज़िर हुए। मस्जिदे नबवी में दो रक्अत पढ़कर खड़े ही थे कि हज़रत उमर क़रीब आ गए। उन्होंने अजनबी आदमी को देखकर पूछा आप कौन हैं? कहने लगे मैं अबू मुस्लिम ख़ौलानी हूँ। पूछा कहाँ से आए हो? कहने लगे मैं यमामा से आया हूँ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि हमने सुना है कि यमामा में एक

आदमी को मुसैलमा कज़्ज़ाब ने आग में डाल दिया मगर आग ने उस पर कोई असर नहीं किया। क्या तुमने भी उसके बारे में सुना है? फ़रमाने लगे जी हाँ, वह आदमी तो मैं ही हूँ जिसके साथ वाक़िआ पेश आया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बड़े ख़ुश हुए। फ़रमाने लगे चलो मैं आपको ख़लीफ़ाए रसूल के पास लेकर जाऊँगा। सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास लेकर आए और कहने लगे, अमीरुल मुमिनीन! आज अल्लाह तआला ने इस उम्मत में ऐसे आदमी को खड़ा कर दिया है कि जिसने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ईमान की याद ताज़ा कर दी। सुब्हानअल्लाह! अल्लाह तआला ने ईमान की निस्बत से उनको दुनिया की आग में जलने से महफ़ूज़ फ़रमा दिया। बिल्कुल इसी तरह जब ईमान वालों को क़यामत के दिन जहन्नम के ऊपर से गुज़ारा जाएगा तो जहन्नम की आग कहेगी, ﴿اسرع يا مؤمن ان نورك اطفأ نارى.﴾ ऐ मोमिन! जल्दी चल कि तेरे नूर ने तो मेरी आग को बुझा डाला है।

नस्बी (ख़ानदानी) विलायत की बरकत

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम एक बस्ती में गए जहाँ दो ऐसे बच्चे थे जिनके घर की दीवार गिरी हुई थी। फ़रमाया गया ﴿كَانَ تَحْتَهُ كَنزٌ لَّهُمَا﴾ कि इस दीवार के नीचे उनका ख़ज़ाना था। इस दीवार को दोबारा बनाने का हुक्म किस लिए दिया गया? इसलिए कि ﴿كَانَ اَبُوْ هُمَا صَالِحاً﴾ कि उनका बाप बड़ा नेक था। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि लफ़्ज़ तो अबू का इस्तेमाल हुआ है मगर इससे मुराद उनका दादा, परदादा

या ऊपर की पुश्त में अल्लाह का कोई बड़ा वली गुज़रा था। उसकी वजह से अल्लाह तआला ने उनकी कई नस्लों के बाद बच्चों की जाएदाद की हिफ़ाज़त फ़रमा दी। न सिर्फ़ ज़ाहिरी सरमाए की ही हिफ़ाज़त की जाती है बल्कि औलिया अल्लाह की आने वाली इक्कीस इक्कीस नस्लों के ईमान की भी अल्लाह तआला हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं। इसलिए अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में इर्शाद फ़रमाया, ﴿إِنَّ الَّذِيْنَ آمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحَاتِ﴾ बेशक वे लोग जो ईमान लाए और नेक आमाल किए ﴿واتبعهم ذريتهم بايمان﴾ और फिर उनकी औलाद ने भी ईमान के साथ उनकी पैरवी की ﴿الحقناهم ذريتهم﴾ तो हम उनकी औलादों को भी उनके साथ क़यामत के दिन इकठ्ठा कर देंगे। ﴿وما التنهم من عملهم من شيء﴾ और उनके अमलों में से कुछ भी ज़ाए न करेंगे।

मुफ़स्सिरीन की राय

इस आयत के तहत मुफ़स्सिरीन ने लिखा कि जब अल्लाह वाले इस दुनिया से चले जाएंगे और उनसे ताल्लुक़ रखने वाले, ज़ाहिरी औलाद हो या बातिनी औलाद हों, उनके रास्ते पर चलने की कोशिश करेंगे और अल्लाह तआला ने उनको जितनी हिम्मत दी होगी वह उस रास्ते पर चलेंगे। अगरचे वे अपने आमाल की वजह से बहुत नीचे के मुक़ाम पर होंगे और उनके रूहानी मशाइख़ बहुत बुलन्द मुक़ाम पर होंगे लेकिन चूँकि उन्होंने उसी रास्ते पर क़दम उठाया होगा। इसलिए अल्लाह तआला क़यामत के दिन अपनी रहमत के साथ उन औलादों को भी उनके बड़ों के साथ मिला देंगे।

मुहब्बत वालों का मिलाप

उलमा ने किताबों में वज़ाहत के साथ लिखा है कि अगर दो बंदों में अल्लाह तआला की रज़ा के लिए मुहब्बत होगी और उन दो में अल्लाह तआला ने एक बंदे को तक़्वे में बुलन्द मुक़ाम अता फ़रमाया होगा यहाँ तक कि वह अल्लाह तआला का बहुत मुक़र्रब बन जाएगा और दूसरा बंदा उस रास्ते पर क़दम भी उठाएग मगर पस्त परवाज़ होगा। उतना आगे नहीं बढ़ सकेगा, दिल में मुहब्बत रखते हुए अमल करने की कोशिश में लगा रहेगा जब मरेगा तो ﴿المرء مع من احب﴾ कि बंदा क़यामत के दिन उसी के साथ होगा जिसके साथ उसे मुहब्बत होगी। इस ख़ुशख़बरी की बुनियाद पर अल्लाह तआला इस कम मर्तबे वाले बंदे को भी उससे मुहब्बत रखने की वजह से इस दूसरे बुलन्द मर्तबा बंदे को मुक़ाम अता फ़रमा देंगे।

निस्बते नक़्शबंदिया की बरकत

इस हदीस पाक पर ग़ौर कीजिए कि क़यामत के दिन नबी अलैहिस्सलाम जहाँ होंगे अल्लाह तआला सिद्दीक़े अकर को भी मुहब्बत रखने की वजह से उनके साथ कर देंगे। फिर सैय्यदना सलमान फ़ारसी ने सैय्यदना सिद्दीक़े से मुहब्बत की और उनके साथ एक ख़ास निस्बत का ताल्लुक़ पाया, उनको भी हज़रत अबूबक्र के साथ कर देंगे। बाद में आने वालों को भी उन्हीं बड़ों के साथ करते जाएंगे यहाँ तक कि सब नबी अलैहिस्सलाम के साथ होंगे। मालूम हुआ कि जिन मशाइख़ के साथ हमारी बातिनी निस्बत है जब उनको क़यामत के दिन नबी अलैहिस्सलाम के

क़दमों में जगह मिलेगी तो हमें भी अपने मशाइख़ के साथ सच्ची मुहब्बत रखने की वजह से और उनकी बताई हुई तालीमात पर हिम्मत भर अमल करने की वजह से क़यामत के दिन नबी अलैहिस्सलाम के क़दमों में जगह मिल जाएगी, सुब्हानअल्लाह।

क़ुबूलियते दुआ में निस्बत का मक़ाम

अल्लाह तआला निस्बत की बरकत से बंदे की दुआएं क़ुबूल करते हैं। इसकी दलील यह है कि जब सैय्यदना आदम अलैहिस्सलाम दुनिया में उतारे गए तो आपने दो सौ साल या तीन सौ साल तक अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर बहुत आजिज़ी और रोना-धोना किया। इतना रोए कि अगर आँसुओं को जमा कर दिया जाए तो वे पानी की नदी और नालें की तरह बहना शुरू कर दे। आख़िर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से माफ़ी मांगते हुए उसके महबूब का वास्ता दिया और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह! मैं आपके महबूब की निस्बत से दुआ मांगता हूँ, या अल्लाह! मेरी तोबा क़ुबूल फ़रमा लीजिए। परवरदिगार आलम ने तोबा तो क़ुबूल फ़रमा ली मगर साथ ही पूछा, ऐ मेरे प्यारे आदम! आपको कैसे पता चला कि यह मेरे इतने मुक़र्रब और महबूब हैं। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह! जब मैं जन्नत में था तो मैंने अर्श पर लिखा हुआ देखा "ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलल्लाह।" मैं पहचान गया कि जिस हस्ती का नाम आपके नाम के साथ है वह आपकी महबूब हस्ती होगी। इसलिए मैंने आपकी इस महबूब हस्ती का तसव्वुर करके आपसे दुआ मांगी है। सुब्हानअल्लाह उसके बाद "वही" नाज़िल हुई कि वह ख़ातिमुन्नबीय्यीन हैं और तुम्हारी औलाद में से हैं। अगर वह

न होतें तो तुम भी पैदा न किए जाते।

जन्नत में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की कुन्नियत

हदीस पाक में आया है कि क़यामत के दिन इस निस्बत की बरकत की वजह से हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की चाहत होगी कि मुझे आदम के बजाए इन (नबी आख़िरुज़्ज़मां) की निस्बत से पुकारा जाए। चुनाँचे उलमा ने लिखा है हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को जन्नत में "अबू मुहम्मद" की कुन्नियत से पुकारा जाएगा। सुब्हानअल्लाह उनके दिल की तमन्ना होगी कि मेरी औलाद से जिस की निस्बत की बरकत से मेरी तोबा क़ुबूल हुई मुझे जन्नत में उसी नाम के साथ पुकारा जाए।

फ़ाहिशा औरत पर निस्बत का असर

अल्लाह तआला इस निस्बत की बरकत से बंदे की ईमान और आमाल की हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं और उसे इम्तिहानों से महफ़ूज़ फ़रमा लिया करते हैं। हज़रत जुनैद बग़दादी रह० के ज़माने में एक बड़ा घमंडी आदमी था। उसके पास बहुत ज़्यादा माल व दौलत भी थी और ख़ूबसूरत बाँदिया भी थीं। उसे अपने शबाब और शराब के कामों से फ़ुर्सत ही नहीं मिला करती थी। किसी ने उसके सामने हज़रत जुनैद बग़दादी रह० की नेकी का तज़्किरा कर दिया। वह कहने लगा अच्छा मैं उसकी आज़ामइश करता हूँ। चुनाँचे उसने अपनी बाँदियों में से जो सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत रश्के क़मर बाँदी थी, उसे बुलाया कि बन संवरकर उनके पास जाना और उनसे एक मस्‌अला पूछते हुए एकदम अपने चेहरे से नक़ाब

हटा देना। मैं देखता हूँ कि वह तुम्हारी ख़ूबसूरती को देखकर भी गुनाह से बचता है या नहीं।

बाँदी बन-ठन कर हज़रत जुनैद बग़दादी रह० के पास पहुँची। वह उनके पास बैठकर मस्अला पूछने लगी और मसअला पूछते-पूछते उसने एकदम अपने चेहरे से नक़ाब हटा दिया और ख़ूबसूरत चेहरे और सरापा के साथ उनके सामने आई और मुस्करा दी। जुनैद बग़दादी रह० की नज़र अचानक उस पर पड़ गई। और आपकी ज़बान से फ़ौरन "अल्लाह" का लफ़्ज़ निकला। यह 'अल्लाह' का लफ़्ज़ ऐसी तासीर रखता है कि उस बाँदी के दिल में पेवस्त हो गया। अब उसने शर्म की वजह से दोबारा नक़ाब ले लिया। जब वापस गई तो उसके दिल की दुनिया बदल चुकी थी। वह मालिक से जाकर कहने लगी, अब आपके साथ मेरा गुज़ारा नहीं हो सकता। मैंने 'अल्लाह' का लफ़्ज़ सुना है। इस लफ़्ज़ की वजह से मेरे दिल में अल्लाह की मुहब्बत ऐसी आई है कि अब मैं उसी की इबादत में ज़िंदगी गुज़ारूंगी। चुनाँचे वह दिन को रोज़ा रखती और रात को इबादत करती। और वह घमंडी आदमी अपने दोस्तों में बैठकर कहता था कि मैंने जुनैद बग़दादी रह० का क्या बिगाड़ा था कि उसने मेरी ख़ूबसूरत बाँदी को कुछ कर दिया कि अब वह मेरे काम की नहीं रही।

हज़रत शिबली रह० पर निस्बत की बरकात

अल्लाह तआला निस्बत की वजह से बंदे को अपना नाज़नीन बना लेते हैं। हज़रत शिबली रह० अल्लाह तआला की मुहब्बत में फ़ना हो चुके थे। किताबों में लिखा है कि एक मर्तबा उनको

मजनूँ समझकर किसी ने पत्थर मारा जिसकी वजह से ख़ून निकल आया। एक आदमी देख रहा था। उसने जब ख़ून निकलता देखा तो कहा चलो मैं पट्टी बाँध देता हूँ। लिहाज़ा उसने बच्चों को डराया धमकाया और उनके क़रीब हुआ। वह देखकर हैरान हुआ कि जो क़तरा भी ख़ून का निकलता है वह ज़मीन पर गिरते ही अल्लाह का लफ़्ज़ बन जाता है। वह हैरान हुआ कि इस बंदे के रग व रेशे में अल्लाह तआला की कितनी मुहब्बत समाई होगी कि ख़ून का जो क़तरा भी गिरता है वह अल्लाह का लफ़्ज़ बन जाता है। इसक बाद उसने ज़ख़्म पर पट्टी बाँध दी।

हज़रत शिबली रह० के दिल में अल्लाह तआला की इतनी मुहब्बत थी कि जब कोई उनके सामने अल्लाह का नाम लेता था तो वह जेब में हाथ डालते थे और जेब से मिठाई निकालकर उस बंदे के मुँह में डाल देते थे। किसी ने कहा आप यह क्या करते हैं कि लोगों के मुँह में मिठाई डालते हैं? वह कहने लगे कि जिस मुँह से मेरे महबूब का नाम निकले मैं उस मुँह को शीरनी से न भर दूँ तो फिर और क्या करूँ।

एक बार हज़रत शिबली रह० वुज़ू करके घर से निकले। रास्ते में ही थे अल्लाह तआला की तरफ़ से इल्हाम हुआ शिबली! ऐसा गुस्ताख़ी वाला वुज़ू करके तू मेरे घर की तरफ़ जा रहा है। वह सहम गए और पीछे हटने लगे। जब वह पीछे हटने लगे तो फिर दोबारा इल्हाम हुआ शिबली तू मेरा घर छोड़कर कहाँ जाएगा? वह फिर डर गए और ज़ोर से ***"अल्लाह"*** की ज़र्ब लगाई। जब ***"अल्लाह"*** लफ़्ज़ कहा तो इल्हाम हुआ शिबली तू हमें अपना जोश दिखाता है? हज़रत शिबली रह० यह सुनकर दुबक कर बैठ

गए। फिर थोड़ी देर के बाद इल्हाम हुआ शिबली तू हमें अपना सब्र दिखाता है। आख़िरकार कहने लगे ऐ अल्लाह! मैं तेरे ही सामने फ़रियाद करता हूँ। असल में अल्लाह तआला अपने प्यारे के साथ ज़रा मुहब्बत की बातें करना चाहते थे।

हज़रत शिबली रहमतुल्लाहि अलैहि पर एक बार अजीब कैफ़ियत थी। अल्लाह तआला ने उनके दिल पर इल्हाम फ़रमाया, शिबली! क्या तू यह चाहता है कि मैं तेरे ऐब लोगों पर खोलकर ज़ाहिर कर दूँ ताकि तुझे दुनिया में कोई मुँह लगाने वाला न रहे। वह भी ज़रा नाज़ के मूड में थे। लिहाज़ा जब यह इल्हाम हुआ तो वह उसी वक़्त अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की हुज़ूर में कहने लगे, अल्लाह! क्या आप चाहते हैं कि मैं आपकी रहमत खोल खोलकर लोगों पर ज़ाहिर कर दूँ ताकि आपको दुनिया में कोई सज्दा करने वाला न रहे। जैसे ही यह बात कही ऊपर से इल्हाम हुआ, शिबली! न तू मेरी बात कहना और न मैं तेरी बात कहता हूँ। सोचिए तो सही कि ताल्लुक़ की वजह से अल्लाह तआला अपने महबूब बंदों के साथ किस तरह राज़ व नियाज़ और मुहब्बत व शफ़्क़त की बातें करते हैं।

दीदारे इलाही की तमन्ना

एक बार हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह० के पास एक आदमी आया। वह कहने लगा, हज़रत! ज़िक्र व अज़्कार और इबादत में ज़िंदगी गुज़र गई मगर मेरा दिल एक तमन्ना की वजह से जल रहा है, जी चाहा कि आज आपके सामने वह तमन्ना ज़ाहिर कर दूँ। आपने पूछा कौन सी तमन्ना है? कहने लगा हज़रत

इमाम अहमद बिन हंबल रह० को ख़्वाब में सौ बार अल्लाह तआला का दीदार हुआ था मेरा भी जी चाहता है कि मुझे भी अपने ख़ालिक़ का दीदार नसीब हो जाए।

हाजी साहब रह० तबियत के समझने में माहिर थे। फ़रमाने लगे आज तुम इशा की नमाज़ पढ़ने से पहले सो जाना। इसमें हिकमत थी मगर वह बंदा समझ न सका। वह घर आया। जब मग़रिब के बाद का वक़्त हुआ तो सोचने लगा कि हज़रत ने फ़रमाया था कि इशा की नमाज़ पढ़े बग़ैर वैसे ही सो जाना लेकिन फ़र्ज़ तो आख़िर फ़र्ज़ है। चलो मैं फ़र्ज़ पढ़कर सुन्नत छोड़कर सो जाऊँगा और बाद में पढ़ लूँगा। लिहाज़ा वह फ़र्ज़ पढ़कर सो गया।

रात को ख़्वाब में नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम का दीदार नसीब हुआ। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "तुमने फ़र्ज़ तो पढ़ लिए मगर सुन्नतें क्यों न पढ़ीं?" उसके बाद उसकी आँख खुल गई। सुबह आकर उसने हाजी साहब रह० को बताया। हाजी साहब रह० ने फ़रमाया, "ओ अल्लाह के बंदे! तूने इतने साल नमाज़े पढ़ते हुए गुज़ार दिए, भला अल्लाह तआला तेरी नमाज़ क़ज़ा होने देते, कभी ऐसा न होता बल्कि वह तेरे अमलों की हिफ़ाज़त फ़रमाते अगर तू मग़रिब के बाद सो जाता तो ख़्वाब में अल्लाह तआला का दीदार भी हो जाता, वह तुझे जगा भी देते और तुझे इशा की तौफ़ीक़ भी अता फ़रमा देते। मगर तू राज़ को न समझ सका। तूने सिर्फ़ सुन्नतें छोड़ दीं तो महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीदार हुआ अगर तू फ़र्ज़ छोड़ देता तो तुझे अल्लाह तआला का दीदार नसीब हो जाता।

हज़रत पीर मेहर अली शाह रह० और निस्बत की बरकात

हज़रत पीर मेहर अली शाह रह० के बारे में मशहूर वाक़िआ है। वह एक बार हज पर तशरीफ़ ले गए। वह थके हुए थे। हज़रत ने इशा की नमाज़ के सिर्फ़ फ़र्ज़ पढ़े और सो गए। ख़्वाब में नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम का दीदार नसीब हुआ। आपने फ़रमाया, मेहर अली! तूने फ़र्ज़ पढ़ लिए और सुन्नतें न पढ़ीं। जब आप हमारी सुन्नतें छोड़ देंगे और न पढ़ेंगे तो बाक़ी लोगों का क्या हाल होगा? जागे हज़रत पर गिरया तारी हो गया। उसके बाद इशा की नमाज़ पूरी की और फिर बाद में मशहूर नअत लिखी।

नअते रसूल मक्बूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

अज सक मतरान्दी वधेरी ऐ
क्यों दिलड़ी उदास घनेरी है

लो लो विच शौक़ चंगेरी ऐ
अज नैनियाँ लाइयाँ क्यों झड़ियाँ

मुख चंद बदर ला सानी ऐ
मथ्थे चमके लाट नूरानी ऐ

काली ज़ुल्फ़ ते इख मस्तानी ऐ
मख़्मूर अखीं हुन मध भरियाँ

इस सूरत नूँ मैं जान आखाँ
जान आखाँ कि जाने जहान आखाँ

सच आखाँ ते रब दी शान आखाँ
जिस शान तू शानाँ सब बनियाँ

ईहा सूरत शाला पेश नज़र
रहे वक़्त नज़ा ते रोज़े हश्र

विच क़ब्र ते पुल थीं जद हो गुज़र
सब खोटियाँ थेसन तद खरियाँ

इन्हाँ सकदियाँ ते करला नदियाँ ते
लख वारी सदक़े जाँदियाँ ते

उत्ते बरदियाँ मुफ़्त वकाँदियाँ ते
शाला वित पयाँ आवन ईहा घड़ियाँ

सुब्हानअल्लाह मा अजमलक
मा अहसनक मा अकमलक

कित्थे मेहर अली कित्थे तेरी सना
गुस्ताख़ आखियाँ कित्थे जा लड़ियाँ

अल्लाह के नाम की बरकत

अब एक छोटी सी इल्मी बात करता हूँ। हो सकता है कि तलबा भी यह बात मज़े से सुनें। "बा" के हर्फ़ को देखें वह आपको लेटा हुआ नज़र आएगा। और अलिफ़ को देखें वह आपको खड़ा नज़र आएगा नज़र आएगा। बच्चे भी पढ़ते हैं कि अलिफ़ खड़ी नज़र आती है और "ब" लेटी नज़र आती है। आम हालत में तो "बा" का हर्फ़ लेटा हुआ होता है लेकिन अजीब बात है जब भी इसको हर्फ़ की शक्ल में लिखेंगे तो लेटी हुई शक्ल में लिखेंगे। लेकिन जब इस हर्फ़ को अल्लाह के नाम के साथ मिलाकर लिखेंगे यानी "बिस्मिल्लाह" के अंदर "बा" को लिखेंगे तो लेटा हुआ नहीं बल्कि "बा" को खड़ा हुआ लिखेंगे।

अरे! "ब" का हर्फ़ अगर अल्लाह के नाम के साथ नत्थी हो जाता है तो उसे खड़ा कर दिया जाता है। ऐ मोमिन! तू भी अगर अल्लाह के नाम के साथ निस्बत हासिल कर लेगा तो अल्लाह तआला तुझे भी लेटा नहीं रहने देंगे बल्कि परवरदिगार तुझे भी खड़ा कर देंगे। जब अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के नाम की निस्बत की इतनी बरकतें हैं तो अल्लाह तआला की ज़ात की निस्बत की कितनी बरकतें होंगी। अल्लाह तआला हम सबको अपनी ज़ात के साथ निस्बत अता फ़रमा दे।

एक अजीब नुक्ता

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि मोमिन के माल को अगर चोर पड़ जाएं और यह उसकी हिफ़ाज़त करते हुए मारा जाए तो हदीस पाक में आया है कि यह बंदा शहीद है। अजीब बात है कि अपने माल की ख़ातिर यह मरा है और इसको शहादत का रुत्बा दिया गया। अक़्ल हैरान होती है कि (माल की ख़ातिर मरने वाला) जिस माल के बारे में कहा गया कि इसकी कोई हैसियत ही नहीं, दिल में इसकी मुहब्बत नहीं होनी चाहिए, अल्लाह के हाँ इसका मक्खी के पर के बराबर भी रुत्बा नहीं। इस माल की ख़ातिर अगर मोमिन जान दे देता है तो यह शहीद है, सुब्हानअल्लाह। इसी तरह फ़ुक़्हा ने लिखा है कि अगर हंडिया पक रही हो और आदमी नमाज़ पढ़ रहा हो और दर्मियान में उसे यह डर पैदा हो जाए कि हंडिया उबल जाएगी और ज़ाए हो जाएगी और मुझे खाने को कुछ नहीं मिलेगा तो वह नमाज़ तोड़ दे। हंडिया की हिफ़ाज़त पहले करे और नमाज़ को बाद में फिर लौटा ले। अक़्ल

हैरान है कि अल्लाह की इबादत में खड़ा था और इधर हंडिया की बात थी हालाँकि इसकी कोई ऐसी क़द्र व क़ीमत नहीं थी मगर कहा कि नहीं तुम पहले इसकी हिफ़ाज़त करो, नमाज़ फिर पढ़ लेना।

अरे! माल था, उसकी कोई वैल्यू नहीं थी मगर माल की ख़ातिर यह क़त्ल कर दिया गया। शरिअत कहती है कि शहीद है। इसकी क्या वजह है? तालिब इल्म के ज़हन में यह सवाल पैदा होता है कि अल्लाह तआला ने इसको शहादत का रुत्बा क्यों दिया क्योंकि इसने कोई काफ़िरों के साथ जंग नहीं लड़ी और न ही इसने दीन की सरबुलन्दी के लिए काम किया है। सिर्फ़ अपने माल की वजह से लड़ा जिसकी कोई वैल्यू ही नहीं थी। यहाँ मुहद्दिसीन ने एक नुक्ता लिखा है। वे फ़रमाते हैं कि हदीस पाक में फ़रमाया गया है ﴿من قتل دون ماله فهو شهيد﴾ कि जो बंदा अपने माल की वजह से क़त्ल कर दिया गया, वह शहीद है। इस हदीस पाक को सामने रखकर फ़रमाते हैं कि माल की तो कोई हैसियत नहीं थी मगर हदीस पाक में ﴿مالهٗ﴾ 'लुहू' के लफ़्ज़ में 'हू' की ज़मीर ने माल को मोमिन के साथ निस्बत दे दी है। लिहाज़ा अब यह सिर्फ़ माल नहीं बल्कि मोमिन का माल है। लिहाज़ा मोमिन के माल की हिफ़ाज़त करते हुए अगर मोमिन मर गया तो अल्लाह तआला ने उसको शहादत का रुत्बा अता फ़रमा देते हैं। अरे! माल को अगर मोमिन के साथ निस्बत हो जाए तो माल की क़द्र बढ़ जाती है। अगर मोमिन को अल्लाह से निस्बत हो जाए तो मोमिन की शान क्यों न बढ़ जाएगी, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर कबीरा।

इमाम राज़ी रह० के नज़दीक बिस्मिल्लाह की बरकत

इमाम राज़ी रह० ने एक अजीब बात लिखी। वह फ़रमाते हैं कि जब हज़रत नूह अलैहिस्सलाम किश्ती में सवार हुए तो अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम ईमान वालों को किश्ती में लेकर बैठो और उसके बाद पढ़ना ﴿بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖهَا﴾ लिहाज़ा किश्ती को चलाना होता तो वह ﴿بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖهَا﴾ पढ़ते और किश्ती चल पड़ती और जब रोकना होता तो फ़रमाते ﴿بِسْمِ اللّٰهِ مُرْسٰهَا﴾ इससे किश्ती रुक जाती। अल्लाह तआला ने इसको क़ुरआन पाक की आयत बना दिया। ﴿بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖهَا﴾ इस आयत के तहत इमाम राज़ी रह० ने एक अजीब नुक्ता लिखा। वह फ़रमाते हैं कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तुम बिस्मिल्लाह पढ़कर किश्ती चलाओ और रोको भी। लिहाज़ा बिस्मिल्लाह की बरकत से अल्लाह तआला उस किश्ती को चलाते भी थे और इतने बड़े तूफ़ान से किश्ती की हिफ़ाज़त भी फ़रमाई। वह यहाँ फ़रमाते हैं कि सोचने की बात यह है कि जब अल्लाह तआला ने नूह अलैहिस्सलाम को "बिस्मिल्लाह" के दो लफ़्ज़ अता फ़रमाए और दो लफ़्ज़ों की बरकत से हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की सरपरस्ती में उनकी पूरी उम्मत को अल्लाह तआला ने इतने बड़े तूफ़ान से महफ़ूज़ फ़रमा लिया तो हम भी उम्मीद करते हैं कि नबी अलैहिस्सलाम की सरपरस्ती में उम्मते मुहम्मदिया को अल्लाह तआला ने जो पूरी बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम अता कर दी है। उसकी बरकत से जहन्नम की आग से बचाकर जन्नत अता फ़रमा देंगे, सुब्हानअल्लाह। क्योंकि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के साथ

उम्मत को एक निस्बत हासिल है। इसलिए अल्लाह तआला इस उम्मत की भी हिफ़ाज़त फ़रमाएंगे।

हमारी कुल काएनात

मेरे दोस्तो! दुनियादारों की कुल प्रापर्टी उनका माल होता है और हमारी प्रापर्टी निस्बत मअल्लाह और निस्बत मअ अहलुल्लाह है यानी अल्लाह से निस्बत और अल्लाह वालों से निस्बत। यह हमारी कुल काएनात है।

अमल की अपने असास क्या है बजुज़ नदामत के पास क्या है
रहे सलामत तुम्हारी निस्बत मेरा तो बस आसरा यही है

नज़अ (मौत) के वक़्त निस्बत की बरकत

क़ारी मुहम्मद तैय्यब साहब रह० के वाअज़ में यह बात लिखी है कि एक औरत उनसे बैअत हुई। उसके बाद उसका हज़रत से राब्ता भी न रहा। अलबत्ता वह उनके बताए हुए मामूलात पर अपनी ताक़त भर अमल करती रही। बीस साल के बाद उस पर मौत की कैफ़ियत तारी हुई तो वह अचानक कहने लगी वह देखो हज़रत आ रहे हैं, फिर वह कहने लगी वह देखो हज़रत मेरे पास आ गए, फिर कहने लगी हज़रत मुझे कुछ पढ़ा रहे हैं। उसने खुद ही पूछा हज़रत! आप मुझे क्या पढ़ा रहे हैं? फिर खुद कहने लगी कि अच्छा मैं पढ़ती हूँ चुनाँचे उसने पढ़ा, ﴿لا الہ الا اللہ محمد رسول اللہ﴾ ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूल्लाह और जान अल्लाह के सुपुर्द के हवाले कर दी।

अंदाज़ा कीजिए कि बीस साल पहले बैअत हुई थी। इस

दौरान में कोई राब्ता न हुआ। मगर उसके दिल में मुहब्बत थी। ज़ाहिर के राब्ते में तो रुकावटें हो सकती हैं मगर दिल के राब्ते में तो दुनिया रुकावटें पैदा नहीं कर सकती। बीस साल के बाद मौत के वक़्त अल्लाह तआला ने उसको यह मंज़र दिखा दिया। शेख़ से निस्बत की बरकत ज़ाहिर फ़रमा दी। उसने अपने शेख़ के किसी लतीफ़े को देखा होगा और अल्लाह तआला ने अपने रिजाल में से किसी बंदे को उस शक्ल में खड़ा कर दिया होगा। अल्लाह तआला ने निस्बत की बरकत से उस औरत के ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमा दी।

ख़्वाजा फ़ज़ल अली क़ुरैशी रह० का फ़रमान

ख़्वाजा फ़ज़ल अली क़ुरैशी रह० फ़रमाया करते थे कि जिस दिल पर यह अल्लाह अल्लाह की उंगली लग जाती है उस दिल को ज़िक्र किए बग़ैर मौत नहीं आ सकती यानी निस्बत की बरकत की वजह से उसका ख़ात्मा बिलख़ैर होगा।

इमाम राज़ी रह० के ईमान की हिफ़ाज़त

इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी रह० बहुत बड़े अल्लाह वाले गुज़रे हैं। आप शेख़ नज्मुद्दीन कुबरा रह० से बैअत थे। आपने अल्लाह तआला की वहदानियत के बारे में सौ दलाइल जमा किए।

जब इमाम राज़ी रह० की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो शैतान आपको फुसलाने के लिए आपके पास आया। नज़अ के वक़्त शैतान इंसान को गुमराह करने के लिए ऐड़ी चोटी का ज़ोर लगाता है ताकि मरते वक़्त वह ईमान से हाथ धो बैठे। शैतान ने

आकर इमाम राज़ी रह० से पूछा कि तुमने सारी ज़िंदगी इबादत में गुज़ार दी। क्या तुमने अल्लाह को पहचाना भी है? आपने फ़रमाया, बेशक अल्लाह एक है।'' शैतान कहने लगा, कोई दलील दो। आपने तौहीद बारी तआला के बारे में एक दलील दी। शैतान ने क्योंकि इंसानियत को गुमराह करने की क़स्में खायी हुई थीं और मुअल्लिमुल मलकूत रह चुका था। इसलिए उसने आपकी बतलाई दलील रद्द कर दी। आपने दूसरी दलील दी। उसने वह भी रद्द कर दी। यहाँ तक कि इमाम राज़ी रह० ने सौ दलाइल दिए मगर उसने सब दलाइल रद्द कर दिए। अब इमाम राज़ी रह० बहुत परेशान हुए।

उस वक़्त आपके पीर व मुर्शिद शेख़ नज्मुद्दीन कुबरा रह० दूर-दराज़ किसी जगह पर वुज़ू फ़रमा रहे थे। अल्लाह तआला ने उन्हें इमाम राज़ी रह० की परेशानी के बारे में कशफ़ के ज़रिए ख़बरदार फ़रमा दिया। उन्होंने ग़ुस्से में आकर वह लोटा जिससे वुज़ू फ़रमा रहे थे दीवार पर मारा और इमाम राज़ी रह० को पुकार कर कहा तू यह क्यों नहीं कह देता कि मैं अल्लाह तआला को बग़ैर दलील के एक मानता हूँ। उस वक़्त शेख़ नज्मुद्दीन कुबरा रह० का ग़ुस्से में भरा चेहरा इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी रह० के बिल्कुल सामने था। सुब्हानअल्लाह, निस्बत की बरकत की वजह से अल्लाह तआला ने इमाम राज़ी रह० के ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमाई।

मजूसी का हाथ क्यों न जला

एक बुज़ुर्ग कहीं जा रहे थे। रास्ते में उनको एक आदमी

मिला। उन्होंने पूछा तुम कौन हो? कहने लगा कि मैं आग को पूजने वाला हूँ। दोनों ने मिलकर सफ़र शुरू कर दिया। रास्ते में वे आपस में बातचीत करने लगे। इस बुज़ुर्ग ने उसको समझाया कि आप बेकार में आग की पूजा करते हैं। आग तो ख़ुदा नहीं, ख़ुदा तो वह जिसने आग को भी पैदा किया है। वह न माना। आख़िरकार उस बुज़ुर्ग को भी जलाल आ गया। उन्होंने कहा अच्छा अब ऐसा करते हैं कि आग जलाते हैं और दोनों अपने अपने हाथ आग में डालते हैं, जो सच्चा होगा आग का उस पर कोई असर नहीं होगा और जो झूठा होगा आग उसके हाथ को जला देगी। वह भी तैयार हो गया।

उन्होंने जंगल में आग जलाई। आग जलाने के बाद मजूसी घबराने लगा। जब उस बुज़ुर्ग ने देखा कि अब पीछे हट रहा है तो उन्होंने उसका बाज़ू पकड़ लिया और अपने हाथ में उसका हाथ थामकर आग में डाल दिया। बुज़ुर्ग के दिल में तो पक्का यक़ीन था कि मैं मुसलमान हूँ और अल्लाह तआला मेरी सच्चाई को ज़रूर ज़ाहिर फ़रमाएंगे जिससे दीने इस्लाम की शान व शौकत भी ज़ाहिर हो जाएगी लेकिन अल्लाह की शान कि न उस बुज़ुर्ग का हाथ जला और न उस आग को पूजने वाले का। वह आतिश परस्त बड़ा ख़ुश हुआ और यह बुज़ुर्ग दिल ही दिल में बड़े रंजीदा हुए कि यह क्या मामला हुआ। लिहाज़ा वह अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जेह हुए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह! मैं सच्चे दीन पर था, आपने मुझ पर तो रहमत फ़रमा दी कि मेरे हाथ को महफ़ूज़ फ़रमा लिया, यह आतिश परस्त तो झूठा था, आग इसके हाथ को जला देती। जब उन्होंने यह बात कही तो अल्लाह

तआला ने उनके दिल में बात डाली कि मेरे प्यारे! हम इसके हाथ को कैसे जलाते जब कि इसके हाथ को आपने पकड़ा हुआ था। सुब्हानअल्लाह! अल्लाह तआला निस्बत की यूँ लाज रख लेते हैं। मजूसी तो पक्का काफ़िर था। उसके हाथ को वक़्ती तौर पर एक अल्लाह वाले के हाथ के साथ संगत नसीब हुई तो अल्लाह तआला ने उसे भी आग से महफ़ूज़ फ़रमा दिया।

पूरे क़ब्रिस्तान वालों की बख़्शिश

हज़रत मौलाना अहमद अली लाहौरी रह० के हालाते ज़िन्दगी में लिखा है कि जब उनकी वफ़ात हुई तो जहाँ उनको दफ़न किया गया। वहाँ से ख़ुशबू आती रही है, जैसे हज़रत इमाम बुख़ारी रह० को दफ़न किया गया तो ख़ुशबू आती थी। अब लोग हैरान होते हैं कि क़ब्र से ख़ुशबू कैसे आई। ओ ख़ुदा के बंदे! इसमें ताज्जुब की कौन सी बात है अगर फूल ज़मीन पर पड़ा हो तो मिट्टी के अंदर ख़ुशबू आ जाती है। हम भी यही कहते हैं कि यह हज़रात भी फूल की मानिन्द थे।

بگفتا من گلے ناچیز بودم ولیکن مدت با گل نشستم
جمال ہمنشیں در من اثر کرد وگرنہ من ہماں خاکم کہ ہستم

वे फूल थे। उस फूल की ख़ुशबू मिट्टी में समा गई थी और फिर मिट्टी से इंसानों को महसूस होने लग गई थी।

काफ़ी अरसे के बाद हज़रत मौलाना अहमद लाहौरी रह० अपने ख़लीफ़ाओं में से किसी को ख़्वाब में नज़र आए। उसने पूछा हज़रत! आगे क्या मामला बना? हज़रत ने फ़रमाया, अल्लाह

रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर में मेरी पेशी हुई। (हज़रत बहुत ज़्यादा रोने वाले थे। उनकी तबियत ग़मज़दा रहती थी) हज़रत ने ख़्वाब में बताया कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया, अहमद अली! तुम मुझसे इतना क्यों डरते थे? यह सुनकर मैं और ज़्यादा डर गया कि मुझ से पूछा जा रहा है। जब मैं और ज़्यादा डर गया तो मुझे फ़रमाया, अहमद अली! तुम और डर गए, आज तुम्हारे डरने का दिन नहीं बल्कि ईनाम पाने का दिन है। हमें तुम्हारा इकराम करना है लिहाज़ा हमने तुम्हारी मग़फ़िरत कर दी और जिस क़ब्रिस्तान में तुम्हें दफ़न किया गया हमने वहाँ के भी तमाम मुर्दों की मग़फ़िरत कर दी। सुब्हानअल्लाह निस्बत बड़ी अजीब चीज़ है।

दुआओं का पहरा

अल्लाह वालों से ताल्लुक़ रखने वाले हज़ारों मील दूर होते हैं। मगर अल्लाह तआला मशाइख़ की दुआओं और तवज्जेहात के सदक़े वहाँ भी उनके ईमान और अमल की हिफ़ाज़त फ़रमा देते हैं। कई लोग फ़ितनों में पड़ने लगते हैं मगर अल्लाह तआला यूँ बचा लेते हैं जैसे मक्खन में से बाल निकाल लिया जाता है। भटकने लगते हैं मगर कोई थाम लेता है, फिसलने लगते हैं मगर अल्लाह तआला हिफ़ाज़त फ़रमा देते हैं। होता है यह है कि हमारे बड़ों की दुआएं हमारे गिर्द पहरा दिया करती हैं। बंदा ऐसी आज़माईशों से जो बच निकलता है वह हिम्मत वालों में से किसी की हिम्मतें होती हैं। कहने वाले ने क्या ख़ूब कहा है—

दूर बैठा कोई तो दुआएं देता है
मैं डूबता हूँ समुन्दर उछाल देता है

इसलिए हमें नूरे निस्बत की तमन्ना बनाकर अल्लाह तआला से मांगना चाहिए क्योंकि—

निस्बते मुस्तफ़ा भी बड़ी चीज़ है
जिसको निस्बत नहीं उसकी इज़्ज़त नहीं

खुद खुदा ने नबी से यह फ़रमा दिया
जो तुम्हारा नहीं वह हमारा नहीं

देखने का फ़र्क़

हदीस क़ुदसी है ﴿انا عند ظن عبدی بی﴾ कि मैं बंदे के साथ वही मामला करता हूँ जैसा वह मेरे साथ गुमान रखता है। यक़ीनन ऐसा ही होता है कि बंदा अल्लाह तआला पर जब गुमान रखता है, उसी तरह उसके साथ मामला होता है। इसी तरह अगर शेख़ के बारे में यह गुमान रखे कि यह कामिल हैं और मुझे अल्लाह तआला उनसे हिदायत का नूर अता फ़रमाएंगे तो अल्लाह तआला उसके साथ वैसा ही मामला फ़रमा देते हैं और जो आदमी अपने शेख़ को आम बंदे की नज़र से देखना शुरू कर दे तो शेख़ उसको आम बंदा ही नज़र आता है। देखिए 'शेर' और 'शीर' दो अल्फ़ाज़ हैं। ये देखने में तो एक जैसे हैं। मगर एक लफ़्ज़ जंगल के बादशाह की तरफ़ इशारा करता है और दूसरे लफ़्ज़ का मतलब दूध है। जिस तरह ये दोनों अल्फ़ाज़ लिखने में और देखने में एक जैसे हैं मगर हक़ीक़त में बड़ा फ़र्क़ होता है। एक और मिसाल पर ग़ौर कीजिए कि 'मुल्क', 'मलक', 'मिल्क', 'मलिक' चार अलफ़ाज़ हैं। यह भी चारों अल्फ़ाज़ लिखने और देखने में एक जैसे हैं मगर हक़ीक़त में हर एक का मतलब और मफ़हूम जुदा है। जानने

वाला आदमी जब किसी जुमले में ऐराब के बग़ैर इनमें से कोई भी लफ़्ज़ पढ़ता है तो ठीक-ठीक पढ़ता है। अगर एक लफ़्ज़ की जगह दूसरा पढ़ दें तो मफ़हूम उलट बन जाता है। नबी अलैहिस्सलाम का चेहरए अनवर तो वही था, सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की नज़र जब आप के चेहरए अनवर पर पड़ी तो उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को "मुहम्मदुर्रसूलल्लाह" की नज़र से देखा और मुक़ामे सिद्दीक़ियत हासिल कर लिया लेकिन आप के चचा अबूलहब और अबूजहल ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सिर्फ़ मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह की नज़र से देखा जिसकी वजह से जहन्नम की ग़िज़ा बने। मालूम हुआ कि यह देखने वाले की नज़र होती है कि देखने वाला किस अक़ीदत और मुहब्बत से देख रहा है। लिहाज़ा जो सालिक अपने शेख़ के बारे में यह यक़ीन रखे कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको निस्बत का नूर दिया हुआ है और उनके सदक़े अल्लाह तआला मेरे सीने को भी रोशन फ़रमाएंगे तो अल्लाह तआला उसके गुमान के मुताबिक़ उसके साथ मामला फ़रमाएंगे।

जैसा गुमान वैसा मामला

इमाम रब्बानी मुंजद्दिद अलफ़ेसानी रह० फ़रमाते हैं कि हम तीन पीर भाई थे। हम तीनों का अपने पीर हज़रत ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह रह० के बारे में अलग-अलग गुमान था। फ़रमाते हैं कि ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह रह० ख़ामोश तबियत थे। लिहाज़ा कम बात करने की वजह से हमारे एक पीर भाई समझते थे कि मेरे शेख़ कामिल तो हैं मगर साहिबे इर्शाद नहीं। दावत व इर्शाद में अल्लाह तआला कुछ लोगों को क़ुतब इर्शाद बना देते हैं और

उनके बयान कलिमात से अल्लाह तआला हज़ारों लोगों के दिलों की दुनिया बदलकर रख देते हैं।

उनमें से दूसरे का गुमान यह था कि ख़ुद तो कामिल हैं मगर वह दूसरों को कामिल नहीं बना पाते क्योंकि कम बोलते थे। किसी ने उनसे एक दफ़ा कहा हज़रत! आप बात किया करें ताकि लोगों को फ़ायदा हो। हज़रत ने अजीब बात कही, फ़रमाया, जिसने हमारी ख़ामोशी से कुछ नहीं पाया वह हमारी बातों से भी कुछ नहीं पाएगाः

कह रहा है शोरे दरिया से समंदर का सकूत
जिसका जितना ज़र्फ़ है उतना ही ख़ामोश है

अल्लाह तआला अपने बाज़ औलिया की ऐसी हालत बना दिया करते हैं कि ﴿من عرف ربہ طال لسانہ.﴾ का मिस्दाक़ बन जाते हैं। और एक हदीस में आया है ﴿من عرف ربہ قل لسانہ.﴾ कुछ लोग ऐसे होते हैं कि जब उनको अल्लाह तआला मआरिफ़त मिलती है तो अल्लाह तआला के दीदार में ऐसे मस्त हो जाते हैं कि उनकी मख़्लूक़ के साथ कलाम करने की कैफ़ियत कम होती है और परवरदिगारे आलम की तरफ़ उनके रुज्हान की निस्बत ज़्यादा रहती है और वे अल्लाह तआला के दीदार में ही मस्त रहते हैं और फ़रमाते हैं कि मैं तीसरा था और मेरा अपने शेख़ के बारे में गुमान यह था कि मेरे शेख़ इतने कामिल हैं कि इससे पहले अगर इस उम्मत में किसी को कोई शेख़ मिला है तो वह सैय्यदना अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम मिले हैं और सिद्दीक़े अकबर के बाद अगर किसी कोई कामिल शेख़ मिला है तो फिर मुझे मेरे शेख़ मिले हैं। फ़रमाते हैं कि मेरे साथी तो

पता नहीं किधर गए मगर मेरे इस गुमान की वजह से अल्लाह तआला ने मुझे मुजद्दिद अलफ़ेसानी बना दिया यानी मुझे दूसरे हज़ार साल का मुजद्दिद बना दिया।

एक और वाक़िआ

तीन आदमी एक ही रास्ते पर जा रहे थे। उनका आपस में ताअर्रुफ़ हुआ फिर एक दूसरे से पूछने लगे कि कहाँ जा रहे हैं? उनमें से एक ने कहा मैं हज़रत शेख़ अब्दुलक़ादिर जीलानी रह० के पास जा रहा हूँ, सुना है कि वह बड़े वली हैं। इसलिए मैं उसे आज़माने जा रहा हूँ कि वह वली भी हैं या नहीं। दूसरे से पूछा भाई आप किस लिए जा रहे हैं? वह कहने लगा मैं बहुत ज़्यादा मुसीबतों में फंसा हुआ हूँ इसलिए शेख़ अब्दुलक़ादिर जीलानी रह० से दुआ करवाने के लिए जा रहा हूँ ताकि अल्लाह तआला उनकी दुआ से मेरी मुसीबतें दूर फ़रमा दें। तीसरे से पूछने पर जवाब दिया कि मैंने सुना है कि शेख़ अब्दुलक़ादिर जीलानी रह० बड़े कामिल वली हैं। इसलिए मैं उनको वली समझकर उनके जूतों में कुछ दिन गुज़ारने जा रहा हूँ। वे तीन आदमी शेख़ अब्दुलक़ादिर जीलानी रह० की ख़िदमत में पहुँचे और सलाम करके बैठ गए। उनमें से जो आदमी कहता था कि मैं तो आज़माने जा रहा हूँ। हज़रत ने उससे हालचाल पूछे और उसे वापस भेज दिया। कहते हैं कि वह बंदा अपनी ज़िन्दगी में इस्लाम से फिर गया और आख़िरकार कुफ़्र की हालत में उसकी मौत आई क्योंकि उसके दिल में औलिया अल्लाह का हलकापन था और उनके बारे में इधर-उधर की बातें किया करता फिरता था। उनमें से जिसने कहा था कि मुसीबतों में घिरा हुआ हूँ और दुआ करवाने जा रहा हूँ।

हज़रत ने उसके लिए दुआ फ़रमा दी और उसको वापस भेज दिया अल्लाह तआला ने उसकी मुसीबतें दूर कर दीं और तीसरा बंदा जिसने कहा था कि मैं उनके क़दमों में कुछ वक़्त गुज़ारने जा रहा हूँ, वह उनके पास रहा यहाँ तक कि शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह० के ख़लीफ़ाओं में शामिल हुआ।

सुराक़ा के हाथों में किसरा के कंगन

अगर कोई आदमी नेक नीयती के साथ अल्लाह के लिए दुनिया की कोई क़ुर्बानी देगा तो अल्लाह तआला उसको इसका बदला दुनिया में भी देंगे और आख़िरत में भी देंगे। हदीस पाक से इसकी दलील मिलती है। जब नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम हिजरत के सफ़र में थे उस वक़्त आपके पीछे एक काफ़िर आ गया जिसका नाम सुराक़ा था। जब उसने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देख लिया तो आपकी दुआ से उसके पाँव ज़मीन में धंस गए। फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वस्सलम ने दुआ फ़रमाई और उसके पाँव को ज़मीन ने छोड़ दिया। जब वह जाने लगा तो डर था कि कहीं वह जाकर फिर न बता दे। उस वक़्त उसने नबी अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया मुझे कलिमा पढ़ा दीजिए। चुनाँचे नबी अलैहिस्सलाम ने उसे कलिमा पढ़ा दिया लेकिन इससे पहले नबी अलैहिस्सलाम ने बशारत दी थी कि सुराक़ा! मैं दख रहा हूँ कि अल्लाह तआला ने तो तेरे हाथों या तेरे बाज़ुओं में किसरा के कंगन अता फ़रमा दिए हैं। उसको नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुख़बरी करने पर सौ या दो सौ ऊँटों का ईनाम मिलना था जो काफ़िरों ने ऐलान कर दिया था लेकिन उसने अल्लाह की निस्बत से सौ या दो सौ ऊँटों के ईनाम की क़ुर्बानी दे दी कि मैं

इस दुनियवी फ़ायदे को छोड़ता हूँ और अब वापस जाकर उनके बारे में कुफ़्फ़ार को नहीं बताऊँगा। चुनाँचे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उसकी क़ुर्बानी की क़द्रदानी फ़रमाई और दो सौ ऊँटों के बदले में किसरा जैसे बादशाह के कंगन उसके बाज़ुओं में अता फ़रमा दिए, सुब्हानल्लाह जो बंदा अल्लाह की निस्बत से दुनिया की क़ुर्बानी देता है अल्लाह तआला उसे दुनिया से महरूम नहीं करते बल्कि दुनिया को कई गुना करके उसके क़दमों में डाल देते हैं।

देखिए, मेरे और आपके लिए सोना पहनना हराम है लेकिन सुराक़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए सोना पहनना हलाल हो गया। दुनिया में ही उनके हाथों में सोने के कंगन सजे जबकि हमारे हाथों में तो जन्नत में सजेंगे। अल्लाह तआला हमें वहाँ पहुँचा दे।

नौजवान और कंगन

कुछ नौजवान कंगन का नाम सुनते हैं तो हैरान होते हैं और कहते हैं कि जन्नत में मर्द लोग सोने के कंगन पहनेंगे। जबकि उनका अपना हाल यह होता है कि राडो की घड़ी पहनकर हाथ हिलाते हैं और लोगों को दिखाते हैं कि देखो मैंने रॉडो की घड़ी पहनी हुई है। ओ खुदा के बंदे! यह तो दुनिया की एक घड़ी है जब यह तेरे हाथ पे सजी है तो तू लोगों को दिखाता फिर रहा है। अगर अल्लाह तआला भी जन्नत के अंदर मर्दों के बाज़ुओं में सोने की घड़ियाँ और सोने के कंगन सजा दें तो इसमें कौन सी ताज्जुब की बात है?

दो पैग़म्बरों के साथ अल्लाह तआला का अजीब मामला

आपके सामने एक इल्मी बात पेश करता हूँ जो उलमा और

तलबा के लिए बहुत मज़े की बात होगी। अल्लाह तआला के दो पैग़ंबर ऐसे हैं जिनका क़ुरआन मजीद में भी तज़्किरा है और उन दोनों ने मुर्दों के ज़िंदा होने का सवाल किया मगर सवाल का अंदाज़ अलग था। एक हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम थे। उन्होंने जब मुर्दों को देखा तो उस वक़्त अल्लाह तआला से पूछा कि ऐ परवरदिगार ﴿انی یحی هذه الله بعد موتها﴾ अल्लाह इसको किस तरह ज़िंदा करेगा मरने के बाद? उन्होंने पूछा मगर इसके जवाब में अल्लाह तआला ने उन्हीं को मौत दे दी और एक सौ साल तक उसी हालत में रहे। इसके बाद अल्लाह तआला ने उनको ज़िंदा फ़रमा दिया।

दूसरे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम थे। उन्होंने भी मुर्दों के ज़िंदा होने के बारे में सवाल किया। उनके सवाल पूछने का अंदाज़ यह था कि ﴿کیف تحی الموتی﴾ ऐ अल्लाह आप मुर्दों को कैसे ज़िंदा फ़रमाएंगे। "कैफ़ा" के लफ़्ज़ में सवालिया बात हैं। इसमें कोई ताज्जुब ज़ाहिर नहीं होता कि जी इनको कैसे ज़िंदा करेंगे बल्कि सिर्फ़ एक सवाल पूछा। इसीलिए जब पूछा ﴿اولم تؤمن﴾ क्या आप इस बात पर ईमान नहीं लाए तो जवाब में फ़ौरन अर्ज़ किया ﴿قال بلی﴾ ऐ अल्लाह! मानता हूँ, ईमान है ﴿ولکن لیطمئن قلبی﴾ मैंने तो अपने दिल के इत्मिनान के लिए सवाल किया है। क्योंकि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कैफ़ा के लफ़्ज़ के साथ सवाल पूछा इसलिए परवरदिगार आलम ने किसी ग़ैर पर मौत को तारी किया और फिर उसको ज़िंदा करके उनके सामने मौजिज़ा दिखा दिया। ज़बकि हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम ने सवाल पूछते हुए ताज्जुब के साथ पूछा जैसे इस बात पर यह बड़े हैरान हो रहे हों कि ﴿انی یحی هذه الله بعد موتها﴾। क्योंकि ताज्जुब पाया जाता था

इसलिए परवरदिगार ने ग़ैर पर मौत तारी करने के बजाए उन्हीं पर मौत तारी कर दी और सौ साल तक आराम से सुला दिया। फिर ज़िंदा करके पूछा, ऐ मेरे पैग़ंबर अब बताइए।

इस सारी तफ़्सील का हासिल यह निकला कि एक लफ़्ज़ की तब्दीली से दोनों के साथ मामला अलैहिदा अलैहिदा हुआ। इससे मालूम हुआ कि बंदा अल्लाह तआला के साथ जैसा गुमान करेगा परवरदिगार उसके साथ वैसा ही मामला करेगा। लेकिन हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने भी क्योंकि सवाल तो पूछा था इसलिए सवाल पूछने की कोई क़ीमत तो देनी पड़नी थी क्योंकि बाक़ी अंबिया अलैहिमुस्सलाम भी तो थे जिन्होंने सवाल ही नहीं पूछा था। इसलिए तमाम अंबिया में से अल्लाह तआला ने किसी से वह क़ुर्बानी न मांगी जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से मांगी। गोया अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ प्यारे ख़लील! मैंने मुर्दों को ज़िंदा तो करके आपके सवाल का जवाब दे दिया लेकिन क्योंकि सवाल पूछा था इसलिए इसकी क़ीमत भी देते जाइए। अब आपको अपने हाथों से अपने बेटे को शहीद करके दिखाना पड़ेगा।

नीयत दरुस्त कीजिए

क्योंकि हदीस क़ुदसी में है कि मैं बंदे के साथ वैसा ही मामला करता हूँ जैसा वह मेरे साथ गुमान करता है। लिहाज़ा आप में से जो दिल में यह गुमान लेकर आया कि मैं एक ऐसी जगह जा रहा हूँ जहाँ ज़िक्र करने वाले अल्लाह के नेक बंदे होंगे, मैं वहाँ जाऊँगा और मेरे गुनाह बख़्शे जाएंगे। मेरी मुश्किलात दूर हो जाएंगी और अल्लाह तआला मेरे दीन व ईमान में तरक़्क़ी अता फ़रमा देंगे। जो इस नीयत के साथ चलकर आया होगा अल्लाह तआला यक़ीनन

उसके साथ यही मामला फ़रमाएंगे और जो कहेगा कि हम तक़रीरें सुनने जा रहे हैं तो अल्लाह तआला उसको तक़रीरें तो सुनवा देंगे मगर बातिन की नेमत से महरूम लौटा देंगे। अब यह मामला हम पर है। कई बार दूर से आने वाले झोलियाँ भरकर जाते हैं और क़रीब वाले महरूम रह जाते हैं। इसलिए मेरे दोस्तो! हम में से हर बंदा तालिब सादिक़ बनकर बैठे। अल्लाह तआला उसकी तलब के मुताबिक़ उसको अज्र और बदला अता फ़रमा देंगे।

फ़क़ीर का काम

मेरे दोस्तो! हम तो साइल हैं, मुहताज हैं, मांगने वाले हैं और फ़क़ीर हैं। हमें तो क़ुरआन मजीद ने ख़िताब दे दिया ﴿يا ايها الناس انتم الفقراء﴾ लिहाज़ा हम तो हैं ही फ़क़ीर और फ़क़ीर का काम मांगना होता है। लिहाज़ा मांगने से क्या शर्माना। अल्लाह तआला के पास तो ज़मीन व आसमान के ख़ज़ाने हैं। इसलिए दिल खोलकर मांगना चाहिए। अल्लाह तआला वह ज़ात है कि मांगने वाले को हमेशा अपने दामन की कोताही का शिकवा रहा और देने वाले के ख़ज़ाने हमेशा उम्मीदों से भी ज़्यादा निकले—

टूटे रिश्ते वह जोड़ देता है
बात रब पे जो छोड़ देता है
उसके लुत्फ़ ओ करम के क्या कहने
लाख मांगो करोड़ देता है

एक दिलचस्प नुक्ता

एक और इल्मी नुक्ता सुनिए। उम्मीद है कि वह बात जान

कर आपको मज़ा आएगा। बंदा दुनिया में जब तहज्जुद के लिए जागता है तो आँखें नींद को तरस गयीं। यह कोई नहीं कहता कहता कि मेरा जिस्म नींद को तरस गया है। इससे मालूम हुआ कि जो लोग शब बेदारी करते हैं उनकी आँखें नींद को तरसती हैं। लिहाज़ा जहाँ परवरदिगार आलम ने अपने शब ज़िंदादार लोगों को अज्र और बदला देने का तज़्किरा फ़रमाया वहाँ उनकी आँखों की ठंडक का तज़्किरा फ़रमाया। फ़रमाया ﴿فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ﴾ कि कोई जी नहीं जानता कि अल्लाह तआला ने उन की आँखों की ठंडक के लिए क्या बना रखा है। अल्लाह तआला इसके अलावा भी तो कोई लफ़्ज़ इस्तेमाल कर सकते थे मसलन यूँ फ़रमा सकते थे कि उनके दिलों की तस्कीन के लिए क्या कुछ तैयार कर रखा है या फिर यह भी फ़रमा सकते थे कि उनके जिस्मों की लज़्ज़त के लिए अल्लाह तआला ने क्या बना रखा है। मगर नहीं चूँकि ﴿تَتَجَافَىٰ جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ﴾ उनके पहलू बिस्तरों से जुदा रहे और उनकी आँखें नींद को तरसती रहीं। इसलिए उनकी आँखों की ठंडक के लिए सामान कर दिया गया। मेरे मौला! आप कितना अज्र और बदला देने वाले हैं, जिनकी आँखें नींद को तरसती रहीं उनके लिए आपने वे नेमतें बनायीं जिनको देख-देख कर उन बंदों की आँखों को ठंडक नसीब हो जाए।

अल्लाह तआला का सबसे बड़ा इनाम

अल्लाह तआला जिस बंदे से राज़ी होते हैं उसको अपना क़ुर्ब अता फ़रमा देते हैं। और याद रखना कि अल्लाह तआला के ईनामात में से सबसे बेहतरीन ईनाम उसका क़ुर्ब है। इसकी दलील

क़ुरआन अज़ीमुश्शान में से। जब फ़िरऔन ने जादूगरों को बुलाया और कहा कि तुम मूसा अलैहिस्सलाम का मुक़ाबला करो तो जादूगर भी समझदार लोग थे। वे फ़िरऔन से पूछने लगे कि जनाब! हम मुक़ाबला तो करते हैं और मुक़ाबला भी शाही मुक़ाबला है। कोई छोटी मोटी बात नहीं है। लिहाज़ा आप बताइए कि अगर हम कामयाब हो गए तो फिर हमें जीतने के नतीजे में क्या ईनाम मिलेगा। फ़िरऔन ने जवाब दिया कि अगर तुम जीत गए तो ﴿اِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ﴾ कि इसके नतीजे में तुम मेरे मुक़र्रिबीन में शामिल हो जाओगे। मालूम हुआ कि मुक़र्रिबीन में शामिल हो जाना सबसे बड़ा ईनाम होता है और सारे ईनामात इस ईनाम में शामिल होते हैं।

अक़्लमंद बीवी

सुबक्तगीन बादशाह अपनी एक बीवी से बहुत ज़्यादा मुहब्बत करता था। एक बार दूसरी बीवियों ने उससे कहा कि आप अपनी बीवी फ़लाँ से ज़्यादा मुहब्बत रखते हैं हालाँकि हुस्न में हम उससे ज़्यादा हैं, समझदारी में भी हम उससे ज़्यादा हैं। आख़िर उसमें कौन सी ऐसी ख़ास बात है, हमें तो उसके अंदर कुछ नज़र नहीं आता मगर आप की मुहब्बत की निगाह जो उस पर उठती है वह किसी दूसरी बीवी पर नहीं उठती, आख़िर क्या वजह है? बादशाह ने कहा अच्छा मैं कभी इस बात का जवाब दे दूँगा। उसके बाद उसकी बीवियाँ यह बात भूल गयीं।

एक दिन सुबकतगीन ने अपने घर के सहन में बैठकर कहा कि आज मैं अच्छे मूड में हूँ, इसलिए मैं चाहता हूँ कि मैं तुम में

से हर एक को अच्छे अच्छे ईनाम से नवाज़ूँ। वे यह बात सुनकर खुश हुईं कि आज हमें शाही ख़ज़ाने से ईनाम मिलेगा।

सहन में सोने चाँदी और जवाहरात के ढेर लगा दिए गए। बादशाह ने सबको बुलाकर कहा कि इस सहन में जो चीज़ें पड़ी हुई हैं उनमें से जिस चीज़ पर जो बीवी भी हाथ रख लेगी उसको वह चीज़ ईनाम के तौर पर दे दी जाएगी। चुनाँचे जिस वक़्त मैं इशारा करूं तुम दौड़कर अपनी पसंद की चीज़ पर हाथ रख लेना। बीवियाँ तैयार हो गयीं और उन्होंने अपनी-अपनी पसंद की चीज़ों पर निगाह जमा लीं। किसी ने याक़ूत के ऊपर, किसी ने हीरें के ऊपर, किसी ने सोने के ऊपर, किसी ने चाँदी के ऊपर। बादशाह ने इशारा किया तो बीवियों ने दौड़कर अपनी अपनी पसंदीदा चीज़ों पर हाथ रख लिए लेकिन वह बीवी जिस पर उसकी मुहब्बत की ख़ास नज़र रहती थी वह अपनी जगह खड़ी रही। जब सबने देखा कि हमने क़ीमती चीज़ों पर हाथ रख लिए मगर इसने किसी चीज़ पर हाथ नहीं रखा तो वे हँसने लगीं और बादशाह से कहने लगीं बादशाह! सलामत हम कहा करती थीं कि यह बेवक़ूफ़ है और इसके अंदर अक़्ल की कमी है और आज इसकी अक़्ल की कमी खुलकर सामने आ गई। यह तो बस सोचती रही लिहाज़ा आज इसके पल्ले कुछ नहीं आएगा।

बादशाह ने उससे पूछा कि ऐ अल्लाह की बंदी! तूने किसी चीज़ पर हाथ क्यों नहीं रखा। वह कहने लगी बादशाह सलामत! मैं पूछना चाहती हूँ कि आपने यही कहा है न कि आज जो जिस चीज़ पर हाथ रखेगी वह चीज़ उसकी हो जाएगी। बादशाह ने कहा हाँ यही तो मैंने कहा है। उसने यह सुना तो आगे बढ़ी और

बादशाह के कंधे पर हाथ रख दिया और कहने लगी बादशाह सलामत! जब आप मेरे हो गए तो सारा ख़ज़ाना मेरा बन गया।

बादशाह ने उसकी यह बात सुनकर अपनी दूसरी बीवियों से कहा कि देखो इस की अक़्लमंदी और मुहब्बत की वजह से मैं इसके साथ ज़्यादा मुहब्बत करता था।

अगर एक बांदी यह समझती है कि मैं बादशाह के कंधे पर हाथ रख लूँ तो वह मेरा बन जाएगा और इस तरह सब कुछ मेरा हो जाएगा। अल्लाह वाले भी इसी तरह समझते हैं कि अगर अल्लाह तआला हमारे हो गए तो फिर तमाम चीज़ें हमारी हो जाएंगी। इसीलिए फ़रमाया गया ﴿مَنْ كَانَ لِلّٰهِ كَانَ اللّٰهُ لَهٗ﴾ कि जो अल्लाह का बन जाया करता है फिर अल्लाह तआला उस बंदे के बन जाते हैं। लिहाज़ा हमें भी चाहिए कि हम अपने आपको अल्लाह तआला के सामने पेश कर दें और 'मन क़ाना लिल्लाहि' के मिस्दाक़ बन जाएं। फिर अल्लाह तआला हमारे बन जाएंगे। और जब अल्लाह तआला हमारे हो जाएंगे तो फिर हमें ज़िंदगी गुज़ारने का सलीक़ा आ जाएगा।

अल्लाह तआला हमें भी अपनी ज़ात से निस्बत अता फ़रमा दे। इसकी क़द्रदानी की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे और इसकी बरकत से अल्लाह तआला दुनिया और आख़िरत में हमें सुर्ख़रूई नसीब फ़रमा दे।

﴿وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴾

❁ ❁ ❁

असलाफ़ के हैरतनाक वाक़िआत

सैय्यदुत्ताएफ़ा हज़रत जुनैद बग़दादी रह० से पूछा गया कि फ़ितने और ज़ुलमत के दौर में ईमान की हिफ़ाज़त के लिए कौन सा नुस्ख़ा इक्सीर है? हज़रत रह० ने फ़रमाया औलिया अल्लाह के हालात व वाक़िआत का पढ़ना, ये अल्लाह के लश्करों में से एक लश्कर हैं। हर दौर और हर ज़माने में पढ़ने वालों को फ़ायदा पहुँचाते हैं।

असलाफ़ के हैरतनाक वाक़िआत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!
فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○
يَـاَيُّهَـا الَّـذِيْـنَ آمَنُوْا اتَّقُوْا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ○ وقال
رسـول الـلّٰـه صـلى اللّٰهُ عليه وسلم البركت مع اكابركم○
سُبْـحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَـمَّـا يَصِفُوْنَ○ وَسَـلٰـمٌ عَلَى
الْـمُـرْسَلِيْـنَ○ وَالْـحَـمْـدُ لِلّٰـهِ رَبِّ الْـعٰـلَمِيْـنَ○

अल्लाह के लश्कर

हज़रत जुनैद बग़दादी रह० से पूछा गया कि फ़ितने और ज़ुलमत के दौर में ईमान की हिफ़ाज़त के लिए कौनसा नुस्ख़ा इक्सीर है? हज़रत रह० ने फ़रमाया, औलिया अल्लाह के अहवाल व अक़्वाल (बातों) का पढ़ना। यह अल्लाह के लश्करों में एक लश्कर हैं और हर दौर में और हर ज़माने में पढ़ने वालों को फ़ायदा पहुँचाते हैं।

हज़रत इमाम अबूयूसुफ़ रह० से पूछा गया कि जिस वक़्त दुनिया में औलिया किराम का वजूद नहीं होगा, उस वक़्त हमें

क्या करना चाहिए जिसकी वजह से हम लग़वियात (बुराईयों) से दूर रह सकें। आपने फ़रमाया, औलिया किराम के हालात का एक जुज़्व (हिस्सा) रोज़ाना पढ़ लिया जाए।

आज इल्म व अमल की गिरावट का दौर है। हर आदमी जिंदगी के कारोबार में इस क़द्र मसरूफ़ हो गया है कि मशाइख़ की सोहबत में जाने और ताअत व अमल की ज़िंदगी को अपनाने में सौ तरह के उज़्र करता है। इन हालात में अगर अल्लाह वालों की ज़िंदगी के हालात व वाक़िआत का मुताला किया जाए तो ग़ाफ़िल दिलों को जगाने का एक ज़रिया बन सकता है।

दारुलउलूम देवबंद का फ़ैज़

पहले किसी महफ़िल में दारुलऊलम का तारीख़ी पसमंज़र (बैकग्राउन्ड) बयान किया था। उसमें उन हालात और वाक़िआत का ज़िक्र किया जिनकी वजह से दारुलउलूम देवबंद का क़याम अमल में आया। जिस काम के लिए कुछ क़ुर्बानियाँ दी गई हों और उसके करने वालों में ख़ुलूस भी इंतिहा दर्जे का हो तो फिर अल्लाह तआला नतीजे भी ऐसे ही दिखाते हैं। चुनाँचे इस दारुलउलूम से बहुत सी ऐसी हस्तियाँ फ़ैज़याब होकर निकलीं कि जिनके तक़्वा, ख़ुलूसे अमल और इल्मी कारनामे सुनकर अक़्ल दंग रह जाती है। जी चाहता है कि किसी महफ़िल में दारुलउलूम देवबंद की उन फ़ैज़याब हस्तियों के वाक़िआत सुनाए जाएं ताकि हमें पता चले कि हमारी रूहानी निस्बत किन असलाफ़ (बड़ों) से जाकर मिलती है। चुनाँचे आज अपने बड़ों के उन्हीं वाक़िआत का तज़्किरा किया जाएगा।

हज़रत मौलाना मुहम्मद क़ासिम नानौतवी रहमतुल्लाहि अलैहि

हज़रत मौलाना मुहम्मद क़ासिम नानौतवी रह० का असल नाम ख़ुर्शीद हसन था। आप 1248 हि० में ज़िला सहारनपूर के क़स्बे नानौता में पैदा हुए। आपके वालिद असद अली बिन ग़ुलाम शाह निहायत परहेज़गार और सूम व सलात के पाबन्द थे। आप बचपन से ही सआदतमंद, ज़हीन और मेहनती थे। इब्तिदाई तालीम क़स्बा देवबंद में हासिल की फिर 1260 हि० में मौलाना ममलूक अली साहब रह० के हमराह देहली तशरीफ़ ले गए और हज़रत शाह वलिउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० के छोटे बेटे मौलाना शाह अब्दुलग़नी साहब रह० से उलूमे हदीस की तक्मील की। उसके बाद आप ने शेख़ुल मशाइख़ हज़रत मौलाना हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह० से बैअत की और तसव्वुफ़ व सुलूक की मंज़िले तय करते हुए ख़िलाफ़त हासिल की। इस रूहानी निस्बत ने आपके बातिनी जौहरों को ख़ूब निखार दिया। आप ख़ुशमिज़ाज और उम्दा अख़्लाक़ के मालिक थे। आप बहुत ज़्यादा आजिज़ मिज़ाज, शोहरत से बचने वाले और रियाकारी से कोसों दूर थे। इल्म व अमल, ज़ोहद व तक़्वा के पहाड़ थे और बहुत बड़े मुनाज़िर थे। बातिल क़ुव्वतों से बहुत से मुनाज़रे किए और हमेशा कामयाब रहे। आप अपने दौर के अज़ीम मुहद्दिस और सच्चे आशिक़े रसूल थे।

आपने हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह० की क़यादत में अपने साथियों हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही, मौलाना मुहम्मद याक़ूब साहब नानौतवी, मौलाना शेख़ मुहम्मद थानवी और हाफ़िज़ ज़ामिन शहीद साहब रहमतुल्लाहि अलैहिम से मिलकर अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ जिहाद में हिस्सा भी लिया। आख़िर आपके कई साथी शहीद हुए और कई गिरफ़्तार हो गए।

जंगे आज़ादी की हार के बाद आपने दीन को ज़िंदा करने का काम दूसरे अंदाज़ में शुरू किया और दारुलउलूम की बुनियाद रखी जहाँ से बेशुमार इल्मे दीन के प्यासों ने फ़ैज़ पाया। दारुलउलूम देवबंद का क़याम तारीख़ का ऐसा रोशन बाब है जो इल्म व अमल की दुनिया में हमेशा जगमगाता रहेगा। इस दारुलउलूम से फ़ारिग़ लोगों में हज़रत शेख़ुल हिन्द मौलाना महमूदुल हसन, अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी रह०, अल्लामा शब्बीर अहमद उस्मानी, मौलाना सैय्यद हुसैन अहमद मदनी रह०, मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रहमान उस्मानी, मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहब, मौलाना उबैदुल्लाह सिंधी और मौलाना मुहम्मद इदरीस साहब कांधलवी रहमतुल्लाहि अलैहिम जैसी हज़ारों मशहूर हस्तियाँ निकलीं जिन्होंने एक आलम को अपने फ़ैज़ से मुनव्वर किया। आख़िर इल्म व अमल का आफ़ताब 4, जमादिउल अव्वल 1279 हि० बरोज़ जुमेरात हमेशा के लिए छिप गया।

इत्तिबाए सुन्नत

1857 ई० में जब गर्वमेंट की तरफ़ से गिरफ़्तारियाँ हुई तो आप सिर्फ़ तीन दिन रूपोश रहे। उसके बाद लोगों के ज़ोर डालने

के बावजूद इंकार फ़रमा दिया कि तीन दिन से ज़्यादा रूपोश रहना ख़िलाफ़े सुन्नत है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी ग़ारे सौर में तीन दिन ही मुक़ीम रहे थे। चुनाँचे एक बार दविश के सिपाहियों से मस्जिद में मुलाक़ात हो गई तो उन्होंने आप ही से पूछा, मौलाना क़ासिम नानौतवी साहब कहाँ हैं? आपने दो क़दम पीछे हटकर उसी जगह की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया, अभी तो यहीं थे। अल्लाह तआला ने आपसे दीन का बड़ा काम लेना था इसलिए हाथ न आए।

एक माह में हिफ़्ज़

एक बार आप क़ुतबे आलम हज़रत गंगोही रह० के हमराह हज के लिए जा रहे थे। क़ाफ़िले में कोई हाफ़िज़ न था। रमज़ानुल मुबारक का महीना आ गया। आप रोज़ाना एक पारा हिफ़्ज़ करके रात को तरावीह में सुना देते। किसी को पता न चला और सिर्फ़ एक माह की मुख़्तसर मुद्दत में पूरा क़ुरआन पाक हिफ़्ज़ कर लिया।

इल्मी कमाल की पाँच वजूहात

इल्म के हासिल होने में अदब और तक़्वे को बड़ा दख़ल है। चुनाँचे एक आदमी ने मौलाना मुहम्मद याक़ूब साहब रह० से पूछा, मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब ने भी वही किताबें पढ़ी थीं जिनको सब पढ़ते हैं, फिर उनको इतना इल्म कहाँ से आया? मौलाना मुहम्मद याक़ूब साहब ने फ़रमाया कि इसमें कई चीज़ों को दख़ल है। एक तो मौलाना तिब्ब की रू से मौतदिल मिज़ाज थे,

दूसरे उनको उस्ताद बड़े कामिल मिले यानी मौलाना ममलूक अली साहब रह० जिनका इल्म व फ़ज़्ल किसी से छिपा हुआ नहीं, तीसरी बात कि मुत्तक़ी आला दर्जे के थे, चौथी बात यह कि उनमें उस्ताद का अदब बहुत ज़्यादा था, पाँचवीं बात यह कि हज़रत हाजी साहब रह० जैसे कामिल पीर मिले।

उस्ताद का अदब

अदब की यह कैफ़ियत थी कि मौलाना ज़ुलफ़ुक्कार अली साहब रह० जब बीमारी में आपके पास आते तो आप उठकर बैठ जाते थे। एक बार मौलवी साहब ने दर्याफ़्त किया, हज़रत! आप ऐसा क्यों करते हैं? तो फ़रमाया, हज़रत! इसलिए कि आप मेरे उस्ताद हैं। उन्होंने कहा, मैं कहाँ उस्ताद हूँ? फ़रमाया कि एक बार मौलाना ममलूक अली साहब किसी काम में मसरूफ़ थे तो आपसे फ़रमाया था कि ज़रा इनको काफ़िया का सबक़ पढ़ा दो। इसलिए आप मेरे उस्ताद हुए।

पीर के हमवतन आदमी का एहतिराम

थानाभवन के एक आदमी को अहले इल्म से मुहब्बत थी। उसने हज़रत अक़्दस मौलाना अश्रफ़ साहब थानवी रह० को बताया कि एक दफ़ा मैं मौलाना क़ासिम साहब नानौतवी रह० की मज्लिस में हाज़िर हुआ। मौलाना ने फ़ारिग़ होकर पूछा, कहाँ से आए हो? मैंने कहा, थानाभवन से आया हूँ। यह सुनकर घबराकर फ़रमाया कि बेअदबी हुई, वह तो मेरे पीर का वतन है। आप आए और मैं बैठा रहा, आप मुझे माफ़ कीजिए।

अदब की इंतिहा

हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की साहब रह०, मौलाना क़ासिम साहब रह० के अंदर का ज़िक्र करते हुए फ़रमाते थे कि मैंने एक मसौदा मौलाना को नक़ल करने के लिए दिया। एक मुक़ाम पर इमला की ग़ल्ती हो गई थी। मौलाना उस मसौदे को नक़ल करके लाए तो उस लफ़्ज़ की जगह बयाज़ में ख़ाली छोड़ दी। सही भी नहीं लिखा क्योंकि यह तो शेख़ के कलाम की इस्लाह थी और ग़लत भी नहीं लिखा कि यह इल्म के अदब के ख़िलाफ़ था और क़सदन ख़ता कि और आकर फ़रमाया कि इस जगह पढ़ा नहीं गया। ग़ल्ती की निशानदिही नहीं की। ग़र्ज़ यह थी कि देखकर ग़ल्ती दरुस्त कर दें। चुनाँचे हज़रत हाजी साहब रह० ने अपने क़लम से काटकर सही कर दिया।

तवज्जोह का असर

हज़रत अक्दस मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह० ने हज़रत नानौतवी रह० के इल्म के बारे में एक वाक़िआ बयान करते हुए फ़रमाया, एक दफ़ा मैं सुबह की नमाज़ में सूरः मुज़म्मिल पढ़ रहा था कि अचानक उलूम का इतना अज़ीमुश्शान दरिया मेरे क़ल्ब के ऊपर गुज़रा कि मैं तहम्मुल न कर सका। क़रीब था कि मेरी रूह परवाज़ कर जाए मगर वह दरिया जैसे एकदम आया वैसे ही एकदम निकल गया। नमाज़ के बाद ग़ौर करने पर कश्फ़ से मालूम हुआ कि हज़रत मौलाना क़ासिम साहब रह० उन घड़ियों में में मेरठ में मेरी तरफ़ मुतवज्जेह हुए थे। यह उनकी तवज्जोह का असर था। फिर फ़रमाया, अल्लाहु अकबर जिस शख़्स की

तवज्जोह का यह असर है कि उलूम के दरिया क़ल्ब में मौजें मारने लगें और तहम्मुल दुश्वार हो जाए तो खुद उस शख़्स के अपने क़ल्ब की वुसअत व क़ुव्वत का क्या हाल होगा कि जिसमें वह खुद उलूम समाए हुए हों।

हज़रत नानौतवी रह० की हैबत

एक दफ़ा हज़रत नानौतवी रहमतुल्लाहि अलैहि पर हज़रत अक़्दस थानवी रह० से दर्याफ़्त फ़रमाया, कौन सी किताबें पढ़ते हो? हज़रत अक़्दस थानवी रह० पर इस क़द्र रौब ग़ालिब हुआ कि किताबों के नाम भूल गए। फिर दूसरी बातें शुरू कीं ताकि हैबत का असर कम हो जाए और हज़रत थानवी रह० की तबियत खुल जाए। चुनाँचे बाद में फ़रमाया कि एक होता है पढ़ना दूसरा होता है रुसूख़ हासिल करना। सिर्फ़ पढ़ना काफ़ी नहीं बल्कि रुसूख़ हासिल करने की भी ज़रूरत है। फिर एक मिसाल बयान फ़रमाई। एक हाफ़िज़ हिदाया थे मगर समझकर न पढ़ी थी। एक दूसरे आलिम थे जिन्होंने समझकर पढ़ी थी। उनसे कहा एक मसअला हिदाया में है। हाफ़िज़ हिदाया ने इंकार किया कि यह मसअला हिदाया में नहीं है, मैं तो हिदाया का हाफ़िज़ हूँ। मगर जब दूसरे ने किताब खोलकर इबारत पढ़कर इस्तिंबात किया तो हाफ़िज़ हिदाया हैरान रह गए। इतना फ़रमाकर हज़रत हकीमुल उम्मत हज़रत थानवी रह० से फ़रमाया, यह फ़र्क़ है पढ़ने और रुसूख़ हासिल करने में।

नरमी से नसीहत

एक ख़ान साहब हज़रत नानौतवी रह० के बड़े दोस्त थे मगर

लिबास उनका ख़िलाफ़े शरिअत था। वह जुमा के दिन आपके पास आकर ग़ुस्ल करते, कपड़े बदलते और फिर नमाज़ जुमा पढ़ते। उनके अंदाज़ से यह मालूम होता था कि सख़्त तबियत के आदमी हैं। कहने से नहीं मानेंगे। हज़रत नानौतवी रह० ने एक जुमे को उनसे फ़रमाया कि मियाँ आज दो जोड़े लेते आइए। जब हमारे दिलों में मुहब्बत इतनी है तो फिर हम भी तुम्हारी तरह का लिबास पहनेंगे। वह साहब बेहद मुतास्सिर हुए और अर्ज़ किया कि खुदा न करे आप मुझ ख़बीस के तरीक़े पर रहें। आप ही मुझको जोड़ा दीजिए मैं उसको पहनूंगा। उस आदमी ने हमेशा के लिए उस लिबास को छोड़ दिया।

तक़लीद की ज़रूरत

एक ग़ैर-मुक़ल्लिद ने हज़रत मौलाना क़ासिम साहब नानौतवी रह० की तक़रीर सुनकर कहा कि आप मुजतहिद होकर तक़लीद करते हैं। मौलाना रह० ने फ़रमाया कि मुझको इससे ज़्यादा इस पर ताज्जुब है कि आप ग़ैर-मुजतहिद होकर तक़लीद नहीं करते। इस बात से उस आदमी ने तक़लीद की ज़रूरत समझ ली कि जब इतना बड़ा शख़्स मुक़ल्लिद है तो हम किस शुमार में हैं? मालूम हुआ कि जिस क़द्र इलम बढ़ता है तक़लीद की ज़रूरत और ज़्यादा महसूस होती जाती है। इसलिए उनके सामने ऐसे मौक़े बहुत आते हैं जहाँ अपनी राए काम नहीं करती।

शाने मसकनत

एक तालिब इल्म ने हज़रत नानौतवी रह० की दावत की।

आपने फ़रमाया कि एक शर्त पर मंज़ूर है कि खुद कुछ मत पकाना, घर में जो तुम्हारी रोटियाँ मुक़र्रर हैं, वही हम को भी खिला देना। उसने मंज़ूर कर लिया। यह है शाने मसकनत और ग़ुरबत व इन्किसारी और आजिज़ी कि इतना बड़ा शख़्स और इस तरह अपने को मिटाए हुए था।

शाने इस्तिग़ना

हज़रत मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब रह० को बरेली के एक रईस ने शायद छः हज़ार रुपए पेश किए कि किसी नेक काम में लगा दीजिए। फ़रमाया कि लगाने के भी तुम ही अहल हो तुम ही ख़र्च करो। उसने अर्ज़ किया, मैं क्या अहल होता। फ़रमाया मेरे पास इसकी दलील है और वह यह कि अगर अल्लाह तआला मुझको अहल समझते तो मुझको ही इनायत फ़रमाते। इससे मालूम हुआ कि आप अमीरों को इस्तिग़ना की छुरी से अच्छी तरह ज़िब्ह करते थे।

तवाज़ो

हज़रत मौलाना क़ासिम साहब रह० मेरठ में मसनवी शरीफ़ पढ़ाते थे। एक मज्ज़ूब भी शरीक होते थे। वह कई रोज़ तक मसनवी शरीफ़ सुनकर कहने लगे, मौलाना अगर मज्ज़ूब होते तो क्या अच्छा होता। एक बार उन्होंने मुहब्बत से कहा, हज़रत मैं आपको तवज्जोह देना चाहता हूँ, ज़रा बैठ जाइए। उनकी नीयत यह थी कि कैफ़ियते महमूदा को आप पर इल्क़ा करें। आप मुतवाज़े बनकर बैठ गए। वह मुतवज्जेह हुए और थोड़ी ही देर में

घबराकर कहने लगे, हज़रत! बड़ी गुस्ताख़ी हुई, माफ़ कीजिए, मुझे क्या ख़बर थी कि आप इतनी बुलन्दी पर पहुँचे हुए हैं।

फ़ने ताबीर में महारत

एक ज़माने में मौलाना मुनीर साहब नानौतवी रह० ने सरकारी स्कूल में नौकरी के लिए गर्वमेन्ट के यहाँ दरख़्वास्त दे रखी थी। उसी ज़माने में ख़्वाब देखा कि बरेली से कुछ बुतें उनके मकान की तरफ़ आ रही हैं। यह ख़्वाब मौलाना क़ासिम साहब रह० से अर्ज़ किया तो आपने फ़रमाया, अगर मिठाई खिलाओ तो और ताबीर है और मिठाई न खिलाओ तो और ताबीर है। उन्होंने मिठाई खिलाने का वादा किया तो फ़रमाया, जाओ तुम बरेली में बीस रुपए का मुलाज़िम हो जाओगे। इसकी हक़ीक़त पूछने पर फ़रमाया लफ़्ज़ बुत के अदद फ़ारसी के एतिबार से ग्यारह हैं। 'ब' के दो और 'त' के नौ अदद हैं मगर इसमें 'त' पर तश्दीद है। मैंने इसको मुकर्रर लेकर बीस से ताबीर दी। चुनाँचे मौलाना मुनीर को बीस रुपए की मुलाज़मत मिल गई।

एक सवाल दो जवाब

एक नेक आदमी को लोगों ने किसी औरत के हुस्न व जमाल का तज़्किरा करके उसका आशिक़ बना दिया। उस आदमी ने हज़रत गंगोही रह० और मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब रह० से मश्वरा किया कि मैं इस औरत से निकाह कर लूँ या नहीं? हज़रत गंगोही रह० ने फ़रमाया कि हर्गिज़ निकाह न करो। तुम शरीफ़, ख़ानदानी हो और वह बाज़ारी औरत है। इससे नस्ल पर बुरा

असर होगा। मौलाना क़ासिम साहब रह० ने यह मश्वरा दिया कि निकाह कर लो। मौलाना उस आदमी की हालत से मुतास्सिर हो गए और यह समझे कि इसकी यह बेक़रारी तब हटेगी जब उससे निकाह करेगा। दोनों कामिलुल अख़्लाक़ थे और दोनों उसकी हालत से मुतास्सिर हुए मगर एक ग़ालिबुल अख़्लाक़ थे एक मग़लूबुल अख़्लाक़ थे। और यह अम्र ग़ैर-इख़्तियारी (क़ुदरती) है। इसमें कस्ब (कोशिश) को दख़ल नहीं। हक़ तआला जिसको चाहें ग़ालिबुल अख़्लाक़ कर देते हैं और जिसको चाहें मग़लूबुल अख़्लाक़ कर देते हैं बल्कि बाज़ दफ़ा एक आदमी एक ख़ल्क़ पर ग़ालिब और दूसरे ख़ल्क़ से मग़लूब होता है। यह भी ग़ैर-अख़्तियारी है अगरचे कमाल यह है कि सालिक ग़ालिबुल अख़्लाक़ हो।

ख़ुद्दाम की ख़िदमत

एक बार एक दरवेश हज़रत नानौतवी रह० की ख़िदमत में दरवेशी का इम्तिहान लेने के लिए बड़ी शान व शौकत से आए। बहुत से घोड़े और ख़ादिम भी साथ थे। हज़रत रह० ने सबकी दावत की। शाह साहब के नौकरों और ख़ादिमों को अपने हाथ से उसी शान के बर्तनों में खाना खिलाया जैसे बर्तनों में ख़ुद खाते थे। वह दरवेश हज़रत रह० की यह इन्किसारी और ख़ल्क़ देखकर आपके कमाल के क़ायल हो गए।

मतबअ (प्रेस) में मुलाज़मत

हज़रत मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब रह० को एक आदमी ने प्रन्टिंग प्रेस में मुलाज़मत की दरख़्वास्त पेश की। आपने

फ़रमाया, इल्मी लियाक़त तो मुझ में है नहीं। अलबत्ता क़ुरआन मजीद की तस्हीह (प्रुफ़ रीडिंग) कर लिया करूंगा। इसमें दस रुपए दे दिया करो। अल्लाह! अल्लाह! क्या तवाज़ो और ज़ोहद है। उसी ज़माने में बहावलपुर से तीन सौ रुपए माहवार की नौकरी की पेशकश हुई। मौलाना ने जवाब में लिखा—

"आपकी याद फ़रमाई का शुक्रगुज़ार हूँ मगर मुझे यहाँ दस रुपए मिलते हैं जिसमें से पाँच रुपए तो मेरे घरवालों के लिए काफ़ी हो जाते हैं और बाक़ी पाँच रुपए बच जाते हैं। आपके यहाँ से जो तीन रुपए मिलेंगे उनमें से पाँच रुपए तो ख़र्च होंगे और दो सौ पिच्चानवें रुपए जो बचेंगे उनको कहाँ ख़र्च करूँगा? लिहाज़ा मैं आने से माज़ूर हूँ।"

ग़र्ज़ आप तशरीफ़ नहीं ले गए।

हज़रत गंगोही रहमुतल्लाहि अलैहि से बेतकल्लुफ़ी

एक बारह हज़रत गंगोही रह० ने फ़रमाया कि जितनी मुहब्बत पीरों के साथ मुरीदों को होती है, हज़रत हाजी साहब रह० से मुझ को उतनी नहीं है। हज़रत मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब रह० ने सुनकर इधर-उधर की बातें करके फ़रमाया कि अब तो माशाअल्लाह आपकी हालत बातिनी हज़रत हाजी साहब रह० से भी बहुत आगें बढ़ गई है। हज़रत गंगोही रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया, "ला हवला वला क़ुव्वत, अस्तग़फ़िरुल्लाह, भला कहाँ हज़रत और कहाँ मैं . . . !!!

चे निस्बत ख़ाक रा बा आलम पाक

फिर फ़रमया कि मुझे इस बात से बड़ी तकलीफ़ हुई और बड़ा

सदमा हुआ। मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब रह० ने फ़रमाया, ख़ैर आप उनसे बढ़े हुए न सही लेकिन मैं आपसे पूछता हूँ कि यह तकलीफ़ आपको क्यों हुई? आप तो कहते थे मुझे हज़रत से मुहब्बत नहीं है। अगर मुहब्बत नहीं थी तो यह सदमा क्यों हुआ? वैसे ही अपनी फ़ज़ीलत की नफ़ी कर देते। बस यही मुहब्बत है। हज़रत गंगोही रह० ने फ़रमाया कि भई तुम बड़े उस्ताद हो। दोनों हज़रात मैं आपस में बहुत बेतकल्लुफ़ी पाई जाती थी।

हिज्रे अस्वद कसौटी है

हज़रत मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब नानौतवी रह० ने फ़रमाया कि हिज्रे अस्वद कसौटी है। इसको छूने से इंसान की असली हालत ज़ाहिर होती है अगर वाक़ई फ़ितरतन सालेह है तो हज के बाद आमाल सालेहा का ग़लबा होगा और अगर फ़ितरत बद है, महज़ बनावट से नेक बना हुआ है तो हज के बाद बुरे आमाल का ग़लबा होगा। इसलिए हाजी की हालत ख़तरनाक है और इस ख़तरे का ईलाज यह है कि हाजी हज के ज़माने में अल्लाह तआला से अपनी इस्लाह की ख़ूब दुआ करे और दिल से नेक आमाल के शौक़ की दुआ करे और हज के बाद आमाले सालेहा का ख़ूब एहतिमाम करे।

इस्लाम की मुहब्बत से ख़ात्मा बिलख़ैर

हज़रत मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब रह० के पड़ौस में एक हिन्दू बनिया रहता था। उसकी दुकान से आपके यहाँ सौदा भी आता था। उसका इंतिक़ाल हो गया। हज़रत नानौतवी रह० ने

उसे ख़्वाब में देखा कि जन्नत में गश्त कर रहा है। पूछा, लाला जी! तुम यहाँ कैसे पहुँचे, तुम तो हिन्दू थे, बुत को पूजा करते थे, जन्नत तो मुसलमान के लिए है? उसने कहा, मौलवी जी! आपकी सोहबत से मुझे इस्लाम से मुहब्बत हो गई। फिर जब मैं मरने लगा तो लोगों ने कहा, उनकी ही कह ले जान आसानी से निकल जाएगी। अब तक फ़रिश्ते सामने नहीं आए थे। मैंने दिल में कलिमा पढ़ लिया। फिर वह क़ुबूल हो गया और मैं जन्नत में पहुँच गया।

तलबे सादिक़ हो तो ऐसी

एक साहब थे दीवान जी "अल्लाह दिया।" उन्होंने हज़रत नानौतवी रह० से बैअत की दरख़्वास्त की। आपने फ़रमाया, गंगोह जाकर हज़रत गंगोही रह० से बैअत हो जाओ। अर्ज़ किया, बहुत अच्छा। गंगोह पहुँचे और हज़रत गंगोही रह० से बैअत हुए फिर वापस देवबंद आए और हज़रत नानौतवी रह० सो फिर बैअत की दरख़्वास्त की। हज़रत रह० ने फ़रमाया, मैंने तुम से कहा था कि गंगोह जाकर हज़रत गंगोही रह० से बैअत हो जाओ। अर्ज़ किया मैं बैअत हो आया हूँ और जहाँ-जहाँ आप फ़रमाएंगे वहाँ जाकर बैअत हो जाऊँगा। मगर दिल से तो आप ही से बैअत हूँगा। क्या ही ठिकाना है इस ताल्लुक़ व मुहब्बत का। आख़िर हज़रत नानौतवी रह० ने उसको बैअत फ़रमा लिया। देखिए क्या लतीफ़ अदब व इताअत है।

तकबीरे ऊला के छूटने पर अफ़सोस

तज़्किरतुर्रशीद में लिखा है कि देवबंद के जलसए दस्तारबंदी में

जब मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब रह० तश्रीफ़ लाए तो शायद असर की नमाज़ में एक दिन ऐसा इत्तिफ़ाक़ पेश आया कि मौलाना मुहम्मद याक़ूब साहब रह० नमाज़ पढ़ाने के लिए मुसल्ले पर जाकर खड़े हुए। लोगों की भीड़ और मुसाफ़े की कसरत के बावजूद जल्दी-जल्दी करके जिस वक़्त आप रह० जमाअत में शरीक हुए तो क़िरात शुरू हो गई थी। सलाम फेरने के बाद देखा गया तो आप रह० बहुत उदास थे और चेहरे पर मलाल बरस रहा था। और आप रंज के साथ ये अल्फ़ाज़ फ़रमा रहे थे कि अफ़सोस बाईस बरस के बाद आज तकबीरे ऊला छूट गई।

आजिज़ी और इन्किसारी

"अरवाहे सलासा" में मौलाना अमीरुद्दीन की रिवायत से लिखा है कि एक दफ़ा भोपाल से हज़रत नानौतवी रह० को मुलाज़मत की पेशकश हुई और पाँच सौ रुपए तंख़्वाह मुक़र्रर हुई। जब आप से जाने के लिए इसरार किया गया तो फ़रमाया, वह मुझे साहिबे कमाल समझकर बुलाते हैं और इसी बिना पर पाँच सौ रुपए देते हैं मगर मैं अपने अंदर कोई कमाल नहीं पाता। फिर किस बिना पर जाऊँगा। बहुत इसरार के बावजूद तश्रीफ़ नहीं ले गए।

इल्म हासिल होने की एक अजीब सूरत

"अरवाहे सलासा" में लिखा है कि हज़रत नानौतवी रह० की ख़िदमत में हैदराबाद के दो नवाबज़ादे पढ़ने के लिए आए हुए थे। हज़रत कभी-कभी उनसे पाँव दबवाया करते थे एक बार फ़रमाया,

मुझे तो इसकी ज़रूरत नहीं है कि इनसे पाँव दबवाऊँ मगर इल्म इसी तरह आता है।

खाने में तवाज़ो

हज़रत नानौतवी रह० अपने पढ़ने के ज़माने में मकान में तन्हा एक जगह रहते थे। रोटी कभी पकवा लेते थे तो कई-कई दिन तक खा लेते थे।

मुताले में दिलचस्पी

"तज़्किरतुर्रशीद" में लिखा है कि आप इस क़द्र मेहनती थे कि रात-दिन चौबीस घंटों में शायद सात आठ घंटे मुश्किल से सोने, खाने और दूसरी ज़रूरतों में ख़र्च होते होंगे और इसके अलावा सारा वक़्त ऐसी हालत में गुज़रता था कि किताब नज़र के सामने और ख़्याल मज़्मून की तह में डूब जाता था। मुताले में आप इस दर्जे डूब जाते थे कि पास रखा हुआ खाना कोई उठाकर ले जाता तो आपको ख़बर न होती। बहुत बार ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुआ कि किताब देखते देखते सो गए। सुबह को मालूम हुआ कि रात को खाना नहीं खाया था। मदरसे को आते जाते आप कभी इधर-उधर न देखते थे, लपके हुए जाते थे और झपटे हुए वापस आते थे।

कलिमा तैय्यबा की बरकत

हज़रत नानौतवी रह० फ़रमाते थे कि एक बार जब मैं गंगोह हाज़िर हुआ तो हज़रत गंगोह की सहदरी में एक प्याला रखा हुआ

था। मैंने उसको उठाकर कुँए से पानी खींचा और उसमें भरकर पिया तो पानी कढ़वा पाया। ज़ोहर की नमाज़ के वक़्त हज़रत से मिला और क़िस्सा बयान किया। आपने फ़रमाया, कुँए का पानी तो कढ़वा नहीं बल्कि मीठा है। मैंने वह प्याला पेश किया। हज़रत ने भी पानी चखा तो बदस्तूर कढ़वा था। आपने फ़रमाया, अच्छा इसको रख दो। नमाज़ के बाद हज़रत ने सब नमाज़ियों से फ़रमाया कि कलिमा तैय्यबा जिस क़द्र हो सके पढ़ो और हज़रत रह० ने भी पढ़ना शुरू कर दिया। बाद में हज़रत नै दुआ के लिए हाथ उठाए और निहायत ख़ुशू व ख़ुज़ू के साथ दुआ मांगकर हाथ मुँह पर फेर लिए। उसके बाद प्याले को उठा कर पानी पिया तो मीठा था। उस वक़्त मस्जिद में जितने नमाज़ी थे सब ने चखा तो किसी क़िस्म की कढ़वाहट नहीं थी। बाद में हज़रत रह० ने फ़रमाया कि इस प्याले की मिट्टी उस क़ब्र की है जिस पर अज़ाब हो रहा था। अलहम्दुलिल्लाह कलिमे के बरकत से अज़ाबे इलाही हट गया।

कमाले इस्तिग़ना

एक बार हज़रत नानौतवी रह० छत्ते की मस्जिद से सटे हुज्रे के सामने हजामत बनवा रहे थे। शेख़ अब्दुल करीम रईस मेरठी आपसे मिलने देवबंद आए। हज़रत ने उनको दूर से आते हुए देखा। जब वह क़रीब आए तो एक बेपरवाही के साथ रुख़ दूसरी तरफ़ फेर लिया गोया देखा ही नहीं। वह आकर हाथ बांधकर खड़े हो गए। उनके हाथ में रुमाल में बंधे हुए बहुत से रुपए थे। जब उन्हें खड़े हुए देर गुज़र गई तो हज़रत रह० ने उनकी तरफ़ रुख़

करके फ़रमाया, आहा! शेख़ साहब हैं, मिज़ाज अच्छा है? उन्होंने सलाम अर्ज़ किया और क़दम चूम लिए और वह रुपया बंधा हुआ क़दमों में डाल दिया। हज़रत रह० ने उसे क़दमों से अलग कर दिया। तब उन्होंने हाथ बांधकर मिन्नत समाज की कि क़ुबूल फ़रमा लें। आख़िर बहुत इंकार के बाद उन्होंने वे तमाम रुपया हज़रत रह० की जूतियों में डाल दिया। हज़रत जब उठे तो निहायत इस्तिग़ना के साथ जूते झाड़े और रुपया सब ज़मीन पर गिर गया। हज़रत रह० ने जूते पहन लिए और हाफ़िज़ अनवारुल हक़ से हंसकर फ़रमाने लगे कि हाफ़िज़ जी! हम भी दुनिया कमाते हैं और दुनिया वाले भी दुनिया कमाते हैं। फ़र्क़ यह है कि हम दुनिया को ठुकराते हैं और वह क़दमों में पड़ती है और दुनियादार इसके क़दमों में गिरते हैं और वह उन्हें ठुकराती है। यह फ़रमाकर रुपया वहीं बांट दिया।

तकल्लुफ़ से बचना

मौलाना अहमद हसन साहब फ़रमाते हैं कि एक जुलाहे ने मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब नानौतवी रह० की दावत की। इत्तिफ़ाक़ से उस रोज़ बारिश हो गई और वह जुलाहा वक़्त पर बुलाने न आया तो मौलाना खुद उस जुलाहे के हाँ तशरीफ़ ले गए। उसने अर्ज़ किया कि हज़रत! क्योंकि बारिश हो गई थी इसलिए मैं दावत का इंतिज़ाम न कर सका। मौलाना रह० ने फ़रमाया, इंतिज़ाम क्या होता है, तुम्हारे हाँ कुछ पका भी है? उसने कहा, जी हाँ वह तो मौजूद है। फ़रमाया, बस वही खा लेंगे। चुनाँचे जो कुछ मामूली सा खाना साग वग़ैरह उसके हाँ तैयार था

वह ख़ुशी से खाकर तशरीफ़ ले आए और फ़रमाया बस जी यह तुम्हारी दावत हो गई।

ज़हानत का क़िस्सा

एक अंग्रेज़ हिसाबदान ने इश्तिहार दिया था कि कोई आदमी मुसल्लस (तिकोन) के ज़ाविए (एंगल) को तीन हिस्सों में दलील से साबित कर दे और बांट दे तो डेढ़ लाख रुपए ईनाम है। इस पर मुज़फ़्फ़रनगर के एक जज साहब ने बड़ी कोशिश और मेहनत से इसको साबित किया और कई माहिरीन हिन्दसा ने जज साहब को मश्वरा दिया कि इसको छाप दें और डेढ़ लाख रुपए का ईनाम वसूल कर ले। मगर जज साहब का इसरार था कि हज़रत नानौतवी रह० अगर देखकर तस्दीक़ कर दें तो छापूंगा। इत्तिफ़ाक़ से हज़रत मुज़फ़्फ़रनगर तशरीफ़ ले गए और वापसी में रेल पर सवार होने के लिए जब स्टेशन तशरीफ़ लाए तो गाड़ी में दस बारह मिनट बाक़ी थे। डा० अब्दुर्रहमान साहब ने जो हज़रत गंगोही रह० के बाद में ख़ास ख़ादिम हो गए थे, जज साहब की तमन्ना ज़ाहिर की। उन्हें ख़्याल था कि इस तहरीर को अपने साथ ले जाएंगे। हज़रत रह० ने गाड़ी के इंतिज़ार में खड़े-खड़े सरसरी नज़र से उसे देखा और फ़रमाया कि इसका फ़लाँ मुक़दमा नज़री है हालाँकि अक़्लीदस के मुक़दमात की इंतिहा बदीहात पर होती है। क्योंकि वह साहिबे फ़न थे फ़ौरन समझ गए और इश्तिहार मुल्तवी कर दिया।

बचपन का एक ख़्वाब

आपने बचपन में यह ख़्वाब देखा था कि गोया अल्लाह

जल्लेशानुहू की गोद में बैठा हुआ हूँ तो उनके दादा ने जो ख़्वाब की ताबीर के माहिर थे यह ताबीर बताई कि तुमको अल्लाह तआला इल्म अता फ़रमाएंगे और बहुत बड़े आलिम होगे।

खेल में सबसे अव्वल

हज़रत नानौतवी रह० जैसे पढ़ने में सबसे बढ़कर रहते थे हर खेल में चाहे ज़हानत का हो, चाहे मेहनत का हो सबसे अव्वल और ग़ालिब रहते थे। उस ज़माने में एक खेल जोड़-तोड़ के नाम से खेला जाता था। बहुत पुराने पक्के लोग खेलते थे जबकि नए खेलने वाले मात खा जाते थे। हज़रत ने जब उसका क़ायदा मालूम कर लिया तो फिर किसी मौत न खाई। बहुत हुआ तो दोनों बराबर हो गए। हर खेल में जो मर्तबा कमाल होता था वहाँ तक पहुँचाकर छोड़ते थे।

दीन का फ़ैज़ जारी होने की बशारत

पढ़ने के ज़माने में आपने एक ख़्वाब देखा था कि मैं ख़ानाकाबा की छत पर खड़ा हूँ और मेरे जिस्म से निकलकर हज़ारों नहरें जारी हो रही हैं। अपने उस्ताद ममलूक अली साहब रह० से ज़िक्र किया तो उन्होंने फ़रमाया कि तुम से इल्मे दीन का फ़ैज़ कसरत से जारी होगा।

इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

हिन्दुस्तान में कुछ लोग हरे रंग का जूता बड़े शौक़ से पहनते थे और अब भी पहनते हैं। लेकिन हज़रत नानौतवी रह० ने ऐसा

जूता सारी उम्र कभी नहीं पहना और अगर कोई हदिए में ला देता तो उसके पहनने से परहेज़ करते। सिर्फ़ इसिलए कि सरवरे काएनात हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गुंबद का रंग सब्ज़ है। फिर ऐसे रंग के जूते पाँव में कैसे पहने जा सकते हैं। हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी रह० हज़रत नानौतवी रह० के बारे में फ़रमाते हैं—

"तमाम उम्र सब्ज़ रंग का जूता इस वजह से न पहना कि क़ब्रे मुबारक सब्ज़ रंग की है और अगर कोई हदिया ले आया तो आगे किसी दूसरे को दे दिया।"

हज़रत नानौतवी रह० जब हज के लिए तश्रीफ़ ले गए तो मदीना तैय्यबा से कई मील दूर ही से नंगे पाँव चलना शुरू कर दिया। आपके ज़मीर ने यह इजाज़त न दी कि जूता पहनकर चलें हालाँकि वहाँ सख़्त नोकीले चुभने वाले पत्थरों की भरमार थी। चुनाँचे हज़रत मौलाना मनाज़िर हसन गिलानी रह०, जनाब मौलाना हकीम मंसूर अली ख़ान साहब रह० के हवाले से नक़ल करते हैं कि जो इस सफ़रे हज में हज़रत नानौतवी रह० के रफ़ीक़े सफ़र थे:

"मौलाना मरहूम मदीना मुनव्वरा तक कई मील पहले से शबे तारीक में इसी तरह चलकर नंगे पाँव पहुँच गए।"

इस्लाम का बोलबाला

शाहजहाँपुर में अहले इस्लाम और मुख़्तलिफ़ बातिल फ़िरक़ों का मुनाज़रा और बहस तय हुई जिसमें हिन्दुओं के बहुत से रहनुमा और अहले इस्लाम की तरफ़ से बहुत से उलमाए हक़ और

महशूर हस्तियाँ उस वक़्त उस जगह पर मौजूद थीं। उन्होंने अक़्ली और नक़ली रंग में ऐसी सही और क़तई दलीलें पेश फ़रमायीं कि पादरी लोगों से उनका कोई माक़ूल जवाब ही न बन पड़ा और इस्लाम का बोलबाला हुआ।

आर्य समाज के फ़ित्ने का तोड़

अंग्रेज़ों के चहीते और हिन्दुओं और आर्यो के कर्ता-धर्ता स्वामी दयानन्द जो अपने मंतक़ी और फ़लसफ़ी दलाइल में मशहूर था। उसने अपनी एक किताब में क़ुरआन करीम की बिस्मिल्लाह से लेकर वन्नास तक की तमाम सूरतों पर एतिराज़ात किए और उनकी कमी व ख़ामी बतलाई। वह हर मक़ाम पर मुसलमानों को जवाब के लिए ललकारता था। चुनाँचे अपना तबलीग़ी दौरा करते हुए रुड़की जा पहुँचा। वहाँ इस्लाम के ख़िलाफ़ दिल खोलकर ज़हर उगलता रहा। उसके एतिराज़ात के जवाब हज़रत शेख़ुल हिन्द और मौलाना हाफ़िज़ अब्दुल अद्ल साहब रह० ने कई रोज़ सरे बाज़ार दिए और पंडित जी और उनके चेलें को ग़ैरत दिलाई। उनके मज़हब पर एतिराज़ किए कि अब जवाब दो। मगर पंडित जी और उनके शार्गिदों के कानों पर जूँ न रेंगी। उनको ऐसा साँप सूंघ गया कि वे हिलने से ही रहे। आख़िर हज़रत मौलाना नानौतवी रह० ने फ़रमाया कि अच्छा पंडित जी अपने शार्गिदों समेत मेरा वअज़ भी सुन लें मगर वे वअज़ में तो क्या आते रुड़की से ही चल दिए और ऐसे गए कि पता ही नहीं चला। आख़िर हज़रत रह० ने तीन रोज़ सरे बाज़ार वअज़ फ़रमाया। वह दलाइल मज़हबे इस्लाम के हक़ में बयान फ़रमाए कि सब हैरान

थे। अहले जलसा पर सकते का आलम था। पंडित जी के एतिराज़ों के वह मुँह तोड़ जवाबात दिए कि मुख़ालिफ़ भी मान गए।

हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रहमतुल्लाहि अलैहि

हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० की विलादत बसआदत ज़िला सहारनपुर के क़स्बे गंगोह में हुई। वालिद माजिद का नाम मौलाना हिदायत अहमद है और आपका सिलसिला नसब हज़रत अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु से जा मिलता है।

आपने इब्तिदाई तालीम और अरबी व फ़ारसी की तालीम गंगोह में ही हासिल की। 1261 हि० में देहली का सफ़र किया और मौलाना ममलूक अली की ख़िदमत में पहुँचे। यहाँ हज़रत मौलाना क़ासिम साहब नानौतवी रह० पहले ही पहुँच चुके थे। यूँ इल्म व फ़ज़्ल के शम्स व क़मर इकठ्ठे हो गए और सारी ज़िंदगी साथ रहे। हज़रत मौलाना ममलूक अली साहब रह० को इन दोनों से ख़ास मुहब्बत थी। ज़हानत व ज़कावत में ये दोनों हज़रात देहली में मशहूर हो गए। इल्मे हदीस आपने ख़ानदान वलिउल्लाह के आख़िरी चश्म व चिराग़ हज़रत मौलाना अब्दुलग़नी साहब मुहद्दिस देहलवी रह० से हासिल किया। इक्कीस साल की उम्र में आपने तमाम उलूम व फ़नों में तालीम मुकम्मल कर ली और वतन वापस हुए।

एक बार आप थानाभवन तशरीफ़ ले गए तो हज़रत हाजी

इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह० की ख़िदमत में भी हाज़िर हुए। दिल में बैअत का इरादा बन गया। हज़रत से दरख़्वास्त की तो उन्होंने पहले तो इंकार फ़रमाया, बाद में हज़रत हाफ़िज़ ज़ामिन साहब शहीद रहमतुल्लाहि अलैहि की सिफ़ारिश पर बैअत कर लिया। बैअत के बाद ज़िक्र व शग़ल शुरू किया। आप फ़रमाते हैं कि "फिर तो मैं मर मिटा।" हज़रत हाजी साहब ने आठवें दिन बुलाकर फ़रमाया,

"रशीद अहमद! जो नेमत हक़ तआला ने मुझे दी थी वह मैंने आपको दे दी। आइन्दा इसको बढ़ाना आपका काम है।"

ब्यालीस दिन हज़रत की ख़िदमत में रहने के बाद आपने वतन वापसी की इजाज़त चाही। हज़रत हाजी साहब रह० ने आपको ख़िलाफ़त और इजाज़त बैअत देकर रुख़्सत किया। गंगोह वापस आकर आपने ख़ानक़ाह शाह अब्दुल क़ुद्दूस गंगोही रह० को जो तीन सौ साल से वीरान और ख़स्ता हाल पड़ी थी मरम्मत करके आबाद किया। आप रात दिन ज़िक्र व फ़िक्र में मशग़ूल रहते, रातों को रोया करते थे और जो लिहाफ़ आप ओढ़ा करते थे आँसुओं से दाग़दार हो जाता।

आप अपने वक़्त के फ़िक़्ह व हदीस के इमाम थे। आपके इलमी व रूहानी कमालात का इहाता करना बहुत मुश्किल है। सिर्फ़ इतना अर्ज़ कर देना काफ़ी है कि आपके फ़ैज़े सोहबत से शेख़ुल हिन्द मौलाना महमूदुल हसन रह०, हज़रत मौलाना ख़लील अहमद सहारनपुरी, हज़रत मौलाना अब्दुर्रहीम साहब रायपुरी और हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी रह० जैसे नय्यरे आज़म हुए हैं।

जब 1857 ई० की जंगे आज़ादी का वाक़िआ पेश आया तो हुकूमत बर्तानिया ने आपको भी शक में गिरफ़्तार कर लिया लेकिन सबूत न मिलने पर रिहा कर दिया। क्योंकि अल्लाह तआला ने आपसे दीन का काम लेना था इसलिए हुकूमत आपका बाल बांका न कर सकी। आपने तमाम उम्र दीन की ख़िदमत में गुज़ारी। "फ़तावा रशीदिया" आपका इल्मी शाहकार है। और भी कई किताबें लिखीं और हज़ारों उलमा, मशाइख़ आपके फ़ैज़े इल्मी और रूहानी से मुस्तफ़ीद हुए। 9, जमादिउस्सानी 1323 हि० मुताबिक 11, अगस्त 1905 को अल्लाह तआला से जा मिले।

सोहबत का असर

हज़रत अक़्दस मौलाना अश्रफ़ अली थानवी रह० फ़रमाते थे कि हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० की सोहबत में यह असर था कि कैसी ही परेशानी क्यों न हो जैसे ही आपकी सोहबत में बैठते दिल में एक ख़ास क़िस्म का सुकून और ऐसी जमीअत हासिल होती कि सब कदूरतें दूर हो जाती थीं। इसी वजह से आपके तमाम मुरीदों में अक़ाइद की दरुस्तगी और दीनी मज़बूती ख़ासतौर पर अल्लाह के लिए मुहब्बत और अल्लाह के लिए अदावत कमाल के दर्जे पर देखी जाती थी। ये सब बरकतें आपकी सोहबत की थीं।

कसरे नफ़्सी और उसकी वज़ाहत

हज़रत गंगोही रह० ने एक बार क़सम खाई कि मुझ में कोई कमाल नहीं है। सिर्फ़ अबहाब का अच्छा गुमान है जो मेरे साथ

है। बाज़ मुख़्लिस लोगों को इसमें शक होगा कि हज़रत में कमाल का होना तो ज़ाहिर है लेकिन इस क़ौल से आपका झूठ बोलना लाज़िम आता है। फिर हज़रत हकीमुलउम्मत रह० ने हज़रत मौलाना के इस क़ौल की तफ़्सीर में फ़रमाया कि बुज़ुर्गों की नज़र आइन्दा कमालात की तलब में मौजूदा कमालात पर नहीं होती। बस हज़रत रह० अपने मौजूदा कमालात को कमालाते आइन्दा के सामने नफ़ी ख़्याल फ़रमाते हैं। इसकी मिसाल ऐसे है कि जैसे एक शख़्स के पास एक हज़ार रुपए हैं। वह लखपति के सामने मालदार नहीं होगा। हक़ तआला शानुहू की बड़ी अज़ीमुश्शान और बेमिसाल दरगाह है। यहाँ से जो कुछ अता हो आगे की हवस करना चाहिए। किसी एक मुक़ाम पर बस नहीं करना चाहिए। अल्लाह तआला के यहाँ हर मुक़ाम से ज़्यादा क़ुर्ब की कोशिश करनी चाहिए और मेहनत न छोड़नी चाहिए क्योंकि उसके ख़ज़ाने में कोई कमी नहीं—

तू ही नादान चंद कलियों पर क़नाअत कर गया
वरना गुलशन में ईलाज तंगिए दामाँ भी था

बादशाहों जैसी शान

हज़रत गंगोही रह० की यह शान थी कि कोई भी आपके पास बैठा होता आप इशराक़ या चाश्त का वक़्त आने पर वुज़ू करके वहीं नमाज़ पढ़ने खड़े हो जाते। यह भी नहीं कि कुछ कहकर उठें कि मैं नमाज़ पढ़ लूँ या उठने की इजाज़त लें। जहाँ खाने का वक़्त आया असा लिया चल दिए चाहे कोई नवाब ही का बच्चा बैठा हो। बादशाहों की सी शान थी। अव्वल तो बात ही कम

करते थे और अगर कुछ मुख़्तसर सी बात कहनी होती तो जल्दी से ख़त्म करके तस्बीह लेकर ज़िक्र में मशग़ूल हो जाते। किसी ने कोई बात पूछी तो जवाब दे दिया और अगर न पूछी तो घंटों बैठा रहे आप ख़ामोश रहते।

दूसरों को अपने से अफ़ज़ल समझना

एक बार हज़रत नानौतवी रह० ने हज़रत गंगोही रह० से फ़रमाया कि एक बात पर बड़ा रश्क आया कि आपकी नज़र फ़िक़्ह पर बहुत अच्छी है, हमारी नज़र ऐसी नहीं है। बोले जी हाँ! हमें कुछ जुज़ियात याद हो गयीं तो आप को रश्क होने लगा और आप मुजतहिद बने बैठे हैं हमने कभी आप पर रश्क ही नहीं किया। इस तरह की बातें हुआ करती थीं। वह इन्हें बड़ा समझते थे, ये उन्हें बड़ा समझते।

तसव्वुफ़ का हासिल

हज़रत गंगोही रह० ने फ़रमाया कि अगर हमको पहले से ख़बर होती कि तसव्वुफ़ में आख़िर में क्या चीज़ हासिल होती है तो मियाँ हम कुछ भी न करते। मुद्दतों के बाद मालूम हुआ कि जिसके लिए इतने मुजाहिदे व रियाज़तें की थीं वह ज़रा सी बात थी। हज़रत रह० ने तो आली ज़र्फ़ी की वजह से इस ज़रा सी बात को नहीं बताया, मैं अपनी कमज़र्फ़ी की वजह से बतालाता हूँ कि वह ज़रा सी चीज़ जिसके हासिल करने के लिए इतनी मेहनतें करनी पड़ती हैं वह यही है कि यह तब्दीली, ताल्लुक़ मअल्लाह पैदा करने वाली है और ताल्लुक़ मअल्लाह की हिफ़ाज़त करने वाली है और ताल्लुक़ मअल्लाह को बढ़ाने वाली है।

गुनाह हो जाए तो तौबा कर लो

हज़रत हाफ़िज़ ज़ामिन साहब शहीद रह० के एक ख़लीफ़ा थे। उनके यहाँ एक बार चोरी हो गई। उन साहब का रईसों वाला मिज़ाज था मगर अहले निस्बत थे। उनके सामने किसी ने एक जुलाहे का नाम ले दिया। वह ग़ाज़ी था मगर कम वक़अत था। उन साहब ने बुलाया। वह डर गया और बातें दर्याफ़्त करते वक़्त ख़ौफ़ की वजह से उसके कलाम में ग़लती हो गई। इस वजह से उस पर शक हुआ और उन साहब ने उसे मारा। वह हज़रत गंगोही रह० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और हक़ीक़त बताई। हज़रत को बहुत नागवार गुज़रा। आपने उन साहब को पर्चा लिखा कि अगर अल्लाह तआ़ला आपसे सवाल करे कि आपने इस ग़रीब को किस हुज्जत शरिआ से मारा है तो आपके पास क्या जवाब है? इस जवाब को आप तैयार कर लें।

इस पर्चे को पढ़कर उन साहब को सर से पाँव तक सन्नाटा निकल गया। बस गंगोह पैदल पहुँचे। हज़रत उस वक़्त हुजूरे में लेटे हुए थे। बाहर एक तालिब इल्म बैठे थे। उन साहब ने तालिब इल्म से कहा कि हज़रत को इत्तिला कर दो कि एक नापाक कुत्ता आया है अगर मुँह दिखाने के क़ाबिल हो तो मुँह दिखाए वरना किसी कुँए में डूब मरे ताकि यह आलम पाक हो। तालिब इल्म ने इत्तिला दी। हज़रत रह० ने बुला लिया। उन साहब ने कहा, हज़रत! मैं तो तबाह हो गया। हज़रत ने फ़रमाया, क्यों क़िस्सा फैलाया है? गुनाह हो गया है तो तोबा कर लो यह ईलाज है।

तवस्सुल का मसअला

हज़रत अक़्दस थानवी रह० फ़रमाते थे कि मुझे तवस्सुल के

मसअले में इश्काल था। इसको हल करने के लिए हज़रत गंगोही रह० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। यह वह ज़माना था जब हज़रत गंगोही रह० की बीनाई नहीं रही थी। सलाम के बाद मैंने इस ख़्याल से कि हज़रत गंगोही रह० ने सलाम की आवाज़ से मुझे पहचान लिया होगा, अर्ज़ किया कि तवस्सुल के मसअले में कुछ पूछना है। फ़रमाया, कौन पूछता है? मैंने अर्ज़ किया अशरफ़ अली। फ़रमाया, "ताज्जुब है।" बस इतनी गुफ़्तगू हुई। उसके बाद मुझे कुछ अर्ज़ करने की हिम्मत न हुई और थानाभवन वापस आ गया। मगर इस मसअले में ऐसा शरह सदर हुआ कि कोई इश्काल बाक़ी न रहा। मैंने इस मसअले में एक रिसाला लिखा है, उसमें तवस्सुल के मसअले को ख़ूब खोलकर बयान किया है।

पाएदार दोस्त की अलामत

आजकल दोस्ती का नाम ही रह गया है वरना हक़ीक़त तो क़रीब-क़रीब नदारद है। एक बार हज़रत गंगोही रह० की मज्लिस में हाफ़िज़ मुहम्मद अहमद साहब रह० और मौलवी हबीबुर्रहमान साहब रह० हाज़िर थे जिनकी दोस्ती मशहूर व मारूफ़ थी। हज़रत रह० ने उनसे दर्याफ़्त फ़रमाया कि कभी तुम में और इनमें लड़ाई भी हुई है? अर्ज़ किया कि हज़रत कभी-कभी हो जाती है। फ़रमाया, पाएदार दोस्ती है। पेड़ वह मज़बूत होता है कि जिस पर आंधी आ चुकी हो। फिर अपनी जड़ों को न छोड़ा हो। बस दोस्ती भी वही है कि आपस में लड़ाई भी हो जाए और फिर ताल्लुक़ात भी बाक़ी रहें।

हुब्बे जाह का नुक़सान

हज़रत गंगोही रह० ने एक शेख़ और मुरीद का क़िस्सा सुनाया कि मुरीद बहुत रियाज़त व इबादत करता था। मगर कुछ असर न होता था। शेख़ ने बहुत वज़ाइफ़ बदले और तदबीरें अपनायीं लेकिन उसके बातिनी हालात दरुस्त होते नज़र न आए। फिर एक तदबीर की जो हुब्बे जाह और ज़ाहिरी इज़्ज़त के ख़िलाफ़ थी। वह यह काम न कर सका। उस वक़्त मालूम हुआ कि वह तालिबे जाह था। यही जाह की तलब उसके रास्ते की रुकावट बन गई थी।

बेअदबी तसव्वुफ़ में रहज़न है

हज़रत गंगोही रह० एक वाक़िया बयान फ़रमाते थे कि एक आलिम हज़रत नूर मुहम्मद रह० की शान में कुछ गुस्ताख़ाना अल्फ़ाज़ कहा करते थे। आख़िरकार तंबीह हुई। उन्होंने तोबा की और हज़रत मियाँ जी साहब से बैअत की दरख़्वास्त की। हज़रत मियाँ जी रह० ने बैअत कर लिया। लेकिन कुछ अरसे बाद तन्हाई में उनसे फ़रमाया कि मियाँ इस तरीक़े की बुनियाद इख़्लास पर है। इसलिए तुम से बात छिपाना नहीं चाहता। बात यह है कि जब भी तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जेह होता हूँ तो तुम्हारे वे सब कलिमात जो तुमने पहले कहे थे मेरे सामने आकर हायल हो जाते हैं। हर चंद तुम्हें नफ़ा पहुँचाने की कोशिश करता हूँ मगर उसकी सूरत नहीं बनती। इसलिए बेहतर है कि तुम किसी और से बैअत कर लो। मैं तुम्हारी सिफ़ारिश कर दूँगा। हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी मुफ़्तीए आज़म पाकिस्तान के नज़दीक यह कोई हसद और कीना नहीं है बल्कि ग़ैर-अख़्तियारी अम्र होता है। जिसका इंसान

मुकल्लफ़ नहीं जैसे रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ातिल हज़रत वहशी रज़ियल्लाहु अन्हु को मुसलमान होने के बाद हिदायत फ़रमाई कि तुम मेरे सामने न आया करो। मुझे हज़रत हमज़ा का सदमा ताज़ा हो जाता है। वह तुम्हारे लिए मुज़िर है।

साहिबे कश्फ़ की दुआ से आर

हज़रत हकीमुल उम्मत रह० फ़रमाते थे कि एक दफ़ा हज की ग़र्ज़ से जिस जहाज़ में हज़रत गंगोही रह० सवार थे उसमें एक आदमी और भी सवार था जो कई बार पहले भी हज को गया था मगर उसको हज नसीब नहीं हुआ था। वह आदमी जहाज़ में सवार तो हो गया मगर ख़बर मिली कि हज का वक़्त आख़िर हो गया है। अगर जहाज़ ने रास्ते में पड़ाव किया तो वक़्त पर न पहुँच सकेगा। यह सुनकर वह आदमी वहीं उतर पड़ा। हज़रत रह० ने फ़रमाया कि हज ज़रूर मिल जाएगा। मगर वह आदमी फिर भी दोबारा सवार न हुआ। किसी ने कहा इसके लिए दुआ फ़रमाएं कि इसको भी हज की तौफ़ीक़ नसीब हो जाए। फ़रमाया, जी नहीं चाहता और दुआ न फ़रमाई। जब जहाज़ कामरान के क़रीब पहुँचा तो लोगों ने जहाज़ के कप्तान से कहा कि अगर जहाज़ कामरान में खड़ा किया तो हम तुमको क़त्ल कर देंगे और छुरा निकालकर ख़ूब डराया। कप्तान ने डरकर जहाज़ सीधा जद्दा जाकर लगाया। कप्तान पर इस वजह से कई हज़ार रुपया जुर्माना हुआ। हाजियों को उतार दिया गया कि उनका कोई क़ुसूर नहीं था। हज़रत हाजी साहब रह० ने फ़रमाया कि मौलाना गंगोही रह०

इस जहाज़ में न आते तो इस जहाज़ में से किसी को भी हज नसीब न होता।

हज़रत शाह वलिउल्लाह रह० की औलाद का मक़ाम

हज़रत गंगोही रह० फ़रमाते थे कि एक बार हज़रत शाह वलिउल्लाह मुहद्दिस देलहवी रह० मर्ज़ुल मौत में मुब्तिला हुए तो बशरियत की वजह से बच्चों की कम उम्री का तरद्दुद (फ़िक्र) हुआ। चुनाँचे ख़्वाब में रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि तुम किस लिए फ़िक्रमंद हो, जैसी तुम्हारी औलाद वैसी मेरी औलाद। चुनाँचे आँख खुलने पर इत्मिनान हुआ नसीब हुआ। हज़रत गंगोही रह० ने फ़रमाया, शाह वलिउल्लाह साहब रह० की औलाद आलिम हुई और बड़े मर्तबे पर पहुँची और तमाम बेटे बड़े साहिबे कमाल हुए।

सब्र हो तो ऐसा

हज़रत गंगोही रह० के जवान बेटे का इंतिक़ाल हो गया। लोग ताज़ियत के लिए आते तो चुप बैठे रहते कि क्या कहें? अल्लाह वालों का रौब होता है। किसी की हिम्मत न पड़ती थी कि कुछ कहे और आख़िर कहते तो भी क्या कहते? अगर कहते, रंज हुआ तो इसके इज़्हार कि क्या ज़रूरत थी? अगर कहते सब्र कीजिए तो वह खुद सब्र किए बैठे थे। आख़िर हर जुमले ख़बरिया की कोई न कोई तो वजह होनी चाहिए। बड़ी देर के बाद आख़िर एक ने हिम्मत करके कहा हज़रत बड़ा रंज हुआ। फ़रमाया, मालूम है, कहने की क्या ज़रूरत है? फिर सारा मजमा चुप हो गया। लोग

आते थे और चुप बैठकर चले जाते थे। हज़रत हाजी साहब रह० के इंतिक़ाल का सदमा हज़रत गंगोही रह० को इस क़द्र कि दस्त लग गए थे और खाना छुट गया था लेकिन क्या मजाल कि कोई ज़िक्र कर दे। हज़रत थानवी रह० फ़रमाते हैं कि मैं भी इस मौक़े पर हाज़िर हुआ। अब मैं हैरत में था कि क्या कहूँ। आख़िर चुप होकर बैठा रहा। हज़रत गंगोही रह० पर इतने बड़े सदमे पड़े लेकिन क्या मजाल किसी मामूल में ज़रा फ़र्क़ आ जाए। चाश्त, तहज्जुद, अव्वाबीन, कोई मामूल क़ज़ा तो क्या देर से भी नहीं होने पाया। यहाँ तक कि खाना सामने आया तो उसको भी अल्लाह की नेमत समझकर खा लिया। यह शान थी किसी तर्ज़ से पता न चलता था। न चेहरे से, न ज़बान से, वही मामूल वही अज़्कार, वही तालीम व तलक़ीन। किसी मामूल में ज़रा फ़र्क़ नहीं आता था। वल्लाह यह ताल्लुक़ मअल्लाह की क़ुव्वत है। इंसान इस्तिक़ामत का पहाड़ बन जाता है।

मिस्कीनों का तबर्रुक

हज़रत गंगोही रह० एक बार बीमार हो गए। जब तंदरुस्त हुए तो आपके बेटे ने शुक्रिए में बहुत से लोगों की दावत की। हज़रत रह० ने अपने एक ख़ास ख़ादिम से फ़रमाया कि जब ग़रीब लोग खाना खा चुकें तो उनके सामने का बचा हुआ खाना मेरे पास ले आना कि वह तबर्रुक मैं खाऊँगा और यह ख़्याल न करना कि उनका बदन साफ़ नहीं, उनके कपड़े साफ़ नहीं और इसको तबर्रुक इसलिए क़रार दिया गया कि वे लोग मोमिन हैं, ख़ुदा के महबूब हैं। हदीस पाक में आया है ﴿يا عائشة قربى المسكين﴾ चुनाँचे

वह खाना हज़रत रह० के पास लाया गया और हज़रत रह० ने उसे रग़बत से खा लिया। इससे उनकी तवाज़ो और इत्तिबाए सुन्नत का पता चलता है।

तवाज़ो

हज़रत गंगोही रह० का वाक़िआ है कि एक बार उनके हाँ एक बड़े ओहदेदार मेहमान आए। जब खाने का वक़्त हुआ तो हज़रत रह० ने अपने साथ उनको बिठलाया। क्योंकि वह बड़े आदमी समझे जाते थे, उसके साथ बैठा देखकर दूसरे ग़रीब तलबा मेहमान पीछे हटे। हज़रत रह० ने फ़रमाया, साहबो! आप लोग पीछे क्यों हट गए? क्या इस वजह से कि एक ओहदेदार मेरे साथ बैठा है? ख़ूब समझ लीजिए कि आप लोग मेरे अज़ीज़ हैं। मैं जिस क़द्र आपको मौज़्ज़िज़ समझता हूँ उसके सामने इनकी कुछ वक़अत नहीं। चुनाँचे सब ग़रीब तलबा को भी साथ बिठलाकर कर खाना खिलाया।

एक बार हज़रत रह० हदीस का दर्स दे रहे थे। अब्र हो रहा था कि अचानक बूंद पड़ना शुरू हो गयीं। जिस क़द्र तालिब इल्म दर्स में शरीक थे सब किताबों की हिफ़ाज़त के लिए किताबें उठाकर भागे और सहदरी में पनाह ली। फिर किताबें रखकर जूते उठाने चले। सहन की तरफ़ रुख़ किया तो क्या देखते हैं कि हज़रत गंगोही रह० सबके जूते जमा करके ला रहे हैं। तलबा ने कहा कि हज़रत! आपने यह क्या किया? फ़रमाया, जो लोग क़ालल्लाहु और क़ालर्रसूल पढ़ते हों रशीद अमहद उनके जूते न उठाए तो और क्या करे?

एक डाकू की हिकायत

हज़रत गंगोही रह० ने एक डाकू की हिकायत बयान फ़रमाई कि वह किसी बस्ती में लबे दरिया अपना भेस बदलकर झोपड़ी डालकर 'अल्लाह', 'अल्लाह' करने लगा। लोगों को उससे अक़ीदत हुई और उसके पास आने लगे। कुछ मुरीद होकर वहीं ज़िक्र व शग़ल में मसरूफ़ हो गए। अल्लाह की क़ुदरत कि कुछ उनमें साहिबे मुक़ाम भी हो गए। एक दिन उन पीर साहब के कुछ मुरीदों ने मुराक़बा किया कि देखें कि अपने पीर का क्या मुक़ाम है मगर वहाँ कुछ नज़र न आया। हर चंद मुराक़बा किया मगर कुछ होता तो नज़र आता। नाचार होकर अपने शेख़ से कहा। शेख़ में चूँकि ज़िक्र की बरकत से सिद्क़ की शान पैदा हो चुकी थी। उसने सब क़िस्सा साफ़ कह दिया कि मैं तो कुछ भी नहीं हूँ, एक डाकू हूँ। सबने मिलकर अल्लाह से दुआ की। अल्लाह तआला ने शेख़ को भी साहिबे मुक़ाम बना दिया।

बैअत होने की बरकत

हज़रत गंगोही रह० की ख़िदमत में एक गाँव का रहने वाला आदमी मुरीद होने के लिए आया। हज़रत रह० ने कलिमात बैअत पढ़ा दिए जिनका हासिल गुनाहों से तोबा है। जब तोबा कर ली तो कहता है, मौलवी जी! अफ़ीम से तो तोबा कराई नहीं? हज़रत रह० ने फ़रमाया, मुझे क्या ख़बर कि तू अफ़ीम खाता है। अच्छा बतला कितनी खाता है? जिस क़द्र खाता है मेरे हाथ पर रख दे। मगर उसने जेब से अफ़ीम की डली निकालकर दूर फेंकी कि मौलवी जी! तोबा ही जब कर ली तो अब क्या खाएंगे? घर गया

तो दस्त शुरू हो गए। इसकी ख़बर हज़रत गंगोही रह० को पहुँची। मरते मरते बचा मगर अच्छा हो गया। तंदरुस्त होकर दोबारा हज़रत रह० की ख़िदमत में आया। हज़रत रह० ने पूछा, कौन? कहा, मैं हूँ अफ़ीम खाने वाला और सारा क़िस्सा बयान किया। उसके बाद दो रुपए पेश किए। हज़रत रह० ने किसी क़द्र उज़्र के बाद दिलजोई के लिए क़ुबूल फ़रमा लिए। वह देहाती नौजवान कहने लगा, अजी मौलवी जी! यह तो आपने पूछा ही नहीं कि यह कैसे रुपए हैं? हज़रत रह० ने फ़रमाया, भाई! खुद ही बतला दो। कहने लगा, यह रुपए अफ़ीम के हैं। हज़रत रह० ने पूछा, अफ़ीम के कैसे? कहा कि दो रुपए की अफ़ीम महीने में खाता था। जब तोबा कर ली तो नफ़्स बड़ा खुश हुआ कि दो रुपए महीने की बचत हो गई। मगर मैंने नफ़्स में कहा कि याद रख तेरे पास यह रक़म न छोड़ूंगा बल्कि तोबा के वक़्त ही नीयत कर ली थी कि जितने रुपयों की अफ़ीम खाता था वह रुपए हज़रत को दिया करूंगा। यह बैअत की बरकत है कि एक देहाती आदमी को दीन की समझ ऐसी आई कि दीन दुनिया की मिलावट को समझ गया।

शेख़ की मारिफ़त

हज़रत गंगोही रह० फ़रमाया करते थे कि जो आदमी मेरे एक मुरीद को हटा दे तो फ़ी मुरीद एक आना और मौलवी को हटाने पर फ़ी मौलवी चार आने ले ले। ग़र्ज़ यह थी कि जो आदमी नादान है उसको शेख़ से भी बराए नाम मुहब्बत होगी। नादान की दोस्ती रह नहीं सकती। वह मामूली बात को भी बुज़ुर्गी के

ख़िलाफ़ समझेगा और ग़ैर-मौतक़िद हो जाएगा। उसकी नज़र जहल के सबब बुराईयों की तरफ़ ज़्यादा होगी और कमालात को तो वह जानता ही नहीं। उन पर तो उसकी नज़र क्या होती। सच्ची मुहब्बत उसी को होगी जिसको शेख़ की मारिफ़त होगी और शेख़ की मारिफ़त उसकी इत्तिबा से होगी।

चेला और गुरू बनने की तमन्ना

हज़रत गंगोही रह० ने फ़रमाया, आजकल लोग मुरीद नहीं बनते, गुरू बनते हैं। फ़रमाया, एक आदमी एक गुरू के पास गया और कहा मुझे अपना चेला बना लो। उसने कहा, चलो बनना बड़ा मुश्किल है तो उसने कहा, फिर गुरू ही बना लो।

सादगी

एक बार हज़रत मौलाना मुहम्मद याक़ूब रह० पैदल सफ़र करके उस वक़्त गंगोह पहुँचे कि जमाअत खड़ी हो चुकी थी और नमाज़ शुरू होने को थी। लोगों ने देखकर खुशी में कहा, मौलाना आ गए, मौलाना आ गए। हज़रत मौलाना गंगोही रह० मुसल्ले पर पहुँच चुके थे। यह सुनकर निगाह उठाकर मौलाना को देखा तो मुसल्ले से वापस आकर सफ़ में खड़े हो गए और हज़रत मौलाना मुहम्मद याक़ूब साहब रह० को नमाज़ पढ़ाने के लिए फ़रमाया। मौलाना सीधे मुसल्ले पर पहुँचे, चूँकि पैदल सफ़र करके तशरीफ़ लाए थे इसलिए पाएजामे के पाएंचे चढ़े हुए थे और पाँव धूल में हो रहे थे। जब हज़रत गंगोही रह० की जगह पहुँचे तो हज़रत रह० ने सफ़ में से आगे बढ़कर अपने रुमाल के साथ पहले उनके

पाँव की गर्द साफ़ की फिर पाएंचे उतार दिए और फ़रमाया, अब नमाज़ पढ़ाइए और ख़ुद वापस आकर सफ़ में खड़े हो गए। मौलाना मुहम्मद याक़ूब साहब रह० ने नमाज़ पढ़ाई। हज़रत गंगोही रह० ने बाद में किसी से फ़रमाया, मुझे इससे बेहद मुसर्रत हुई कि मौलाना ने इंकार नहीं फ़रमाया बल्कि मेरी दरख़्वास्त क़ुबूल फ़रमा ली।

दीन व दुनिया का नुक़सान

हज़रत गंगोही रह० से एक मुरीद ने अर्ज़ किया कि हज़रत! मुझे रोशनी नज़र आती है और उसमें सुनहरे हरूफ़ से कुछ लिखा होता है। हज़रत रह० ने फ़रमाया, तुम ईलाज करवाओ और ज़िक्र व शग़ल वग़ैरह छोड़ दो। तुम्हारे दिमाग़ में ख़ुश्की है और यह शुरूआत है जुनून का। उसने कहना न माना, न ईलाज कराया और न काम को छोड़ा। आख़िर ख़ुश्की बढ़ी और जुनून हो गया बल्कि नंगे मारे मारे फिरते थे। न नमाज़ रही न रोज़ा। हज़रत ने उनको वसीयत फ़रमाई थी कि खाया पिया करो। इससे क़ुव्वत आएगी और यह फ़रमाया था, देखो! हदीस में आया है कि ﴿المؤمن القوی خیر من المؤمن الضعیف و فی کل خیر﴾ यानी क़वी मोमिन ज़ईफ़ से बेहतर है और हर एक में ख़ैर है।

नमाज़ में गिरया व ज़ारी

हक़ तआला शानुहू की अज़्मत और जलालते शान क्योंकि आपके रग-रग में पेवस्त थी इसलिए आप जब अपने आक़ा व मालिक हक़ीक़ी के हुज़ूर दस्त बस्ता खड़े होते और नफ़्लों में

क़िराते क़ुरआन मजीद शुरू फ़रमाते तो अमूमन आप पर गिरया तारी हो जाता और पढ़ते-पढ़ते रुक जाते थे, सिसकियाँ आपका हलक़ थाम लेती थीं और चीख़ने चिल्लाने पर मजबूर करने वाली हालत आपको ख़ामोश बना दिया करती थीं। आँखों से आँसू बहते और मुसल्ले पर मोतियों की तरह गिरते। मौलवी अब्दुर्रहमान साहब फ़रमाते थे कि एक बार मैं गंगोह हाज़िर हुआ। रमज़ान का महीना था और तरावीह में कलामुल्लाह शरीफ़ हज़रत गंगोही रह० सुनाया करते थे। एक रात आपने तरावीह शुरू की। मैं भी जमाअत में शरीक था। क़ुरआन मजीद पढ़ते-पढ़ते आप उस रुकू पर पहुँचे जिसमें ख़ौफ़ व ख़शियत दिलाया गया था। हालाँकि जमाअत में आधे से कम लोग अरबी समझने वाले थे और बाक़ी सब नावाक़िफ़ थे। मगर आपकी क़िरात से उस रुकू की ख़शियत का असर सब पर पड़ रहा था। कोई रोता था और किसी के बदन पर लरज़ा तारी था। उस रुकू के बाद जब आपने दूसरा रुकू शुरू किया तो उसमें रहमते ख़ुदावन्दी का बयान था। उस वक़्त एकदम तमाम जमाअत पर सुरूर तारी हो गया और पहली हालत एकदम बदल गई। ख़शियत वाली कैफ़ियत उन्स में बदल गई।

नमाज़ क़ज़ा करना गवारा न किया

हज़रत गंगोही रह० की आख़िर उम्र में आँखों में पानी उतर गया था। ख़ादिमों ने आँख बनवाने पर इसरार किया मगर आपने इंकार फ़रमा दिया। एक डाक्टर साहब ने वादा किया कि हज़रत एक नमाज़ क़ज़ा न होने दूंगा। फ़ज्र अव्वल वक़्त और ज़ोहर आख़िर वक़्त पढ़ लें अलबत्ता कुछ दिन सज्दा ज़मीन पर न

फ़रमाएं बल्कि ऊँचा तकिया रखकर उस पर कर लें। इस पर इर्शाद फ़रमाया कि चंद दिन की नमाज़ें तो बहुत होती हैं। एक सज्दा भी इस तरह करना गवारा नहीं।

रियाज़त व मुजाहिदा

हज़रत गंगोही रह० की रियाज़त व मुजाहिदे की यह हालत थी कि देखने वालों को रहम आता और तरस खाते थे। चुनाँचे इस बुढ़ापे में जब कि आप सत्तर साल की उम्र से ज़्यादा के हो गए थे कसरते इबादत का यह आलम था कि दिन भर का रोज़ा और बाद मग़रिब बीस रकअत अव्वाबीन पढ़ा करते थे। जिसमें अंदाज़न दो पारों से कम तिलावत नहीं होती थी। फिर इसके साथ रुकू और सज्दा इतना लंबा की देखने वालों का भूलने का गुमान हो। नमाज़ से फ़ारिग़ होकर मकान तक आने जाने और खाना खाने के लिए मकान पर ठहरने में कई पारे तिलावत कर लिया करते थे।

मुर्शिद की तरफ़ से इम्तिहान

थानाभवन के क़याम के दौरान हज़रत हाजी साहब रह० ने आपके सब्र व तहम्मुल का इम्तिहान लिया। जिसके बारे में हज़रत गंगोही रह० खुद ही फ़रमाते हैं कि थानाभवन में मुझको रहते हुए कुछ दिन गुज़रे तो मेरी ग़ैरत ने हज़रत हाजी साहब रह० पर खाने का बोझ डालना गवारा न किया। आख़िर मैंने सोचकर कि दूसरी जगह इंतिज़ाम करना भी दुश्वार और नागवार होगा, रुख़्सत चाही मगर हाजी साहब रह० ने इजाज़त न दी और फ़रमाया कि कुछ

दिन और ठहरो। मैं ख़ामोश हो गया। क़याम का इरादा तो कर लिया मगर इसके साथ यह फ़िक्र हुआ कि खाने का इंतिज़ाम किसी दूसरी जगह करना चाहिए। थोड़ी दरे के बाद जब हाजी साहब मकान पर तश्रीफ़ ले जाने लगे तो मेरे वसवसे को समझ कर फ़रमाया, मियाँ रशीद अहमद! खाने की फ़िक्र मत करना। हमारे साथ खाइयो। दोपहर को खाना मकान से आया तो एक प्याले में निहायत लज़ीज़ कोफ़्ते और दूसरे प्याले में मामूली सालन था। हाजी साहब रह० ने दस्तरख़्वान पर बिठाया मगर कोफ़्तों का प्याला मुझसे दूर ही रखा। इतने में हज़रत हाफ़िज़ ज़ामिन साहब रह० तश्रीफ़ लाए। कोफ़्तों का प्याला मुझसे दूर रखा देखकर हाजी साहब रह० से फ़रमाया, भाई साहब! रशीद अहमद को इतनी दूर हाथ बढ़ाने में तकलीफ़ होती है, इस प्याले को इधर क्यों नहीं रख लेते? हाजी साहब ने जवाब दिया, इतना भी ग़नीमत है कि अपने साथ खिला रहा हूँ, जी तो यह चाहता था कि चूढ़ों चमारों की तरह अलग हाथ पर रोटी रख देता। इस फ़िक़रे पर हाजी साहब रह० ने मेरे चेहरे पर नज़र डाली कि कुछ बदलाव तो नहीं आया। मगर अलहम्दुलिल्लाह मेरे दिल पर कुछ भी असर न था। मैं समझता था कि हक़ीक़त में जो कुछ आप फ़रमा रहे हैं सच है। इस दरबार से रोटी का मिलना क्या थोड़ी नेमत है, जिस तरह भी मिले बंदानवाज़ी है। इसके बाद हज़रत रह० ने कभी इम्तिहान नहीं लिया।

किसी के लिए कभी बद्दुआ न की

हज़रत मौलाना गंगोही रह० को एक साहब से तकलीफ़

पहुँची। इस पर हज़रत मौलाना ख़लील अहमद साहब रह० ने इस डर से कि कहीं हज़रत बद्दुआ न कर दें। हज़रत ने अर्ज़ किया कि हज़रत! बद्दुआ न कीजिएगा। इस पर हज़रत रह० घबरा गए और फ़रमाया तौबा तौबा मुसलमान के लिए कहीं बद्दुआ भी किया करते हैं, अस्तग़फ़िरुल्लाह।

आजिज़ी व इन्किसारी

एक दफ़ा हज़रत गंगोही रह० के ख़ादिम बदन दबा रहे थे कि एक बेतकल्लुफ़ देहाती ने सवाल किया कि मौलवी जी आप तो बहुत ही दिल में ख़ुश होते होंगे कि लोग ख़ूब ख़िदमत कर रहे हैं। फ़रमाया, भाई जी! जी तो ख़ुश होता है क्योंकि राहत मिलती है लेकिन अल्हम्दुलिल्लाह बड़ाई दिल में नहीं आती। यह दिल में नहीं आता कि मैं बड़ा हूँ और ये छोटे हैं और ख़िदमत कर रहे हैं। यह सुनकर वह देहाती बोला, अजी मौलवी जी! अगर यह बात दिल में नहीं आता तो बस फिर ख़िदमत लेने में कुछ हरज नहीं। उस देहाती ने सही नतीजा निकाला।

हलाल कमाई के लिए कोशिश

हज़रत गंगोही रह० के हालात में लिखा है कि आप पढ़ाई के बाद अपना बार किसी पर डालना नहीं चाहते थे कि इसी दौरान में एक जगह से क़ुरआन शरीफ़ पढ़ाने की मुलाज़मत सात रुपए में आई। आपने हज़रत हाजी साहब रह० से इजाज़त चाही। उन्होंने मना फ़रमा दिया और कहा कि इसको मंज़ूर न करो और ज़्यादा की आवेगी। कुछ दिन गुज़रे थे कि सहारनपूर के रईस

नवाब शाइस्ता ख़ान ने अपने बच्चों की तालीम के लिए दस रुपए तंख़्वाह पर बुलाया। हज़रत गंगोही रह० तो दुनिया की निगाह में बहुत ऊँचे थे मगर अपनी निगाह में छोटे थे। इसलिए दस रुपए को अपनी हैसियत से ज़्यादा समझकर क़ुबूल कर लिया। हज़रत हाजी साहब रह० को जब इसकी इत्तिला पहुँची तो फ़रमाया, अगर सब्र करते तो और ज़्यादा की आती। आपने छः माह यह मुलाज़मत अख़्तियार फ़रमाई ताकि हलाल कमाने का फ़रीज़ा भी अदा हो जाए और बाद वालों के लिए तालीम पर उजरत लेने का रास्ता खुल जाए।

तवाज़ो और मुरव्वत

एक बार हज़रत गंगोही रह० से बैअत होने के लिए एक आलिम मौलवी वहाजुद्दीन साहब रायपूर आए। रात ज़्यादा हो चुकी थी। सफ़र की तकान बहुत थी। एक तरफ़ लेटकर सो गए। ज़रा देर बाद आँख खुली तो देखा कि आदमी पाएंती पर बैठा आहिस्ता आहिस्ता पाँव दबा रहा है मगर इस एहतियात से कि आँख न खुल जाए। अव्वल तो यह समझे कि शायद हज़रत रह० ने किसी ख़ादिम को भेज दिया मगर फिर ग़ौर से निगाह डाली तो मालूम हुआ कि यह तो ख़ुद हज़रत रह० हैं। यह घबराकर उठे और कूदकर चारपाई से नीचे आए कि हज़रत यह क्या ग़ज़ब किया? फ़रमाया, भाई! इसमें हरज क्या है, आपको तकान हो गया था। बस आप लेटे रहिए, आराम मिल जाएगा। उन्होंने कहा, बस हज़रत! माफ़ फ़रमाइए, बाज़ आया ऐसे आराम से कि आपसे पाँव दबवाऊँ।

हज़रत का रौब

मुफ़्ती महमूद साहब रह० ने बयान फ़रमाया कि एक मर्तबा कलक्टर गंगोह आया और किसी से ख़्वाहिश ज़ाहिर की कि शामली के मैदान में मौलाना गंगोही रह० ने जिहाद किया, मैं उनकी ज़ियारत करना चाहता हूँ। वह अपने बंगले से चला और हज़रत अपनी सहदरी से उठकर कमरे में तशरीफ़ ले गए और किवाड़ बंद कर लिए। कलक्टर आया और कुछ देर सहदरी में बैठा रहा। फिर उठकर चला गया। तब हज़रत हुजरे से बाहर तशरीफ़ लाए। कुछ मुद्दत के बाद फिर वही कलक्टर गंगोह आया। बाज़ ख़ादिमों ने अर्ज़ किया कि हुकूमत दारुलउलूम देवबंद की तरफ़ से बहुत बदज़न है। हज़रत! कलक्टर से मुलाक़ात फ़रमा लें तो दारुलउलूम के लिए मुफ़ीद है और ख़तरात से हिफ़ाज़त की उम्मीद है। फ़रमाया, बहुत अच्छा। पालकी में सवार हुए और कलक्टर के बंगले पर तशरीफ़ ले गए। वक़्त के उलमा उस पालकी को उठाकर ले जाने वाले थे। जब पालकी बंगले पर पहुँची तो कलक्टर ख़ुद ही बंगले से बाहर आया। सामने आकर मुसाफ़ा के लिए ख़ुद ही हाथ बढ़ाए। हज़रत अक़्दस ने भी मुसाफ़ा फ़रमाया मगर निगाह नीचे रखी, ऊपर नहीं उठाई और उसकी सूरत नहीं देखी। कलक्टर ने कहा, हमें कुछ नसीहत फ़रमाएं। हज़रत ने फ़रमाया, इंसाफ़ करो और मख़्लूक़े ख़ुदा पर रहम करो। यह कहकर पालकी में सवार हुए और वापस तशरीफ़ ले आए। कलक्टर नें किसी से पूछा कि यह कौन आदमी था, हमारा दिल इसको देखकर काँप रहा था। उसको बतलाया गया कि यह वही मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० हैं जिनकी

ज़ियारत का आपको शौक़ था।

इत्तिबाए सुन्नत

हज़रत गंगोही रह० की इत्तिबाए सुन्नत मशहूर है। एक बार लोगों ने कहा कि मस्जिद से बायाँ पाँव निकालना और जूता सीधे पाँव में पहनना सुन्नत है। देखें हज़रत इन दोनों सुन्नतों को कैसे जमा फ़रमाते हैं। लोगों ने इसका अंदाज़ा किया। जब हज़रत मस्जिद से निकलने लगे तो आपने पहले बाँया पाँव निकालकर जूते पर रखा और सीधा पाँव निकाला तो जूते में डाल दिया। इसके बाद बाँए पाँव में जूता पहना।

हिस्सास तबियत

"तज़्किरातुर्रशीद" में लिखा है कि आप तमाम हवास के एतिबार से निहायत होशियार थे। बीसियों ताज्जुब अंगेज़ क़िस्से आपके कमाले एहसास के मशहूर हैं। हज़रत मौलाना ख़लील अहमद साहब रह० ने लिखा है कि भाई अब्दुर्रहमान साहब फ़रमाते थे कि मुझे चाय का बहुत शौक़ था और अपने हाथ से पकाया करता था। हज़रत ने जब भी चाय पी तो फ़रमाया, चाय में कच्चे पानी का ज़ाएक़ा आता है। अब्दुर्रहमान साहब ने एक रोज़ दिन में कहा कि अच्छा, आज इस क़द्र पकाऊँगा कि पानी भाप बन जाए। चुनाँचे कई घंटे तक पकाकर तैयार हुई और हज़रत रह० को पिलाई तो फ़रमाया कि कच्चे पानी का ज़ाएक़ा इसमें भी है। उन्होंने अर्ज़ किया, हज़रत! यह वहम का दर्जा है। फिर ख़्याल हुआ कि इसमें कुछ दूध घर से लाकर डाला था जो

उबला हुआ था। पूछकर आता हूँ कि कहीं उसमें तो पानी नहीं था। आख़िर घर जाकर मालूम हुआ कि घर के लोगों ने उसमें कुछ पानी डाल दिया था। जिन दिनों में मौलवी हबीबुर्रहमान साहब देवबंदी हज़रत के लिए चाय पकाया करते थे, कई दिन ऐसा क़िस्सा पेश आया कि जब हज़रत ने फ़रमाया कि कच्चे पानी की बू आती है। हर चंद मौलवी साहब ने चाय को जोश देने की कोशिश की मगर हर दफ़ा हज़रत ने यही फ़रमाया कि चाय में कच्चे पानी की बू आती है। आख़िर बड़े परेशान हुए कि बात क्या है? पानी को बहुत पकाता हूँ, पानी उबालकर डालता हूँ फिर कच्चा पानी कैसा। आख़िर बहुत ग़ौर के बाद चला कि जिस प्याली में चाय डाली जाती है उसको धोकर ख़ुश्क नहीं किया जाता। चुनाँचे अगले दिन प्याली धोकर ख़ुश्क करके चाय डाली और हज़रत रह० की ख़िदमत में लेकर हाज़िर हुए। हज़रत रह० ने चाय पी और फ़रमाया कि आज कच्चे पानी की बू नहीं आती।

हज़रत के मेहमान सहदरी में बैठकर खाना खाते थे। फ़रागत पर दस्तरख़्वान उठाकर बोरिया बिस्तर झाड़ दिया जाता था। मगर हज़रत तशरीफ़ लाते तो जो खाना खाया जा चुका था उसका नाम लेकर फ़रमाते कि फ़लाँ खाने की ख़ुशबू है। एक बार खाने खाते हुए फ़रमाया, इसमें कोथमीर की ख़ुशबू आती है। हर चंद ग़ौर किया मगर मजमे में से किसी को एहसास न हुआ। तहक़ीक़ की तो पता चला कि पकती हुई हंडिया चार पाँच पत्ते डाल दिए गए थे।

आपके एहसास के बारे में ऐसे-ऐसे अजीब और हैरतअंगेज़ क़िस्से लोगों ने देखे कि बग़ैर देखे कहने वाले की बात का

यक़ीन भी न आता। एक मर्तबा जुमा के बाद बड़ा मजमा आपकी ख़िदमत में हाज़िर था कि मौलवी मुहम्मद याह्या साहब के छोटे भाई मौलवी मुहम्मद इलयास साहब जिनकी उम्र उस वक़्त दस ग्यारह बरस की थी, दबे पाँव आए औ चुपके से ही एक कोने में बैठ गए। अचानक हज़रत ने गर्दन ऊपर उठाई और फ़रमाया कि बच्चे की सांस है। उसी वक़्त किसी ने कहा, हज़रत! मुहम्मद इलयास आए हैं।

एक बार नंबरदार फ़ज़ल हक़ का लड़का इकरामुलहक़ बाद नमाज़ मग़रिब हाज़िर ख़िदमत हुआ। हज़रत को ख़बर न थी कि कौन मौजूद है। जब खाना खाने को मकान पर जाने लगे और इकरामुलहक़ के क़रीब पहुँचे तो हज़रत ठहर गए और फ़रमाया कि नंबरदार की सी बू आती है। तब किसी ने कहा कि नंबरदार का लड़का इकराम खड़ा है।

नमाज़ का शौक़ और ग़ैबी हिफ़ाज़त

हज़रत गंगोही रह० के बचपन का वाक़िआ है कि आपकी उम्र साढ़े छः साल थी कि आपसे एक ऐसी करामतों और इस्तिक़लाल और तवक्कुल का ज़हूर हुआ कि जिससे आपके मक़्बूल बारगाहे ख़ुदावंदी होने का पता चलता है। आप बचपन ही से नमाज़ के पाबन्द थे। आम नमाज़ों के अवक़ात का बहुत ख़्याल रखते थे। एक दिन शाम को टहलते-टहलते क़स्बे से बाहर निकल गए। वहाँ ग़ुरूब आफ़ताब का वक़्त हो गया तो एहसास हुआ कि मग़रिब की नमाज़ का वक़्त आ गया। फूलों की दो छड़ियाँ हाथ में लिए वापस घर आए और वालिदा को छड़ियाँ पकड़ायीं कि मैं नमाज़

पढ़ने जाता हूँ। जल्दी से मस्जिद में दाख़िल हुए तो जमाअत खड़ी हो चुकी थी। वुज़ू के लिए लोटों की तरफ़ बढ़े तो ख़ाली पाया। देर में देर हुई, घबराकर पानी खींचने वाले कुँए में डोल डाला, डोल वज़नी था। घबराहट में रस्सी पाँव में उलझ गई। हाथ पाँव जमाअत फ़ौत होने की वजह से फूले हुए थे। लिहाज़ा ज़रा सा झटका लगा और आप कुँए में गिर गए। नमाज़ियों को महसूस हुआ कि कोई कुँए में गिर गया है। इमाम साहब ने जल्दी से नमाज़ पूरी कराई। तमाम नमाज़ी कुँए की तरफ़ लपके। अब हर एक कुँए में झांकने लगा। अंदर से आवाज़ आई, घबराओ नहीं, मैं आराम से बैठा हूँ। क़ुदरत हक़ तआला की यह हुई कि डोल उल्टा पानी में गिरा। जब आप गिरे तो होश संभाल कर फ़ौरन उस पर बैठ गए। जब आपको बाहर निकाला गया तो मालूम हुआ कि पाँव की छोटी उंगली में मामूली सी ख़राश आई थी।

हज़रत रह० के हाथ में शिफ़ा

एक बार हज़रत गंगोही रह० की वालिदा साहिबा की ख़ाला बीमार हुईं और सख़्त तकलीफ़ का सामना हुआ। मेदे में दर्द था जिसने बेचैन कर रखा था। हकीम मौलवी मुहम्मद तक़ी साहब अपनी ख़ाला का ईलाज करने वाले थे। दवाएं पिलाते और तदबीरें करते कई रोज़ गुज़र गए। मगर मरीज़ा को कोई फ़ायदा महसूस न हुआ। हज़रत रह० की उम्र मुबारक उस वक़्त कम व बेश बाईस साल थी। नानी जान ने आपसे शिकायत की, "मुझे तक़ी की दवा से फ़ायदा नहीं होता, बेटे! तू भी बड़ा आलिम फ़ाज़िल है, तू ही कोई ऐसी दवा बता जिससे मेरी तकलीफ़ दूर हो।"

हज़रत गंगोही रह० ने उस वक़्त ख़ामोशी अख़्तियार की और कुछ जवाब न दिया मगर नानी जान की बेहद तकलीफ़ पर दिल में ख़्याल ज़रूर पैदा हो गया कि इस तरफ़ तवज्जोह करूंगा। चुनाँचे वहाँ से उठे और मीज़ाने तिब्ब में मेदे की बहस निकालकर मुताला शुरू फ़रमाया। ग़र्ज़ यह है कि हज़रत रह० ने नानी साहिबा का ईलाज़ फ़रमाया। खुदा के हुक्म से वह तंदरुस्त हो गयीं। इससे औरतों में चर्चा हो गया और पुराने-पुराने मरीज़ टूट पड़े। अल्लाह तआला ने आपके दस्ते मुबारक में शिफ़ा रख दी। जो मरीज़ आता आप "इक्सीरे आज़म" और "मीज़ाने तिब्ब" को ग़ौर से देखकर उसकी तश्ख़ीस (डाइग्नोज़) व ईलाज फ़रमाते। नतीजे में उसको आराम आ जाता। आपने मतब को भी बतौर पेशा अख़्तियार न किया बल्कि ख़िदमत ख़ल्क़ का रुजू देखकर इंसान दोस्ती, खुदा तरसी और शफ़क़त की निगाह से उसको करते थे।

साबित क़दमी

मुज़फ़्फ़रनगर के जेलख़ाने में आपको तक़रीबन छः माह रहने का इत्तिफ़ाक़ हुआ और उस ज़माने में आपके इस्तिक़लाल, अज़्म और इरादों में किसी क़िस्म की कमी नहीं आई। इब्तिदा से लेकर इन्तिहा तक आपकी नमाज़ एक वक़्त भी क़ज़ा न हुई। हवालात के दूसरे क़ैदी आपके मौतक़िद हो गए थे। उनमें से बहुत से आपके मुरीद भी हुए। जेलख़ाने की कोठरी में बाजमाअत नमाज़ अदा करते थे। दावत व इर्शाद ज़ाहिरी और बातिनी से आप किसी एक दिन भी ग़ाफ़िल नहीं हुए। वअज़ व नसीहत के साथ क़ुरआन मजीद का तर्जुमा लोगों को सुनाते और वहदानियत का

दर्स दिया करते थे। जब अदालत में जाते तो जो पूछा जाता बेतकल्लुफ़ उसका जवाब देते। आपने कभी कोई कलिमा दबाकर या ज़बान मोड़कर नहीं कहा। किसी वक़्त जान बचाने की कोशिश नहीं की। जो बात कही सच कही और जिस बात का जवाब दिया ख़ुदा को हाज़िर नाज़िर जानकर वाक़िआत और हक़ीक़त के मुताबिक़ दिया। पूछा गया कि तुमने सरकान के मुक़ाबले हथियार उठाए, तुमने दंगईयों का साथ दिया। कभी हाकिम धमकाता कि हम तुझे पूरी सज़ा देंगे। आपने फ़रमाया, क्या मुज़ाएक़ा है? आख़िर छः माह बाद आपको जेल से रिहाई हुई।

समझाने का दिलचस्प अंदाज़

हज़रत गंगोही रह० हदीस पढ़ाते हुए तर्जुमा और माने आसान और आम फ़हम अल्फ़ाज़ में बयान फ़रमाते। तलबा के एतिराज़ पर ज़रा बेचैन न होते। एक दफ़ा एक तालिब इल्म क़िरात कर रहा था। "अतारह" का लफ़्ज़ आया। उसने समझ लिया कि यह अतर से मुश्तक है और इसके फ़लाँ माने हैं। बिला तकान आगे बढ़ता चला गया। एक पठान तालिब इल्म को समझ न आया। उसने क़ारी के कोहनी मारी और कहा ठहरो, हम नहीं समझा। अतारा के क्या माने हैं हम नहीं समझा। आपने फ़रमाया, इतर बेचने वाले की बीवी। क़ारी फिर पढ़ने लगा। पठान ने तीसरी दफ़ा कोहनी मारी और तेज़ नज़र से देखा और कहा, ठहरो हम नहीं समझा इसका माने। इस बार इमाम रब्बानी रह० ने ऊँची आवाज़ से फ़रमाया, "इतर बेचने वाले का जोरू।" अब पठान

ख़ुश हुआ। कहा, "हाँ अब समझा। हाँ भाई आगे चलो।" सवालात करने वालों से हज़रत कभी ख़फ़ा नहीं होते थे।

तलब हो तो ऐसी

हज़रत गंगोही रह० गुरबत और तंगदस्ती के दौर में हरमैन शरीफ़ैन की हाज़िरी के लिए बग़ैर पानी की मछली की तरह तड़पते रहे। आपकी माली हालत इस क़द्र कमज़ोर थी कि मुश्किल से घरवालों का गुज़र होता था। लेकिन सच्ची तलब हो तो अल्लाह तआला असबाब पैदा फ़रमा देते हैं।

डिप्टी अब्दुलहक़ रामपूरी का हज का इरादा हुआ। उन्होंने अपने घरवालों का एक बड़ा मजमा साथ ले जाना चाहा। हकीम ज़ियाउद्दीन साहब रामपूरी जो हज़रत हाफ़िज़ ज़ामिन साहब शहीद रह० के ख़लीफ़ा थे और डिप्टी साहब के अहबाब में से थे। डिप्टी साहब ने हकीम साहब को भी साथ में लिया। हकीम साहब हज़रत गंगोही रह० के आशिक़ों में से थे क्योंकि उनको इल्म था कि मेरे पीर व मुर्शिद ने हज़रत गंगोही रह० के ज़ानों पर जामे शहादत पिया था। हकीम साहब ने हज़रत गंगोही रह० का ज़िक्र किया तो डिप्टी साहब बिना मामूली झिझक के मान गए बल्कि इस पर ख़ुशी का इज़्हार किया कि यह तो हमारी ख़ुशक़िस्मती है कि हज़रत गंगोही रह० जैसा मुहिब्ब रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सुन्नत की इत्तिबा करने वाले हमारे क़ाफ़िले में शरीक हों। मौलवी अबुन्नसर जो हज़रत गंगोही रह० के मामूज़ाद भाई, बचपन के साथी और जानिसार रफ़ीक़ थे उनको जब मालूम हुआ कि हज़रत सफ़र पर जा रहे हैं तो वह अपना सब कुछ औने

पौने में बेचकर बीवी समेत साथ हो लिए। उन दिनों हज का सफ़र बहुत दुश्वार था। और हज के फ़रीज़े की अदाएगी सबसे ज़्यादा दुश्वार थी। ऐसा भी होता था कि दख़ानी किश्तियाँ तीन-तीन, चार-चार माह समुन्दर में हिचकोले खाती रहतीं। आपके बहरी सफ़र के दौरान सख़्त तूफ़ान आया। तमाम मुसाफ़िर घबरा गए। मगर आप निहायत पुरसकून और मुतमइन थे। लोगों की घबराहट पर उन्हें यह कहकर तसल्ली दी कि "भई! कोई मरेगा तो है नहीं। हम तो किसी के बुलाए हुए जा रहे हैं, खुद नहीं जा रहे हैं।" और जहाज़ जब असली हालत पर आया तो कप्तान ने घड़ी देखकर बताया। अल्लाह तआला ने इस तूफ़ान की वजह से आठ दिन की दूरी तीन दिन में तय करवा दी है, अल्लाहु अकबर।

चाय में बरकत

मौलवी शरीफ़ हुसैन मदरासी हज़रत रह० के शागिर्दों में से थे। हज़रत रहमतुल्लाहि अलैहि के देवबंद तशरीफ़ लाने पर वह एक बर्तन में उम्दा चाए बनाकर लाए। देखा तो बैठक लोगों से भरी हुई थी। सोचते रहे कि किसको दूँ और किसको न दूँ। आख़िर यह सोचकर कि ख़ास-ख़ास लोगों को पिला देता हूँ, देहलीज़ पर बैठ गए। हज़रत ने इर्शाद फ़रमाया, मौलवी शरीफ़ हुसैन! एक तरफ़ से पिलाना शुरू कर दो। वह परेशान तो हुए लेकिन तामील इर्शाद में दाहिने हाथ से तक़्सीम करना शुरू कर दी। तक़रीब 25 आदमी मजमे में मौजूद थे। सबने चाय पी ली तो बर्तन खोलकर देखा तो उसमें अभी चाय मौजूद थी और यह बर्तन सिर्फ़ छः पियाली का था।

धूप घड़ी मिलाने का वाक़िआ

हज़रत गंगोही रहमतुल्लाहि अलैहि का मामूल था कि रोज़ाना 12 बजे दोपहर को हुजरे की घड़ियाँ धूप घड़ी से मिलाते थे। एक दिन ऐसा हुआ कि लगातार अब्र रहा और धूप न निकली। जिस दिन धूप निकली तो इस तरह कि कभी धूप कभी बादल। हज़रत बारह बजे से कुछ पहले घर से तशरीफ़ लाए और मौलवी अली रज़ा से कहा कि जब बारह बजें तो मुझे ख़बर करना और खुद क़रीब ही एक जगह लेट गए। जब वह आए तो धूप थी लेकिन जिस वक़्त साया (12 बजे के) ख़त के क़रीब पहुँचने लगा तो अचानक एक बहुत बड़ा बादल सूरज पर छा गया। घबराकर अर्ज़ किया गया कि हज़रत धूप छिप गई। आप उठकर धूप घड़ी के पास आ गए। आपका आना था कि बादल बीच से फट गया और आपने घड़ी मिला ली।

शैख़ुल हिन्द हज़रत मौलाना महमूदुलहसन रहमतुल्लाहि अलैहि

हज़रत मौलाना शेख़ुलहिन्द महमूदुलहसन देवबंदी रह० 1268 हि० मुताबिक़ 1851 ई० को बरेली में पैदा हुए। आपके वालिद मौलाना ज़ुलफ़ुक्क़ार अली साहब एक बड़े आलिम थे। आपका शजरा नसब हज़रत उस्मान ग़नी रह० जाकर मिलता है।

आपने क़ुरआन पाक का कुछ हिस्सा और इब्तिदाई किताबें मौलाना अब्दुल लतीफ़ साहब से पढ़ीं। अभी आप क़दूरी तहज़ीब

पढ़ रहे थे कि 1283 हि० में मौलाना क़ासिम साहब नानौतवी रह० ने दारुलउलूम देवबंद क़ायम किया। आप इस मदरसे के पहले तालिब इल्म बने। 1286 हि० में आप कुतुब सहाहसित्ता की तक्मील से फ़ारिग़ हुए। हदीस में आपको मौलाना क़ासिम साहब नानौतवी रह० और मौलाना मुहम्मद याक़ूब साहब नानौतवी रह० के अलावा क़ुबतुल इर्शाद मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० और मौलाना अब्दुलग़नी साहब रह० से भी इजाज़त हासिल है। आपको फ़ारिग़ होने से पहले ही दारुलउलूम देवबंद का मुईन मुदर्रिस बना दिया गया। शुरू में आपके सुपुर्द इब्तिदाई तालीम का काम दिया गया लेकिन बहुत जल्द आपकी इल्मी क़ाबिलयत और ज़हानत ज़ाहिर होने लगी और धीरे-धीरे आप मुस्लिम शरीफ़ और बुख़ारी शरीफ़ की तदरीस तक जा पहुँचे। आपका पढ़ाने का ज़माना चवालीस साल से ज़्यादा है। इस अरसे में आलम में क़रीब व दूर आपके शार्गिद फैल गए जिनकी तादाद हज़ारों में है। आपके मुमताज़ शार्गिदों में मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह०, अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी रह०, अल्लामा शब्बीर अहमद उस्मानी रह०, मौलाना हुसैन अहमद मदनी रह०, मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह रह०, मौलाना असग़र हुसैन देवबंदी रह०, मौलाना उबैदुल्लाह सिंधी रह०, मौलाना एज़ाज़ अली रह०, मौलाना हबीबुर्रहमान उस्मानी रह० और मौलाना अब्दुस्समीअ जैसे मश्हूर आलिम व फ़ाज़िल शामिल हैं।

आप शुरू से ही नेक नीयत और नेक फ़ितरत थे। इसके साथ मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब नानौतवी रह० की मुहब्बत और सोहबत और मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० की तवज्जेहात ने आपको रूहानियत के अर्श पर बिठा दिया। शेख़ुल अरब व अजम

हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाहि अलैहि ने आपके कमालाते इल्मिया व रूहानिया से ख़ुश होकर दस्तारे ख़िलाफ़त और इजाज़तनामा इनायत फ़रमाया। दरबारे रशीदिया से भी आपको यह नेमत हासिल हुई। हासिल यह है कि आप इल्मे नबुव्वत, शरिअत, तरीक़त और रूहानियत के मजमअल बेहरैन यानी दरिया ही नहीं बल्कि दरियाओं का मजमूआ थे। आप अगरचे अक्सर तालीम व ताल्लुम और तसनीफ़ व तालीफ़ और किताबों के पढ़ने में मसरूफ़ रहते लेकिन अवराद व वज़ाइफ़, ज़िक्र व मुराक़बा और रात की नमाज़ पर भी हर हालत में यहाँ तक कि माल्टा की तूफ़ानी बर्फ़बारी में भी आपके मामूलात में फ़र्क़ न आता था।

अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ तहरीक आज़ादी के मिशन को आपने काफ़ी आगे तक बढ़ाया। आप जंगी बुनियादों पर मुसलमानों को मुनज़्ज़म करके अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ जंग करना चाहते थे। इस सिलसिले में आपने तहरीक रेशमी रूमाल शुरू की जिसका मर्कज़ आपने काबुल को बनाया। अपनों की साज़िशों और मुख़बरी से यह तहरीक कामयाब न हो सकी फिर भी इसने मुसलमानों में बेदारी की रूह फूंक दी। 1335 हि० में अंग्रेज़ों ने आपको गिरफ़्तार करके माल्टा पहुँचा दिया। 1338 हि० में वहाँ से रिहा होकर हिन्दुस्तान आए। उन दिनों तहरीके ख़िलाफ़त उरूज पर थी। बावजूद उम्र में ज़्यादती और बीमारी के आपने इस तहरीक में भरपूर हिस्सा लिया। लिहाज़ा बीमारी में इज़ाफ़ा हो गया। आपने 18, रबिउलअव्वल 1339 हि० को देवबंद में इंतिक़ाल फ़रमाया। अल्लाह आप पर रहमत नाज़िल फ़रमाए।

इल्म में पुख़्तगी

एक बार हज़रत मौलाना महमूदुहसन साहब रह० वादाबाद के जलसे में तशरीफ़ ले गए। लोगों ने वअज़ के लिए इसरार किया। हज़रत ने उज़्र किया कि मुझे आदत नहीं मगर लोगों ने न माना। आख़िर आप खड़े हो गए और हदीस ﴿فقيه واحد اشد على الشيطن من الف عابد﴾ पढ़ी और उसका तर्जुमा यह किया "एक आलिम शैतान पर हज़ार आबिद से भारी है।" वहाँ एक मशहूर आलिम थे। वह खड़े हुए और कहा यह तर्जुमा ग़लत है और जिसको सही तर्जुमा करना भी न आए तो उसको वअज़ कहना जाएज़ नहीं। बस मौलाना फ़ौरन बैठ गए और फ़रमाया कि मैं तो पहले ही कहता था कि मुझे वअज़ की लियाक़त नहीं है। आपने फ़रमाया, ख़ैर मेरे उज़्र की दलील हो गई यानी आपकी शहादत। मगर उन लोगों ने उज़्र न माला और वअज़ का इसरार किया। चुनाँचे आपने असरदार वअज़ फ़रमाया। फ़राग़त पर हज़रत ने उन साहब से इस्तिफ़ादे के तर्ज़ से पूछा, ग़ल्ती क्या है ताकि आइन्दा बचूँ। उन्होंने फ़रमाया, ﴿اشد﴾ का तर्जुमा अस्क़ल नहीं बल्कि 'अज़र' आता है। मौलाना रह० ने फ़रमाया फ़रमाया कि हदीस "वही" में है ﴿يأتيني مثل صلصلة الجرس وهو اشد على﴾ ("वही" मुझ पर मिस्ल घंटी की आवाज़ के नाज़िल होती है और वह मुझ पर भारी होती है।) क्या यहाँ भी अज़र के माने हैं? इस पर वह आलिम सकते में आ गए।

आक़बत का ख़ौफ़

हज़रत शेख़ुल हिन्द रह० जिस वक़्त मालटा में क़ैद थे। एक

रोज़ बैठ हुए रो रहे थे। साथियों ने पूछा, हज़रत! क्या घबरा गए हैं? ये लोग समझे कि घरबार याद आ रहा होगा या जान जाने का ख़ौफ़ होगा? लेकिन आपने उनको जवाब में फ़रमाया कि "मैं घरबार याद आने की वजह से नहीं रो रहा हूँ बल्कि इस वजह से रो रहा हूँ कि हम जो कुछ कर रहे हैं यह मक़्बूल भी है या नहीं।"

ईसाई पादरी से मुनाज़रा

हज़रत शेखुलहिन्द रह० ने इर्शाद फ़रमाया कि एक बार एक अंग्रेज़ ईसाई मुनाज़िर देवबंद आया। देवबंद आया। देवबंद स्टेशन के क़रीब एक बाग़ में क़याम हुआ। हज़रत शेख़ुलहिन्द रह० को इल्म हुआ तो आप मुनाज़रे के लिए तशरीफ़ ले गए। वह ईसाई मुनाज़िर कहने लगा कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम कलिमतुल्लाह थे। मौलाना ने खड़े होकर फ़रमाया, कलिमतुल्लाह किसे कहते हैं और इसकी कितनी क़िस्में है और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम कौन सी क़िस्म में दाख़िल थे। बस उसके होश व हवास उड़ गए। बार-बार यही कहता जाता था कि कलिमतुल्लाह थे। मौलाना ने फ़रमाया, कौनसा कलिमा? कलिमा तो बहुत सी क़िस्म का होता है। जब यह न बता सका और उसकी मेम साहब ने ख़ेमे में से देखा कि यह जवाब नहीं दे सकता तो पर्चा भेज दिया कि मुनाज़रा बंद कर दो। ये औरतों के ताबे होते हैं। मुनाज़रा छोड़कर चला गया। हज़रत ने मज़ाक़ के तौर पर फ़रमाया कि ये लोग मादियत (औरतों) में चलते है नरियात (मर्दों) में ख़ाक नहीं चलते।

दो अहम तरीन सबक़

हज़रत शेखुलहिन्द रह० माल्टा की क़ैद से वापस आने के बाद एक रात बाद नमाज़ इशा दारुलउलूम देवबंद तशरीफ़ फ़रमा थे। उलमा का बड़ा मजमा सामने था। उस वक़्त फ़रमाया कि "हमने तो माल्टा की ज़िंदगी में दो सबक़ सीखे हैं। यह अल्फ़ाज़ सुनकर सारा मजमा मुतवज्जेह हो गया कि इस दरवेश ने जो उलमा के उस्ताद हैं, अस्सी साल उलमा को दर्स देने के बाद आख़िर उम्र में जो सबक़ सीखें हैं वे क्या हैं? फ़रमाया, मैंने जहाँ तक जेल की तन्हाईयों में ग़ौर किया कि पूरी दुनिया में मुसलमान दीनी और दुनिया लिहाज़ से क्यों तबाह हो रहे हैं तो इसके दो सबब मालूम हुए :

1. उनका क़ुरआन मजीद को छोड़ देना,
2. आपस के इख़्तिलाफ़ात और ख़ाना जंगी।

इसलिए मैं वहाँ से यह अज़्म लेकर आया हूँ कि अपनी बाक़ी ज़िंदगी इसी काम में लगा दूँ कि क़ुरआन मजीद को लफ़्ज़ों और माइनों में आम किया जाए। बच्चों के लिए लफ़्ज़ी तालीम और बड़ों को उमूमी दर्से क़ुरआन की सूरत में माने से रूशनास कराया जाए और क़ुरआनी तालीमात पर अमल के लिए आमादा किया जाए और मुसलमानों के आपसी जंग व जदाल को हर्गिज़ बर्दाश्त न किया जाए।" क़ुरआन पर अमल हो तो आपसी लड़ाई की नौबत नहीं आ सकती।

महबूब चीज़ की क़ुर्बानी

हज़रत अक़्दस थानवी रह० ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला के

नाम पर जहाँ तक हो सके उम्दा जानवर ज़िब्ह करो, जिसको ज़िब्ह करके कुछ तो दिल दुखे। जैसा कि अपनी जान को पेश करते या बेटे को ज़िब्ह करते तो दिल दुखता। अब तो वैसा कहाँ दुखेगा। लेकिन कुछ तो माल ऐसा हो कि जिसको ज़िब्ह करके दिल पर कुछ चोट लगे। हक़ तआला फ़रमाते हैं कि ﴿لَن تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّىٰ تُنفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ﴾ कामिल नेकी उस वक़्त हासिल नहीं होगी जब तक महबूब अशिया (चीज़ों) को ख़र्च न करो।

महबूब चीज़ को ख़र्च करने की ऐसी सूरत होती है जैसे शेखुलहिन्द रह० ने एक बार क़ुर्बानी की थी। आपने क़ुर्बानी से कई महीने पहले एक गाय ख़रीदी। उसको ख़ूब खिलाया पिलाया और अस्र के बाद जंगल में अपने साथ ले जाकर दौड़ाया करते थे। क़ुर्बानी तक वह गाय इतनी तैयार हो गई कि सस्ते ज़माने में भी क़साई उसकी क़ीमत अस्सी रुपए दे रहे थे। मगर मौलाना ने किसी को न दी और क़ुर्बानी करके ज़िब्ह किया। जब ज़िब्ह हुई तो मौलाना के दिल पर असर हुआ और आँखों से आँसू आ गए। कुछ अरसे साथ रहने की वजह से और परवरिश करने की वजह से उसके साथ आपको मुहब्बत हो गई थी। चुनाँचे आपने महबूब चीज़ की क़ुर्बानी देकर नेकी का आला दर्जा हासिल किया।

इत्तिबाए सुन्नत

हज़रत शेखुलहिन्द रह० का मामूल था कि वितरों के बाद बैठकर दो रकअत पढ़ते थे। किसी शागिर्द ने अर्ज़ किया, हज़रत! बैठकर नफ़्लों का सवाब तो आधा है। हज़रत ने फ़रमाया, हाँ भाई यह तो मुझे मालूम है मगर बैठकर नमाज़ पढ़ना हुज़ूर से साबित

है इसलिए सुन्नत अमल को अपनाया है।

हज़रत शेख़ुलहिन्द रह० का मामूल रमज़ानुल मुबारक में तरावीह के बाद सुबह तक क़ुरआन पाक सुनने का था। हाफ़िज़ बदलते रहते और हज़रत आख़िर तक खड़े होकर नमाज़ पढ़ते थे जिसकी वजह से कभी-कभी पाँव पर वरम भी आ जाता था। तो इस पर ख़ुश होते कि ﴿حتی یتورمت قدماہ﴾ की सुन्नत की मुवाफ़िक़त नसीब हो गई।

मामूलात की पाबन्दी

ज़माना नज़रबंदी में हज़रत अक्सर तवज्जेह इलल्लाह में ख़ामोश रहते या तस्बीह और ज़िक्र वग़ैरह में मशग़ूल रहते। ईशा के बाद थोड़ी देर अपने वज़ाइफ़ पढ़ते फिर आराम फ़रमाते और दो बजे के क़रीब सख़्त सर्दी में उठकर ठंडे पानी से वुज़ू करके नमाज़ तहज्जुद में मसरूफ़ हो जाते। नमाज़ तहज्जुद के बाद अपनी चारपाई पर बैठकर सुबह सादिक़ तक मुराक़बा और ज़िक्रे ख़फ़ी में मशग़ूल रहते जबकि माल्टा की सर्दी मशहूर व मारूफ़ है।

दुनियादारों से बेरग़बती

हज़रत शेख़ुलहिन्द रह० के बारे में हज़रत अक़्दस थानवी रह० ने इर्शाद फ़रमाया है कि हज़रत मौलाना महमूदुलहसन साहब रह० में और कमालात के अलावा एक अजीब बात यह थी अमीरों से ज़र्रा बराबर दिलचस्पी न थी। जब तक कोई अमीर पास बैठा रहता उस वक़्त तक हज़रत के दिल पर उलझन रहती। नवाब यूसुफ़ अली ख़ाँ साहब को मैं बाज़ बुज़ुर्गों की तरफ़ ज़्यादा मुतवज्जेह

करता था। मगर उनको हज़रत मौलाना महमूद हसन साहब रह० की तरफ़ ज़्यादा झुकाव था। मैंने एक रोज़ नवाब साहब से पूछा कि मैं आपको और बुज़ुर्गों की तरफ़ मुतवज्जेह करता हूँ और आप हज़रत शेख़ुलहिन्द रह० की तरफ़ हो गए हैं, इसकी क्या ख़ास वजह है? कहने लगे कि जिस जगह मैं जाता हूँ तो वे मेरे जाने से खुश होते हैं और बहुत ज़्यादा ख़ातिर तवाज़ो करते हैं लेकिन जब शेख़ुल हिन्द रह० के पास जाता हूँ तो मौलाना मुझसे तबअन नफ़रत करते हैं जैसे किसी को गंदगी से बू आती हो। मैं इससे यह समझता हूँ कि वहाँ दीन है और ख़ालिस दीन है, दुनिया बिल्कुल नहीं है। इसलिए मैं उनका मौतक़िद हूँ।

तवाज़ों और इन्किसारी

मौलाना मुफ़्ती महमूद साहब रह० ने मौलाना क़ारी मुहम्मद तैय्यब साहब रह० मोहतमिम दारुलउलूम देवबंद के वास्ते से एक वाक़िआ सुनाया कि जब हज़रत शेख़ुलहिन्द रह० हज के सफ़र के लिए तशरीफ़ ले जा रहे थे और वहाँ से गिरफ़्तार होकर माल्टा गए तो उस वक़्त की बात है कि हमारे मकान पर तशरीफ़ लाए। दादी साहिबा रह० (अहलिया मोहतरमा हज़रत मौलाना क़ासिम साहब नानौतवी रहमतुल्लाहि अलैहि) की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि अम्मा जी मैंने आपकी कोई ख़िदमत नहीं की। बहुत शर्मिन्दा हूँ, अब सफ़र पर जा रहा हूँ। ज़रा हज़रत नानौतवी रह० का जूता दे दीजिए। उन्होंने पर्दे के पीछे से जूता आगे बढ़ा दिया। हज़रत शेख़ुलहिन्द रह० ने उसको लेकर अपने सर पर रखा और रोते रहे और कहते रहे या अल्लाह मेरी कोताहियों को माफ़ फ़रमा दीजिए।

मुहब्बते शेख़

हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रहमतुल्लाहि अलैहि पान नहीं खाया करते थे लेकिन उगालदान उनके पास रहता था। कभी कभार खांसी वग़ैरह की वजह से बलग़म उसमें डालते थे जो सूख भी जाता था। हज़रत शेख़ुलहिन्द रह० ने एक बार उस उगालदान को बहुत चुपके से कि कोई न देखे उठाया और बाहर ले जाकर उसको धोकर पी लिया। हज़रत शेख़ुलहिन्द रह० को अपने शेख़ से वह आशिक़ाना और वालिहाना ताल्लुक़ था जिसको बातिन की तरक़्क़ी में हज़ार अज़्कार व रियाज़तों से ज़्यादा दख़ल था। इस सिलसिले में आपकी कैफ़ियत यह थी—

इंबिसात ईद दीदन रूए तू
ईदगाह मा ग़रीबाँ कोए तू

अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी रहमतुल्लाहि अलैहि

इमामुल असर अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी रह० 27 शव्वाल 1292 हि० को सुबह के वक़्त अपने इलाक़ा लौलाब, कश्मीर में पैदा हुए। आपके वालिद मौलाना मौज़्ज़म शाह रह० बड़े आलिम रब्बानी, ज़ाहिद व आबिद और कश्मीर के मशहूर ख़ानदानी पीर व मुर्शिद थे। आपका सिलसिला नसब हज़रत इमामे आज़म इमाम अबूहनीफ़ा रह० के ख़ानदान से जाकर मिलता है। आपने चार पाँच साल की उम्र में अपने वालिद माजिद से क़ुरआन पाक पढ़ना

शुरू किया और छः बरस की उम्र तक क़ुरआन पाक के अलावा बहुत से फ़ारसी के रिसाले भी ख़त्म कर लिए। फिर मौलाना ग़ुलाम मुहम्मद साहब रह० से फ़ारसी व अरबी की तालीम हासिल की। आप बचपन में ही बेहद ज़हीन और समझदार थे। तीन साल तक आप हज़ारा व सरहद के बहुत से उलमा सुल्हा की ख़िदमत में रहकर अरबी उलूम की तक्मील फ़रमाते रहे। जब इल्म व फ़न की प्यास वहाँ बुझती नज़र न आई तो हिन्दुस्तान के मर्कज़े इल्म दारुलउलूम देवबंद की शोहरत सुनकर 1307 हि० में हज़ारा से देवबंद तश्रीफ़ ले आए। चार साल वहाँ रहकर आपने वहाँ के मश्हूर उलमाए किराम से इल्मी, अमली और बातिनी फ़ैज हासिल किया। आपके उस्तादों में शेख़ुल हिन्द रह०, हज़रत मौलाना ख़लील अहमद साहब सहारनपुरी रह०, मौलाना इस्हाक़ अमृतसरी मुहाजिर मदनी रह० और मौलाना ग़ुलाम रसूल हज़ारवी रह० जैसी हस्तियाँ शामिल हैं। देवबंद से फ़ारिग़ होने के बाद क़ुतबुल इर्शाद हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० की ख़िदमत में पहुँचे। वहाँ से सनद हदीस हासिल करने के साथ बातिन फ़ैज़ हासिल किए। फिर तीन चार साल मदरसा अमीनिया देहली में मुदर्रिस अव्वल रहे। उसके बाद कश्मीर वापस तश्रीफ़ ले गए। वहाँ भी तदरीसी ख़िदमत अंजाम देते रहे। 1323 हि० ने आपने कश्मीर के मशहूर उलमा के साथ हज का सफ़र किया। हज के सफ़र में तराबलस, बसरा और मिस्र व शाम के बड़े उलमा ने आपकी बड़ी इज़्ज़त की और सबने आपकी ख़ुदादाद लियाक़त और इस्तेदाद देखकर सनदे हदीस अता कीं। तीन साल कश्मीर में रहने के बाद आप दारुलउलूम देवबंद तश्रीफ़ लाए और वहाँ मुदर्रिस मुक़र्रर हुए।

सालों वहाँ तदरीसी ख़िदमत अंजाम देते रहे। इस दौरान आपने वहाँ उस्तादों और मुदर्रिसीन के साथ अजीब इल्मी और तहक़ीक़ी माहौल क़ायम किया। शेख़ुलहिन्द मौलाना महमूद हसन साहब रह० के हिजाज़ मुक़द्दस तशरीफ़ ले जाने के बाद वहाँ सदर मुदर्रिस मुक़र्रर हुए। 1345 हि० तक आप दारुलउलूम देवबंद के सदर मुदर्रिस की हैसियत से दर्स हदीस देते रहे। उसके बाद जामिया इस्लामिया ढाभेल तशरीफ़ ले गए। 1351 हि० तक वहीं दर्से हदीस देते रहे। 2, सफ़र 1352 हि० की आख़िरी शब साठ साल की उम्र में आपने देवबंद में दाईए अजल को लब्बैक कहा।

इल्मी इस्तिफ़ादा

एक बार हज़रत मौलाना अनवर शाह मुहद्दिस कश्मीरी रह०, अंजुमन ख़ुद्दामुद्दीन के किसी सालाना इज्तिमा में शिरकत की ग़र्ज़ से लाहौर तशरीफ़ लाए तो डा० अल्लामा इक़बाल साहब ख़ुद मुलाक़ात के लिए हज़रत मौसूफ़ की क़यामगाह पर आए और उन्हें अपने हाँ खाने पर दावत दी। दावत का सिर्फ़ बहाना था वरना असल मक़सद इल्मी इस्तिफ़ादा करना था। डा० अल्लामा इक़बाल की यह आदत थी कि जब वह किसी इस्लामी मसअले पर किसी बड़े आलिम से बातचीत करते थे तो बिल्कुल तालिब इल्मों के अंदाज़ से करते थे। मसअले के एक पहलू को सामने लाते और उस पर अपने शक व शुब्हात को बेझिझक बयान करते थे। चुनाँचे खाने से फ़राग़त पाकर आपने ऐसा ही किया। हज़रत शाह साहब ने डा० साहब के शक व शुब्हात और एतिराज़ात को बड़े सब्र व सकून के साथ सुना और उसके बाद एक ऐसी जामेअ

और मुदल्लल तक़रीर की कि डा० साहब को उन दो मसअलों पर कुल्ली इत्मिनान नसीब हो गया और कुछ भी कसक उनके दिल में बाक़ी न रही। उसके बाद उन्होंने ख़त्मे नबुव्वत पर लैक्चर तैयार किया जो उनके छः लैक्चरों के मजमूए में शामिल है और क़ादियानी तहरीक पर वह हंगामा भरा मक़ाला लिखा जिसने अंग्रेज़ी अख़बारों में छपकर पंजाब की फ़िज़ा में तूफ़ान खड़ा कर दिया था।

बेमिसाल हाफ़ज़ा

हज़रत मौलाना कश्मीरी रह० को क़ुदरत ने बेमिसाल हाफ़ज़ा अता फ़रमाया था। किसी फ़न की किसी किताब को शुरू से आख़िर तक मुताला कर लेते और जब कभी सालों बाद उसके बारे में कोई बात छिड़ती तो उस किताब में दर्ज चीज़ों को इस तरह हवालों के साथ बयान फ़रमा देते कि सुनने वाले सन्न और हैरान रह जाते। एक किताब के अगर पाँच-पाँच या दस-दस हाशिए भी होते तो वे आपको याद होते थे। सही किताबों के हवाले जिल्द व सफ़हात समेत आपको एक ही दफ़ा के मुताले से ज़हन में बैठ जाते थे और जिस वक़्त कोई इल्मी मसअले पर तक़रीर फ़रमाते थे तो बेशुमार किताबों के हवाले बेतकल्लुफ़ देते थे। आपकी क़ुव्वत हाफ़ज़ा उन मुन्किरीने हदीस के लिए गोया ज़िंदा जावेद सबूत था जो मुहद्दिसीन के हाफ़ज़े पर एतिमाद न करते हुए ज़ख़ीरा हदीस को शक की नज़रों से देखते हैं। शेख़ुल इस्लाम हज़रत मदनी रह० ने फ़रमाया कि मुझसे हज़रत शाह साहब रह० फ़रमाते थे "मैं जब किसी किताब का सरसरी नज़र से मुताला

करता हूँ और उसके मुबाहिस को महफ़ूज़ करने का इरादा भी नहीं होता तब भी पंद्रह साल तक उसके मज़ामीन महफ़ूज़ हो जाते हैं।

मसअले का फ़ौरी हल

कश्मीर में एक दफ़ा उलमा के दर्मियान इख़्तिलाफ़ हुआ और एक जवाब दूसरे से मुख़्तलिफ़ रहा। इसी दौरान हज़रत शाह साहब रह० भी कश्मीर तशरीफ़ लाए। फ़रीक़ैन हज़रत शाह साहब रह० से मुलाक़ात करने के लिए हाज़िर हुए और दोनों ने इख़्तिलाफ़ी मसअले को आपके सामने पेश किया। हज़रत शाह साहब रह० ने हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० से फ़रमाया कि मैंने फ़लाँ फ़तवे के "मख़्तूते" का दारुलउलूम के कुतुबख़ाने में मुताला किया है। उसमें यह इबारत हर्गिज़ मौजूद नहीं। ये लोग तहरीरी ग़लती कर रहे हैं या गड़बड़ी। इस पर हाज़िरी हैरान हुए दलील करने वाले हैरत में रह गए।

हाफ़ज़े की दुआ

कई बुज़ुर्गों से सुना कि हज़रत शाह साहब रह० बाज़ दफ़ा फ़रमाया करते थे कि एक आदमी काबातुल्लाह के ग़िलाफ़ को पकड़कर दुआ कर रहा था कि ख़ुदावंद तआला! मुझे इब्ने हजर रह० का हाफ़ज़ा अता फ़रमा। उसकी दुआ क़ुबूल की गई। हज़रत मौलाना अब्दुल्लाह साहब शेख़ुल हदीस जामिया रशीदिया सेहवाल ने फ़रमाया कि यह आदमी ख़ुद शाह साहब रह० थे। यह बात बतौर ख़ुदा की नेमत की शुक्रगुज़ारी के तौर पर उनकी ज़बान पर आ जाती थी। मगर अपने नाम को छुपा जाते थे। हज़रत मौलाना

हबीबुर्रहमान मोहतमिम दारुलउलूम देवबंद हमेशा हज़रत शाह साहब रह० को चलता फिरता कुतुबख़ाना फ़रमाया करते थे। हज़रत मौलाना मियाँ असग़र हुसैन साहब रह० फ़रमाया करते थे कि मुझे जब फ़िक़ह के मसअले में कोई दुश्वारी पेश आती तो कुतबुख़ाना दारुलउलूम की तरफ़ रुजू करता हूँ अगर कोई चीज़ मिल गई तो ठीक है वरना फिर हज़रत से रुजू करता हूँ। शाह साहब रह० जो जवाब देते हैं उसे आख़िरी और तहक़ीक़ी पाता हूँ और अगर हज़रत शाह साहब ने कभी यह फ़रमाया कि मैंने किताबों में यह मसअला नहीं देखा तो मुझे यक़ीन होता है कि अब यह मसअला कहीं नहीं मिलेगा और तहक़ीक़ के बाद ऐसा ही साबित होता।

इल्म की क़ब्र

मौलाना इदरीस साहब कांधलवी रह० फ़रमाते थे कि हज़रत शाह साहब रह० के हाफ़ज़े का यह आलम था कि जो एक बार देख लिया, एक बार सुन लिया वह ज़ाए होने से महफ़ूज़ और मामून हो गया। गोया अपने ज़माने के ज़हरी रह० थे। इमाम ज़हरी रह० जब मदीना मुनव्वरा के बाज़ार से गुज़रते तो कानों में उंगलियाँ दे लेते। किसी ने पूछा कि यह आप क्या करते हैं? फ़रमाया कि मेरे कानों में जो दाख़िल हो जाता है, वह निकलता नहीं। इसलिए बाज़ार से गुज़रते वक़्त कानों में उंगलियाँ दे लेता हूँ ताकि बाज़ार की खुराफ़ात मेरे कानों में दाख़िल न हो सकें। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद एक दफ़ा देवबंद के क़ब्रिस्तान में फिर रहे थे। फ़रमाया कि मैं इल्म की क़ब्र के पास फिर रहा हूँ। यह क़ब्र हज़रत शाह साहब रह० की थी। मुताले के सिलसिले में

मौजूदा ज़माने के फ़न, फ़लसफ़ा जदीद, हैय्यत जदीद यहाँ तक कि तारों के फ़न और जफ़र की किताबों को भी बग़ैर पढ़े न छोड़ा।

इल्म का अदब

हज़रत के अदब का यह आलम था कि खुद ही फ़रमाया कि मैं किताब को मुताले के वक़्त अपने ताबे नहीं करता बल्कि हमेशा खुद किताब के ताबे होकर मुताला करता हूँ। मतलब यह कि अगर किसी किताब पर हाशिया टेढ़ा या तिरछा होता तो बजाए इसके कि किताब को हाशिए के मुताबिक़ फेर लें, किताब को बग़ैर हिलाए आप उस तरफ़ घूम जाते थे जैसे परवाना शमा के चारों तरफ़ घूम रहा हो। चुनाँचे कभी नहीं देखा गया कि लेटकर मुताला करते हों या किताब पर कोहनी टेकर मुताले में मशग़ूल हों बल्कि किताब को सामने रखकर अदब के साथ बैठते गोया किसी शेख़ के सामने बैठे हुए इस्तिफ़ादा कर रहे हों। गोया मश्हूर मक़ूले के मुताबिक़ कि "इल्म अपना बाज़ भी किसी को नहीं देता जब तक अपना कुल उसके हवाले न किया जाए।" एक दफ़ा फ़रमाया कि "मैंने होश संभालने के बाद से अब तक दीनियात की किसी किताब का मुताला बेवुज़ू नहीं किया, सुब्हानअल्लाह।

एक पीर की तवज्जोह का वाक़िआ

अपने बारे में हज़रत ने एक वाक़िआ सुनाते हुए फ़रमाया कि एक दफ़ा कश्मीर से चला। रास्ते में काफ़ी दूरी घोड़े पर सवार होकर तय करना पड़ती थी। रास्ते में एक साहब का साथ हो

गया। यह पंजाब के मशहूर पीर के मुरीद थे। यह मुझसे अपने पीर के कमालात व करामात का तज़्किरा करते रहे। उनकी ख़्वाहिश और तर्ग़ीब यह थी कि मैं भी उन पीर साहब की ख़िदमत में हाज़िर हूँ और इत्तिफ़ाक़ से वह मुक़ाम मेरे रास्ते में ही पड़ता था। मैंने भी इरादा कर लिया। जब हम दोनों पीर साहब की ख़ानक़ाह पर पहुँचे तो उन साहब ने कहा कि नए आदमियों को अंदर हाज़िर होने के लिए इजाज़त की ज़रूरत होती है। चुनाँचे वह अंदर तशरीफ़ ले गए और उन बुज़ुर्ग ने इत्तिला पाकर ख़ुद अपने बेटे को मुझे लेने के लिए भेजा और इकराम से पेश आए। ख़ुद एक तख़्त पर बैठे हुए थे। बाक़ी सब मुरिदीन व तालिबीन नीचे फ़र्श पर थे। मगर मुझे इसरार से अपने साथ तख़्त पर बिठाया, कुछ बातें हुई। उसके बाद अपने मुरीदों की तरफ़ मुतवज्जेह हुए और अपने तरीक़े पर उन पर तवज्जेह डालनी शुरू की। और उसके असर से वे बेहोश हो-हो कर लोटने लगे और तड़पने लगे। मैं यह सब देखता रहा। फिर मैंने जी में कहा, मेरा जी चाहता है कि अगर मुझ पर भी यह हालत तारी हो सके तो मुझ पर भी तवज्जोह फ़रमाएं। उन्होंने तवज्जोह देना शुरू की। और मैं अल्लाह तआला के एक इस्मे पाक का मुराक़बा करके बैठ गया। बेचारों ने बहुत ज़ोर लगाया और बहुत मेहनत की लेकिन मुझ पर कुछ असर नहीं हुआ। कुछ देर बाद उन्होंने ख़ुद ही फ़रमाया कि आप पर असर नहीं पड़ सकता।

चेहरे पर अनवारात

हज़रत मौलाना मुहम्मद नूरी रह० फ़रमाते थे कि हज़रत

कश्मीरी रह० बहावलपुर शहर में जामा मस्जिद व दूसरी जगहों पर क़ादयानियत के ख़िलाफ़ तक़रीर करने के लिए उलमा को भेजते रहते थे। दो दफ़ा अहक़र को भी भेजा। उन दिनों में इस क़द्र हज़रत कश्मीरी रह० के चेहरे मुबारक पर अनवार की बारिश होती रहती थी। हर आदमी इसको महसूस करता था। अहक़र ने बार-बार देखा कि अंधेरे कमरे में मुराक़बा फ़रमा रहे हैं लेकिन रोशनी ऐसी जैसे बिजली के क़ुमक़ुमे रोशन हों हालाँकि उस वक्त बिजली गली में होती थी।

तन्हाई में मुलाक़ात से इंकार

एक बार हैदराबाद के मौलवी नवाब फ़ैज़ुद्दीन एडवोकेट ने हज़रत शाह साहब को अपनी लड़की की शादी में बुलाया। क्योंकि नवाब साहब और उनके ख़ानदान के उलमाए देवबंद के साथ पुराने राब्ते और दिली ताल्लुक़ात थे। इसलिए दौराने क़याम कुछ लोगों ने चाहा कि हज़रत शाह साहब रह० और निज़ाम की मुलाक़ात हो जाए। हज़रत रह० को इसकी इत्तिला हुई तो फ़रमाया, “मुझको मिलने में उज़्र नहीं लेकिन इस सफ़र में नहीं मिलूंगा क्योंकि इस सफ़र का मक़सद नवाब साहब की बच्ची की तक़रीब में शिरकत था और मैं इसको ख़ालिस ही रखना चाहता हूँ। हर चंद लोगों ने कोशिश की और इधर निज़ाम साहब का भी इरादा था मगर शाह साहब रज़ामंद न हुए। इसी क़यामे हैदराबाद के ज़माने में एक रोज़ सर अकबर हैदराबादी का फ़ोन आया (जो बाद में आसाम के गर्वनर बने) कि मैं मौलाना अनवर शाह साहब से मिलना चाहता हूँ। फ़रमाया, “उन्हें कह दें कि मैं यहीं हूँ, आ

जाएं।" हैदरी साहब को पैग़ाम पहुँचाया गया तो उन्होंने कहा बहुत अच्छा मैं हाज़िर होता हूँ। मगर मेरे आने पर हाज़िरीन मज्लिस को उठा दिया जाए, मैं तन्हाई में मुलाक़ात करना चाहता हूँ। हज़रत को पैग़ाम दिया गया तो फ़रमाया, नामुमकिन है कि मैं हैदरी साहब से बातें करने के लिए हाज़िरीने मज्लिस को छोड़कर अलग जा बैठूँ या उन लोगों से मैं कहूँ कि चले जाएं।

मज़बूती और संजीदगी का वाक़िआ

"अल्लाह के शेरों को आती है नहीं रोबाही" के मिस्दाक़ हज़रत शाह साहब रह० ऐलान हक़ करने के लिए और 'क़ज़ियाए ज़मीन बरसरे ज़मीन' की ख़ातिर कई दफ़ा क़ादियान तशरीफ़ ले गए और वहाँ पब्लिक जलसा करके ऐलाए कलिमा हक़ का फ़रीज़ा अंजाम देते रहे। मिर्ज़ाईयों ने हुक्काम से मिलकर बहुत कोशिशें की कि इन जलसों पर पाबन्दी लगाई जाए मगर आप जलसे में जिस मज़बूती और संजीदगी के साथ जलवागर होते थे, इसकी वजह से पाबन्दी का कोई जवाज़ नहीं था। जब क़ादियानी जलसा बंद कराने में कामयाब न हो सके तो फिर जलसे से पहले हज़रत शाह साहब को धमकी भरे ख़त लिखा करते कि अगर तुम यहाँ आए तो क़त्ल कर दिए जाओगे और वापस न जा सकेगे। यह सिर्फ़ धमकी ही न होती थी बल्कि कई दफ़ा अमलन कोशिश की गई मगर—

नूरे ख़ुदा है कुफ़्र की हरकत पे ख़ंदाज़न
फूँकों से यह चिराग़ बुझाया न जाएगा

मुनव्वर सूरत

मौलाना मुहम्मद अनवरी फ़ैसलाबादी रह० अपनी तालीफ़ ''कमाले अनवरी'' में लिखते हैं कि एक बार सुबह का उजाला फैलने से पहले आप वज़ीराबाद के स्टेशन पर गाड़ी के इंतिज़ार में तशरीफ़ रखते थे। शागिर्द और मौतक़िद लोगों की भीड़ इर्द-गिर्द जमा थी। वज़ीराबाद का स्टेशन मास्टर हाथ में लैंप लिए हुए उधर से गुज़रा। हज़रत कश्मीरी रह० पर नज़र पड़ी तो रुक गया और ग़ौर से देखता रहा। फिर बोला कि जिस मज़हब का यह आलिम है वह मज़हब झूठा नहीं हो सकता। हज़रत कश्मीरी रह० के हाथ पर कुफ़्र से तोबा की और ईमान की दौलत से सरफ़राज़ हुआ। इसी तरह का एक और वाक़िआ पंजाब में ही पेश आया कि आपकी मुनव्वर सूरत देखकर एक ग़ैर-मुस्लिम को ईमान की दौलत नसीब हुई, सुब्हानअल्लाह।

चेहरे से इस्लाम की दावत

मौलाना मुहम्मद अली मुंगेरी रह० की दावत पर एक बार हज़रत कश्मीरी रह० क़ादयानियत की तरदीद के लिए मूंगा तशरीफ़ ले गए तो चंद रोज़ इज्तिमा में आपके मुसलसल बयानात हुए तो इलाक़े का एक बड़ा हिन्दू साधू पाबन्दी से इन इज्तिमाअत में शिरकत करता। आख़िरी दिन उसकी ज़बान पर ये कलिमात बेअख़्तियार जारी थे कि ये शख़्स अपने चेहरे से इस्लाम की दावत देता है।

दारुलउलूम के सदर मुदर्रिस मौलाना मुहम्मद इब्राहीम रह० बलबादी कहते थे कि एक बार जुमा के रोज़ सर्दी के ज़माने में

हज़रत शाह साहब रह० सब्ज़ पोशाक में दारुलउलूम से जामा मस्जिद के लिए रवाना हुए। मेरी नज़रें आप पर पड़ीं तो अपने बारे में खुद अंदेशा हुआ कि शाह साहब को नज़र न लग जाए।

"हयाते नूर" में मौलाना मंज़ूर साहब नौमानी रह० ने लिखा है कि मैं और मेरे साथी तलबा की एक बड़ी तादाद दर्स हदीस में हज़रत कश्मीरी रह० से इल्मी इस्तिफ़ादे के साथ-साथ उनके हुस्न व जमाल से भी आँखें ठंडी करते।

मुज़फ़्फ़रनगर के मशहूर तबीब हकीम फ़तेह मुहम्मद साहब जो इलाक़े के एक निहायत तजरिबेकार हकीम और ख़ानदानी रईस थे, उनका बयान था कि मैं भरपूर शबाब में जब कि मेरा जमाल व रौनक़ उरुज पर थी दिल्ली तिब्ब पढ़ने गया। हकीम अजमल साहब के वालिद से कुछ किताबें पढ़ने का प्रोग्राम था। मुलाक़ात हुई तो हकीम साहब ने अरबी में मेरी क़ाबलियत और इस्तेदाद के बारे में कुछ सवालात किए। हैय्यत में कुछ और किताबें पढ़ने के लिए हुक्म फ़रमाया और यह भी फ़रमाया कि मौलाना नज़ीर अहमद साहब मुहद्दिस देहलवी साहब से पढ़ूँ। मैं मुहद्दिस देहलवी की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो मौसूफ़ ने अपनी उम्र के ज़्यादा होने का उज़्र करते हुए बतलाया कि देहली में आए एक नए आलिम अनवरशाह कश्मीरी रह० सुनहरी मस्जिद में पढ़ाते हैं। यहाँ इन किताबों का दर्स सिर्फ़ वही दे सकेंगे। मैं सुनहरी मस्जिद शाह साहब की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपने मेरी दरख़्वास्त पर कुछ वक़्त इनायत फ़रमाया। सबक़ के लिए हाज़िर होता तो आप नीची नज़रें किए हुए पढ़ाते। दो तीन साल में मेरी यह तमन्ना पूरी न हो सकी कि हज़रत शाह साहब नज़र उठाकर

मुझे देखें। मर्ज़ुल वफ़ात में मौलाना मुफ़्ती अतीक़ुर्रहमान साहब हज़रत शाह साहब की नब्ज़ दिखाने के लिए देवबंद ले गए। मैं इस तसव्वुर के साथ हाज़िर हुआ कि चालीस साल से ज़्यादा का अरसा गुज़र गया और दौराने तालीम आपने मुझे कभी आँख उठाकर नहीं देखा था, अब पहचानने का क्या सवाल? लेकिन मेरी हैरत की इंतिहा न रही कि हाज़िरी पर आपने मेरा नाम, सकूनत और देहली में पढ़ने की तफ़्सीलात सुनायीं। हैरतज़दा होकर मैंने अर्ज़ किया कि हज़रत! आपने मुझे पहचाना कैसे? फ़रमाया कि आवाज़ से आपको पहचान लिया। हज़रत कश्मीरी रह० का तक़्वा इस क़द्र था कि अमारिद (बेदाढ़ी मूछ के बच्चों) से भी नज़रों की हिफ़ाज़त फ़रमाते थे।

निगाहों की पाकीज़गी

मशहूर आरिफ़ बिल्लाह हज़रत मौलाना शाह अब्दुल क़ादिर रायपुरी रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत कश्मीरी रह० महीनों मस्जिद से बाहर नहीं निकलते थे। और कभी ज़रूरत के लिए बाहर निकलना होता तो चेहरे पर रुमाल इस तरह डाल लेते कि सिवाए रास्ते के आसपास के कोई चीज़ नज़र न आती। यह एहतिमाम इसलिए था कि ग़ैर-महरम औरतों पर नज़र न पड़ जाए।

इत्तिफ़ाक़ से एक रोज़ मोहतमिम साहब की वालिदा हमारे घर तशरीफ़ रखती थीं। मरहूम तशरीफ़ लाए और ज़नाना मकान में आने की इजाज़त चाही। वालिदा भूल गयीं और अजनबी औरत की मौजूदगी का ख़्याल दिल से निकल गया। अंदर आने की इजाज़त दे दी। हज़रत ने ज़नाना मकान में क़दम रखा तो एक

अजनबिया पर नज़र पड़ने के साथ ही इस्तिग़फ़ार पढ़ते हुए उल्टे पाँव बाहर लौट गए। इस इत्तिफ़ाक़ी हादसे की जो तकलीफ़ आपको हुई वह एक मुद्दत तक अहलिया मोहतरमा से नाराज़गी की शक्ल अख़्तियार कर गई बल्कि अपने सबक़ में तलबा के सामने ग़मगीन लहजे में फ़रमाया कि भाई! बालिग़ होने के बाद कल बिला इरादा मौलाना तैय्यब साहब साहब की वालिदा पर नज़र पड़ गई जिसकी तकलीफ़ रूह के छिलने की तरह महसूस कर रहा हूँ।

हराम कमाई से हिफ़ाज़त

आपके नामवर शागिर्द मौलाना बदरे आलम मेरठी सुम्मा मुहाजिर मदनी रह० फ़रमाते हैं कि एक बार आप देवबंद से सफ़र फ़रमा रहे थे और रफ़ीक़े सफ़र की हैसियत से मैं आपके साथ था। रेल के जिस डिब्बे में सवार हुए उस में ख़ूबसूरत औरतें थीं। हज़रत शाह साहब रह० जब गाड़ी में तशरीफ़ रखते तो अपने मुनव्वर चेहरे की वजह से मर्कज़े निगाह बन जाते। ये औरतें बराबर आपको तकती रहीं और आप आदत के मुताबिक़ किताब में डूबे रहे। दोनों औरतों के साथ एक बड़ा पानदान था। उन्होंने पान लगाया और तश्तरी में लगाकर मुझे दिया कि इन बुज़ुर्गों को पेश करूं। दोनों का इसरार इतना बढ़ा कि उनसे पान लेने और शाह साहब रह० को पेश करने सिवा मेरे लिए कोई चारा न रहा। मैंने तश्तरी आपके सामने रख दी। किताब पढ़ने के ध्यान में आपने भी बेतकल्लुफ़ पान मुँह में रख लिया। अभी चंद ही मिनट गुज़रे थे कि आप पर मतली की सी कैफ़ियत शुरू हो गई। पहले तो मुझे ख़्याल हुआ कि कोई उल्टी लाने वाली चीज़ तो पान में

नहीं दे दी गई लेकिन उनके पास मौजूद दूसरे पान को ख़ूब अच्छी तरह देखने के बाद यह बदगुमानी भी जाती रही। मेरठ के स्टेशन पर मालूम हुआ कि इन दोनों औरतों का ताल्लुक़ तवाएफ़ों से था। अब मालूम हुआ कि इस पाकीज़ा बातिन इंसान का मेदा हराम कमाई के पान को भी गवारा करने के लिए तैयार नहीं था। अल्लाहु अकबर मर्दाने ख़ुदा के साथ ख़ुदाए हफ़ीज़ व हाफ़िज़ का यह हिफ़ाज़ती मामला होता है।

इल्म की अज़मत

मौलाना बदरे आलम रावी हैं कि एक बार डाभेल में क़याम के दौरान में मैंने अर्ज़ किया, आप बाल बच्चे दार हैं अगर बुख़ारी शरीफ़ की शरह या क़ुरआन मजीद की तफ़्सीर तसनीफ़ फ़रमाएं तो आपके उलूम की हिफ़ाज़त के साथ-साथ बच्चों के लिए भी तसनीफ़ से कुछ इंतिज़ाम मुमकिन है। इस गुज़ारिश पर आपका जवाब यह था कि उम्र भर हदीस बेचकर गुज़रअवक़ात की, मौलवी साहब क्या आप चाहते हैं कि मेरे बाद भी मेरा इल्म बिकता रहे।

हक़ीक़त पसन्दी

देवबंद से "मुहाजिर" के नाम से एक अख़बार निकलता था। उस अख़बार में निज़ाम हैदराबाद और आपकी मुलाक़ात की ख़बर इस बड़ी हैडिंग में छापी जा रही थी :

"बारगाहे ख़ुसरवी में अल्लामए जलील अनवर शाह कश्मीरी की बारयाबी"

अख़बार छपा नहीं था कि किसी तरह आपको उनवान की इत्तिला हो गई। अख़बार के मुन्तज़िमीन को बुलाकर नाराज़गी का इज़्हार फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया कि हर चंद कि मैं एक फ़क़ीरे बेनवा हूँ मगर इतना गया गुज़रा भी नहीं कि इस तरह के उनवानात को बर्दाश्त करूं। कैसी बारगाहे ख़ुसरवी और कहाँ की बारयाबी? सिर्फ़ इतना लिखिए "निज़ाम हैदराबाद से अनवर शाह की मुलाक़ात।"

किताबों का अदब -

हज़रत क़ारी तैय्यब साहब रह० का बयान है कि बहुत बार हज़रत से सुना कि मैंने सात साल की उम्र के बाद दीन की किसी किताब को बग़ैर वुज़ू के हाथ नहीं लगाया और पढ़ने के दौरान किताब को कभी अपने ताबे नहीं किया। अगर किताब मेरे सामने रखी हुई है और हाशिया दूसरी जानिब है तो ऐसी कभी नौबत नहीं आई कि हाशिया की जानिब को घुमाकर अपने सामने कर लिया बल्कि उठकर उस जानिब जा बैठा हूँ जिस जानिब हाशिया होता।

किताबों का ऐसा अदब और तवाज़ो की यह बरकत थी कि अल्लाह तआला ने आपको इल्म की दौलत से मालामाल फ़रमा दिया। अपने उस्ताद किराम का एहतिराम और उनके सामने आप पर तवाज़ो व इन्किसार इस दर्जे ग़ालिब रहता कि मौलाना एज़ाज़ अली साहब फ़रमाते हैं कि जब हज़रत शेख़ुल हिन्द रह० के सामने शाह साहब हुए तो इस क़द्र झुक जाते कि आपके गिरने का अंदेशा होता।

उस्तादों का अदब

मौलाना मशियतुल्लाह साहब के बड़े बेटे हकीम महबूबुर्रहमान फ़ाज़िल देवबंद का बयान है कि मैं जब देवबंद पढ़ता था तो हज़रत शाह साहब के रिहाइशी कमरे में मेरा क़याम था। हज़रत को पान की आदत थी। एक रोज़ मैंने पान लगाकर पेश किया तो आपने मुँह में रखा ही था कि शेख़ुल हिन्द रह० सामने से तशरीफ़ लाते हुए नज़र आए जो किसी ज़रूरत से अपने शागिर्द के पास तशरीफ़ ला रहे थे। शाह साहब को हज़रत के आने की इत्तिला की गई। मैं उस बेचैनी को भूल नहीं सकता जो शाह साहब पर अपने उस्ताद के आने और मुँह से पान निकालने की जल्दी की सूरत में तारी थी। तेज़ी के साथ अपने मुँह को साफ़ किया और कमरे के दरवाज़े पर एक सरापा इन्किसार ख़ादिम की हैसियत से अपने आक़ा के इस्तिक़बाल के लिए खड़े हो गए।

दौलतमंदों से नफ़रत

मौलाना मुहम्मद मियाँ समलकी जिन्हें वालिद मरहूम की ज़िंदगी में अक़ीदतमंदाना नियाज़े ख़ास मक़ाम हासिल था, वह कभी अपने ज़माने के एक बड़े मालदार बाप के बेटे थे। अपनी ज़िंदगी में बनाए हुए कारख़ानों और अफ़्रीक़ा में सोने की कान के ठेकेदार रहे थे। दारुलउलूम देवबंद से फ़रागत के बाद जब अपनी अक़ीदत की बिना पर लंबे ज़माने तक अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी रह० के साथ रहे तो मौलाना बदरे आलम रह० का बयान है कि मेरे वास्ते से हज़रत साहब ने मौलाना समलकी को यह पैग़ाम भेजा कि उन साहब से कह दीजिए कि हमारे पास से

रुख़सत हो जाएं। कहीं ऐसा न हो कि उनके साथ ताल्लुक़ को आम लोग उनकी दौलतमंदी का नतीजा कहने लगें।

इल्मी वक़ार का इज़्हार

हज़रत मौलाना अन्ज़र शाह साहब फ़रज़न्द हज़रत कश्मीरी रह० लिखते हैं कि मौलाना मुहम्मद मियाँ समलकी जब देवबंद में पढ़ते तो मेरी बहन राशिदा ख़ातून जिनकी उम्र उस ज़माने में सात आठ साल की थी और बच्चियों के आम दस्तूर के मुताबिक़ अपनी गुड़िया की तक़रीब शादी के इंतिज़ाम में मसरूफ़ थी। मौलाना समलकी ने बाज़ार से कुछ क़ीमती कपड़ों के टुकड़े गुड़िया के लिए ख़रीद दिए। अस्र का वक़्त था, हज़रत शाह साहब उस वक़्त अपने ख़ास कमरे से बाहर तशरीफ़ लाए। आप वुज़ू कर रहे थे कि बहन कपड़ों का यह तोहफ़ा लिए हुए सामने से गुज़रीं। इशारे से बुलाकर तहक़ीक़ हाल की और मासूम बच्ची से पूरी कैफ़ियत सुनने के बाद शदीद गुस्से का इज़्हार फ़रमाया। अल्फ़ाज़ कुछ ये थे :

“यह साहब क्या अपनी दौलत से हमारा इल्म ख़रीदना चाहते हैं?”

उस्ताद की ख़िदमत

मौलाना अनवरी फ़ैसलाबादी रह० का बयान है कि हज़रत शाह साहब रह० दारुलउलूम देवबंद के सदर मुदर्रिस थे जो इस इल्मी दर्सगाह का सबसे बड़ा ओहदा है। इसी ज़माने में हज़रत शेख़ुल हिन्द रह० रिहाई के बाद देवबंद पहुँचे। मुझे हज़रत शाह

साहब रह० की ज़ियारत का अब तक मौक़ा नहीं मिला था। लेकिन आपकी इल्मी अज़मत का एहसास आपके सैकड़ों शागिर्दों से सुनकर दिल व दिमाग़ पर ग़ालिब था। देवबंद पहुँचे के बाद मेरे वालिद मुझे लेकर आस्तानए शेखुल हिन्द पर पहुँचे। गर्मी का ज़माना था और ज़ोहर की नमाज़ हो चुकी थी। हज़रत की मर्दाना नशिस्तगाह में एक भीड़ हज़रत को चारों तरफ़ से घेरे हुए बैठी थी। छत से लटके हुए पंखे को एक साहब खींच रहे थे जिनके पुरअनवार चेहरे की मासूमियत, नूरानियत, इल्मी शान और जलालते इल्म की मिली जुली कैफ़ियत दावते नज़ारा दे रही थी। एक साहब ने मुझे चुपके से कहा यह पंखा करने वाले हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी सदर मुदर्रिस दारुलउलूम देवबंद हैं। यह सुनकर मेरे पाँव तले की ज़मीन निकल गई कि जिस ज़ाते गरामी की इल्मी शोहरतों से आलम गूंज रहा है और जिसके खुद अपने शागिर्दों का इस मज्लिस में हजूम है किस अक़ीदत और एहतिराम के साथ अपने उस्ताद की ख़िदमत में मसरूफ़ है।

माल्टा से तशरीफ़ लाने के बाद दोपहर को मामूलन हकीम सिफ़त अहमद साहब की हाज़िरी हज़रत शेख़ुल हिन्द रह० के यहाँ होती। हज़रत उस वक़्त कुछ आराम फ़रमाते और हकीम साहब आपका बदन दबाते। एक रोज़ चादर ओढ़े हुए आराम फ़रमा रहे थे और हकीम साहब हस्बे दस्तूर बदन दबा रहे थे कि अचानक हज़रत कश्मीरी रह० तशरीफ़ लाए। आने को आ गए लेकिन यह देखकर कि हज़रत आराम फ़रमा रहे हैं बड़ी उलझन में मुब्तला हो गए। कुछ लम्हात ऐसे गुज़रे कि अपनी सांस रोके रहे इस तरह कि जैसे आप ज़िंदा ही न हों। सारी कोशिश इसलिए थी कि

हज़रत उस्ताद को तीसरे की मौजूदगी का एहसास होकर आराम में ख़लल न आए।।

हज़रत मौलाना सैय्यद हुसैन अहमद मदनी रहमतुल्लाहि अलैहि

आपकी तारीख़ विलादत 19, शव्वाल 1296 हि० है। आपका आबाई वतन मौज़ा दाऊदपुर क़स्बा टांडा फ़ैज़ाबाद है। आपके वालिद माजिद सैय्यद हबीबुल्लाह साहब हज़रत मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान गंजमुरादाबादी रह० के ख़लीफ़ा ख़ास थे।

आपने इब्तिदाई तालीम और क़ुरआन पाक अपने वालिद माजिद से पढ़ा। तेरह साल की उम्र में आप देवबंद तशरीफ़ ले गए और अपने बड़े भाई मौलाना सिद्दीक़ अहमद साहब और शफ़ीक़ उस्ताद हज़रत शेख़ुलहिन्द मौलाना महमूद हसन रह० की निगरानी में तालीम पाते रहे। आपके आसारे सआदत, जज़्बए ख़िदमत, क़ाबलियत और इस्तेदाद को देखते हुए हज़रत शेख़ुलहिन्द रह० ने आप पर ख़ुसूसी तवज्जोह दी। लिहाज़ा दर्से निज़ामी की 67 किताबें आपने साढ़े छः साल की मुद्दत में ख़त्म कर डालीं और इल्मे नबुव्वत के नय्यर अज़ीम बनकर दारुलउलूम देवबंद के दर व दीवार को मुनव्वर करने लगे। उस्ताद मुहब्बत और कम उम्र होने की वजह से आपको मस्तूराती मुंशी कहकर पुकारा करते थे। उस्तादों की छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी ख़िदमत करने में आपने कभी शर्म महसूस नहीं की।

आप 1316 हि० में दारुलउलूम देवबंद से फ़ारिग़ हुए। फ़राग़त के बाद आप हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० की ख़िदमत में गंगोह हाज़िर हुए और हज़रत से बैअत हो गए। उस वक़्त आपका इरादा मक्का मुकर्रमा जाने का था। लिहाज़ा हज़रत गंगोही रह० ने आपसे फ़रमाया मैंने तुम्हें बैअत तो कर लिया, मक्का मुकर्रमा में शेख़ुल मशाइख़ हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह० मौजूद हैं, उनसे ज़िक्र सीखना। चुनाँचे आप मक्का मुक़र्रमा पहुँचे तो हज़रत हाजी साहब रह० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उनको अपनी हज़रत गंगोही रह० से बैअत और उनके इर्शाद किए हुए फ़रमान के बारे में बताया। इस पर हज़रत हाजी साहब रह० ने आपको ज़िक्र तलक़ीन फ़रमाया कि सुबह यहाँ बैठा करो और इस ज़िक्र को करते रहो। उनकी तवज्जोहात बातिनी से आपकी तर्बियत होती रही। और जब आप मक्का मुकर्रमा से मदीना तैय्यबा रवाना हुए तो हज़रत हाजी साहब ने सर पर हाथ फेरकर फ़रमाया तुमको अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ। मदीना मुनव्वरा पहुँचे तो लंबे अरसे दर्से हदीस देते रहे और ज़िक्र व मुराक़बे में मश्गूल रहे जिसकी वजह से बहुत से नेक ख़्वाब और बशारतें आपको हासिल हुई।

जिस वक़्त आप हिन्दुस्तान से चले तो उस्ताद मुकर्रमा हज़रत शेख़ुलहिन्द रह० आपको मदीना मुनव्वरा रुख़सत कर रहे थे तो इर्शाद फ़रमाया था कि पढ़ाना हर्गिज़ न छोड़ना चाहे एक दो ही तालिब इल्म हों। चुनाँचे आपने उस्ताद की इस नसीहत को ऐसा गिरह में बांधा कि आख़िर दम तक पढ़ाते रहे। मदीना मुनव्वरा में फ़ाक़ाकशी की ज़िंदगी, हिन्दुस्तान की क़ैद व बंद की ज़िंदगी में

बराबर इस नसीहत पर अमल करते रहे और इल्म के साथ मश्ग़ूली रखी और इल्म के दरिया बहा दिए। और मर्कज़े इल्म मदीना मुनव्वरा में वह खुसूसियत हासिल की कि अरब की हदों को पार करके आप ग़ैर मुल्कों में भी शेख़ हरम नबवी मशहूर हो गए। लंबे अरसे हरमे नबवी में पढ़ाने के बाद 1326 हि० में आप हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए और हज़रत शेखुल हिन्दर ह० के हल्क़ए दर्स में शिरकत फ़रमाई। दारुलउलूम देवबंद की शूरा ने आपको देवबंद में मुदर्रिस रख लिया। दो साल बाद आप दोबारा मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ ले गए और माल्टा की क़ैद तक वहीं दर्स व तदरीस में मशग़ूल रहे। माल्टा से वापसी के बाद आपको हज़रत शेखुलहिन्द रह० ने अपनी ख़िदमत के लिए बुलाया। कुछ दिनों के बाद कलकत्ता से मौलाना अबुलकलाम आज़ाद ने मदरसा आलिया की सदरमुदर्रिसी के लिए हज़रत शेखुलहिन्द रहमतुल्लाहि अलैहि की ख़िदमत में ख़त भेजा तो हज़रत शेख़ुलहिन्द रहमतुल्लाहि अलैहि के हुक्म पर आप कलकत्ता तशरीफ़ ले गए और तक़रीबन छः साल तक वहाँ रहे फिर आप इस मुदर्रिसी से गिरफ़्तारी और जेल की वजह से अलग हो गए। फिर आप सलहट के जामिया इस्लामिया में शेखुलहदीस की हैसियत से आख़िरी दम तक पढ़ाते रहे। 31 साल के तदरीस के ज़माने में हज़ारों लोगों ने आपके फ़ैज़े इल्म से नफ़ा उठाया।

इस्लाम की ख़ातिर सियासी मैदान में भी आप ने बेइन्तिहा ख़िदमतें अंजाम दीं। हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिए आप तमाम उम्र जान को हथेली पर रखकर आज़ादी की तहरीकों में हिस्सा लेते रहे और कई बार क़ैद की मुसीबतें बर्दाश्त कीं और आख़िर

अंग्रेज़ों को मुल्क आज़ाद करना पड़ा। तहरीक आज़ादी में अगरचे आपकी और बाज़ उलमा की राय में इख़्तिलाफ़ रहा और आप मुत्तहिदा हिन्दुस्तान में मुसलमानो को उनके हुक़ूक़ दिलवाना चाहते थे। बहरहाल आप अपने इज्तिहाद में मुख़्लिस थे।

आप सारी ज़िंदगी मुल्क व मिल्लत की ख़िदमत में मसरूफ़ रहे और आख़िर उलमाए देवबंद की इस अज़ीम निशानी ने 13 जमादिउल अव्वल 1377 हि० बरोज़ जुमेरात बाद नमाज़ अस्र दाई अजल को लब्बैक कहा।

उस्ताद की ख़िदमत

हज़रत शेख़ुलहिन्द रहमतुल्लाहि अलैहि को उनके साथियों हज़रत मदनी रह०, हज़रत मौलाना उज़ैरगुल रह० दूसरे साथियों के साथ गिरफ़्तार करके माल्टा भेज दिया गया। ये हज़रात वहाँ चार साल क़ैद में रहे। इन हज़रत के तक़्वे, ज़ोहद, और सब्र व जमाव का दूसरे क़ैदियों पर बहुत अच्छा असर पड़ा। कई क़ैदी जर्मन थे जो आपके बेक़ीमत ग़ुलाम बन गए। हज़रत मौलाना मदनी रह० ने इस क़ैद के ज़माने में क़ुरआन पाक हिफ़्ज़ किया और हज़रत शेख़ुलहिन्द रह० की वह बेमिसाल ख़िदमत की कि जिसकी नज़ीर नहीं मिल सकती। हज़रत शेख़ुलहिन्द रहमतुल्लाहि अलैहि उस वक़्त ज़ईफ़ुल उम्र और बीमार थे। ठंडा पानी इस्तेमाल करने में तकलीफ़ होती थी और माल्टा में बला की सर्दी थी मगर पानी गर्म कहाँ से आता। हज़रत उस्ताद को गर्म पानी मुहैय्या करने के लिए मौलाना मदनी रह० नमाज़ ईशा और दूसरी ज़रूरियात से फ़ारिग़ होने के बाद बर्तन में पानी भर लेते और आपने पेट से

लगाकर सज्दे की हालत में सारी रात ऊपर पड़े रहते। फिर तहज्जुद के वक़्त अदब व एहतिराम उस्ताद मोहतरम की ख़िदमत में गर्म पानी पेश कर देते थे।

ख़िदमत की बरकत

मौलवी हिदायतुल्लाह साकिन मियाँ चनूँ ज़िला ख़ानोवाल रावी हैं कि मैंने हज़रत मदनी रह० से एक दफ़ा पूछा कि हज़रत! आप साढ़े चार साल हज़रत शेख़ की ख़िदमत में रहे। आपकी इस सोहबत में कोई दूसरा आड़े होने वाला नहीं था। आपने इस दौरान बहुत कुछ हासिल किया होगा तो आँखों में आँसू भर फ़रमाने लगे, मौलवी साहब! मैं निकम्मा था कि कुछ हासिल नहीं कर सका। मैंने फिर बार-बार अर्ज़ किया तो फ़रमाया, हाँ इतना ज़रूर हुआ कि मैंने नींद पर क़ाबू पा लिया था। अब जब ख़्याल आए सो जाता हूँ और जिस वक़्त उठना चाहूँ बेदार हो जाता हूँ। पाँच दस मिनट के लिए भी सो सकता हूँ। इरादा करूं तो नींद आ जाती है। इस क़िस्म की बहुत सी हिकायतें हज़रत मदनी रह० के बारे मशहूर हैं कि किसी जगह वहाँ पाँच दस मिनट फ़ुर्सत मिली, सो गए और अपने आप उठ खड़े हुए। बहरहाल न सिर्फ़ नींद पर क़ाबू पाना उस्ताद की ख़िदमत करने से हासिल हुआ बल्कि मारिफ़त के यह दरिया हज़्म किए हुए थे जिसका एक घूंट भी बेखुद करने के लिए काफ़ी होता है।

ख़त्म बुख़ारी की मज्लिस

﴿اصح الکتب بعد کتاب اللہ﴾ यह लक़ब बुख़ारी शरीफ़ का है कि

यह किताबुल्लाह के बाद दुनिया में सही तरीन किताब है। सही बुख़ारी शरीफ़ ख़त्म के मौक़े पर जब आप अपने मख़्सूस लहजे में आख़िरी हदीस की तिलावत शुरू फ़रमाते तो दिलों पर रिक़्क़त तारी होने लगती थी। आप हाज़िरीन पर रूहानी तवज्जोह फ़रमाते तो तमाम लोग ज़ार व क़तार रोने लगते थे और दिल काँप जाते थे। लोग तोबा इस्तिग़फ़ार इस तरह से करते थे कि जैसे दरबार ख़ुदावंदी मैं हाज़िर हैं और रो-रो कर अपने गुनाहों से माफ़ी चाह रहे हैं। इस मौक़े पर जो दुआ मांगी जाती थी वह ऐसी थी कि आँखें अश्कबार, दिल बेचैन, ज़बान लड़खड़ाती हुई, जिस्म का रवाँ-रवाँ कांपता था। ग़र्ज़ हर आदमी बग़ैर पानी की मछली की तरह तड़पता था और तोबा इस्तिग़फ़ार करता था।

अहवाल व वाक़िआत

क़रीब ज़माने के इस दरवेश कामिल की शान अजीब थी। इबादात रियाज़त में वह जुनैद शिबली रह० थे। इल्म व फ़ज़्ल में बुख़ारी व राज़ी रह० थे। इस्लाह व तजदीद में वह इब्ने तैमिया और हफ़िज़ इब्ने क़य्यिम रह० की सफ़ में खड़े नज़र आते थे और ख़िदमते ख़ल्क़ में वह उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० के साथी मालूम होते थे। यह सब कुछ होते हुए भी बेहद मुतवाज़ो और ख़ाकसार थे। सफ़रों में जाड़े की रातों में प्लेटफार्म पर किसी कोने में मुसल्ले पर खड़े होकर तहज्जुद में मशग़ूल होते। ख़ादिम अर्ज़ करते थे कि हज़रत वेटिंग रूम में क्यों न खड़े हो गए तो जवाब मिलता है कि मुसाफ़िरों की नींद ख़राब होती है। मुझ जैसे शेख़ीख़ोर और रुसिया इंसान को क्या हक़ है कि वह ख़ुदा के बंदों को परेशान करे।

कभी-कभी रात को 12 बजे बुख़ारी शरीफ़ का दर्स देकर फ़ारिग़ होते थे। सीधे मेहमानख़ाने में तशरीफ़ लाते और मेहमानों के बिस्तर और तकियों की देखभाल करते थे। एक बार एक देहाती मेहमान को तकलीफ़ में पाया तो ख़ुद उसकी तकलीफ़ को दूर करने में लग गए। हक़ तआला शानुहू की तरफ़ तवज्जोह का यह हाल कि एक क़दम भी शरिअत व सुन्नत के ख़िलाफ़ नहीं उठता था। बंदगी का इतना गहरा रंग कि अगर कोई अक़ीदत के जोश में हाथ चूमने के लिए ज़रा झुकता तो हाथ खींच लेते। किसी को पैर दबाने की इजाज़त नहीं थी और ख़ुद रात को सोते में अपने मेहमानों की पाँव दबाते रहते। फिर मख़्लूक़ की तरफ़ तवज्जोह का यह आलम कि बंदगाने इलाही को अंग्रेज़ी सामराज के ज़ुल्म की चक्की में पिसता हुआ देखा तो पूरी क़ुव्वत से वतन की आज़ादी के लिए मैदान में उतर आए और इंसानियत सोज़ ज़ुल्मों और बर्तानवी सामराज के नापाक इरादों की मुख़ालिफ़त भरी तक़रीर फ़रमाकर कमज़ोरों में आज़ादी की तड़प पैदा कर दी। ज़िक्रे इलाही और मुहब्बते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वअज़ फ़रमाते तो दिलों को नूरे ईमान से रोशन कर देते।

मख़्लूक़ से इस्तिग़ना

हज़रत मौलाना मदनी रह० दारुलउलूम से फ़ारिग़ होते ही अपने वालदैन के साथ मदीना मुनव्वरा हिजरत कर गए। वहाँ पहले से न कोई जाएदाद थी न वहाँ अपना कोई कारोबार चल रहा था और न ही कोई कमाई का ज़रिया था। आम लोग हिजरत करके जाते थे हुकूमत से वज़ीफ़ा पाने के ख़्वाहिशमंद होते थे।

मगर हज़रत मदनी रह० और उनके वालिद मोहतरम ने इसे पसन्द न किया। हज़रत मदनी रह० एक मदरसे की ख़िदमत करने लग गए। किताबें भी नक़ल कीं। आपके वालिद मोहतरम ने एक छोटी सी दुकान खोल ली। हज़रत मौलाना अब्दुलहक़ साहब रह० का बयान है कि उनके वालिद माजिद डाक्टर रफ़ाक़त अली साहब ने जो मदीना तैय्यबा के कामयाब डाक्टर थे, बहुत ज़्यादा इसरार किया कि मौलाना हुसैन अहमद रह०, मौलाना अब्दुलहक़ साहब को बतौर ट्यूशन तालीम दें। लेकिन ऐन उसी ज़माने में जब फ़ाक़े की यह हालत थी कि घर के तेरह लोग तीन पाव मसूर के पानी पर क़नाअत करते थे, ट्युशन लेना गवारा न की। अलबत्ता इसके लिए आमादा थे कि बिला मुआवज़ा जैसा कि हरम शरीफ़ में तलबा को दर्स देते हैं, मौलाना अब्दुलहक़ को भी दर्स देते रहेंगे। आपस में यह इसरार अजीब था कि इसमें तक़रीबन छः महीने गुज़र गए। आख़िर डाक्टर साहब को दबना पड़ा। कितना अरसा बग़ैर मुआवज़े के पढ़ाते रहे। इतनी बेतकल्लुफ़ी और यगानगत के बावजूद इन हज़रात को यह इल्म न हो सका कि घर में अक्सर फ़ाक़े होते हैं। मालूम उस वक़्त हुआ कि जब तंगदस्ती ख़ुशहाली से बदल गई।

दस्त ब-कार दिल ब-यार

जब आप नमाज़ में मशग़ूल होते तो साफ़ मालूम होता था कि यह बंदा सारे आलम से दस्तबरदार होकर अपने माबूद के साथ सरगोशी में मशग़ूल है। और बारगाहे ख़ुदावंदी में पहुँच हासिल कर रहा है। जो आयत भी नमाज़ में तिलावत फ़रमाते सुनने वालों

को यूँ महसूस होता था कि गोया क़ुरआन अब उतर रहा है और वह कैफ़ियत तारी होती कि जिसका बयान दुश्वार है। बहुत बार देखने वालों ने देखा कि हज़रत मदनी रह० सफ़र में हैं या सफ़र की मशक़्क़त बर्दाश्त करके अभी आए हैं और फिर सफ़र करना है मगर जब नमाज़ के लिए खड़े हो जाते तो ऐसी शान व वक़ार के साथ पढ़ते कि गोया न पहले कोई थकन है न आइन्दा कोई सफ़र करना है। हर वक़्त अल्लाह के ज़िक्र में मशग़ूल रहते थे और "दस्त बकार दिल बयार" के पूरे नमूने थे। इसका अंदाज़ा उस वक़्त होता था जब इंतिहाई तड़प के साथ ﴿يا حي يا قيوم برحمتك نستغيث﴾ "या हय्यू या क़य्यूम बिरहमतिका नस्तग़ीस" बार-बार पढ़ते थे। विसाल से एक रोज़ पहले कोई साहब दम करवा रहे थे कि हज़रत ने इंतिहाई बेक़रारी से बार-बार यही पढ़ा। हाज़िरीन में से किसी ने पूछा, हज़रत! क्या कोई तकलीफ़ है? इर्शाद फ़रमाया कि यही तकलीफ़ क्या कम है है कि आप हज़रात मशग़ूल हैं और मैं बेकार पड़ा हूँ। अर्ज़ किया गया, हज़रत! आपने तो बहुत काम किया है, इतना को एक जमाअत भी नहीं कर सकती। इर्शाद फ़रमाया, मैंने तो कुछ भी नहीं किया—

यक चश्म ज़दन ग़ाफ़िल अज़ां शाह नबाशी
शायद के निगाहे कुंद आगाह नबाशी

सादगी और बेतकल्लुफ़ी

हज़रत मदनी रह० सादगी और बेतकल्लुफ़ी में बेमिसाल थे। शेख़े तरीक़त और आलिम रब्बानी होने के अलावा हज़रत मदनी

रह० की ज़ाहिरी शख़्सियत एक बड़े सियासी रहनुमा की थी और हर सियासी लीडर मुस्लिम हो या ग़ैर-मुस्लिम, मुल्की हो या ग़ैर-मुल्की आपके आस्ताने पर हाज़िरी को ज़रूरी और बाइसे फ़ख़्र समझता था। हज़रत मदनी रह० सुन्नते नबवी के बेहतरीन नमूना थे। आप सुन्नत के मुवाफ़िक़ चमड़े का तकिया इस्तेमाल करते थे और चमड़े का गोल दस्तरख़्वान इस्तेमाल होता था जिस पर हमेशा एक सालन होता था और दायरे की शक्ल में कम से कम दस बारह आदमी दस्तरख़्वान के चारों तरफ़ बैठकर एक ही बर्तन में खाते थे। उनमें एक हज़रत भी होते थे और साथ मिलकर खाते थे। सुबह को नाश्ते में बासी रोटी और मिर्च का आचार होता था। यही हज़रत और तमाम मेहमानों का नाश्ता होता था। एक बार हज़रत ने खाने वालों को मुख़ातिब करके फ़रमाया, हम आप हज़रात के हाँ जाते तो आप हज़रात मुर्ग़ व हलवे खिलाते हैं और यहाँ बासी रोटी और मिर्च खाना पड़ती है। इस पर मौलाना एहतशामुल हक़ कांधलवी रह० ने फ़रमाया, हज़रत! बासी रोटी और आचार मुर्ग़ से ज़्यादा मज़ेदार हैं।

रौब और दबदबा

इंतिहाई ख़ाकसारी के बावजूद हज़रत मदनी रह० वक़ार व शान व शौकत के कोहे तूर या कोहे नूर थे। एक ख़ास क़िस्म की हैबत व जलाल चेहरे पर अयाँ था। बावजूद यह कि हज़रत मदनी रह० हंस-हंस कर बातें किया करते थे मगर मुख़ातिब का दिल अंदर से लरज़ता रहता था और मुश्किल से बात की जा सकती थी। मौलाना एहतशामुलहसन कांधलवी रह० फ़रमाते थे कि मेरा

हाल भी यही था हालाँकि मैं अपनी नालायक़ी की वजह से तमाम बुज़ुर्गों से बात करने का आदी था। यहाँ तक कि हज़रत थानवी रह० के हाँ भी बेधड़क जो जी आता था कह देता था और हज़रत थानवी रह० की तरफ़ से कभी नागवारी की इज़्हार नहीं हुआ था।

हज़रत मदनी रह० के ज़माने के अक्सर बुज़ुर्ग फ़रमाते कि "हज़रत मदनी रह० से डर लगता है।" बहुत बार ऐसा हुआ कि मौलाना इलयास साहब रह० किसी ख़ास मक़सद के लिए बात करने के लिए देवबंद गए, वहाँ हज़रत मदनी रह० से बेतकल्लुफ़ मुलाक़ात हुई और हंस-हंस कर बातें हुईं मगर मक़सद ज़बान पर न ला सके और वापसी के बाद फ़रमाया, हज़रत मदनी रह० से बात करने की हिम्मत नहीं हुई।

अख़्लाक़े हमीदा

हिन्दुतान के मशहूर कम्युनिस्ट लीडर मुहम्मद अशरफ़ हज़रत मदनी रह० के बारे में अपने तास्सुरात बयान करते हुए लिखते हैं कि 1946 में कम्युनिस्ट पार्टी को मुसलमानों के तारीख़ी पसमंज़र पर सोचना पड़ा और मुझे इस काम पर मुक़र्रर किया गया कि इस बारे में रिपोर्ट पेश करूं। मैं इस मवाद को जमा करने के लिए देवबंद हाज़िर हुआ। तन्हाई में मिला। मौलाना के यहाँ तक़रीबन सभी लोग रात को जागने के आदी थे। एक दिन तो मैं रात को मुश्किल से एक घंटा सोया तो फ़ज्र के वक़्त तक्बीर बिलजहर से उठ बैठा। दूसरे दिन भी यही कैफ़ियत हुई तो हज़रत से अर्ज़ किया कि हुज़ूर के साथ मेरी आक़बत दरुस्त हो या न हो मेरी सेहत को ख़तरा ज़रूर हो जाएगा। हज़रत ने तबस्सुम फ़रमाया

और अलग कमरे में बंदोबस्त करा दिया। देवबंद के क़याम की शायद चौथी शाम थी कि मैं अपने बिस्तर पर लेटा हुआ था। रात के दस बज चुके थे। घूमने फिरने की वजह से थकन भी ज़्यादा थी। चुनाँचे लैंप बुझाया और सोने लगा। दरवाज़ा खुला रहता था। मुझे ऊँघ सी हुई कि मैंने एक हाथ टख़ने पर महसूस किया। फिर दोनों हाथों से किसी ने मेरे पाँव दबाना शुरू कर दिए। मैं चौकन्ना हो गया। देखता क्या हूँ कि हज़रत अपने आप इस गुनाहगार के पाँव दबाने में मसरूफ़ हैं। मैंने जल्दी से पाँव सुकेड़ लिए और बड़े अदब और नरमी से हज़रत को रोका। मौलाना ने हसरत से फ़रमाया, आप सवाब से मुझे महरूम क्यों करते हैं? क्या मैं इस क़ाबिल भी नहीं कि आप जैसे मेहमान की ख़िदमत कर सकूँ। मुझ पर इस इर्शाद के बाद जो गुज़री मेरे लिए उसका बयान करना मुश्किल है। यह उनके अख़्लाक़ और फ़राख़ दिली का अदना सा नमूना है।

क़नाअत

हज़रत मौलाना रह० को ब्रिटिश हकूमत ने ढाका युनिवर्सिटी के शोबा दीनयात के लिए पाँच सौ रुपए माहवार पर बुलाया मगर आपने पेशकश को क़ुबूल न किया। हकूमत मिस्र ने जामिया अज़हर में शेखुल हदीस की मसनद के लिए हज़ार रुपए माहवार तंख़्वाह, मकान, मोटर और साल में एक दफ़ा हिन्दुस्तान आने जाने का किराया देने की पेशकश की मगर मौलाना ने वहाँ जाने से साफ़ इंकार कर दिया और देवबंद की मामूली तंख़्वाह पर क़नाअत कर ली।

इस्तिग़ना

हज़रत मदनी रह० के ज़ोहद व तक़्वे की इससे ज़्यादा और क्या दलील हो सकती है कि दारुलउलूम देवबंद की मुद्दत से ख़िदमत कर रहे थे। पाँच साल का तवील अरसा दारुलउलूम देवबंद की ख़िदमत में गुज़ार दिया। मगर उन दिनों के अलावा जिनमें पढ़ाते थे बाक़ी दिनों की तंख़्वाह न लेते थे। मर्ज़ुल वफ़ात में एक महीना की छुट्टी क़ानून आपका हक़ बनती थीं। वे बीमारी में शुमार हुईं। उन दिनों की तंख़्वाह जो एक हज़ार रुपए से कुछ ज़्यादा होती थी मदरसे ने भेजी तो यह फ़रमाकर वापस कर दी कि जब मैंने पढ़ाया ही नहीं तो तंख़्वाह कैसी?

वालदैन की इताअत

"नक़्शे हयात" जो हज़रत मदनी रह० की खुद लिखी हुई सावनेह है। उससे बड़ी मुख़्तसर तहरीर में और बड़े बेतकल्लुफ़ अंदाज़ में अपनी ज़िंदगी का नक़्शा खींचते हुए लिखते हैं कि कभी-कभी मैं मस्जिदे नबवी में बैठा हुआ किताब पढ़ा रहा होता था और आदमी आकर कहता कि वालिद साहब बुला रहे हैं। तलबा को रुख़्सत करके हाज़िर होता तो फ़रमाते, ईंट, मिट्टी उठाने वाला मज़दूर नहीं आया है तुम इस काम को अंजाम दो। मजबूरी में सारे दिन यह काम करना पड़ता और सारे सबक़ को छोड़ना पड़ता। कभी-कभी एक-एक दो-दो हफ़्ता सबक़ को छोड़कर इसी तामीर ख़िदमत में लगाने पड़ते थे।

मख़्लूके ख़ुदा की ख़िदमत

हज़रत मौलाना मुहम्मद अलनी लाहौरी रह० से रिवायत है कि

जब हज़रत मदनी रह० आख़िरी हज से तशरीफ़ ला रहे थे तो हम लोग स्टेशन ज़ियारत हासिल करने के लिए गए। हज़रत के ताल्लुक़ वालों से में एक साहबज़ादे मुहम्मद आरिफ़ जो कि ज़िला झंग से ताल्लुक़ रखते थे, देवबंद तक साथ गए। उनका बयान है कि ट्रेन में एक हिन्दू जैन्टलमैन भी थे जिनको फ़रागत का तक़ाज़ा हुआ। वह रफ़ए हाजत के लिए बैतुलख़ला में गए और उल्टे पाँव ना चाहते हुए वापस हुए। हज़रत मदनी रह० समझ गए। फ़ौरन चंद सिगरेट की डिब्बियाँ इधर-उधर से जमा कीं और लोटा लेकर लैट्रीन में गए, अच्छी तरह साफ़ किया और हिन्दू दोस्त से फ़रमाने लगे कि जाइए लैट्रीन बिल्कुल साफ़ है। वह बड़ा मुतास्सिर हुआ और भरपूर अक़ीदत के साथ अर्ज़ करने लगा यह हुज़ूर की बंदानवाज़ी है जो समझ से बाहर है।

इस वाक़िए को देख कर उसी डिब्बे में मौजूद ख़्वाजा निज़ामुद्दीन तोनसवी ने एक साथी से पूछा कि यह खद्दरपोश कौन है? जवाब मिला कि यह मौलाना हुसैन अहमद मदनी रह० हैं। ख़्वाजा साहब ने उस वक़्त बेअख़्तियार होकर हज़रत मदनी रह० के पाँव को छू लिया और पाँव से लिपट कर रोने लगे। हज़रत रह० ने ज़ल्दी से पाँव छुड़ा लिए और पूछा क्या बात है? तो ख़्वाजा साहब ने कहा सियासी इख़्तिलाफ़ात की वजह से मैंने आपके ख़िलाफ़ बहुत से फ़तवे दिए और बुरा भला कहा। अगर आज आपके इस आला किरदार को देखकर ताएब न होता शायद सीधा जहन्नम में जाता।

हज़रत ने फ़रमाया, मेरे भाई! मैंने तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर अमल किया है और वह सुन्नत यह है कि

हुज़ूर के हाँ एक यहूदी मेहमान ने बिस्तर पर पाख़ाना कर दिया था। सुबह जल्दी उठकर चला गया। जब अपनी भूली हुई तलवार वापस लेने आया तो देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुद अपने दस्ते मुबारक से बिस्तर धो रहे हैं। यह देखकर वह मुसलमान हो गया।

अदले का बदला

मौलाना अब्दुल्लाह फ़ारूक़ी रह० हज़रत मौलाना अब्दुल क़ादिर रायपुरी रह० से बैअत थे। लाहौर के देहली मुस्लिम होटल में बहुत मुद्दत तक ख़तीब रहे। उनका बयान है कि मैं मदीना तैय्यबा हाज़िर हुआ तो मौलाना मदनी रह० के हाँ क़याम किया। एक रोज़ जब हज़रत मदनी रह० के साथ मस्जिदे नबवी में नमाज़ पढ़ने गया तो मैंने आपका जूता उठा लिया। आप उस वक़्त तो ख़ामोश रहे लेकिन दूसरे रोज़ जब हम नमाज़ पढ़ने के लिए गए तो आपने मेरा जूता उठाकर सर पर रख लिया। मैं पीछे भागा। मौलाना ने तेज़ चलना शुरू कर दिया। मैंने कोशिश की कि जूता ले लूँ मगर नहीं लेने दिया। मैंने कहा कि ख़ुदा के लिए सर पर तो न रखिए। फ़रमाया, अहद करो आइन्दा हुसैन अहमद का जूता न उठाओगे। मैंने अहद कर लिया, तब जूता सर से उतारकर नीचे रख दिया।

गिरफ़्तारी

1936 ई० में जमिअत उलमा हिन्द की तरफ़ से आपको कहा गया कि देहली जाकर सिविल नाफ़रमानी करना और गिरफ़्तार

होना आप पर लाज़िम है। आपकी तबियत सख़्त ख़राब थी। टांगों में ज़ख़्म थे और चलना भी दुश्वार था। हज़रत अनवर शाह कश्मीरी रह० को आपकी रवानगी के मक़सद का इल्म हुआ तो कहला भेजा कि इस हालत में सफ़र न करें और तारीख़ बदल दीजिए। मगर हज़रत ने गवारा न किया और इसी हालत में रवाना हुए। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट की तरफ़ से गिरफ़्तारी का वारन्ट जारी हो चुका था। देवबंद स्टेशन पर कसरत से भीड़ की वजह से पुलिस की हिम्मत न हुई। देवबंद से अगले स्टेशन पर डिप्टी सुपरइन्टेन्डेन्ट ने वह नोटिस पेश किया। आपने फ़रमाया, मैं अंग्रेज़ी नहीं जानता। उसने कहा, क़लम दीजिए ताकि उर्दू में तर्जुमा कर दूँ। हज़रत ने फ़रमाया, ख़ूब अपने ज़िब्ह करने के लिए अपना हथियार तुम्हें दूँ। वह ख़ामोश हो गया और गाड़ी चल पड़ी। वह अफ़सर मुज़फ़्फ़रनगर स्टेशन पर तर्जुमा करके लाया। उसमें लिखा था कि हाकिम सहारनपुर की तरफ़ से आपको नोटिस जारी किया जाता है कि आप आगे न जाएं वरना अपने आपको गिरफ़्तार समझें। फ़रमाया, अब मैं सहारनपुर की हदों से आगे हूँ, लिहाज़ा यह नोटिस क़ाबिले क़ुबूल नहीं है। अफ़सरान यह जवाब सुनकर हैरान रह गए। बाद में मजिस्ट्रेट ने जो साथ ही था, कहा कि आपको अपने ख़ुसूसी अख़्तियारात की बिना पर नोटिस दूंगा। चुनाँचे उसने उसी स्टेशन पर दूसरा तहरीरी नोटिस पेश किया और गिरफ़्तारी अमल में आई। हज़रत की यह हालत थी कि गाड़ी से उतरकर दो क़दम चलना भी दुश्वार था। उसी जगह थोड़ी देर के लिए कुर्सी रख दी गई और उस पर हज़रत बैठ गए। इन तमाम तकलीफ़ों के बावजूद फ़रीज़ए जिहाद को छोड़ना या टालना गवारा नहीं किया।

खाने में बरकत

हज़रत मौलाना अब्दुस्समी साहब मुदर्रिस दारुलउलूम देवबंद ने मिश्कात शरीफ़ के दर्स के दौरान किताबुल मौजिज़ात के सिलसिले में हज़रत का एक वाकिआ क़सम खाकर सुनाया। उस मौक़े पर सौ से ज़्यादा तालिब इल्म मौजूद थे। उन्होंने बयान फ़रमाया कि मैंने एक रोज़ हज़रत मदनी रह० की दावत की। इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त मेहमान थोड़े थे। हज़रत शेख़ ने दावत क़ुबूल फ़रमा ली। जब खाने का वक़्त आया तो मेहमान ज़्यादा आ गए। हज़रत शेख़ तमाम मेहमानों को लेकर तशरीफ़ ले आए। मेहमानों की कसरत देखकर मुझे परेशानी हुई। हज़रत ने महसूस फ़रमा लिया और मुझे अलैहिदा ले गए। मैंने अर्ज़ किया थोड़ी देर ठहरें, मैं इंतिज़ाम कर लूँ। हज़रत रह० ने फ़रमाया, यही खाना काफ़ी हो जाएगा। आपके इर्शाद के मुताबिक़ तमाम रोटी और तरकारी आपके पास लाकर रख दी गई और रोटियों पर कपड़ा ढक दिया गया। अब हज़रत शेख़ ने अपने हाथ से निकालकर खाना देना शुरू किया। वही खाना काफ़ी हो गया। घरवालों ने भी खा लिया और कुछ बच भी गया।

ईसार व क़ुर्बानी

शेख़ुल अरब व अजम का मामूल था कि इशा के बाद से बारह बजे तक हदीस की सबसे बड़ी और मोहतमिम-बिश्शान किताब बुख़ारी शरीफ़ का दर्स देते थे। मौलाना फ़ैज़ुल्लाह लालटैन उठाने पर तैनात थे। उनका बयान है कि एक रात आप आधी रात को सर्दी के मौसम में मेहमानख़ाने में तशरीफ़ लाए। देखा कि

एक ख़स्ताहाल मेहमान बोसीदा कपड़े पहने चारपाई पर बैठे हैं। हज़रत रह० ने फ़रमाया, इनसे पूछें कि क्यों बैठे हैं? और फिर खुद ही जाकर पूछा तो मेहमान ने जवाब दिया कि किसी साहब ने मुझे दस्तरख़्वान से उठा दिया है और मेरे पास लिहाफ़ भी नहीं है। हज़रत पर इसका बड़ा असर हुआ और बार-बार उन दस्तरख़्वान से उठाने वाले का नाम पूछा मगर पता न चला। फ़ौरन अंदर तशरीफ़ ले गए और खाना लेकर खुद बाहर तशरीफ़ लाए। जब तक उस मेहमान ने खाना नहीं खाया आप बाहर ही बैठे रहे। सारे मेहमान और घरवाले सो चुके थे। हज़रत अंदर गए और अपना बिस्तर उठाकर लाए। उसको बिछा दिया और खुद सारी रात चादर ओढ़कर गुज़ार दी। मौलाना फ़ैज़ुल्लाह का बयान है कि मैंने बहुत इसरार किया और चाहा कि अपना बिस्तर ले आऊँ और हज़रत आराम फ़रमाएं मगर इस पैकरे सुन्नत ने इसको गवारा न किया।

इस्तिक़ामत

एक बार हज़रत ने फ़रमाया कि सियासी इख़्तिलाफ़ात की वजह से उलमा में ताल्लुक़ात ख़त्म नहीं होने चाहिएं। एक दूसरी मज्लिस में फ़रमाया कि जब मैं कराची जेल से 1923 ई० में रिहा होकर आया था तो उस वक़्त बंगाल कौन्सिल के एक मिंबर ने कहा कि चालीस हज़ार रुपया नक़द ढाका युनिवर्सिटी में पाँच सौ रुपया माहाना की प्रोफ़ेसरी आपके लिए हाज़िर है, इसको मंज़ूर फ़रमा लें। मैंने कहा, काम क्या करना होगा? मिम्बर साहब ने फ़रमाया कुछ नहीं, आप सिर्फ़ तहरीकात में ख़ामोश रहें। मैंने

कहा, हज़रत शेख़ुल हिन्द रह० जिस रास्ते पर लगा गए हैं मैं उससे नहीं हट सकता।

शेख़ुल हदीस हज़रत मौलाना ज़करिया रहमतुल्लाहि अलैहि

आप हज़रत मौलाना याह्या साहब शेख़ुल हदीस मदरसा मज़ाहिरउलूम सहारनपुर के बेटे और हज़रत मौलाना इलयास साहब बानी तबलीग़ी जमाअत रह० के भतीजे हैं। आप 11, रमज़ानुल मुबारक 1315 हि० को कांधला में पैदा हुए। अव्वल से आख़िर सारी तालीम मदरसा मज़ाहिरउलूम सहारनपुर में हासिल की। 1344 हि० में दौरए हदीस करके सनदे फ़राग़त हासिल की। आपके उस्तादों में हज़रत अक़्दस मौलाना ख़लील अहमद सहारनपुरी रह०, आपके वालिद गरामी हज़रत मौलाना याह्या साहब, हज़रत मौलाना इलयास साहब रह०, मौलाना ज़फ़र अहमद उस्मानी रह० और हज़रत मौलाना अब्दुल लतीफ़ साहब क़ाबिले ज़िक्र हैं।

तालीम से फ़राग़त के बाद मज़ाहिरउलूम सहारनपुर में ही मुदर्रिस मुक़र्रर हुए। और बहुत जल्द अपनी आला सलाहियत की वजह से सदर मुदर्रिस मुक़र्रर हुए। हज़रत मौलाना ख़लील अहमद सहारनपुरी रह० ने आपको शेख़ुल हदीस का ख़िताब अता फ़रमाया। आपने रूहानी और इस्लाही ताल्लुक़ हज़रत मौलाना ख़लील अहमद साहब रह० से क़ायम फ़रमाया और इल्मे ज़ाहिर के साथ-साथ इल्मे बातिन में भी ख़ूब फ़ैज़ हासिल किया और

ख़िलाफ़त से नवाज़े गए। हज़रत सहारनपुरी की वफ़ात के बाद हज़रत मौलाना शाह अब्दुलक़ादिर साहब रायपुरी रह० से ताल्लुक़ क़ायम किया और उनसे भी ख़िलाफ़त हासिल की। सारी ज़िंदगी दर्स व तदरीस और तबलीग़ व इस्लाह में बसर की। आप एक बड़े आलिम, बाअमल, सुन्नत की इत्तिबा करने वाले, हक़ व सदाक़त के पैकर थे। तवाज़ो और इन्किसारी में असलाफ़ की अज़ीम यादगार थे। बड़े-बड़े उलमा आपके शागिर्द और मुरीद थे। आपने बहुत सी मशहूर किताबें लिखीं जो उलमा और अवाम में बहुत मक़्बूल हुईं। आपनी ज़िंदगी के आख़िरी दिन आपने मदीना मुनव्वरा में गुज़ारे। आपने 24 मई 1982 को मदीना मुनव्वरा में जान जान आफ़रीं के सुपुर्द की और जन्नतुल बक़ी में दफ़न किए गए।

हज़रत गंगोही रह० से मुहब्बत

शेखुल हदीस अपने बचपन के बारे में फ़रमाते हैं कि उन दिनों वालिद मोहतरम का क़याम हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० की ख़िदमत में मुस्तक़िल तौर पर गंगोह में रहा करता था। मेरी उम्र अभी ढाई साल की थी। हज़रत गूलर के पेड़ के नीचे चार ज़ानो बैठे हुए थे। मैं हज़रत के पैरों पर खड़ा होकर ख़ूब लिपटता। फ़रमाते हैं कि जब मैं कुछ और बड़ा हो गया तो रास्ते में ख़ड़ा हो जाता। जब हज़रत सामने से गुज़रते तो मैं बड़ी क़िरात के साथ और बुलन्द आवाज़ से कहता, अस्सलामु अलैकुम। हज़रत मुहब्बत व शफ़क़्क़त से उसी लहजे में जवाब मरहमत फ़रमाते। हज़रत शेख़ मज़ीद फ़रमाते कि हज़रत गंगोही

रह० की गोद में खेलना, हज़रत के घुटनों पर पाँव रखना और गर्दन में हाथ डालकर खड़ा होना, हज़रत के साथ ईदैन के मौक़े पर पालकी में बैठकर ईदगाह जाना-आना होता था, जिसके उठाने वाले बड़े-बड़े उलमा और मशाइख़ होते थे। और कभी-कभी हज़रत के साथ खाना खाना और हज़रत के बचे हुए खाने का अकेले वारिस बनना अब भी आँखों के सामने है।

बच्चों की तर्बियत

उस ज़माने के बुज़ुर्ग बच्चों की तर्बियत और उनकी ज़हनी नशोनुमा के लिए बाज़ ख़ास क़िस्म के तरीक़े अख़्तियार करते थे। मौलाना याह्या साहब को ख़ास तौर पर इसका एहतिमाम था। शेखुल हदीस रह० ने फ़रमाया कि एक बार जब मेरी उम्र तेरह साल थी, वालिद साहब ने कांधला भेजने का वादा फ़रमाया। मैं खुशी के मारे फूले न समाता था। वहाँ जाने के लिए दिन गिनने लगा और ईद के चाँद की तरह उसका इंतिज़ार करने लगा। चंद दिन के बाद वालिद साहब रह० ने यह इरादा मुलतवी फ़रमा दिया। मुझे इस पर ताज्जुब हुआ और मलाल भी। एक रोज़ फ़रमाया कि तुझे कांधला जाने की बेहद खुशी थी और तुझ पर इतना शौक़ ग़ालिब आ गया कि मैंने इसी वजह से इसको मुलतवी कर दिया क्योंकि इस पर इतना खुश होना और इतना शौक़ व अरमान रखना ठीक नहीं है।

ज़िंदगी भर की मसरूफ़ियत

हज़रत शेखुल हदीस रह० के वालिद मोहतरम ने सात बरस

की उम्र में क़ुरआन पाक हिफ़्ज़ कर लिया था लेकिन शेख़ुल हदीस रह० की सात बरस की उम्र में बिस्मिल्लाह भी नहीं हुई। इस उम्र तक तालीम शुरू न होने पर ख़ानदान के बुज़ुर्गों को ताज्जुब था। दादी साहिबा जो ख़ुद हाफ़िज़ा क़ुरआन थीं उन्होंने लायक़ फ़रज़ंद से एक दफ़ा फ़रमाया, याहूया! औलाद की मुहब्बत में अंधे नहीं होते। तूने सात बरस की उम्र में क़ुरआन पाक हिफ़्ज़ कर लिया था, यह इतना बैल फिर रहा है, आख़िर इसे जूते गठवाएगा या क्या करेगा? मौलाना याहूया साहब रह० ने वालिदा साहिबा की इस बात के जवाब में फ़रमाया, "जब तक खेलता है खेल लेने दीजिए। जिस दिन यह कूल्हू में सर देगा तो क़ब्र में जाकर ही दम लेगा।"

क़ुरआन मजीद की तिलावत

क़ुरआन पाक हिफ़्ज़ करना इस ख़ानदान की ख़ुसूसी पहचान और तालीम का पहला मरहला था। उसी के मुताबिक़ हिफ़्ज़ का सिलसिला शुरू कराया गया। मौलाना याहूया साहब का तालीम व तर्बियत का निराला ही दस्तूर था। वह एक सफ़्हा दे देते और फ़रमाते कि इसको सौ मर्तबा पढ़ लो। फिर दिन भर छुट्टी है। इंसानी फ़ितरत और उम्र के तक़ाज़े से बड़े-बड़े होनहार बच्चे भी बचे हुए नहीं होते। शेख़ फ़रमाते हैं कि मुझे अंदाज़ा नहीं था कि एक सफ़्हा सौ मर्तबा पढ़ने में कितना वक़्त लगता है। मैं बहुत जल्दी आकर कह देता कि सौ बार पढ़ लिया। वालिद साहब इस पर ज़्यादा छानबीन न फ़रमाते। अगले दिन का सबक़ याद करने के बाद आकर कहता कि कल तो बस ऐसे ही पढ़ा था, आज

ठीक-ठीक सौ बार पढ़ा है। फ़रमाते कि आज के सच की हक़ीक़त तो कल मालूम होगी। सहारनपुर आ जाने और अरबी शुरू हो जाने के बाद भी यही हुक्म होता था कि एक पारे को इतनी बार पढ़ लो। मग़रिब के बाद एक साहब उसको सुनते थे। उसमें ख़ूब ग़ल्तियाँ निकलती थीं। इस पर सहारनपुर के मशहूर वकील मौलवी अब्दुल्लाह जान साहब ने जिनको इस ख़ानदान से बड़ा गहरा ताल्लुक़ था, मौलाना याह्या साहब रह० से एक रोज़ कहा कि ज़करिया को क़ुरआन याद नहीं है। मौलाना ने बड़े इत्मिनान से फ़रमाया कि हाँ इसे क़ुरआन बिल्कुल याद नहीं। उन्होंने हैरान होकर कहा कि क्या बात है? हज़रत वालिद साहब रह० ने फ़रमाया कि इसे उम्र करना ही क्या है, क़ुरआन ही पढ़ना है याद हो जाएगा।

अकाबिर से मुहब्बत

मौलाना याह्या साहब रह० की तर्बियत के निराले अंदाज़ और उनकी सलामत फ़हम के अजीब वाक़िआत हैं। एक बार जब शेख़ की फ़िक़ह की तालीम शुरू हुई तो उसकी शुरूआत के मौक़े पर मौलाना ने शेख़ रह० को बीस रुपए ईनाम के तौर पर अता फ़रमाए। फिर इर्शाद फ़रमाया कि इनका क्या करोगे? शेख़ ने जवाब दिया कि मेरा जी चाहता है कि चारों अकाबिर हज़रत मौलाना ख़लील अहमद सहारनपुरी, हज़रत मदनी रह०, हज़रत मौलाना शाह अब्दुल क़ादिर साहब रायपुरी रह० और हज़रत अक़्दस थानवी रह० की ख़िदमत में पाँच-पाँच रुपए की मिठाई पेश करूं। बड़ी मुसर्रत के साथ पसन्द फ़रमाया। फिर पूछा कि कौन सी मिठाई? शेख़ ने मुतफ़र्रिक़ मिठाईयों के नाम लिए।

फ़रमाया, ला हवला वला क़ुव्वत, इनमें से कौन सा ऐसा है जो मिठाई खाएगा? तुम्हारी ख़ातिर एक आधा टुकड़ा चख लेंगे और बाक़ी सब दूसरों की नज़्र हो जाएगी। ऐसा करो पाँच रुपए की मिस्री ख़रीदकर हज़रत की ख़िदमत में पेश कर दो, एक महीने तक तुम्हारी ही मिसरी की चाय नोश फ़रमाएंगे। चुनाँचे तामील की गई। बाक़ी तीनों अकाबिर की ख़िदमत में पाँच पाँच रुपए नक़द मुख़्तलिफ़ अवक़ात में पेश किए गए। उन सब हज़रात ने बड़ी मुसर्रत से क़ुबूल फ़रमाकर दुआएं दीं।

तालीमी मशग़ूली

हज़रत शेखुल हदीस रह० फ़रमाते थे कि तालिब इल्मी के दिनों में एक दफ़ा मेरा अपना जूता किसी ने उठा लिया। तक़रीबन छः माह तक मुझे दूसरा जूता ख़रीदने की ज़रूरत महसूस नहीं हुई क्योंकि इस मुद्दत में मुझे मदरसे से बाहर क़दम निकालने की नौबत नहीं आई।

मदरसे ही की मस्जिद में जुमा होता था और मदरसे के बैतुलख़ला में एक दो जूते जो किसी के पुराने हो जाते, वहाँ रख दिए जाते थे जो अभी तक दस्तूर चला आ रहा है। बैतुलख़ला के लिए वही पुराने जूते इस्तेमाल कर लेता था। मुझे किसी भी और ज़रूरत के वास्ते मदरसे के दरवाज़े से न तो बाहर क़दम रखना पड़ा और न ही जूते की ज़रूरत हुई।

दुनिया से बेरग़बती

हज़रत शेखुल हदीस रह० को चटगाम या ढाका के मदरसे

आलिया से शेख़ुल हदीस के मंसब की पेशकश हुई। जिसकी बारह सौ रुपए तंख़्वाह थी और सिर्फ़ तिर्मिज़ी शरीफ़ और बुख़ारी शरीफ़ पढ़ानी थी। पहले ख़त आया, फिर अर्जेन्ट तार आया कि ख़त के जवाब का सख़्त इंतिज़ार है। शेख़ फ़रमाते हैं कि तार के जवाब में तो मैंने सिर्फ़ यह लिख दिया कि माज़ूरी है। ख़त में तफ़्सील से लिखा कि जिन दोस्तों ने मेरा नाम आपको दिया है, उन्होंने महज़ हुस्ने ज़न से काम लेकर ग़लत रिवायत पहुँचाई हैं। यह नाकारा इसका अहल नहीं है।

ईसार की इंतिहा

हज़रत रह० के ईसार का एक हैरतअंगेज़ वाक़िआ जो इस ज़माने के लिए लिहाज़ से नाक़ाबिले क़यास है और बहुत से लोगों के लिए नाक़ाबिले यक़ीन होगा, वह यह है कि एक ऐसे बुज़ुर्ग आलिम के इंतिक़ाल पर कि जिनके साथ मिलकर हज़रत शेख़ रह० ने बहुत अरसे काम किया था जिनसे कुछ शागिर्दी का रिश्ता भी था, जब उनके तर्के के तक़्सीम के वक़्त और क़र्ज़ की अदाएगी के लिए उनके वारिसीन और ताल्लुक़ वाले जमा हुए तो वारिसों ने क़र्ज़ की अदाएगी का ज़िम्मा लेने से जो ग़ालेबन पाँच हज़ार की मिक़्दार में था, साफ़ मअज़रत कर दी। शेख़ ने बेतकल्लुफ़ उसको अपने ज़िम्मे ले लिया और अदा फ़रमा दिया।

मज्लिसे शे'र व सुख़न

हज़रत का शायरी और अदब का ज़ौक़ निहायत पाकीज़ा और लतीफ़ था। एक वाक़िआ बयान फ़रमाते हैं कि एक बार जवानी

के शुरू में एक दूसरे क़स्बे में रात को जाना हुआ। वहाँ कुछ बेतकल्लुफ़ दोस्त जमा थे। वहाँ ईशा के बाद शेरबाज़ी शुरू हो गई जो उस ज़माने के मुहज़्ज़िब, ज़िंदा दिल नौजवानों और क़स्बों के शरीफ़ लोगों का महबूब और मुफ़ीद मशग़ला था। इसमें ऐसा डूबे कि कुछ पता न चला कि कितनी रात चली गई। अचानक अज़ान की आवाज़ आई तो ख़्याल हुआ कि किसी ने बेवक़्त अज़ान कह दी। अभी तो बैठे ही थे। तहक़ीक़ करने पर मालूम हुआ कि सुबह सादिक़ हो गई और यह फ़ज्र की ही अज़ान थी।

तसनीफ़ व तालीफ़ का ज़ौक़

दर्स व तदरीस में मशग़ूली, ज़िक्र व नवाफ़िल की यकसूई, मेहमानों की कसरत और आने-जाने वालों की भीड़ के बावजूद शेख़ की तबियत में शुरू से ही किताबें लिखने की लगन और जब पहली दफ़ा मिश्कात पढ़ा रहे थे तो 22 रबिउल अव्वल की शब में 12 बजे हज्जतुल विदा पर लिखना शुरू किया और एक दिन डेढ़ रात में शंब्बा (सनीचर) की सुबह को पूरा कर लिया।

माल से दिली अलैहिदगी

हज़रत शेख़ रह० फ़रमाते हैं कि मेरी उम्र तीन चार साल की थी, अभी अच्छी तरह से चलना भी नहीं सीखा था, सारा मंज़र ख़ूब याद है और ऐसी बातें ज़हन से उतरती नहीं। मेरी वालिदा रह० को मुझ से इश्क़ था। माँओं को बेटों से मुहब्बत तो हुआ ही करती है मगर जितनी मुहब्बत उनको मुझ से थी, अल्लाह उनको बुलन्द दर्जात अता फ़रमाए। उस वक़्त उन्होंने मेरे लिए एक बहुत ख़ूबसूरत छोटा सा तकिया सिया था। वह एक बालिश्त चौड़ा और

डेढ़ बालिश्त लंबा था। उसकी हैय्यत भी कभी नहीं भूलूंगा। उसके ऊपर गोटा, ठप्पा, गोखरू, किरन वग़ैरह सभी जड़ा हुआ था। नीचे लाल क़न्द का गिलाफ़ और उसके ऊपर सफ़ेद जाली का झालर बहुत ही ख़ुशनुमा लगता था। वह मुझे इतना महबूब था कि बजाए सर के नीचे रखने के उसे मैं अपने सीने के ऊपर रखता था। कभी उसको प्यार करता, कभी सीने से चिमटाया करता। वालिद साहब ने आवाज़ देकर फ़रमाया कि ज़करिया! मुझे तकिया दे दो। मुझे बाप वाली मुहब्बत ने जोश मारा और अपने नज़दीक इंतिहाई ईसार और गोया दिल पेश कर देने की नीयत से मैंने कहा, "मैं अपना तकिया ले आऊँ?" फ़रमाया, "इधर आओ।" मैं इंतिहाई ज़ौक़ व शौक़ में कि वालिद साहब अब्बा जान इस नियाज़मंदी और सआदतमंदी पर बहुत ख़ुश होंगे, दौड़ा हुआ गया। उन्होंने बाएं हाथ से मेरे दोनों हाथ पकड़े और दाहिने हाथ से मुँह पर ऐसा ज़ोर से थप्पड़ रसीद किया कि आज तक उसकी लज़्ज़त नहीं भूला और मरते वक़्त तक उम्मीद नहीं कि भूलूंगा और यूँ फ़रमाया कि "अभी से बाप के माल पर यूँ कहता है कि अपना लाऊँ, कुछ कमाकर ही कहना अपना लाऊँ।" अल्लाह का ही फ़ज़ल व करम है और महज़ उसका ही लुत्फ़ व एहसान हैं कि उसके बाद जब भी यह वाक़िआ याद आ जाता है तो दिल में यह मज़मून पुख़्ता होता चला जाता है कि अपना तो इस दुनिया में कोई माल नहीं है और अल्लाह का शुक्र है कि दिन-ब-दिन यह मज़मून पुख़्ता होता जा रहा है।

तबलीग़ी अहबाब से मुहब्बत

हज़रत शेख़ुल हदीस रह० तबलीग़ी जमाअतों और दूसरे

मेहमानों की ख़ातिर में ज़र्रा बराबर फ़र्क़ नहीं आने देते थे। हर एक की चाय और खाने का ख़्याल रखना और हर एक से निहायत तपाक से मिलना आपका खुसूसी जौहर था। एक बार एक तबलीग़ी भाई ने मुसाफ़ा किया और दुआ के लिए अर्ज़ किया तो फ़रमाया, आप लोग बड़ा काम कर रहे हैं, दीन के लिए इधर-उधर मारे-मारे फिरते हैं, मेरा क्या है मैं एक ही जगह बैठा रहता हूँ, आप लोग मेरे लिए दुआ करें।

एक बार एक तबलीग़ी भाई ने मुहब्बत से दो रुपए पेश किए। आपने हाथ खींच लिया और फ़रमाया, हर्गिज़ नहीं। आप हज़रात अल्लाह की राह में निकलते हैं, मुझे ही आप हज़रात की मदद करना चाहिए न यह कि आप मेरी मदद करें। मैं आप हज़रात की कुछ ख़िदमत नहीं कर पाता।

तक़्वे की मिसाल

हज़रत शेखुल हदीस रह० ने खुद अपने वालिद माजिद रह० के बारे में लिखा है कि मेरे वालिद साहब रह० के ज़माने में मदरसे का मतबख़ (रसोईखाना) जारी नहीं हुआ था। मदरसे के क़रीब किसी खाना पकाने वाले की दुकान थी। घरवालों के न होने के ज़माने में जामा मस्जिद के क़रीब की एक दुकान से खाना आया करता था। सर्दी के ज़माने में वहाँ से आते आते खुसूसन शाम को खाना ठंडा हो जाता था तो सालन के बर्तन को मदरसे की मस्जिद के हमाम के सामने रखवा देते थे। उसकी तपिश से वह खाना थोड़ी देर में गर्म हो जाता था तो यह फ़रमाकर दो तीन रुपए हर माह चंदे में दाख़िल फ़रमाया करते थे कि मदरसे की आग से नफ़ा उठाया है।

तसव्वुफ़ व सुलूक की हक़ीक़त

एक बार हज़रत शेख़ुल हदीस रह० ऊपर अपने कमरे में निहायत मश्ग़ूल थे। मौलवी नसीर ने ऊपर जाकर कहा कि रईस अहरार आए हैं। रायपूर जा रहे हैं, सिर्फ़ मुसाफ़ा करना है। हज़रत शेख़ ने फ़रमाया जल्दी बुला दें। मरहूम ऊपर चढ़े और ज़ीने पर चढ़ते ही सलाम के बाद मुसाफ़े के लिए हाथ बढ़ाकर कहा, रायपूर जा रहा हूँ और एक सवाल आपसे करके जा रहा हूँ। परसों सुबह ही वापसी है, इसका जवाब वापसी में लूँगा। सवाल यह है कि तसव्वुफ़ क्या बला है? इसकी हक़ीक़त क्या है? शेख़ुल हदीस रह० ने मुसाफ़ा करते-करते जवाब दिया "सिर्फ़ तस्हीह नीयत, इसके सिवा कुछ नहीं। जिसकी इब्तिदा ﴿انما الاعمال بالنيات﴾ (अमल का मदार नीयत पर है) से होती है और इंतिहा ﴿ان تعبد الله كانك تراه﴾ (अल्लाह की इबादत ऐसे कर कि अल्लाह तआला देख रहे हैं) है। इसी को निस्बत कहते हैं, इसी को याद्दाश्त कहते हैं और इसी को हुज़ूरी कहते हैं—

حضوری گر ہمی از و غافل مشو حافظ
متی ما تلق من تھوی دع الدنیا و اہلھا

हज़रत शेख़ ने कहा, मौलवी साहब! सारे पापड़ इसी के लिए बेले जाते हैं। ज़िक्र बिल जहर भी और मुजाहिदा व मुराक़बा भी इसी वास्ते है और जिसको अल्लाह तआला किसी भी तरह यह दौलत अता कर दे उसको कहीं और जाने की ज़रूरत नहीं।

मुर्शिद की तंबीह

हज़रत शेख़ुलहदीस मौलाना ज़करिया रह० फ़रमाते हैं कि

मदीना मुनव्वरा के क़याम में जब यह नाकारा "बज़्हुल" लिखा करता था और सुबह की चाय के बाद से लगातार छः घंटे हज़रत की ख़िदमत में हाज़िरी होती तो एक बार यह नाबकार, नापाक, स्याहकार बज़्हुल लिखते हुए न मालूम किन-किन ख़ुराफ़ात और वाही तबाही ख़्यालात में डूबा हुआ था। मेरे हज़रत रह० ने इबारत लिखवाते हुए निहायत तुन्द व तेज़ लहजे में इर्शाद फ़रमाया, ﴿من بتو مشغول وتو با عمرو زید﴾ "मैं तुम में मशग़ूल हूँ और तुम्हारा ध्यान कहीं और है।" हज़रत के इस इर्शाद पर पसीना-पसीना हो गया और मेरा कुर्ता और पाजामा तक भीग गया।

हज़रत अक़्दस थानवी रह० का इर्शाद

हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अली साहब थानवी रह० के बारे में हज़रत शेख़ रह० इर्शाद फ़रमाते हैं कि मुझे इसका बड़ा क़लक़ रहता था कि थानाभवन में रहते हुए भी हज़रत की ख़िदमत में हाज़िरी का वक़्त नहीं मिलता था। मैंने एक बार बहुत क़लक़ के साथ हज़रत थानवी रह० से अर्ज़ किया कि लोग बहुत दूर-दूर से हाज़िर होते हैं लेकिन यह नाकारा यहाँ रहकर भी ख़िदमत में हाज़िर नहीं हो सकता। हज़रत थानवी रह० ने ऐसा जवाब मरहमत फ़रमाया कि मेरी मुसर्रत के लिए मरने तक काफ़ी है। हज़रत ने फ़रमाया, मौलवी साहब! इसका आप बिल्कुल फ़िक्र न करें आप अगरचे मेरी मज्लिस में नहीं होते मगर मैं ज़ोहर से अस्र तक आप ही की मज्लिस में रहता हूँ। मैं बार-बार आपको देखता रहता हूँ और रश्क करता हूँ कि काम तो यूँ होता है। मैं आपको ज़ोहर से अस्र तक पन्नों से सर उठाते नहीं देखता।

मिश्कात शरीफ़ की शुरूआत

हज़रत शेख़ अपनी मिश्कात की शुरूआत का क़िस्सा ख़ुद ही बयान फ़रमाते हैं कि मुहर्रम 1332 हि० को ज़ोहर की नमाज़ के बाद मेरी मिश्कात शरीफ़ शुरू हुई। वालिद साहब रह० ने ख़ुद ज़ोहर की इमामत भी की थी क्योंकि उस ज़माने में नमाज़ आप ही पढ़ाते थे। नमाज़ के बाद ग़ुस्ल फ़रमाया और दो रकअत नफ़्ल पढ़ी। फिर मेरी तरफ़ मुतवज्जोह होकर मिश्कात शरीफ़ की बिस्मिल्लाह और ख़ुत्बा मुझसे पढ़वाया और उसके बाद क़िबले की तरफ़ मुतवज्जेह होकर पंद्रह बीस मिनट दुआएं मांगी। लेकिन मैं उनके साथ उस वक़्त सिर्फ़ एक ही दुआ करता रहा कि या अल्लाह! हदीस पाक का सिलसिला बहुत देर से शुरू हुआ है, इसके साथ मुझे मरने तक वाबस्ता रखिए। अल्लाह तआला ने मेरी नापाकियों, गंदगियों और गुनाहों के बावजूद ऐसी क़ुबूलियत अता फ़रमाई कि 1332 हि० से 1390 हि० तक अल्लाह के फ़ज़्ल से कोई ऐसा ज़माना नहीं गुज़रा कि जिसमें हदीस पाक का मशग़ला न रहा हो।

अकाबिर की राहत का ख़्याल

एक बार सहारनपुर में तबलीग़ी जमाअत का इज्तिमा हो रहा था तो हज़रत शेख़ ने हज़रत रायपुरी रह० से फ़रमाया कि हज़रत जी जून का महीना है, गर्मी की भी शिद्दत है और हमारे हाँ राहत की कोई जगह नहीं और ये तबलीग़ वाले रात को जलसे में थोड़ी देर के लिए (बरकत के वास्ते) शिरकत की ख़्वाहिश और दरख़्वास्त मुझसे कराएंगे। परसों जलसा ख़त्म हो जाएगा। ज़ोहर

के वक़्त मैं और अज़ीज़ यूसुफ़ रायपुर हाज़िर होंगे। दो दिन क़याम करेंगे। दो दिन तक रायपुर से हर आने वाले से सुनता रहा कि हज़रत अक़्दस ने ख़ूब दुआएं दीं और हर आने वाले से फ़रमाते कि मेरा तो (सहारनपुर में) दो दिन क़याम का इरादा था मगर शेख़ न माना। मुहब्बत इसी का नाम है। मेरी राहत को अपनी ख़्वाहिश पर ग़ालिब करके रखा। अल्लाह तआला बहुत बुलन्द दर्जात अता फ़रमाए। अल्लाह तआला इनको भी ऐसी राहत दे।

अकाबिर का तक़्वा

मज़ाहिरउलूम का जब सालाना जलसा होता तो अकाबिर मुदर्रिसीन व मुलाज़िमीन में से किसी को जलसे का खाना खाते या चाय पीते नहीं देखा जाता था। जुमला मुदर्रिसीन हज़रात वक़्त मिलने पर अपना खाना खाते थे। अलबत्ता हज़रत मौलाना ख़लील अहमद साहब सहारनपुरी रह० मेहमानों के साथ खाते थे लेकिन हज़रत के मकान से दस बारह आदमियों का खाना आता था जो मुतफ़र्रिक़ मेहमानों के सामने रख दिया जाता था। उसी में हज़रत नोश फ़रमाते थे। मौलाना इनायत इलाही मोहतमिम मदरसा रात व दिन मदरसे के अंदर रहते थे। आप ज़ोहर के वक़्त और रात को बारह बजे अपने दफ़्तर के कोने में बैठकर अपना ठंडा और मामूली खाना तन्हा खाते थे।

मौलाना ज़हूरुल हक़ साहब मुदर्रिस उस ज़माने में मतबख़ के मुन्तज़िम होते थे लेकिन सालन चावल वग़ैरह का नमक किसी तालिब इल्म को चखवाते थे, ख़ुद नहीं चखते थे। जब वक़्त

मिलता अपने घर जाकर खाना खाते थे। इन सब एहतियातों के बावजूद हज़रत सहारनपुरी रह० जब मुस्तक़िल क़याम के इरादे से हिजाज़ तशरीफ़ ले गए तो अपना ज़ाती कुबुबख़ाना यह फ़रमाकर मदरसे के लिए वक़्फ़ कर गए थे कि न मालूम मदरसे के कितने हुक़ूक़ ज़िम्मे रह गए होंगे।

आजिज़ी व इन्किसारी

शव्वाल 1333 हि० मे जब हज़रत अक़्दस सहारनपुरी हिजाज़ मुक़द्दस तवील क़याम के इरादे से जा रहे थे और कसरत से लोग बैअत हो रहे थे तो हज़रत शेख़ुल हदीस ज़करिया रह० ने उनसे बैअत होने का इरादा कर लिया आपने अपने मुरब्बी व आक़ा हज़रत सहारनपुरी रह० से दरख़्वास्त की कि मुझे बैअत फ़रमा लें। इस पर हज़रत ने इर्शाद फ़रमाया कि जब मग़रिब के बाद नफ़्लों से फ़ारिग़ हो जाऊँ तो आ जाना। उसके बाद बैअत हो गए।

हज़रत सहारनपुरी रह० ने बड़े एहतिमाम से चारों सिलसिलों में बैअत व इर्शाद की आपको इजाज़त मरहमत फ़रमाई और अपने सर से अमामा उतारकर हज़रत शेख़ुल इस्लाम मौलाना मदनी रह० के बड़े भाई हज़रत मौलाना सैय्यद अहमद फ़ैज़ाबादी को दिया ताकि वह हज़रत शेख़ के सर पर बांध दें। जब वह अमामा सर पर बांधा गया तो शेख़ की रोने की शिद्दत से चीख़ें निकल गयीं। हज़रत पीर व मुर्शिद भी आबदीदा हो गए। हज़रत शाह अब्दुलक़ादिर रह० उस मौक़े पर मौजूद थे और उनको इस पूरे वाक़िए की इत्तिला भी थी। हिन्दुस्तान में शोहरत हो जाने के

ख़ौफ़ से हज़रत शेख़ ने हज़रत रायपुरी रह० के पाँव पकड़े और उनसे इस बात का अहद लेना चाहा कि वह हिन्दुस्तान पहुँचकर इस इजाज़त व ख़िलाफ़त की इत्तिला न करें मगर हज़रत रायपुरी रह० इस हक़ीक़त के छुपानें पर तैयार न हो सके और आपके ज़रिए उसकी शोहरत हो गई। फिर भी हज़रत शेख़ुल हदीस ने अरसे तक बैअत लेने से किनारा ही रखा।

फ़क़्र व फ़ाक़ा

हज़रत शेख़ुल हदीस रह० बयान फ़रमाते हैं कि हमारे अकाबिर व असलाफ़ ने कैसे ग़रीबी और फ़क़्र और सब्र व शुक्र के साथ ज़िंदगी गुज़ारी। इस सिलसिले में अपने चचाजान हज़रत मौलाना इलयास साहब रह० के बारे में फ़रमाते हैं कि मेरे चचाजान रह० ने मुझे एक बार कार्ड लिखा कि कई दिन से तुमको एक ज़रूरी ख़त लिखने का तक़ाज़ा था मगर मेरे पास कोई पैसा नहीं था। क़र्ज़ लेने को दिल न चाहा। आज अल्लाह ने पैसे अता फ़रमाए तो तुमको ख़त लिख रहा हूँ।

दर्स हदीस की पाबन्दी

हज़रत शेख़ुल हदीस बैअत की मशग़ूली व दिलसोज़ी और निशात व सरगर्मी के साथ हदीस का दर्स दिया करते थे। आपके एक शागिर्द फ़रमाते हैं एक बार मूसलाधार बारिश हो रही थी। तमाम सड़कों पर घुटनों-घुटनों पानी भर रहा था। मैं सोच रहा था कि बारिश का ज़ोर ख़त्म हो तो सबक़ में हाज़िर हूँ। हज़रत मौलाना असदुल्लाह उस वक़्त दफ़्तर निज़ामत में तशरीफ़ रखते

थे। मैंने उनसे दर्याफ़्त किया कि क्या हज़रत शेख़ुल हदीस आज भी दर्स में तशरीफ़ ले गए होंगे? उन्होंने फ़रमाया, इस तूफ़ानी बारिश में बज़ाहिर तो मुश्किल महसूस होता है। बाहर जाकर मालूम कर लो। चुनाँचे मैंने मदरसे के दरवाज़े पर आकर साएबान में बैठे हुए फल बेचने वालों से पूछा। पूछने पर मालूम हुआ कि हज़रत तो देर हुई तशरीफ़ ले गए। जबकि हज़रत के मकान और दारुलहदीस का फ़ासला ज़्यादा है। सड़क पर पानी बह रहा था। मैं भी दारुलहदीस में हाज़िर हुआ। वहाँ बिजली ग़ायब थी और अंधेरा छाया हुआ था मगर दर्स शुरू हो चुका था। मैं चुपके से बैठ गया कि कहीं शेख़ की नज़र पड़ जाए मगर आपने देख लिया और फ़रमाया, "जानते हो, कैसे आया हूँ? अपने मकान से रवाना हुआ तो एक हाथ में बुख़ारी शरीफ़ का पारा और दूसरे हाथ में छतरी थी। जूते हाथ में नहीं ले सकता था। आधे रास्ते तक आया तो एक रिक्शे वाला मिल गया। उसे ज़ोर देकर मुझे रिक्शे में सवार कर लिया और यहाँ पहुँचाने के लिए बाद मेरे पैरों को धोया और पाजामा के निचले हिस्से को धोया। यह नाकारा सुनकर पानी-पानी हो गया।

हज़रत मौलाना अशरफ़ थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली साहब थानवी रह० की विलादत 5 रबिउलस्सानी 1280 हि० को हुई। ख़ानदानी एतिबार से आप फ़ारूक़ी नस्ल शेख़ हैं और एक बहुत बड़े रईस शेख़ अब्दुलहक़

साहब थानवी रह० के चश्म व चिराग़ हैं। आपकी परवरिश बहुत नाज़ व नेमत में हुई और क़ुदरत ने आपको अजीब मिज़ाज से नवाज़ा था। अरबी की इब्तिदाई किताबें मौलाना फ़तेह मुहम्मद साहब से थानाभवन रहकर पढ़ीं और 1295 हि० में आप तालीम हासिल करने के लिए दारुलउलूम देवबंद तशरीफ़ ले गए और 1301 हि० में फ़ारिग़ हुए। आपके मुरब्बी और शफ़ीक़ उस्तादों में हज़रत मौलाना मुहम्मद याक़ूब साहब नानौतवी रह०, मौलाना क़ासिम साहब नानौतवी रह०, हज़रत शेख़ुल हिन्द मौलाना महमूदुल हसन साहब रह० और मौलाना सैय्यद अहमद साहब वग़ैरह शामिल हैं।

दारुलउलूम देवबंद से फ़ारिग़ होने के बाद आप 1301 हि० में कानपूर तशरीफ़ ले गए और मदरसा फ़ैज़ेआम में पढ़ाना शुरू किया। चौदह साल तक वहाँ दर्स व तदरीस, इफ़्ता और वाअज़ व तबलीग़ की ख़िदमत अंजाम देते रहे। 1315 हि० में आप कानपूर से थानाभवन वापस तशरीफ़ लाए औ हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह० की ख़ानक़ाह को आबाद किया और एक मदरसा अशरफ़िया क़ायम किया जहाँ आख़िर दम तक दीनी और इल्मी और रूहानी ख़िदमत अंजाम देते रहे।

उलूमे ज़ाहिरी से फ़ारिग़ होने के बाद आपके दिल में तज़्किए बातिन की तड़प पैदा हुई। आप इब्तिदा में हज़रत गंगोही रह० से बैअत होना चाहते थे। मगर जब आपके वालिद माजिद हज पर तशरीफ़ ले गए तो आप भी साथ थे और मक्का मुअज़्ज़मा पहुँचकर हज़रत शेख़ुल अरब व अजम हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर

मक्की रह० के ख़ादिमों में दाख़िल हो गए और शर्फ़े बैअत से मुशर्रफ़ हुए। और उनके तलक़ीन किए हुए ज़िक्र व फ़िक्र में मशग़ूल हो गए। उनके ज़ौक़ व शौक़ और मिज़ाज को देखते हुए हज़रत हाजी साहब रह० फ़रमाया करते थे बस मियाँ अशरफ़ अली पूरे मेरे तरीक़े पर हैं। और जब हज़रत हकीमुलउम्मत रह० की कोई तहरीर या तक़रीर सुनने का इत्तिफ़ाक़ होता तो ख़ुश होकर फ़रमाते, जज़ाकुमुल्लाह तुमने मेरे सीने की शरह कर दी।

यूँ तो आसमान की आँखों ने बड़ी-बड़ी आलिम फ़ाज़िल हस्तियाँ, बड़े-बड़े आबिद व ज़ाहिद इंसान और बड़े-बड़े मुत्तक़ी व तहज्जुद गुज़ार बंदे इस ज़मीन के ख़ित्ते पर देखें होंगे मगर शरिअत व तरीक़त का ऐसा हसीन संगम शायद किसी ने देखा हो जैसे आप थे। कोई सिर्फ़ आलिम होता है और तरीक़त से कोरा, कोई महज़ सूफ़ी होता है और उलूमे शरिअत से नाअशना। हज़रत हकीमुलउम्मत रह० एक ही वक़्त में सूफ़ी भी थे, आलिम बेबदल, अपने ज़माने के मौलाना रोम रह० और इमाम राज़ी रह० भी। आपने जिस तरह शरिअत ज़ाहिरा को जिहालत व गुमराही के अंधेरों से निकालने का काम किया इसी तरह तरीक़कत बातिनी को भी भूल भुलैय्यों से निजात दिलाई। दरसअल हज़रत थानवी रह० के यहाँ तरीक़त का ख़ुलासा यही था कि इंसान बनो और आदमियत सीखो। चुनाँचे आप फ़रमाते थे कि भाई! मैं अपनी महफ़िल बुज़ुर्गों की महफ़िल नहीं बनाना चाहता, आदमियों की महफ़िल बनाना चाहता हूँ।

अल्लाह तआला ने हज़रत थानवी रह० को दौरे हाज़िर के मुजद्दिद के मंसब पर बिठाया था। इसलिए हज़रत थानवी रह०

ने मुसलमानों के हर शोबे में बढ़ती हुई गिरावट को देखकर सैंकड़ों हज़ारों मील के सफ़र तय करके अपने बयानात, मलफ़ूज़ात और आम मज्लिसों के ज़रिए लोगों को अपनी इस्लाह की तरफ़ मुतवज्जेह किया। वहाँ आपने अपनी अज़ीम किताबों के ज़रिए आम व ख़ास की रहबरी फ़रमाई और उनको सही दीन से आशना किया। नश्र व इशाअत के इस दौर में हज़रत थानवी रह० का यह एक अज़ीम और इम्तियाज़ी कारनामा है कि डेढ़ हज़ार से ज़्यादा किताबें आपके क़लम से लिखी गयीं। हर इल्म व फ़न पर इस क़द्र किताबें लिखीं कि बिला मुबालग़े कहा जा सकता है कि पहले और बाद के लोगों में उसकी मिसाल मिलना मुश्किल है।

आप निहायत लतीफ़ मिज़ाज और उसूल व ज़ाब्ते के पाबन्द थे। मिज़ाज के एतिबार आपको दूसरे मिर्ज़ा मज़हर जाने जानाँ कहा जा सकता है। हक़ीक़त यह है कि अगर आप उसूल और क़ायदे के पाबन्द न होते तो इस्लाहुल मुस्लिमीन के इतने अज़ीम कारनामे और हज़ारों किताबों के लिखने काम हर्गिज़ पाए तक्मील तक न पहुँचा सकते थे। बिला शुब्ह आप हकीमुलउम्मत और मुजद्दिदे मिल्लत थे और आपने सारी ज़िंदगी ख़िदमते इस्लाम में गुज़ारी। आप 16 रजब 1362 हि० मुताबिक़ 20, जुलाई 1943 ई० को इस दारे फ़ानी से रहलत फ़रमा गए। आपकी उम्र 83 साल थी।

तालीम व तहज़ीब

हज़रत थानवी रह० नफ़्सियात के बड़े माहिर थे और नई तहज़ीब के मुद्दइयों से मिनटों में बदतहज़ीबी का इकरार लेने में

अपना बदल न रखते थे। आपकी नागवारी, नाराज़ी और सख़्ती अपनी ज़ात के लिए नहीं होती थी बल्कि मुनासिब मौक़े पर तालीम व तहज़ीब के लिए होती थी और आप दावे से फ़रमाते थे कि जिसको इस्लामी तहज़ीब के मुक़ाबले में अपनी जदीद तहज़ीब का दावा हो कुछ दिन मेरे पास रहकर देख ले। अल्लाह तआला के भरोसे पर कहता हूँ कि इन्शाअल्लाह खुद ही उसके मुँह से कहलवा दूंगा कि वाक़ई हम बदतहज़ीब हैं और हक़ीक़ी तहज़ीब वही है जिसकी शरिअत मुक़द्दसा ने तालीम फ़रमाई।

एक दफ़ा मुज़फ़्फ़रनगर के सफ़र में आपको एक ऐसे ही रईस से पाला पड़ा जो बड़े बेबाक, ज़बान दराज़ यहाँ तक कि बड़े-बड़े हाकिमों से भी न डरने वाले और उनके सामने न झुकने वाले थे। चूँकि उनकी आदत ही ऐसी बन चुकी थी। इसलिए उन्होंने कोताह अंदेशी से हज़रत से भी बेढंगी बातें शुरू कर दीं जिससे आपको बहुत तकलीफ़ हुई। आपने उन्हें मुनासिब अल्फ़ाज़ में तंबीह भी फ़रमाई मगर रियासत के नशे में वह कुछ न समझ सके और नौबत नागवारी तक पहुँच गई। हज़रत ने उन्हें मज्लिस से उठ जाने के लिए फ़रमाया मगर वह बैठे रहे। इस पर हज़रत ने फ़रमाया कि अगर आप नहीं उठते तो मैं उठ जाता हूँ। मैं ऐसे आदमी के साथ हमनशीनी गवारा नहीं करता। बस आपका इतना फ़रमाना था कि उनकी पर ऐसी हैबत तारी हुई कि हाथ जोड़कर कहने लगे, हज़रत! आप बैठे रहें में खुद ही चला जाता हूँ और उठकर चले गए। बाद में उन्होंने हाफ़िज़ सग़ीर अहमद साहब से कहा कि मेरा तो उम्र भर के लिए ईलाज हो गया। मैं उलमा और मुलाज़िमों को बहुत ज़लील समझा करता था। अब हर एक

मौलवी और मुल्ला का अदब व लिहाज़ करता हूँ। मैं बड़े-बड़े हाकिमों से भी नहीं दबता था, उस रोज़ मौलाना का इतना रौब पड़ा कि डांट पड़ने के बाद एक लफ़्ज़ भी मेरे मुँह से निकल ही न सका।

एक नवाब साहब का इक़रारे बदतहज़ीबी

एक ख़ानदानी, हुकूमत वाले, असरदार, रईस और नवाब ने मुबलिग़ दो सौ रुपए मदरसा थानाभवन की इमदाद के लिए भेजे जो किसी चंदे के बग़ैर अल्लाह के तवक्कुल पर हज़रत की सरपरस्ती और निगरानी में ख़ास ख़ानक़ाह के अंदर क़ायम था। इस अतिए के साथ उन्होंने तशरीफ़ लाने की दरख़्वास्त की। हज़रत ने यह लिखकर रुपए वापस कर दिए कि अगर इस रुपए के साथ बुलाने की दरख़्वास्त न होती तो मदरसे के लिए रुपए ले लिए जाते। अब यह गुमान पैदा होता है कि शायद मुझको मुतास्सिर करने के लिए यह रक़म भेजी गई है। आपकी यह ग़र्ज़ न सही लेकिन मेरे ऊपर तो तबई तौर पर इसका यही असर होगा कि मैं आज़ादी के साथ अपने आने न आने के बारे में राय क़ायम न कर सकूंगा क्योंकि इंकार करते हुए शर्म आएगी।

नवाब साहब बड़े समझदार और दुनिया देखे हुए थे। फ़ौरन समझ गए कि अतिया और दरख़्वास्त इकठ्ठी न भेजनी थी। चुनाँचे माफ़ीनामा लिखा कि आपके तंबीह करने से अब यह मालूम हुआ कि वाक़ई मुझसे यह सख़्त बदतहज़ीबी हुई। मैं अब आपके बुलाने की दरख़्वास्त वापस लेता हूँ और रुपया दोबारा भेजता हूँ। बराहेकरम मदरसे के लिए क़ुबूल फ़रमा लिया जाए।

हज़रत ने बखुशी क़ुबूल फ़रमाते हुए नवाब साहब को लिखा कि अभी तक आप मेरी मुलाक़ात के मुश्ताक़ थे और अब आपकी तहज़ीब व शराफ़त ने खुद मुझको आपकी मुलाक़ात का मुश्ताक़ बना दिया। कुछ मुद्दत बाद आप इस शर्त पर नवाब साहब के हाँ तश्रीफ़ ले गए कि किसी क़िस्म का हदिया पेश न किया जाए।

एक रईस औरत का ईलाज

हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि को सफ़र की हालत में मुख़्तलिफ़ मिज़ाज लोगों से वास्ता पड़ता था इसलिए हर एक के मर्ज़ का ईलाजे रूहानी भी मुख़्तलिफ़ होता था। एक दीनदार रईस औरत ने दारुल तलबा मदरसा मज़ाहिरउलूम सहारनपुर तैयार कराया और उसके इफ़्तेताही जलसे की तारीख़ मुक़र्रर करके लिखा कि अपने मदरसे के सरपरस्तों और मेंबरों को इत्तिला कर दें कि इस तारीख़ पर मदरसे आ जाएं। मोहतमिम साहब ने इस इत्तिला के साथ हज़रत को भी शिरकत की दावत दी तो आपने शिरकत करने से इंकार फ़रमा दिया कि उनको इस हाकिमाना लहजे से बुलाने का कोई हक़ हासिल नहीं। इस तरह हुक्मनामा भेजकर बुलाना ख़िलाफ़े तहज़ीब है। यह भी कोई बुलाने का तरीक़ा है, मैं नहीं आऊँगा। क्या वह किसी रईस को ऐसे दावत दे सकते थीं? मोहतमिम साहब ने मदरसे की मसलेहत की वजह से बात संभालते हुए इसरार किया कि यह उन रईसा का अमल नहीं उनके मीर मुंशी का है। इस पर हज़रत ने लिखा फिर भी शिकायत है कि इस मामले को बिल्कुल मीर मुंशी पर क्यों छोड़

दिया, ख़ुद मसव्वदा देखकर मंज़ूरी देतीं, जिस तरह हुक्काम के दावतनामों में एहतिमाम किया जाता है। उनके बुलाने पर तो मैं अब नहीं आऊँगा अलबत्ता आप अगर हुक्म दें तो जूतियाँ चटख़ाता हुआ सर के बल हाज़िर हूँगा मगर रईसा से नहीं मिलूंगा न उससे कोई बातचीत वास्ते या बिना वास्ते के करूंगा।

मोहतमिम साहब ने इस शर्त के साथ शिरकत को भी ग़नीमत समझा और हज़रत को तशरीफ़ लाने के लिए लिखा। चुनाँचे हज़रत वहाँ तशरीफ़ ले गए। बड़ा पुरअसर वअज़ फ़रमाया जिससे रईसा भी मुतास्सिर हुई। आप वअज़ फ़रमाने के फ़ौरन बाद किसी को मिले बग़ैर यहाँ तक कि हज़रत मौलाना ख़लील अहमद साहब रह० को भी मिले बग़ैर चले आए ताकि किसी को कुछ कहने सुनने का मौक़ा ही न मिले और न ही इसरार करे। रईसा को भी इस वाक़िए का इल्म हो गया और उसने महसूस किया कि उलमा में भी ख़ुद्दार लोग होते हैं। इसलिए उन्होंने मदरसे में जो मिठाई तक़्सीम की थी उसमें से अपना हिस्सा हज़रत को स्टेशन पर यह कहला भेजा कि यह मिठाई आम तक़्सीम की नहीं ख़ुद मेरे हिस्से की है। इसलिए ज़रूर क़ुबूल फ़रमा लें। चूँकि उसको अपने अंदरूनी बीमारी का एहसास हो गया था इसलिए हज़रत ने वह मिठाई क़ुबूल फ़रमा ली। और इस तरह हज़रत ने निहायत अच्छे अंदाज़ से उलमा को हिक़ारत की नज़र से देखने वाली का ऐसा ईलाज फ़रमाया कि वह फिर उलमा की बड़ी इज़्ज़त करने लगी।

अंग्रेज़ की दावत

हज़रत की रोज़ाना की मज्लिसों में हज़रत का इर्शाद दर्ज है

कि मुझे अक्सर अंग्रेज़ों के साथ भी सफ़र करने का इत्तिफ़ाक़ हुआ है मगर कभी कोई शरीर नहीं मिला। एक बार एक दोस्त के इसरार पर कलकत्ता सेकन्ड क्लास में सवार हुआ। उस डब्बे में रेलवे का एक अंग्रेज़ अफ़सर भी सवार हुआ जिसे ऊपर के तख़्ते पर जगह मिली। कहने लगा कि हमको नीचे के तख़्ते पर थोड़ी सी जगह खिड़की की तरफ़ आप दे दें, हम को बार-बार रेलवे के इंतिज़ाम के लिए बाहर आना-जाना पड़ता है। मैंने कहा, बहुत अच्छा, हमारा कोई हरज नहीं, आप बैठ जाएं। वह बैठ गया। जब खाने का वक़्त आया मैंने उनके दोस्त के ज़रिए पूछा कि आप खाना खाएंगे? कहा, मुझको क्या उज़्र है? हमने खाना बाज़ार से ख़रीदा था जो पत्तों में था। हमने उसको भी इस ख़्याल से कि कौन बर्तनों को धोता फिरेगा, उन्हीं पत्तों में कुछ खाना रखकर दे दिया जो उसने बड़ी ख़ुशी से लेकर खा लिया। एक साहब पूछने लगे, बर्तन में खाना क्यों न दिया? मैंने कहा, क्योंकि पड़ौसी था इसलिए पड़ौस का हक़ अदा किया, एहतिराम का हक़ अदा नहीं किया क्योंकि इस्लाम से महरूम था। वह जब स्टेशन पर उतरा तो शुक्रिया अदा करते हुए कहने लगा कि आपको बहुत तकलीफ़ हुई हमारी वजह से और हमको आपकी वजह से बहुत आराम मिला। एक और रफ़ीक़े सफ़र कहने लगे, अगर आप बर्तनों में खाना खिला देते तो ज़्यादा शुक्रिया अदा करता है। मैंने कहा यह भी मुमकिन था कि शुक्रिया अदा न करता। बर्तन में खाना देते तो मुमकिन है कि वह अपने को बड़ा समझता कि हमारा एहतिराम किया गया है। फिर शुक्रिया की ज़रूरत ही क्या महसूस होती।

अल्लाह पर तवक्कल

एक सफ़र में किसी छोटे स्टेशन पर बारिश की वजह से स्टेशन मास्टर ने हकीमुलउम्मत हज़रत थानवी रह० को गोदाम में ठहरा दिया। जब रात हुई तो रेलवे के किसी मुलाज़िम को उसमें लालटेन जलाने का हुक्म भी दे दिया। हज़रत को शक हुआ कि कहीं रेलवे कंपनी की लालटेन न हो। लेकिन इस ख़्याल से मना करने में झिझक महसूस हुई कि यह हिन्दू है, दिल में कहेगा कि इस्लाम में ऐसी तंगी और सख़्ती है। इस कशमकश में दिल ही दिल में दुआ शुरू कर दी कि या अल्लाह! आप ही इस से बचाइए। उसके बाद ही बाबू ने मुलाज़िम को पुकार कर कहा कि देखो! स्टेशन की नहीं हमारी लालटेन जलाना। हज़रत ने अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया और उनसे फ़रमाया कि स्टेशन की लालटेन थोड़े ही जलने देता और अंधेरे ही में बैठा रहता।

सफ़र आख़िरत की फ़िक्र

एक बार हज़रत हकीमुल उम्मत रहमतुल्लाहि अलैहि सहारनपुर से कानपूर तशरीफ़ ले जा रहे थे। कुछ गन्ने साथ थे। उनका किराया अदा करने की ग़र्ज़ से स्टेशन पर तुलवाना चाहा मगर किसी ने न तोला बल्कि अक़ीदत में रेलवे के ग़ैर-मुस्लिम मुलाज़िमों ने भी कह दिया कि आप यूँ ही ले जाइए। हम गार्ड से कह देंगे। हज़रत रह० ने फ़रमाया, गार्ड कहाँ तक जाएगा? कहा, ग़ज़ियाबाद तक। फ़रमाया, ग़ाज़ियाबाद से आगे क्या होगा? कहा गया, यह गार्ड दूसरे गार्ड से कह देगा। हज़रत रह० ने फ़रमाया,

उसके आगे क्या होगा? कहने लगा, वह गार्ड कानपूर तक ले जाएगा और वहाँ आपका सफ़र ख़त्म हो जाएगा। फ़रमाया, नहीं वहाँ सफ़र ख़त्म न होगा एक और सफ़र आख़िरत भी है वहाँ क्या इंतिज़ाम होगा? यह सुनकर सब दंग रह गए और बहुत मुतास्सिर हुए।

मामूलात की पाबन्दी

हज़रत थानवी रह० फ़रमाते थे कि इंज़िबात अवक़ात (वक़्त की पाबन्द) जभी हो सकता है अगर अख़्लाक़ व मुरव्वत से मग़लूब न हो और हर काम को अपने वक़्त और मौक़े पर करे। और तो और हज़रत के उस्ताद मोहतरम हज़रत मौलाना महमूद हसन साहब रह० एक बार मेहमान हुए। हज़रत वाला ने राहत के सबब ज़रूरी इंतिज़ाम करके जब तसनीफ़ का वक़्त आया तो अदब के साथ अर्ज़ किया, हज़रत! मैं इस वक़्त कुछ लिखा करता हूँ अगर इजाज़त दें तो कुछ देर लिखने के बाद हाज़िर हो जाऊँगा। फ़रमाया, ज़रूर लिखो, मेरी वजह से अपना हरज न करो उस रोज़ हालाँकि हज़रत का लिखने में दिल न लगा लेकिन नाग़ा न होने दिया ताकि बेबरकती न हो। चुनाँचे थोड़ा सा लिखकर फिर ख़िदमत में हाज़िर हो गए।

तवक्कल व क़नाअत

हज़रत हकीमुलउम्मत रह० जब जामिउलउलूम कानपूर में मुदर्रिस अव्वल बनकर तश्रीफ़ ले गए तो हज़रत की तंख़्वाह

पच्चीस रुपए थी। लेकिन हज़रत रह० इसको ज़्यादा ही समझते रहे। वह ख़ुद अपने बारे में इशार्द फ़रमाते हैं कि मैं जब कभी तालिब इल्मी के ज़माने में अपनी तंख़्वाह सोचा करता था तो ज़्यादा से ज़्यादा दस रुपए सोचता था। पाँच रुपए अपनी ज़रूरतों के लिए और पाँच रुपए घर के ख़र्च के लिए। बस इससे ज़्यादा तंख़्वाह पर कभी नज़र ही नहीं जाती थी न इससे ज़्यादा का अपने आपको मुस्तहिक़ समझता था।

फ़िक्रे आख़िरत

सफ़र से आप ख़ुद भी इबरत पकड़ते थे और उसकी मिसाल देकर दूसरों को दर्स इबरत के तौर पर फ़रमाया करते थे कि मुझे सफ़र में अक्सर यह ख़्याल आया करता है कि ऐ नफ़्स! ज़रूरत की चीज़ें तो बस इतनी ही हैं जितनी इस वक़्त सफ़र में साथ हैं कि दो चार कपड़ों के जोड़े हैं, बिस्तर और लोटा हाथ में है, अब मुझे सफ़र किए हुए दो माह हुए हैं, उन चीज़ों की कुछ भी ज़रूरत नहीं होती जो घर में भरी होती हैं बल्कि सफ़र में जब बाज़ चीज़ें ग़ैर-ज़रूरी मालूम हुईं तो घर भेज दी गयीं लेकिन मैं क्या करूं मैं तो बचना चाहता हूँ कि ज़्यादा बखेड़ा जमा न हो मगर हक़ तआला मेरे पास बहुत कुछ भेजते हैं। मेरे दोस्त व अहबाब के दिलों में डाल देते हैं, वे भी बहुत सी चीज़ें भेज देते हैं जिनको वापस करता हूँ तो उनका दिल बुरा होता है और वापस न करूं तो ख़ुद बोझ महसूस करता हूँ। इसलिए मैं अपनी मिल्कियत की चीज़ों का जाएज़ा लेता रहता हूँ और ग़ैर-ज़रूरी असबाब को निकालता रहता हूँ।

अज़्कार व अशग़ाल की तर्तीब

एक साहब फ़रमाते हैं कि जब मैं हज़रत हाजी साहब क़िब्ला रहमतुल्लाहि अलैहि की ख़िदमत में रहता था तो हज़रत रहमतुल्लाहि अलैहि की ख़िदमत में हाज़िरी के सिवा और अवक़ात में तमाम "ज़ियाउल क़ुलूब" के अज़्कार व अशग़ाल को बतर्तीब रोज़ाना अमल में लाता था और समझता था कि इन सबका पूरा करना हर आदमी के लिए ज़रूरी है। एक रोज़ हज़रत रहमतुल्लाहि अलैहि की ख़िदमत में यह क़िस्सा अर्ज़ किया। हज़रत रहमतुल्लाहि अलैहि हंसे और फ़रमाया, यह सबक़ नहीं बल्कि इसकी तो ऐसी मिसाल है कि तबीब की दुकान पर मुख़्तलिफ़ क़िस्म की दवाईयाँ रखी हुई हैं तो उनके रखने से ग़र्ज़ यह नहीं होती है कि हर मरीज़ इन दवाईयों को इस्तेमाल करे बल्कि ग़र्ज़ यह होती है कि जिस मरीज़ के लिए जो दवा मुनासिब होगी वह उसको दी जाएगी। सो इसी तरह बहुत से तरीक़े जमा कर दिए हैं और हर तालिब के लिए जो शग़ल मुनासिब होता है वह उसको बतलाया जाता है। फिर हमारे हज़रत रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया कि दस्तरख़्वान पर मुख़्तलिफ़ खाने रखे जाते हैं, इसलिए नहीं की सब खानों को सब ही खाएं बल्कि इसलिए जमा किए जो खाना जिसको पसन्द हो वह उसको खा ले। असली ग़र्ज़ अक़्ल वालों की बहुत से खानों को जमा करने से यही है चाहे आम लोग इसकी हक़ीक़त को न समझें और फ़रमाया कि हज़रत हाजी साहब रहमतुल्लाहि अलैहि की बरकत से यह तहक़ीक़ नसीब हुई।

अमीरे शरिअत हज़रत मौलाना अताउल्लाह शाह बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि

अमीर शरिअत सैय्यद अताउल्लाह शाह बुख़ारी रह० 14, रबिउल अव्वल 1310 हि० बरोज़ जुमा पटना सूबा बिहार (भारत) में पैदा हुए। आपके वालिद साहब का नाम हाफ़िज़ ज़ियाउद्दीन था। आपका सिलसिला नसब छत्तीसवीं पुश्त में हज़रत सैय्यदना हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से जाकर मिलता है। इब्तिदाई तालीम और क़ुरआन पाक का हिफ़्ज़ आपने अपने नाना जान से किया। क़िरात क़ारी सैय्यद उमर आसिम अरब से सीखी। पटना से पंजाब मुन्तक़िल हुए तो राजूदाल में क़ाज़ी अता मुहम्मद साहब के मदरसे में पढ़ते रहे। उसके बाद सन् 1914 ई० में अमृतसर गए और वहाँ मौलाना नूर अहमद अमृतसरी रह० से क़ुरआन पाक की तफ़्सीर पढ़ी, फ़िक़्ह और उसूल फ़िक़्ह की तालीम हज़रत मौलाना ग़ुलाम मुस्तफ़ा क़ासमी रह० से हासिल की। हदीस की तालीम हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद हसन अमृतसरी बानी जामिया अशरफ़िया लाहौर से हासिल की।

आप सबसे पहले हज़रत पीर मेहर अली शाह गोलड़ा शरीफ़ से बैअत हुए। उनके विसाल के बाद आप हज़रत मौलाना शाह अब्दुलक़ादिर साहब रायपुरी रह० से दोबारा बैअत हुए और ख़िलाफ़त पाई। हज़रत रायपुरी रह० आपसे बहुत मुहब्बत

फ़रमाया करते थे।

आप हिन्दुस्तान के एक शोला बयान मुक़र्रिर, अज़ीम मुजाहिद और तहरीके आज़ादी के मशहूर कारकुन थे। हिन्दुस्तान व पाकिस्तान का कोई शहर ऐसा नहीं था जहाँ आपने अपने जादुई बयानात से सोए हुए जज़्बात को जगा न दिया हो। अंग्रेज़ हुकूमत के ख़िलाफ़ जलियाँवाला बाग़ का वाक़िआ आपको सियासत के मैदान में ले आया। शाह जी मुल्क व मिल्लत के अज़ीम ख़तीब और लीडर बन गए और हमेशा अंग्रेज़ को नाक चने चबवाते रहे। अंग्रेज़ के ख़िलाफ़ शाह जी की ज़बान अल्फ़ाज़ नहीं शोले बरसाती थी। उनकी आँखें गहरी सुर्ख़ होतीं और सुनने वाले हर लब पर सदाए तहसीन और आँख में आँसू होते थे।

आपने चालीस बरस तक शिर्क व बिदअत, रसूमात और तमाम समाजी बुराईयों के ख़िलाफ़ मुसलसल जिहाद किया। आपने मिर्ज़ाइयत की तिक्का बोटी और अक़ीदा ख़त्मे नबुव्वत को भी अपना मैदान बनाया और इस मैदान में मिर्ज़ाइयत को खुली हार दी। आज़ादी वतन के हासिल करने और ख़त्मे नबुव्वत की हिफ़ाज़त के लिए जो रास्ता उन्होंने हमवार किया था, आख़िरी दम तक उसे निभाते रहे और आख़िर 9, रबिउलअव्वल 1381 मुताबिक़ 21, अगस्त 1961 ई० को अपने ख़ालिक़ से जा मिले, इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

सुनने वालों को नसीहत

हज़रत शाह जी रह० ने फ़रमाया जो चालीस बरस तक लोगों को क़ुरआन सुनाया, पहाड़ों को सुनाता तो अजब न था कि

उनकी सख़्ती नरमी में बदल जाती, ग़ारों से बात करता तो झूम उठतीं, चट्टानों को झिंझोड़ता तो चलने लगतीं, समुन्दरों से मुख़ातिब होता तो हमेशा के लिए तूफ़ान बुलन्द हो जाते, पेड़ों को पुकारता तो वे दौड़ने लगते, कंकरियों से कहता तो वे लब्बैक कह उठतीं, मरमर से गोया होता तो वे सबा हो जातीं, धरती को सुनाता तो उसके सीने में बड़े-बड़े चीरे पड़ जाते, जंगल लहराने लगते, रेगिस्तान सब्ज़ हो जाते। मैंने उन लोगों से ख़िताब किया जिनकी ज़मीनें बंजर हो चुकी हैं, जिनके हाँ दिल व दिमाग़ का क़हत़ है, जिनके ज़मीर आजिज़ आ चुके हैं, जो बर्फ़ की तरह ठंडे हैं, जिनकी सुस्तियाँ इंतिहाई ख़तरनाक हैं, जिनके पास ठहरना अलनमनाक और जिनसे गुज़रना ख़तरनाक है, जिनके सबसे बड़े माबूद का नाम ताक़त है।

खाने पीने का मामूल

हज़रत शाह साहब रह० आने वाले वक़्त के बारे कुछ नहीं सोचते थे। हर चीज़ को अल्लाह के ताबे समझते। हाल से बस इतना त़ाल्लुक़ था कि उसको झंझोड़ते, उस पर कुढ़ते या कभी कभार उस पर क़हक़हे लगाते थे। अलबत्ता वह माज़ी (पिछले ज़माने) के इंसान थे। उनका ओढ़ना-बिछौना, खाना-पीना, सोना-जागना, सोचना-समझना और बोलना-हंसना सब माज़ी का मरहून असर था। वह तहबंद इसलिए बांधते थे कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तहबंद बांधा करते थे, वह किसी ग़िज़ा के आदी न थे, साग-सत्तू जो मिला खुदा का शुक्र किया और खा लिया। मैंने हरी मिर्चों की रग़बत के सिवा उनमें किसी चीज़ की रग़बत

नहीं पाई। उन्हें बग़ैर पकाए भी खा लेते थे और क़ीमे में भूनकर भी खा लेते। हमेशा पहनने मे मोटा कपड़ा ही इस्तेमाल करते थे। अक्सर फ़र्श पर ही बिस्तर खोलकर सो जाते थे और ठंडा पानी बहुत पीते थे।

हदिया क़ुबूल करने की शान

ज़ाहिर में हज़रत का कोई कारोबार न था। उनके ख़ास मौतक़िद लोग मदद फ़रमाते थे। मगर न तो कभी छिपकर हदिया क़ुबूल फ़रमाते और न इस पर पर्दापोशी के क़ायल थे। जब कोई मुठ्ठी बंद करके कुछ देना चाहता तो मुठ्ठी खोल देते कि छिपाते क्यों हो? क्या चोरी का माल है? जमाअत से एक चवन्नी भी न लेते। यह वाक़िआ है कि उन्होंने किसी जमाअत से कभी न किराया वसूल किया न वज़ीफ़ा लिया न क़र्ज़े हसना और अमानत क़ुबूल की। उनके चाहने वाले उन्हें ख़ुद ही बेनियाज़ रखते थे।

वायदा निभाना

हज़रत शाह जी रह० अगर किसी से वादा करते तो उसको पूरा करते थे। साल के 365 दिनों में 330 दिन तक़रीरें फ़रमाते लेकिन वक़्त की पाबन्दी उनके बस का रोग नहीं था। जलसे में देर से पहुँचे और जिसके हाँ जाकर मिलना होता, वहाँ मुक़र्रर वक़्त से दो चार घंटे ऊपर हो जाना मामूली बात थी। मौलाना आज़ाद से मिलने का वक़्त तय किया। वह सेकन्डों पर निगाह रखने वाले थे। वहाँ भी कोई दो घंटे लेट पहुँचे। वक़्त हो रहा था, दोस्तों ने मुतवज्जेह किया मगर क़ैलुला करने लगे। मिस्टर गाँधी

से भी यही कहा। मौलाना हबीबुर्रहमान कहा करते थे कि शाह जी ने अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ इतना जिहाद किया कि कई इंसानों का मजमूआ भी यह नहीं कर सकता था। मगर वक़्त के इसराफ़ का यह हाल था कि अगर अंग्रेज़ कहें कि फ़लाँ रोज़ ठीक इतने बजकर इतने मिनट पर शाह जी को फ़लाँ जगह भेज दो तो तुमको आज़ादी का परवाना देंगे तो आज़ादी कभी नहीं मिलेगी क्योंकि शाह जी और वक़्त की पाबन्दी दो मुताज़ाद (अपोज़िट) चीज़ें हैं।

हक़ीक़त का इज़्हार

पाकिस्तान बन जाने के फ़ौरन बाद रावलपिंडी में किसी दीनी जमाअत का एक जलसा था। शाह जी साहब को भी बुलाया गया था। राजा ग़ज़नफ़र वज़ीर थे। जलसे के सदर ने शाह जी साहब को तक़रीर की दावत देते हुए कहा कि शाह ज़ी जिस लीग के मुख़ालिफ़ थे, उसी लीग ने उन्हें पनाह दी है। ज़ाहिर है यह जुमला तनज़ था। शाह जी ने उठते ही जवाब दिया, हाँ भाई! यह पनाह आज से नहीं मिल रही है। इसकी बड़ी लंबी तारीख़ है। मेरे अब्बा को भी पिटने के बाद तुम्हारे अब्बा के घर में पनाह मिली थी। यह सुनकर सारा मजमे पर यकायक सन्नाटा छा गया।

जेल जाने की वजह

ख़त्मे नबुव्वत की तहरीक के दिनों में शाह जी किसी जेल में बंद थे। एक बहुत बड़ा सरकारी अफ़सर आया। बातों-बातों में कहने लगा, शाह जी! अब इस्लामी हुकूमत है। पहले जेल जाते थे

तो लोग क़द्र करते थे। अब तो वह दिन नहीं रहे। लोग भूल जाएंगे, छोड़िए इस झगड़े को, बाहर कोई और काम कीजिए। फ़रमाया, ठीक है भाई! लेकिन कभी लोगों के लिए जेल नहीं गया। मैं तो इस्लाम और आज़ादी के लिए जेल जाता रहा हूँ। रहा इस्लामी हुकूमत का सवाल तो मुझे तुम से इत्तिफ़ाक़ है। मगर यह न भूलों कि इस्लामी हुकूमत में भी कुछ लोग जेल में रहा करते थे।

तक़रीर का असर

ख़ान ग़ुलाम मुहम्मद ख़ान ने सुनाया कि मैंने न तो शाह जी को देखा हआ था और न ही मेरा सियासी मसलक उन जैसा था। एक दफ़ा ईशा के वक़्त दिल्ली दरवाज़े के बाहर से गुज़रा तो शाह जी तक़रीर कर रहे थे। मैं बड़े ज़रूरी काम में था। इस ख़्याल से रुक गया कि जिस मुक़र्रिर की इतनी शोहरत है उसे पाँच मिनट सुन तो लूँ। उनका जादू था कि खड़े-खड़े बैठ गया। फिर लेट गया और सारी रात लेटे हुए तक़रीर सुनता रहा और ऐसे हवास गुम हुए कि अपना काम ही भूल गया। यहाँ तक कि सुबह की अज़ान बुलन्द हुई, शाह जी ने तक़रीर के ख़ात्मे का ऐलान किया तो मुझे ख़्याल आया कि ओ हो, सारी रात ख़त्म हो गई। यह आदमी तक़रीर नहीं बल्कि जादू कर रहा है।

शागिर्दों पर शफ़क़त

1950 ई० में सफ़रे हज में आपके एक शागिर्द भी साथ थे। वह फ़रमाते हैं मक्का मुअज़्ज़मा में दोस्तों और वहाँ के उलमा से

मिलने चला जाता या किसी इज्तिमा में शिरकत होती। ज़ोहर के बाद जब हरम शरीफ़ तन्हाई में ख़िदमत में हाज़िर होता तो देखता कि हज़रत के पास खाना रखा है और हज़रत मुन्तज़िर हैं। बड़ी शफ़क़त से फ़रमाते कि तुम्हें तो खाने का भी होश नहीं है, देखो तुम्हारे लिए रोटियाँ रखी हुई हैं। यह खाना तुम्हारी सेहत के मुताबिक़ है।

अहबाब से ताल्लुक़

हज़रत शाह साहब रह० खुसूसी ताल्लुक़ वालों के आने से बड़े मसरूर होते। कभी फ़रमाते कि तुम ने हद कर दी बड़ा इंतिज़ार कराया। कभी किसी से रुख़्सत होने पर फ़रमाते कि देखिए अब कब मुलाक़ात के लम्हे नसीब होते हैं। एक ख़ादिम का बयान है कि मैं एक बार मुरादाबाद से रुख़्सत होने लगा, हज़रत शाह साहब जी ने मौलवी अब्दुल मन्नान साहब से फ़रमाया कि स्टेशन जाकर गाड़ी पर सवार कराना और सेकन्ड क्लास का टिकट ख़रीदकर देना। चलते वक़्त देखा कि आँखों से आँसू डबडबा रहे थे। तहम्मुल व ज़ब्त कहता कि टपकने न पाएं और मुहब्बत कहती है कि क्या हरज है।

हज़रत मौलाना अब्दुलक़ादिर साहब रायपुरी रहमतुल्लाहि अलैहि

आपकी विलादत 1295 हि० में मौज़ा ढढियाल ज़िला सरगोधा में हुई। आपके वालिद हज़रत हाफ़िज़ अहमद एक नेक सीरत

बुज़ुर्ग थे और आपका ख़ानदान एक दीनी व इल्मी ख़ानदान था। आपने क़ुरआन पाक अपने ताया जान मौलाना कलीमुल्लाह साहब के पास हिफ़्ज़ किया और फ़ारसी के चंद रिसाले भी पढ़े। सर्फ़ व नहू की किताबें हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० के शागिर्द हज़रत मौलाना रफ़ीक़ अहमद साहब से पढ़ीं। उसके बाद हिन्दुस्तान के मुख़्तलिफ़ मदरसों में रहकर दर्से निज़ामी की मुतफ़र्रिक़ किताबें पढ़ीं और दर्स की तक्मील की। आपको मंतिक़ व फ़लसफ़े में बड़ी महारत हासिल थी। हदीस की किताबें मदरसा अब्दुर्रब देहली में मौलाना अब्दुल अली रह० से पढ़ीं। देहली के क़याम के दौरान इमामुल अस्र मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रह० से तिर्मिज़ी शरीफ़ के कुछ सबक़ भी सुने।

दर्से निज़ामी की तक्मील के बाद आपनें तिब्बे यूनानी में बाक़ायदा तहसील की और ज़िला बिजनौर के एक क़स्बे अफ़ज़लगढ़ में मतब भी किया। कुछ अरसे देहली में क़ुरआन व हदीस का दर्स भी देते रहे। लेकिन आपकी बेचैन तबियत किसी काम में नहीं लगती थी। आख़िर तलाशे हक़ में दीवानों की तरह निकल खड़े हुए यहाँ तक कि शेख़ुल आलम हज़रत अक़्दस मौलाना शाह अब्दुर्रहीम रायपुरी रह० की ख़िदमत में पहुँचे और पहली मुलाक़ात में भी इस क़द्र मुतास्सिर हुए कि हमेशा के लिए उन्हीं का होकर रहने की तमन्ना का इज़्हार किया। हर चंद हज़रत रायपुरी रह० ने आपको गंगोह हाज़िर होने का मश्वरा दिया लेकिन आपने इसरार किया कि मेरी तबियत आपकी ही तरफ़ माइल है। उन्होंने आपको बैअत फ़रमा लिया और ज़िक्र व अज़्कार की तलक़ीन फ़रमाई। उसके बाद आप ज़िंदगी भर यादे

हक़ और ख़िदमते शेख़ में लगे रहे। अपना वक़्त रियाज़त व मुजाहिदे और ज़िक्र व अज़्कार में गुज़ारते थे। आपके शेख़ मुअज़्ज़म आख़िर दम तक आपसे राज़ी रहे। और विसाल के वक़्त आप ही को अपना ख़लीफ़ा व जानशीन बनाया और रायपुर ही में क़याम रखने की तलक़ीन फ़रमाई। इसी निस्बत से आप रायपुरी कहलाए।

आप शेख़ के रहलत फ़रमाने के बाद मसनद इर्शाद पर जलवा अफ़रोज़ हुए और पूरे पैंतालीस साल तक तलक़ीन व इर्शाद का काम करते रहे। अपने अमल व इख़्लास से ख़ुल्क़े मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आम किया। लाखों मुसलमानों को फ़िस्क़ व फ़ुजूर से तोबा करवाई और सैंकड़ों उलमा को रूहानी मन्ज़िलें तय करवायीं और बहुत से हज़रात को ख़िलाफ़त से नवाज़ा। सारी ज़िंदगी तालिबीने हक़ की रहनुमाई के बाद यह आफ़ताब हिकमत व हिदायत ज़िंदगी के नव्वे मंज़िले तय करके 14 रबिउल अव्वल 1382 हि० को हमेशा के लिए ग़ुरूब हो गया।

मुताले में इन्हेमाक

हज़रत शाह साहब रह० को किताब सुनने का बहुत शौक़ था। किसी ज़माने में इस मामूल में इतनी तरक़्क़ी हुई कि आपको किताब सुने बग़ैर चैन नहीं आता। बेहट हाउस सहारनपुर के क़याम में अक्सर देखा गया कि नमाज़ फ़ज्र के बाद जो आराम फ़रमाने का मामूल था, उससे बेदार होकर फ़ौरन आज़ाद साहब को तलब किया जाता। "फ़तूहुश्शाम" या सहाबा किराम के हालात की कोई किताब पढ़ने का हुक्म होता। आज़ाद साहब

किसी ज़रूरत से उठते, दोबारा उनकी तलब होती। ख़ामोश होते तो फ़रमाया जाता क्यों ख़ामोश हो गए? किताबों के ज़ौक़ का अंदाज़ा इस बात से भी होता है कि राक़िम सुतूर (लिखने वाला) अक्टूबर 1960 ई० ने अपने वतन रायबरेली से इत्तिला दी कि तारीख़ दावत व अज़ीमत के तीसरे हिस्से में हज़रत सुल्तानुल मशाइख़ ख़्वाजा निज़ामुद्दीन रह० का तज़्किरा मुरत्तब हो गया है। उस ख़त के बाद रायपुर हाज़िरी दी। मुसाफ़े के साथ ही किताब का मसव्वदा मांगा और उसी वक़्त पढ़ने का हुक्म हुआ। नमाज़ के वक़्फ़े के बाद यह सिलसिला जारी रहा और जब तक किताब ख़त्म न हो गई कोई दूसरा काम इन वक़्तों में न हुआ।

कैफ़ियात में क़ुव्वत

रायपुर में हर आने वाले को सबसे पहले जो चीज़ मुतवज्जेह करती थी वह ज़िक्र की कसरत है। ऐसा मालूम होता था कि पत्ते-पत्ते से अल्लाह के नाम की आवाज़ और सदा आ रही है। दिन व रात के कम अवक़ात ज़िक्र की आवाज़ से ख़ाली नज़र आते। रायपुर की फ़िज़ा और हज़रत के दामन शफ़क़त में कम से कम इस्तेदाद वाले आदमी को भी यह महसूस होती कि सकून व इत्मिनान की चादर पूरी फ़िज़ा और माहौल पर तनी हुई है। वहाँ पहुँचकर हर ग़म ग़लत और हर शक और फ़िक्र ख़ामोश हो जाती थी। अहले नज़र व बसीरत वाले लोगों को साफ़ मालूम होता था कि ये हज़रात नक़्शबंदिया की निस्बत सकीनत है जो पूरे माहौल को छाई और ग़ालिब है। इसमें हज़रत से जितना क़ुर्ब होता उतना ही कैफ़ियत व एहसास में क़ुव्वत पैदा होती। गोया मकर्ज़ सकीनत

वह ज़ात है जिसको अल्लाह तआला ने नफ़्से मुतइन्ना और यक़ीन व रज़ा की दौलत से नवाज़ा है।

मज्लिस का वाक़िआ

हज़रत शाह साहब की मज्लिस का एक वाक़िआ सुनाते हुए एक ख़ानक़ाह में हाज़िर होने वाले फ़रमाते हैं कि एक दफ़ा ख़्याल आया कि लोग कहते हैं कि बुज़ुर्गों की मज्लिस में हाल तारी हो जाता है मगर मैंने कुछ नहीं देखा। यह मेरे क़याम का आख़िरी दिन था। दूसरे रोज़ वापसी थी। मग़रिब के बाद ज़िक्र में बैठते ही अजीब हालत शुरू हो गई। गिरया और महवियत और तवज्जेह इलल्लाह ऐसी बनी कि गोया अल्लाह तआला सामने हैं और हज़रत मेरी जानिब हैं और मेरी तसल्ली फ़रमा रहे हैं। तमाम ज़ाकिरीन पर अजीब हालत तारी थी। इस हालत में ज़िक्र बड़ी दिक़्क़त से पूरा किया और आख़िर मजबूर होकर छोड़कर हाज़िर ख़िदमत हुआ। राव अताउर्रहमान ख़ान ने अर्ज़ किया कि हज़रत! आज अजब हालत थी। आज़ाद साहब ने तो क़व्वाली ही शुरू कर रखी थी। आपने फ़रमाया, ओ हो ला हवला वला क़ुव्वता इल्लाह बिल्लाह। बस तमाम हालत बदल गई।

मुहब्बते शेख़

हज़रत रह० के ख़मीर में शुरू से मुहब्बत व इश्क़ की चिंगारी थी। और यह उनका फ़ितरी ज़ौक़ और हाल था। इसलिए मशाइख़ और बुज़ुर्गों में भी जिनको यहाँ अन्सर नुमायाँ और ग़ालिब नज़र आता था उनसे ख़ुसूसी मुनासिबत और अक़ीदत

थी। इसी बिना पर महबूबे इलाही सुल्तानुल मशाइख़ हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रह० से इश्क़ का सा ताल्लुक़ था। और उनके हालात से ख़ास शग़फ़ था। और किसी तरह उनके हालात से तबियत नहीं भरती थी। लाहौर क़याम के दौरान 1959 ई० में हाजी मतीन अहमद साहब की कोठी पर किसी दोस्त की तहरीक व तज़्किरे पर तज़्किरा मौलाना फ़ज़लुर्रहमान रह० अस्र के बाद मज्लिस में पढ़ाया जाने लगा। उस वक़्त तक किताब छपी भी नहीं थी और मेरे पास उसका नाक़िस मसव्वदा था। किताब शुरू हुई और मौलाना के सादा लेकिन दिल को तड़पा देने वाले हालात व वाक़िआत पढ़े जाने लगे तो सारी मज्लिस पर एक कैफ़ सा तारी हो गया जो असल में हज़रत की कैफ़ियते बातिनी का अक्स था। ज़बान हाल गोया कह रही थी–

फिर पुरसिश जराहत दिल को चला है इश्क़
सामान सद हज़ार नमकदाँ किए हुए

बाज़ अहले मज्लिस ने बयान किया है कि ऐसा कैफ़ मज्लिस में इससे पहले देखने में नहीं आया था। हज़रत रह० ने फ़रमाया, "बड़ी प्यारी बातें हैं।" फिर फ़रमाया, "प्यारों की बातें प्यारी होती हैं।"

ज़ेब व ज़ीनत का मैयार

एक बार हज़रत मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ रखते थे। इस ख़ादिम ने अर्ज़ किया कि हज़रत! इस मस्जिद में बाद के लोगों ने बड़ी ज़ेब व ज़ीनत पैदा कर दी है और क़ीमती क़ालीन बिछा दिए। काश! यह मस्जिद अपनी पहली सादगी पे होती। मालूम

नहीं हज़रत उस वक़्त किस हाल में थे। यह सुनकर हज़रत को जोश आया गया और फ़रमाया, "दुनिया में जहाँ कहीं ज़ेब व ज़ीनत है इन्हीं का तो सदक़ा है।"

इश्क़े नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

मर्ज़ुल वफ़ात में मदीना तैय्यबा का ज़िक्र सुनकर बेअख़्तियार रिक़्क़त तारी हो जाती और कभी-कभी बुलन्द आवाज़ से रोने लगते। मौलना मुहम्मद साहब अनवरी उमरा के लिए रवाना हो रहे थे। हज़रत से रुख़्सत होने के लिए आए। मदीना तैय्यबा का ज़िक्र हुआ तो हज़रत दहाड़े मारकर रोए। मौलाना मुहम्मद साहब फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत को इससे पहले बुलन्द आवाज़ से रोते हुए नहीं देखा था। बाबू अब्दुल अज़ीज़ साहब आए तो उनसे फ़रमाया कि देखो, यह मदीना जा रहे हैं। यह कहकर हज़रत की चीख़ें निकल गयीं।

आजिज़ी व इन्किसारी

एक बार फ़ैसलाबाद के क़याम में इस बारे में ख़ादिमों और अहबाब में बड़ी कशमकश थी कि हज़रत रमज़ान कहाँ करें। फ़ैसलाबाद के ताल्लुक़ वाले फ़ैसलाबाद के लिए कोशिश में थे। लाहौर के लाहौर के लिए और क़ुरैशी साहब रावलपिंडी के लिए अर्ज़ करते थे। हज़रत ने एक रोज़ सहरी के वक़्त तीनों के गिरोहों के ख़ास-ख़ास लोगों को बुलाया और फ़रमाया कि भाई देखो मैं ग़रीब किसान का लड़का हूँ। मेरे घर में ऐसी ग़रीबी थी कि मैं जब पढ़ने लगा तो मेरी वालिदा को फ़िक्र होती थी कि गेहूँ की

रोटी का इंतिज़ाम किस तरह करें। कमअक़्ल हूँ, अव्वल तो पढ़ा ही नहीं जो कुछ थोड़ा बहुत पढ़ा था वह भूल गया। अब तुम मुझे खींचे-खींचे फिरते हो और कोई इधर ले जाना चाहता है, कोई उधर ले जाना चाहता है तो यह सिर्फ़ इस की बरकत है कि कुछ रोज़ अल्लाह का नाम लिया है। आप खुद भी इख़्लास के साथ अल्लाह का नाम क्यों नहीं लेते और क्यों मुझे शर्मिन्दा करते हैं? बातों में कुछ ऐसी तासीर थी कि बाज़ लोगों की आँखों में आँसू आ गए।

सख़ावत का वाक़िआ

हज़रत शाह साहब को ग़ैब से ज़रूरत की चीज़ें पहुँचती थीं और फ़ौरी तौर पर ख़र्च भी हो जाती थीं। रुपए को रखना और उस पर रात गुज़रना तबियत पर बड़ा बोझ होता था। ख़ादिम कुछ पेश फ़रमाते तो फ़ौरन दूसरे ख़ादिम, ख़ानक़ाह, ज़रूरतमंद और आने वालों को पेश कर देते थे। हाजी फ़ज़्लुर्रहमान ख़ान साहब कहते हैं कि सिर्फ़ मेरे हाथों से कई लाख रुपए हज़रत ने दूसरों को दिलाए हैं। बाज़ अहले इल्म को किराए के नाम पर सौ दो सौ रुपए की रक़म दिलाने का आम दस्तूर था। एक ख़ादिम जो सफ़र हज में थे हिजाज़ से मिस्र व शाम चले गए थे। उनके एक रफ़ीक़ को एक हज़ार की रक़म इनायत की और फ़रमाया कि उनको भेज दो और लिख दो कि तुम्हारी सेहत पानी के सफ़र के लायक़ नहीं है। लिहाज़ा तुम हवाई जहाज़ से सफ़र करना। ग़र्ज़ रक़म किसी से वसूल करते तो फ़ौरन आगे किसी के हवाले कर देते।

रक़म की फ़राहमी

एक दफ़ा मजमा लगा हुआ था। बहुत-से हज़रात बैठे हुए थे। किसी आदमी ने आकर मुसाफ़ा करते वक़्त बेतकल्लुफ़ अर्ज़ किया, हज़रत! दस रुपए की ज़रूरत थी। हज़रत ने फ़रमाया, अल्लाह से दुआ करो। फिर ख़ामोश हो गए। थोड़ी देर में एक आदमी आया सौ रुपए का नोट हज़रत के हाथ पर रखा। हज़रत ने आवाज़ देकर फ़रमाया, अरे भाई! वह आदमी कहाँ गया जो दस रुपए मांग रहा था। वह बोला, हज़रत मैं यहाँ हूँ। फ़रमाया, यह दस रुपए ले लो। उसने अर्ज़ किया, हज़रत! ये तो सौ रुपए हैं। फ़रमाया, ले जा तेरी मौज हो गई।

शफ़क़त का वाक़िआ

हज़रत की शफ़क़त व मुहब्बत के बारे में बयान करते हुए एक साहब फ़रमाते हैं कि हज़रत ऐसे शफ़ीक़ थे कि माँओं की शफ़क़तें उन पर क़ुर्बान। मैंने अपनी बावन साला उम्र और सत्ताइस साला ताल्लुक़ में न किसी माँ, न किसी उस्ताद, न कोई दोस्त, न कोई बुज़ुर्ग ऐसा मेहरबान देखा। मेहमानों में अगर कोई बीमार हो जाता तो हज़रत को तमाम रात नींद नहीं आती थी। हज़रत से मिलने वाले तमाम हज़रात अलग-अलग यह समझते थे कि हज़रत को जो मुहब्बत मुझसे है औरों से नहीं। सबसे ज़्यादा मुहब्बत मुझ ही से है। आपके अंदर कोई ऐसी बिजली की सी मुहब्बत थी कि जितना भी कोई मुसीबतज़दा और फ़िक्रमंद होता हज़रत को देखकर तमाम तकलीफ़ें दूर हो जातीं।

एक दूसरे साहब फ़रमाते हैं कि मैंने अपनी तमाम उम्र में ऐसा

शफ़ीक़ आदमी नहीं देखा। कोई आदमी अपने बेटों से इतनी मुहब्बत नहीं कर सकता जितनी हज़रत हम लोगों के साथ किया करते थे। एक बार खाने के बाद मैंने अर्ज़ किया कि हज़रत! कुछ भी नहीं खाया। हज़रत ने कमाले शफ़क़त फ़रमाया, तुम खाते हो तो मैं खाता हूँ।

हज़रत मौलाना इलयास साहब रहमतुल्लाहि अलैहि

आप 1303 हि० में क़स्बा कांधला ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर यूपी में पैदा हुए। आपके वालिद माजिद मौलवी इस्माईल साहब रह० उस ज़माने में देहली के क़रीब की बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन में रहते थे। वह हाफ़िज़ क़ुरआन और आलिम थे। आबिद और ज़ाहिद और रातों को जागने वाले बुज़ुर्ग थे। ज़िक्र व इबादत उनका मशग़ला था और कलामे इलाही का दर्स उनका मक़सदे हयात था। उन्हें क़ुतबे आलम हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० से ख़ास ताल्लुक़ था।

मौलाना इलयास साहब रह० ने हिफ़्ज़ क़ुरआन की दौलत अपने वालिद माजिद से पाई। फ़ारसी और अरबी की इब्तिदाई किताबें भी अपने वालिद से पढ़ीं। फिर उनके बड़े भाई मौलाना याहूया साहब कांधलवी रह० उन्हें अपने साथ गंगोह ले गए। यह क़स्बा उन दिनों हज़रत गंगोही रह० की ज़ाते आली सिफ़ात के सबब उलमा सुल्हा का मर्कज़ बना हुआ था। मौलाना इलयास साहब रह० गंगोह में आठ नौ बरस रहे। यहाँ उनकी बेहतरीन

अख़्लाक़ी और दीनी तर्बियत हुई। मौलाना गंगोही रह० से बैअत का शर्फ़ हासिल हुआ। 1326 हि० में शेख़ुल हिन्द मौलाना महमूद हसन साहब रह० के दर्स में शिरकत के लिए देवबंद पहुँचे। वहाँ तिर्मिज़ी और बुख़ारी शरीफ़ की समाअत की। उसके बाद बरसों अपने भाई मौलाना याह्या साहब से हदीस पढ़ते रहे। हज़रत गंगोही रह० की वफ़ात के बाद हज़रत मौलाना ख़लील अहमद साहब सहारनपुरी रह० से सुलूक की तक्मील की और मदरसा मज़ाहिरउलूम सहारनपुर में मुदर्रिस हो गए। 1334 हि० में आपने हज किया। ए

कई साल बाद बड़े भाई मौलाना याह्या साहब रह० का इंतिक़ाल हुआ तो आप बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन में मुस्तक़िल क़याम के लिए देहली आ गए।

बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन में एक छोटी सी पुख़्ता मस्जिद, एक कच्चा मकान और एक हुजरा था। दरगाह हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया रह० के जुनूब में एक मुख़्तसर सी आबादी थी। कुछ मेवाती और ग़ैर-मेवाती तालिब इल्म आप से पढ़ा करते थे। पढ़ने वालों को छोटे बड़े सबक़ बहुत मेहनत और कोशिश से पढ़ाते थे। दर्से हदीस भी होता था। आपका सबसे अज़ीम कारनामा तबलीग़ की तहरीक का शुरू करना था। इसकी शुरूआत मेवात से हुई। यहाँ के लोग बराए नाम ही मुसलमान थे। रहन-सहन ज़्यादातर हिन्दुओं से मिलता जुलता था। हज़रत ने रात दिन मेहनत करके इस इलाक़े में बहुत से मक्तब क़ायम किए और आहिस्ता-आहिस्ता इस्लाह व तबलीग़ का काम फैलने लगा और असर दिखाने लगा। फिर आप ने अमूमी दावत व तबलीग़ का मंसूबा

बनाया और तबलीग़ी गश्त शुरू किए। मौलाना ने दूसरों को भी दावत दी कि अवाम में निकलकर दीन के अव्वलीन उसूल और अरकान यानी कलिमा तौहीद और नमाज़ की तबलीग़ करें। फिर उन्होंने जमाअतें बनाकर मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में तबलीग़ के लिए भेजनी शुरू कीं। चंद बरसों के अंदर-अंदर इस काम में अल्लाह तआला ने इतनी बरकत दी कि दूर-दूर तक तबलीग़ी जमाअतें जाने लगीं और पूरे हिन्दुस्तान में इस्लाह व तबलीग़ का काम होने लगा।

आपका मिज़ाज निहायत तवाज़ो और आजिज़ी वाला था। आप बहुत ज़ईफ़ और कमज़ोर थे और इल्म व फ़ज़ल और ज़ोहद व तक़्वे के पैकर थे। आख़िर उम्र तक जिस दावत व तबलीग़ को लेकर खड़े हुए थे उसके लिए कोशिश करते रहे और हज़ारों ऐसे लोग पैदा कर दिए जो आपके बाद आपकी दावत को आपके निशाने राह पर चला सकें। आप 13 जुलाई 1944 ई० को अपने ख़ालिक़े हक़ीक़ी से जा मिले।

दावत व तबलीग़

मौलाना के नज़दीक आजिज़ व ज़ईफ़ और मशग़ूल इंसान के लिए इस महदूद और मुख़्तसर ज़िंदगी में अपनी मजबूरियों और कमज़ोरियों के साथ लंबे और ज़्यादा अज्र व सवाब और ज़ख़ीरा अमल की सूरत इख़्लास व एहतिसाब के साथ इस दलालते इलल ख़ैर (ख़ैर की तरफ़ बुलाने) के सिवा कुछ न थी। अगर कोई आदमी दिन भर रोज़ा रखे और रात भर नफ़्ले पढ़े और एक क़ुरआन मजीद रोज़ाना ख़त्म करे या लाखों रुपए रोज़ाना सदक़ा

व ख़ैरात करे तो भी कसरत में, नूरानियत में और क़ुबूलियत में उन लोगों के अज्र को नहीं पहुँच सकता जिनको दलालत इलल ख़ैर की वजह से लाखों इंसानों की फ़र्ज़ नमाज़ों, अरकान व ईमान का सवाब रात दिन और हर लम्हे पहुँच रहा है और उनकी रूह पर अज्र व ईनाम और अनवार व बरकात की सदियों से मुसलसल बारिशें हो रही हैं। एक आदमी का अमल, उसकी ताक़त और उसके इख़्लास सैंकड़ों आदमियों के अमल व ताक़त और इख़्लास व शग़फ़ व इन्हेमाक के बराबर नहीं हो सकता। इसलिए मौलाना शख़्सी इबादतों व नवाफ़िल पर (उनमें पूरे तौर पर लगने रहने और उनकी इन्तिहाई हिर्स व शौक़ रखने के बावजूद) इस मुतादूदी ख़ैर और दलालत इलल ख़ैर को तरजीह देते थे और इसको ज़्यादा उम्मीद की चीज़ समझते थे। एक बुज़ुर्ग जो अपनी उम्र में बड़े-बड़े काम कर चुके थे और अब जिस्मानी कमज़ोरी और गिरावट के दौर में थे। उनको एक दोस्त के ज़रिए से इसका मश्वरा दिया कि अब आप में ख़ुद करने की ताक़त नहीं रही। वक़्त कम और काम बहुत ज़्यादा है। इसलिए मसलेहत अंदेशी और मौक़े को समझने का तक़ाज़ा और होशियारी और हिकमते दीन यह है कि दूसरों को आमाल का ज़रिया बनाने की कोशिश करें। तक़रीर व तहरीर, ख़त व तर्ग़ीब के ज़रिए अपने दोस्तों और बात मानने वालों को इस दावत व तबलीग़ की तरफ़ मुतवज्जेह करें और उनके अज्र व सवाब में शरीक हो जाइए।

आमाल का दार व मदार

मुश्किल से कोई क़दम सवाब की नीयत और दीनी नफ़े की

उम्मीद के बग़ैर उठता होगा। कोई काम महज़ नफ़्स के तक़ाज़े से होता होगा। गोया ﴿لا يتكلم الا فيما رجا ثوابه﴾ आपका हाल था। उनकी हर नक़्ल व हरकत दिलचस्पी और शिरकत का मुहर्रिक और बाइस अज्र और दीनी नफ़े की उम्मीद और तमा थी। इसीलिए बातचीत फ़रमाते थे, इसीलिए तक़रीबों में शिरकत करते थे और इसी बिना पर ग़ुस्सा आता था और फिर इसीलिए राज़ी हो जाते थे। जो चीज़ इस मक़सद और उम्मीद से ख़ाली हो उससे उनको दिलचस्पी और ताल्लुक़ नहीं होता था। छोटे-छोटे रोज़मर्रा के क़ामों में भी यही हाल था।

बक़ौल मौलाना मंज़ूर साहब नौमानी रह० के शायद बग़ैर नीयत के एक चाय की प्याली भी नहीं पीते थे और न किसी को पेश करते थे।

आजिज़ी व इन्किसारी

आप इतने बारीकबीन और हाज़िर दिमाग़ थे कि एक ही काम में अलग-अलग नीयतों के ज़रिए हर आदमी कीसतह के मुताबिक़ खुसूसी फ़ायदा और अज्र व सवाब की रहनुमाई करते थे। मौलाना मंज़ूर नौमानी साहब रह० ने एक लतीफ़ वाक़िआ लिखा है जिससे इसका अंदाज़ा होगा।

बीमारी के आख़िरी दिनों में जब हज़रत उठ बैठ नहीं सकते थे एक रोज़ दोपहर को बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन पहुँचा। ज़ोहर की नमाज़ के लिए मेवाती ख़ादिम लोग हज़रत को वुज़ू करा रहे थे। उस वक़्त मुझ पर हज़रत की नज़र पड़ी। इशारे से बुलाया और फ़रमाया मौलवी साहब! हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु

अन्हुमा ने बावजूद यह कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बरसों वुज़ू फ़रमाते हुए देखा था और ऐसे ही हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को भी देखा था फिर भी वह सीखने के तौर पर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को वुज़ू फ़रमाते हुए देखते थे।

हज़रत का यह इशारा सुनने के बाद जब इस नज़र से मैंने हज़रत को वुज़ू फ़रमाते हुए देखा तो महसूस किया कि हक़ीक़त में ऐसी बीमारी की हालत में वुज़ू के लिए हज़रत के वुज़ू से हमें बहुत कुछ सबक़ हासिल हो सकता है।

हज़रत को जो तीन चार ख़ादिम वुज़ू करा रहे थे, ये सब मेवाती थे। उनकी तरफ़ इशारा फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया कि ये बेचारे मुझे वुज़ू कराते हैं। मैं इनसे कह रहा हूँ कि तुम लोग अल्लाह के लिए मुझ से मुहब्बत और मेरी ख़िदमत करते हो और तुम्हारा गुमान यह है कि मैं नमाज़ अच्छी पढ़ता हूँ, जैसी तुम नहीं पढ़ सकते। लिहाज़ा वुज़ू इस नीयत से करा दिया करो कि ऐ अल्लाह! हमारा गुमान है कि तेरे इस बंदे की नमाज़ अच्छी होती है जैसे कि हमारी नहीं होती। इसलिए हम इसको वुज़ू में मदद देते हैं ताकि तू इस नमाज़ के अज्र में हमारा भी हिस्सा कर दे और मैं यह दुआ करता हूँ कि ऐ अल्लाह! तेरे यह सादे और भोले बंदे मेरे बारे में यह गुमान करते हैं, इनके गुमान की लाज रख ले और मेरी नमाज़ को क़ुबूल फ़रमाकर इन्हें भी शरीक फ़रमा दे।

फिर फ़रमाया अगर मैं समझने लगूँ कि मेरी नमाज़ इनसे अच्छी होती है तो अल्लाह के यहाँ मरदूद हो जाऊँ। मैं तो यही समझता हूँ कि अल्लाह पाक अपने इन सादा दिल बंदों ही की

वजह से मेरी नमाज़ों को रद्द न फ़रमाएंगे।

आख़िरत का इस्तेहज़ार (ध्यान)

इस क़िस्म की एक चीज़ यह थी कि क़यामत का ध्यान और आख़िरत का तसव्वुर (आँखों के सामने तस्वीर की तरह रहना) ऐसा बढ़ा हुआ था कि अक्सर हज़रत हसन बसरी रह० का यह क़ौल याद आ जाता था ﴿كانهم راى عين﴾ कि सहाबा किराम के सामने आख़िरत ऐसी रहती थी गोया आँखों देखी चीज़ है। एक बार एक मेवाती से दर्याफ़्त फ़रमाया कि देहली क्यों आए? सादा दिल मेवाती ने जवाब दिया कि देहली देखने के लिए। फिर मौलाना के अंदाज़ से उसको अपनी ग़लती महसूस हुई। फ़ौरन कहा कि जामा मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिए। फिर बदल कर कहा कि आपकी ज़ियारत के लिए। इस पर मौलाना ने फ़रमाया, देहली और जामा मस्जिद की जन्नत के सामने क्या हक़ीक़त है और मैं क्या हूँ जिसकी ज़ियारत के लिए तुम आए। सड़ गल जाने वाला एक जिस्म, फिर जन्नत का जो ज़िक्र करना शुरू किया तो यह मालूम हुआ कि जन्नत सामने है।

दावत दिए जाओ

मज्लिसों में जब तक मौलाना को अपनी दावत के पेश करने का मौक़ा मिलने की उम्मीद नहीं होती उनमें शिरकत पसंन्द न करते। महज़ रस्मन व अख़्लाक़न शिरकत बहुत गिरा गुज़रती। फ़रमाते थे कि अगर कहीं जाओ तो अपनी बात लेकर जाओ और उसको पेश करो और अपनी दावत को ग़ालिब रखो।

एक बार मैंने मौलाना सैय्यद सुलेमान साहब रह० का एक फ़िक़रा सुनाया जो उन्होंने एक जलसे से वापस आकर फ़रमाया था कि अपनी एक बात कहने जाओ तो दूसरों की दस बातें (मुरव्वत में) सुननी पड़ती हैं। मौलाना देर तक इसका लुत्फ़ लेते रहे और फ़रमाया कि बड़े दर्द से कहा है।

मौक़ा महल के मुनासिब बात

एक बार दिल्ली में किसी मुख़्लिस के यहाँ शादी में आपको शिरकत करना पड़ी। आपने शादी की ख़ास मज्लिस में भरे मजमे में लोगों को मुख़ातिब करते हुए फ़रमाया, आज आपके यहाँ यह ख़ुशी का दिन है जिस दिन कमीनों तक को खुश किया जाता है। गवारा नहीं होता कि घर की भंगन भी नाखुश हो। बतलाइए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खुश करने की भी कोई फ़िक्र आप लोगों को है? फिर आपने तबलीग़ और हुज़ूर के लाए हुए दीन को सरसब्ज़ करने की कोशिश को हुज़ूर की ख़ुशी का सबसे बड़ा ज़रिया बतलाते हुए, उसके लिए हाज़िरीन को दावत दी।

लायानी से परहेज़

लायानी (जो बात दीनी हैसियत से मुफ़ीद और दुनियावी हैसियत से ज़रूरी न हो) से बड़ी नफ़रत और परहेज़ था और उसकी दूसरों को भी वसीयत फ़रमाते थे और तबलीग़ में निकलने वालों को ख़ासतौर पर ताकीद से फ़रमाया करते थे। फ़रमाते थे, "लायानी में लगना काम की रौनक़ को खो देता है।" जिस काम में दीन का फ़ायदा न देखते उसको वक़्त का ज़ाए करना समझते।

एक बार मैं चबूतरे के पास खड़ा ज़ौक़ व शौक़ के साथ मौलवी सैय्यद रज़ा हसन साहब से कोई पुराना वाक़िआ और किसी तबलीग़ी सफ़र की रूदाद सुन रहा था। मौलाना रह० ने सुना और फ़रमाया कि तो यह तो तारीख़ हुई, कुछ काम की बात कीजिए।

रूह की ग़िज़ा

मौलाना ने एक बार इश्क़ की तारीफ़ की थी, "आदमी की लज़्ज़तें और दिलचस्पियाँ जो दुनिया की बहुत सी चीज़ों में बटी हुई हैं सब निकलकर किसी एक चीज़ में सिमट आएं, यही इश्क़ है।" मौलाना की यह तारीफ़ दीन के बारे में ख़ुद उन पर सादिक़ थी। इससे उनकी रूह को इश्क़ हो गया था जिसके सामने तमाम हिस्सी लज़्ज़तें और तास्सुरात मांद पड़ गए थे और यह रूही लज़्ज़त उनके लिए बिल्कुल हिस्सी और तबई लज़्ज़त बन गई थी। इससे उनको क़ुव्वत व तवानाई और निशात व ताज़गी हासिल होती थी जो लोगों को ग़िज़ा और दवा से हासिल होती है। चुनाँचे एक कारकुन को जिन्होंने ख़ानानशीनी की हालत में अपनी बेचैनी की शिकायत लिखी थी। जवाब में यही हक़ीक़त लिखी थी जो किसी और के बारे में सही हो या न हो उनके बारे में बिल्कुल सही थी :

"मेरे मोहतरम! यह तबलीग़ी काम, दरहक़ीक़त इंसान की रूह की ग़िज़ा है। हक़ तआला शानुहू ने अपने फ़ज़्ल से आपको इस ग़िज़ा से बहरावर फ़रमाया। अब इसके आरज़ी फ़क़दान या कमी पर बेचैनी लाज़मी है। आप इससे परेशान ख़ातिर न हों।"

बहुत बार ऐसा हुआ कि किसी ख़ुशख़बरी को सुनकर या

किसी ऐसे आदमी से. मिलकर जिसको वह अपनी दावत के लिए मुफ़ीद समझते थे वह अपनी बीमारी भूल गए। तबियत में इतनी क़ुव्वत हासिल हुई कि वह मर्ज़ पर ग़ालिब आ गई। अचानक सेहत तरक़्क़ी कर गई। इसके ख़िलाफ़ किसी तशवीश या फ़िक्र से उनकी सेहत गिर गई। उनकी तमाम फ़िक्रें ऐसी फ़िक्र में गुम हो गयी थीं। जैसा कि एक ख़त में लिखते हैं कि तबियत में सिवाए तबलीग़ी दर्द के और ख़ैरियत है।

अलालत व बीमारी

आख़िरी अलालत और बीमारी में कमज़ोरी की वजह से बाज़ मर्तबा ऐसी किसी ख़ुशी की बर्दाश्त नहीं होती। जनवरी 1944 ई० में जब लखनऊ की जमाअत गई तो एक दिन सुबह की नमाज़ के बाद आपने मुझसे फ़रमाया कि मेरे आने के बाद तो कानपूर में काम ख़त्म हो गया होगा। हाजी वली मुहम्मद साहब की तरफ़ मैंने इशारा किया कि यह भी उसी जमाअत में थे। मौलाना ने मुसाफ़े लिए हाथ बढ़ाए और उनके हाथ चूम लिए और फ़रमाया कि मेरा ख़ुशी से सर दुख गया। मुझे अब बहुत ख़ुश न किया जाए। मुझ में ख़ुशी का तहम्मुल नहीं रहा है।

मौलाना की कैफ़ियत यही थी। कि उनकी कोशिशों में उनको जन्नत का मज़ा आता था। इस रास्ते में गर्म हवा भी उनके लिए नसीमे सहरी से ज़्यादा ख़ुशगवार और फ़रहतबख़्श थी। एक बार मई की किसी आख़िरी तारीख़ में मौलाना रह० शेख़ुल हदीस मौलाना ज़करिया रह०, मौलवी इकरामुल हसन साहब एक कार से क़ुतब साहब गए। लू के सख़्त झोंके आ रह थे। किसी ने कहा,

लू आ रही है, खिड़की बंद कर दो। शेख़ुल हदीस रह० ने फ़रमाया, जी हाँ इस वक़्त गर्मी ज़्यादा है। मौलाना ने फ़रमाया कि अल्लाह के रास्ते की गर्म हवा नसीम सहर से ज़्यादा ख़ुशगवार है।

नमाज़ बाजमाअत

एक बार दो दोस्त रेल में सफ़र कर रहे थे। उनमें से एक ने तो नमाज़ पढ़ ली मगर दूसरे को भीड़ की वजह से नमाज़ पढ़ने की नौबत नहीं आई थी। हज़रत रह० ने उनसे मिलते ही पूछा, नमाज़ पढ़ ली? एक दोस्त ने अर्ज़ किया कि मैंने तो पढ़ ली है अलबत्ता मेरे साथी पढ़ रहे हैं। आपने यह सुनकर बड़ा अफ़सोस किया और इस सिलसिले में फ़रमाया कि मैं जब से इस काम में लगा हूँ (तक़रीबन बीस साल से) रेल पर कोई नमाज़ जमाअत के बग़ैर नहीं पढ़ी। यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने अपने से तरावीह भी पढ़वा दी। अगरेच कभी-कभी तरावीह की दो ही रकअत पढ़ने की नौबत आई लेकिन पूरे तौर पर नहीं छुटीं।

दुआ के वक़्त कैफ़ियत

मौलाना बड़ी देर तक और बड़ी बेक़रारी और बेचैनी की कैफ़ियत के साथ दुआ फ़रमाते थे और दुआ की हालत में अक्सर उन पर ख़ुद को भूलने की सी कैफ़ियत तारी हो जाती और अजीब-अजीब मज़मून वारिद होते। पाँचों वक़्त की नमाज़ों के बाद ख़ुसूसन मेवात के सफ़रों में बड़ी पुरअसर दुआएं फ़रमाते और अक्सर वह मुस्तक़िल तक़रीर होतीं। वह अल्लाह से दिल खोलकर मांगते और मांगते वक़्त अपनी तरफ़ से न कमी करते।

तक़रीरों के दर्मियान यह फ़िक़रा अभी तक सुनने वालों के कानों में गूँज रहा है, "मांगो अल्लाह से।"

फ़िक्र की घड़ी

मेरे दोस्तो! ये थीं हमारे असलाफ़ की ज़िंदगियाँ जो रहती दुनिया तक इल्म व अमल के आसमान पर सूरज बनकर चमकती रहेंगी। आज ज़रा हम अपने किरदार पर भी नज़र डालें कि हम उनके रूहानी बेटे कहलाते हैं। लेकिन हमारे किरदार और उनके किरदार में कोई थोड़ा सा भी जोड़ है? आज हमारे इल्म व अमल में फ़र्क़ है, क़ाल व हाल में फ़र्क़ है, जलवत (महफ़िल) व ख़लवत (तन्हाई) में फ़र्क़ है, इत्तिबाए सुन्नत हम में पूरी नहीं, बस कुछ ज़ाहिर दारी कर लेते हैं। तन्हाई में हमारी शख़्सियत कुछ और होती है और बाहर कुछ और होती है। दिल से पूछें, दिल कहता है कि दो चेहरे हैं। एक चेहरा जो लोगों को दिखाने के लिए है और एक चेहरा वह जो तेरा परवरदिगार जानता है। न जाने हमारे अंदर से यह दो रंगी कब ख़त्म होगी? और हम अपने आपको अपने असलाफ़ जैसे अख़्लाक़े हसना से कब मुज़ैय्यन करेंगे। अगरचे आज भी कुछ अल्लाह वाले ऐसे हैं जो ज़िक्रे इलाही और तक़्वा व परहेज़गारी से अपनी ज़िंदगियों को आबाद कर रहे हैं लेकिन अमूमी तौर पर हमारी हालत पस्त से पस्त तर होती चली जा रही है।

अपने ज़ाहिर को सुन्नते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और बातिन को मारिफ़त इलाही से सजा लीजिए। तक़्वे को अपनी आदत बनाएं और रज़ाए इलाही को अपनी ज़िंदगी का

मक़सद बनाएं। फिर क़दम उठाएंगे तो अल्लाह क़दमों में बरकत डाल देंगे, फ़तूहात के दरवाज़े खुलेंगे। अल्लाह तआला पूरी दुनिया में ऐसा वक़ार क़ायम करेंगे कि कुफ़्र अपने महलों में बैठे-बैठे कांप रहा होगा। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें अपने असलाफ़ के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा दे और आख़िरत में उनका साथ नसीब फ़रमाए, आमीन सुम्मा आमीन।